

श्री अध्यात्मसारसंज्ञानुरयथ

पंक्ति श्रीकुंवरविजयजी कृत.

आ पुस्तक

सम्यक्ज्ञानी अध्यात्मवेदि, नय निक्षेपादिकना जाणप
णा संवंधि इष्टा राखनारा साधर्मिक जाईउने जणवा
वांचवाने उपयोगी जाणी.

तेनी द्वितीयावृत्तिने

यथायोग्य शोधीने

शाण श्रीमसिंह माणकारव्य श्रावकें

श्री मुंबापुरीमध्ये

“ निर्णयसागर ” मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्युं छे.

सवत १९१३ सन १८९६.

प्रस्तावना.

जेम कोइ एक पदार्थनी बनावट करवामां मात्र एकज बनावनारनी पण एवी खूबी होय ठे के ते एकज वस्तुने जूदा जूदा शैकडा प्रकारना रूपमां लावी शके ठे, तो ते तेहिज वस्तु जूदा जूदा पुरुषोनी बनावटथी जूदा जूदा आकार वाली थाय, तेमां तो वली केवुंज शुं ? तेम प्रत्येक ग्रंथनी रचना करनारा महान्पुरुषोमां पण एज रीत जाणी लेवी.

श्रीजैनशासनने विषे एक द्रव्यानुयोग, बीजो गणितानुयोग, त्रीजो चरण करणानुयोग, अने चोथो धर्मकथानुयोग. ए चार अनुयोग कह्या ठे ते चारेमां द्रव्यानुयोग मुख्य गणाय ठे. हवे ते द्रव्यानुयोगना विषय जेमां मुख्यत्वे आ वेला होय एवा हजारो ग्रंथो ठे परंतु तेमां जे ग्रंथ घणोज सरस हशे, ते पण कोइ न्याय निपुणविद्वाननो आश्रय लीधा विना साधारण जनथी समजा इ शकय नही एवा कठिन विषय अवश्य द्रव्यानुयोग संबंधि ग्रंथोमां होय ठे, ते एवा ग्रंथोने अवलोकन करनारा सज्जनो सारी पेटें जाणता हशे.

परंतु आ अध्यात्मसार प्रश्नोत्तर नामक ग्रंथनी रचना करनार पंक्ति कुंवरविजयजी ठे तेमणे यद्यपि आ ग्रंथने विषे घणुं करीने द्रव्यानुयोग नीज वक्तव्यता करी जणाय ठे तथापि ते एवी सरलताथी वार्त्तिक रूपें गुर्जर भाषामां लखी ठे के मात्र एक नवतत्त्व प्रकरणनो जेणे बरोवर गुरुमुखें अन्यास करेलो होय अने थोडी घणी नय प्रमुखनी वातो गुरुमुखें धारेली होय तेवा सामान्य जनने पण आ ग्रंथ मांहेली वातो सेहेज समजवामां आवी जाय, एवी युक्ति पूर्वक रचना करी ठे तेथी द्रव्यानुयोगने जाणवानी रुची वाला विवेकी पुरुषोने प्रथम द्रव्यानुयोग रूप समुद्रमां प्रवेश करवाने आ पुस्तक खरे खरुं नौकासमान ठे.

आ ग्रंथमां जीवादिक नवतत्त्व मांहेला कया कया पदार्थमां केटलां केटलां तत्त्वपामीयें? तथा ते शिवाय बीजी पण प्रसंगें ए नवतत्त्व संबंधि अनेक वातो आवेली ठे, तथा निश्चय व्यवहार नयें करी, नैगमादि सात नयें करी, चार निक्षेपे करी, तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी चोचंगीयें करी, प्रत्यक्षादि प्रमाणे करी, तेमज सप्तचंगी, पंचचंगी, त्रिचंगि आदिकें करी अनेक पदार्थो नां स्वरूप सविस्तर पणे देखाड्यां ठे, तेनो सामान्य सारांश अनुक्रमणिकामां सूचव्यो ठे, अने पूर्ण खुलासो ग्रंथ अवलोकन करवाथी थशे. किं बहुना.

आ ग्रथमांहेला विषयोनी अनुक्रणिका.

| अंक. | विषय. | पृष्ट. |
|------|---|--------|
| १ | श्रीजिनस्तुति रूप मंगलाचरणादि. | १ |
| २ | श्रीअरिहंतना, जगवंतादिक वार विशेषणोना अर्थ. | ४ |
| ३ | जीवादिक नव तत्त्वने तत्त्व कही बोलाव्यां तेनुं स्वरूप. | ५ |
| ४ | नव तत्त्वमां हेय केटला, हेय केटला अने उपादेय केटला ? | ६ |
| ५ | वाशठ मार्गणा स्थानमध्ये कयामार्गणास्थानमां चारगतिमां थी कयी गतिना केटला जीव जेद पामीयें तेनो यंत्र. | ७ |
| ६ | जीवने शाश्वत कहीयें किंवा अशाश्वत कहीयें तेनुं स्वरूप. | १० |
| ७ | जीवनां द्रव्यप्राण अने जावप्राणनुं स्वरूप. | १० |
| ८ | वाटें वहेता जीवनांकेटला प्राण पामीयें ? एनुं स्वरूप. | ११ |
| ९ | जीवने व्यवहारनयें नित्यानित्य कहीयें तेनुं स्वरूप. | ११ |
| १० | जीवने निश्चयनयें नित्यानित्य कहीयें तेनुं स्वरूप. | ११ |
| ११ | पुजल, पुजलने नथी ग्रहण करता ते कया नयें करीने तथा पुजल पुजलने ग्रहण करे ठे ते कया नयें करीने. ... | १२ |
| १२ | जीव, पुजने ग्रहण कया नयें करी करेठे तथा जीव पुजल ने नथी ग्रहण करतो ते कया नयें करी ने ? तेनुं स्वरूप. | १२ |
| १३ | नवतत्त्वमांथी आदरवा योग्य केटलां तत्त्व ठे. | १२ |
| १४ | नवतत्त्व मांहेला द्रव्यजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें | १२ |
| १५ | नवतत्त्व मांहेला जावजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें | १३ |
| १६ | नवतत्त्व मांहेला मिथ्यात्वी जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें | १४ |
| १७ | नवतत्त्व मांहेला समकेति जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें | १४ |
| १८ | नवतत्त्व मांहेला अजव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें | १४ |
| १९ | नवतत्त्व मांहेला जव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १४ |
| २० | नवतत्त्व मांहेला रूपी अजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |
| २१ | नवतत्त्व मांहेला पुण्यमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |
| २२ | नवतत्त्व मांहेला पापमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| ३४ | नवतत्त्व मांहेला आश्रवमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |
| ३४ | नवतत्त्व मांहेला संवरमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |
| ३५ | नवतत्त्व मांहेला निर्झरामां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ३६ | नवतत्त्व मांहेला बंधतत्त्वमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ३७ | नवतत्त्व मांहेला द्रव्यमोक्षपदमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ३७ | नवतत्त्व मांहेला जावमोक्षपदमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ३७ | नवतत्त्वमां मूल तत्त्व केटलां पामीयें. .. | १७ |
| ३७ | जीव अने अजीव ए मूल बे तत्त्वनां उत्तर तत्त्व केटलां | १७ |
| ३१ | नवतत्त्वनां जेदांतर तत्त्व केटलां थाय. | १७ |
| ३३ | नवतत्त्वमां अरूपी तत्त्व केटलां अने रूपी तत्त्व केटलां . | १७ |
| ३३ | नवतत्त्वनां बशे उहोतेर जेदमां अरूपी केटलांने अरूपी केटलां. | १७ |
| ३४ | नवतत्त्वमांथी निगोदना जीव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें. | १७ |
| ३५ | नवतत्त्वमांथी नरकगतिनां जीव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें. | १७ |
| ३६ | नवतत्त्वमांथी जरतक्षेत्रे मनुष्यगति आश्रयी केटलांतत्त्व पामीयें. | १७ |
| ३७ | नवतत्त्वमांथी महाविदेहनां मनुष्यमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १७ |
| ३७ | नवतत्त्वमांथी तिर्यचगति आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें. . . | १७ |
| ३७ | नवतत्त्वमांथी व्यंतर, जवनपति, ज्योतिषी, वैमानिक अने नव त्रैवेयकना देव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें. . . | ११ |
| ४७ | नवतत्त्वमांथी पंचानुत्तरना देव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें. | ११ |
| ४१ | नवतत्त्वमांथी ईषत्प्राणुजारपृथ्वीना जीवोमांकेटलां तत्त्वपामीयें. | ११ |
| ४२ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य समकेती जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | ११ |
| ४३ | नवतत्त्वमांथी जावसमकेती जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ११ |
| ४४ | नवतत्त्वमांथी द्रव्यलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १२ |
| ४५ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १२ |
| ४६ | नवतत्त्वमांथी जावश्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें. ... | १२ |
| ४७ | नवतत्त्वमांथी जावलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें. ... | १२ |
| ४७ | नवतत्त्वमांथी द्रव्यज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १२ |
| ४७ | नवतत्त्वमांथी जावज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १३ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| ५० | नवतत्त्वमांथी क्रोधादि चार कषायमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | १३ |
| ५१ | नवतत्त्वमांथी जावलिंग आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १३ |
| ५२ | नवतत्त्वमांथी द्रव्यलिंग आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १४ |
| ५३ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | १४ |
| ५४ | नवतत्त्वमांथी जाव आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | १४ |
| ५५ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य अरिहंतमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | १४ |
| ५६ | नवतत्त्वमांथी जाव अरिहंतमां केटलां तत्त्व पामीयें..... | १४ |
| ५७ | नवतत्त्वमांथी द्रव्यसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १५ |
| ५८ | नवतत्त्वमांथी जावसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ५९ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य चारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ६० | नवतत्त्वमांथी जाव चारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १६ |
| ६१ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य साधुमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १७ |
| ६२ | नवतत्त्वमांथी जाव साधुमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १७ |
| ६३ | नवतत्त्वमांथी द्रव्यलिंग साधुमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १८ |
| ६४ | नवतत्त्वमांथी जावलिंग साधुमां केटलां तत्त्व पामीयें. | १८ |
| ६५ | नवतत्त्वमांथी जीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | १९ |
| ६६ | नवतत्त्वमांथी जीवने बोलावा रूप केटलां तत्त्व पामीयें. | १९ |
| ६७ | नवतत्त्वमांथी जीवने वाणोतर रूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३० |
| ६८ | नवतत्त्वमांथी जीवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३० |
| ६९ | नवतत्त्वमांथी जीवने घररूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३० |
| ७० | नवतत्त्वमांथी रूपी अजीवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३१ |
| ७१ | नवतत्त्वमांथी अजीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३१ |
| ७२ | नवतत्त्वमांथी अजीवने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३१ |
| ७३ | नवतत्त्वमांथी अजीव केटलां तत्त्वने रोकवा शके ठे..... | ३१ |
| ७४ | नवतत्त्वमांथी अजीवें केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी. | ३२ |
| ७५ | नवतत्त्वमांथी पुण्यने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३२ |
| ७६ | नवतत्त्वमांथी पुण्यने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें. .. | ३२ |
| ७७ | नवतत्त्वमांथी पुण्यनां प्रतिपद्दीरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३२ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| ७८ | नवतत्त्वमांथी पुण्यने रोकवारूप केटलां तत्त्व पामीयें. .. | ३१ |
| ७९ | नवतत्त्वमांथी पुण्य केटलां तत्त्वने रोकी शके ठे. ... | ३१ |
| ८० | नवतत्त्वमांथी पुण्ये केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी. | ३१ |
| ८१ | नवतत्त्वमांथी पापनेमित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३२ |
| ८२ | नवतत्त्वमांथी पापने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३२ |
| ८३ | नवतत्त्वमांथी पापनां प्रतिपद्दीरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३३ |
| ८४ | नवतत्त्वमांथी पापने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें. ... | ३३ |
| ८५ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने पाप रोकी शके ठे. | ३३ |
| ८६ | नवतत्त्वमांथी पापे केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी..... | ३३ |
| ८७ | नवतत्त्वमांथी आश्रवने मित्र रूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३४ |
| ८८ | नवतत्त्वमांथी आश्रवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें. ... | ३४ |
| ८९ | नवतत्त्वमांथी आश्रवने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें, .. | ३४ |
| ९० | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने आश्रव रोकी शके ठे. . . . | ३४ |
| ९१ | नवतत्त्वमांथी आश्रवे केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी. ... | ३४ |
| ९२ | नवतत्त्वमांथी संवरने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें. ... | ३४ |
| ९३ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने संवर रोकी शके ठे. . . . | ३४ |
| ९४ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने संवरनी साथे प्रीति ठे. | ३५ |
| ९५ | नवतत्त्वमांथी संवरने घररूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ३५ |
| ९६ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने निर्झारा बाळे ठे. | ३५ |
| ९७ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्व निर्झाराने स्वामिरूप ठे..... | ३५ |
| ९८ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वनी साथे निर्झाराने प्रीति ठे. | ३६ |
| ९९ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वनुं घर निर्झारायें दीतुं नथी. ... | ३६ |
| १०० | नवतत्त्वमांथी बंधने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें. .. | ३६ |
| १०१ | नवतत्त्वमांथी बंधने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें..... | ३६ |
| १०२ | नवतत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने बंध रोकी शके ठे. . . . | ३६ |
| १०३ | नवतत्त्वमांथी बंधतत्त्वने कथुं तत्त्व रोकी शके ठे. | ३६ |
| १०४ | नवतत्त्वमांथी बंधे केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी. | ३७ |
| १०५ | नवतत्त्वमांथी अव्यसिरूप परमात्माने शत्रुरूप केटलां तत्त्व ठे. ३७ | ३७ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| १०६ | नवतत्त्वमांथी ड्रव्यसिद्ध परमात्माने मित्ररूप केटलां तत्त्व ठे. | ३७ |
| १०७ | नवतत्त्वमांथी ड्रव्य सिद्धपरमात्माने वाणोतररूप केटलां तत्त्व ठे. | ३७ |
| १०८ | नवतत्त्वमांथी ड्रव्यसिद्ध परमात्माने घर रूप केटलां तत्त्व ठे. | ३८ |
| १०९ | नवतत्त्वमांथी जावसिद्ध परमात्माने घर रूप केटलां तत्त्व ठे. | ३८ |
| ११० | सिद्धपरमात्माने सुख केटलुं ठे. | ३९ |
| १११ | सिद्धना जीव अक्रियठतां सात राज उंचारह्यातेक्रियाकेम करी. | ३९ |
| ११२ | सिद्धना जीवने कर्म केम लागतां नथी तेना हेतु देखाड्या ठे. | ४० |
| ११३ | सिद्धना जीवो संबंधी सुखनो खाद. | ४० |
| ११४ | सिद्धि किहांठे, मुक्ति किहां ठे, तथा मोक्षपद किहां ठे ?.... | ४० |
| ११५ | सिद्धने मोक्षपुरीमां धर्म ठे किंवा धर्म नथी..... | ४१ |
| ११६ | नवतत्त्वमांथी द्दिसखजावमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४१ |
| ११७ | नवतत्त्वमांथी अशुजप्रकारेंद्विसखजावमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४२ |
| ११८ | नवतत्त्वमांथी शुजप्रकारें द्दिस खजावमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४२ |
| ११९ | नवतत्त्वमांथी अद्विस खजावमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४२ |
| १२० | ड्रव्यथकी षडावश्यकतुं स्वरूप ते शुं ? | ४३ |
| १२१ | नवतत्त्वमांथी ड्रव्यथकी सामायिकादिक ठए आवश्यकमांहे लां कया कया आवश्यकमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४३ |
| १२२ | ड्रव्यथकी सामायिकादिक ठए आवश्यकरूप करणी करवी तेतुं फल विशेष रीतें नयनी युक्तियें करी समजाव्युं ठे..... | ४५ |
| १२३ | जाव थकी षडावश्यकतुं स्वरूप देखाड्युं ठे. | ४६ |
| १२४ | जाव थकी षडावश्यक रूप करणी करवी तेनो हेतु शुं ? | ४६ |
| १२५ | नवतत्त्वमांथी जावथकी सामायिकादिक ठए आवश्यकमां हेला कया कया आवश्यकमां केटलां केटलां तत्त्व पामीयें. | ४९ |
| १२६ | नवतत्त्वमांथी रमणिक तत्त्व केटलां पामीयें..... | ५१ |
| १२७ | नवतत्त्वमांथी अशुजप्रकारेंरमणिकखजावमांकेटलांतत्त्वपामीयें. | ५१ |
| १२८ | नवतत्त्वमांथी शुजप्रकारेंरमणिकखजावमांकेटलां तत्त्व पामीयें. | ५१ |
| १२९ | नवतत्त्वमांथी शुद्ध प्रकारेंरमणिकखजावमांकेटलांतत्त्वपामीयें. | ५१ |
| १३० | नवतत्त्वमांथी निश्चयथकी रमणिक खजावमां केटलां तत्त्व ठे. | ५२ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|---|--------|
| १३१ | नवतत्त्वमांथी ध्याता रूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ५२ |
| १३२ | नवतत्त्वमांथी अशुचप्रकारें ध्याता रूपमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५३ |
| १३३ | नवतत्त्वमांथी शुचप्रकारें ध्याता रूपमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५३ |
| १३४ | नवतत्त्वमांथी शुद्ध प्रकारें ध्याता रूपमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५३ |
| १३५ | नवतत्त्वमांथी वहिरात्मांमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५३ |
| १३६ | नवतत्त्वमांथी अंतरात्मांमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५४ |
| १३७ | नवतत्त्वमांथी द्रव्य परमात्मांमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५५ |
| १३८ | नवतत्त्वमांथी ज्ञावपरमात्मांमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५५ |
| १३९ | सिद्ध परमात्माना स्वरूपमां ज्ञान, ज्ञाता ने ज्ञेय रूप त्रिचंगी. | ५५ |
| १४० | सिद्ध जगवानना स्वरूपमां कर्त्ता कारणने कार्य रूप त्रिचंगी. | ५५ |
| १४१ | सिद्ध जगवानना स्वरूपमां ध्यान ध्याताने ध्येय रूप त्रिचंगी. | ५५ |
| १४२ | नवतत्त्वमांथी अशुच ध्यानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५६ |
| १४३ | नवतत्त्वमांथी शुच ध्यानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५६ |
| १४४ | नवतत्त्वमांथी शुद्ध ध्यानमां केटलां तत्त्व पामीयें. ... | ५६ |
| १४५ | नवतत्त्वमांथी कर्मफल चेतनामां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५६ |
| १४६ | नवतत्त्वमांथी ज्ञान चेतनामां केटलां तत्त्व पामियें. | ५७ |
| १४७ | नवतत्त्वमांथी अशुचप्रकारें कर्मचेतनामां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५७ |
| १४८ | नवतत्त्वमांथी शुचप्रकारें कर्मचेतनामां केटलां तत्त्व पामीयें. | ५८ |
| १४९ | नवतत्त्वमांथी आर्त रौद्रध्याननी ज्ञावनामां केटलां तत्त्व ठे. | ५८ |
| १५० | नवतत्त्वमांथी धर्मध्यान शुद्धध्याननी ज्ञावनामां केटलां तत्त्व ठे. | ५८ |
| १५१ | नवतत्त्वमांथी अशुचप्रकारें जीवने बाधकरूप केटलां तत्त्व ठे. | ५८ |
| १५२ | नवतत्त्वमांथी शुच प्रकारें जीवने बाधकरूप केटलां तत्त्व ठे. | ५८ |
| १५३ | नवतत्त्वमांथी शुचप्रकारें जीवने साधकरूप केटलां तत्त्व ठे. | ५९ |
| १५४ | नवतत्त्वमांथी कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व पामियें एमां साते नयें करी जीवने शुजाशुचना कर्त्तापणानुं स्वरूप ठे. ... | ५९ |
| १५५ | नवतत्त्वमांथी अशुचप्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व ठे. | ६१ |
| १५६ | नवतत्त्वमांथी शुचप्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व ठे. | ६२ |
| १५७ | नवतत्त्वमांथी शुद्धप्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व ठे. | ६२ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| १५८ | नवतत्त्वमांथी जीवने अशुच कारणरूप केटलां तत्त्व ठे. | ६२ |
| १५९ | नवतत्त्वमांथी जीवने शुच कारणरूप केटलां तत्व ठे. | ६२ |
| १६० | नवतत्त्वमांथी जीवने शुद्ध कारणरूप केटलां तत्त्व ठे. | ६३ |
| १६१ | नवतत्त्वमांथी निश्चयनयथकी कार्यरूप केटलां तत्त्व ठे. | ६३ |
| १६२ | नवतत्त्वमांथी लौकिक मार्गमांहे केटलां तत्त्व ठे. | ६३ |
| १६३ | नवतत्त्वमांथी लोकोत्तर मार्गमांहे केटलां तत्त्व ठे. | ६३ |
| १६४ | नवतत्त्वमांथी जीवने बाधक दशा केटलां तत्त्वनी साथे ठे | ६४ |
| १६५ | नवतत्त्वमांथी जीवने साधक दशा केटला तत्त्वनी साथे ठे.... | ६४ |
| १६६ | नवतत्त्वमांथी जीवने सिद्ध दशा केटलां तत्त्वनी साथे ठे,.... | ६४ |
| १६७ | नवतत्त्वमांथी संसारव्यापि केटलां तत्त्व पामीयें. | ६४ |
| १६८ | नवतत्त्वमांथी सिद्धव्यापि केटलां तत्त्व पामीयें. | ६५ |
| १६९ | नवतत्त्व साते नयें करी जीवनुं गुणीपणुं केम जाणीयें. | ६५ |
| १७० | नवतत्त्वमांथी जीवने अशुच गुणरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ६५ |
| १७१ | नवतत्त्वमांथी जीवने शुच गुणरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ६५ |
| १७२ | नवतत्त्वमांथी जीवने शुद्ध गुणरूप केटलां तत्त्व पामीयें. | ६६ |
| १७३ | नवतत्त्वमांथी जीवने निश्चय गुणरूप केटलां तत्त्व पामीयें.... | ६६ |
| १७४ | नवतत्त्वमांथी प्रत्यक्ष ज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ६६ |
| १७५ | नवतत्त्वमांथी परोक्ष ज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ६६ |
| १७६ | नवतत्त्वमांथी खाजाविक तत्त्व केटलां पामीयें, | ६७ |
| १७७ | नवतत्त्वमांथी विज्ञाविक तत्त्व केटलां पामीयें. | ६७ |
| १७८ | नवतत्त्वमांथी समकेतिने साध्य साधनरूप केटलां तत्त्वठे. | ६७ |
| १७९ | नवतत्त्वमांथी मिथ्यात्वीने साध्य साधनरूप केटलां तत्त्व ठे. | ७० |
| १८० | नवतत्त्वमांथी ड्रव्यनयमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ७० |
| १८१ | नवतत्त्वमांथी ज्ञाननयमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ७० |
| १८२ | नवतत्त्वमांथी अढीद्वीप व्यापि केटलां तत्त्व पामीयें. | ७१ |
| १८३ | नवतत्त्वमांथी अढीद्वीपथी बाहेर केटलां तत्त्व पामीयें. | ७१ |
| १८४ | नवतत्त्वमांथी उर्ध्वलोकमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ७१ |
| १८५ | नवतत्त्वमांथी तिर्था लोकमां केटलां तत्त्व पामीयें.... | ७१ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|---|--------|
| १८६ | नवतत्त्वमांथी अधोलोकमां केटलां तत्त्व पामीयें. | ७१ |
| १८७ | नवतत्त्वमांथी व्यवहारनयमां केटलां तत्त्व पामीयें एमां व्यवहारनयना उपचरितादिक ठ जेदनुं स्वरूप देखाड्युं ठे. | ७१ |
| १८८ | नवतत्त्वमांथी निश्चयनयमां केटला तत्त्व पामीयें. | ७३ |
| १८९ | जीवनां व्यवहार प्राण कयां अने निश्चय प्राण कयां. | ७३ |
| १९० | एक मुष्टिमां केटला जीव पामीयें. | ७४ |
| १९१ | ठ ड्रव्य मांहेला एक मुठीमां केटला ड्रव्य पामीयें. | ७४ |
| १९२ | पांचशे त्रेशठ जेद मांहेला केटला जेदना जीव मरण पामे. | ७५ |
| १९३ | अध्यात्म स्वरूपनी जावनाना बावन दोहा.... | ७५ |
| १९४ | निश्चय तथा व्यवहारथी सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म तथा एनां प्रतिपद्दी कुदेव, कुगुरु अने कुधर्मनुं स्वरूप.... | ७८ |
| १९५ | निश्चय तथा व्यवहारथी पांच महाव्रतनुं स्वरूप. | ७९ |
| १९६ | हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल जोगवे ठे तेनुं स्वरूप. | ८२ |
| १९७ | हिंसा करे ठे अने हिंसानां फल जोगवता नथी तेनुं स्वरूप. | ८३ |
| १९८ | हिंसा करे ठे अने हिंसानां फल पण जोगवे ठे तेनुं स्वरूप. | ८३ |
| १९९ | हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल जोगवता नथी तेनुं स्वरूप. | ८४ |
| २०० | उपरथी साधुपणा सहित अने अंतरथकी साधुपणारहितनुं स्वरूप. | ८५ |
| २०१ | अंतरथी साधुपणा सहित अने उपरथी साधुपणा रहितनुं स्वरूप. | ८६ |
| २०२ | उपरथी साधुपणा रहित अने अने अंतरथी साधुपणा रहितनुं | ८७ |
| २०३ | उपरथी साधुपणा सहित अने अंतरथी साधुपणा सहितनुं | ८८ |
| २०४ | षड्द्रव्य नवतत्त्वनुं स्वरूप ड्रव्य क्षेत्र काल जावनी चोत्रंगीयें. | ८९ |
| २०५ | ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावमांथी कोण कोणथी सूक्ष्म ठे.... | ९१ |
| २०६ | षड्द्रव्य नवतत्त्वनुं स्वरूप नामादिक चार निक्षेपे देखाड्युं ठे. | ९२ |
| २०७ | वारे व्रत उपर चार निक्षेपा तथा ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव. | ९७ |
| २०८ | क्रोध, मान, माया, लोत्र उपर चार निक्षेपा. | १०४ |
| २०९ | दान, लाज, जाव, रूप, अनुजव, मनुष्यगति, मनुष्यपुरुष, मनुष्यस्त्री, ए प्रत्येक उपर चार निक्षेपा उतास्या ठे. | १०५ |
| २१० | अनादि अनंतादिक चार जांगे करी षड्द्रव्य तथा नवतत्त्वनुं | |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|---|--------|
| | स्वरूप निश्चय अने व्यवहारनयने मते देखाड्युं ठे. | १०८ |
| १११ | ठ द्रव्यना परस्पर संबंधनी चोचंगी देखाडी ठे. | ११३ |
| ११२ | पांच समवाय कारणेने प्रश्नोत्तरें करी निर्झास्यां ठे. | ११४ |
| ११३ | समकेतनुं स्वरूप षट्कारकें करी देखाड्युं ठे. | ११६ |
| ११४ | मोक्ष निःकर्मावस्थानुं स्वरूप षट्कारकें करी देखाड्युं ठे. | ११६ |
| ११५ | नवप्रकारना नियाणानुं स्वरूप देखाड्युं ठे..... | ११६ |
| ११६ | अरिहंतादिक नवपद एटले सिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप सात नये करी तथा चार निक्षेपें करी तथा प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए वे प्रमाणे करी तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी चोचंगीयें करी तथा चौद गुणठाणे करी तथा गुणे करी तथा नवतत्त्वं करी तथा गुणी गुणें करी तथा पांचवणें करी तथा देव, गुरु अने धर्मनी उलखाणे ए दशजांगे करी देखाड्युं ठे. | ११९ |
| ११९ | सातनयमां द्रव्यनय केटला अने जावनय केटला..... | १२० |
| १२० | अष्टावीश उपनयनुं स्वरूप, एमां व्यवहार नयना ठ जेद ठे. | १२० |
| १२१ | द्रव्य अने जावनुं स्वरूप सातनयें उलखाव्युं ठे. | १२४ |
| १२२ | निश्चय तथा व्यवहारनयें करी नवतत्त्व, षट्द्रव्यनुं स्वरूप. | १२५ |
| १२३ | नैगमादि सातेनयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूप. | १२६ |
| १२४ | नैगमादि सातेनयें करी अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप..... | १२९ |
| १२५ | नैगमादि सातेनयें करी आकाशास्तिकायनुं स्वरूप. | १२९ |
| १२६ | नैगमादि सातेनयें करी कालद्रव्यनुं स्वरूप. | १३० |
| १२७ | नैगमादि सातेनयें करी पुजलास्तिकायनुं स्वरूप!..... | १३० |
| १२८ | नैगमादि सातेनयें करी जीव द्रव्यनुं स्वरूप. | १३१ |
| १२९ | नैगमादि सातेनयें करी पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप. | १४२ |
| १३० | नैगमादि सातेनयें करी देवतानुं स्वरूप. | १४४ |
| १३१ | नैगमादि सातेनयें करी नारकी जीवनुं स्वरूप. | १४५ |
| १३२ | नैगमादि सातेनयें करी राजानुं स्वरूप. | १४५ |
| १३३ | नैगमादि सातेनयें करी मनुष्यनुं स्वरूप. | १४६ |
| १३४ | नैगमादि सातेनयें करी सामायिकनुं स्वरूप. | १४६ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|---|--------|
| १३३ | एक आकाश प्रदेशमां षट्द्रव्यनुं तथा सातनयनुं स्वरूप. | १४० |
| १३४ | नैगमादि सातेनयें करी जिनदास नामा शेटें श्रावक पुत्र प्रत्यें पूब्धुं के तुं किहां रहे ठे इत्यादि नय स्वरूप ठे..... | १४० |
| १३५ | नैगमादि सातेनयें करी जीवनुं स्वरूप. | १४९ |
| १३६ | नैगमादि सातेनयें करी ज्ञाननुं स्वरूप. | १५० |
| १३७ | नैगमादि सातेनयें करी साधर्मिपणानुं स्वरूप. | १५१ |
| १३८ | नैगमादि सातेनयें करी धर्मनुं स्वरूप. | १५१ |
| १३९ | नैगमादि सातेनयें करी सिद्ध जगवाननुं स्वरूप. | १५२ |
| १४० | नयनी अपेहायें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप. | १५३ |
| १४१ | सातेनयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप एमां अजीवनां ५६० जेद. | १५४ |
| १४२ | जिनमंदिर उपर उत्सर्ग अपवादे सात नय उताखा ठे. | १५६ |
| १४३ | घट उपर उत्सर्ग अपवादे सातनय उताखा ठे. | १५७ |
| १४४ | घर उपर उत्सर्ग अपवादे सात नय उताखा ठे. | १५८ |
| १४५ | राज्य उपर उत्सर्ग अपवादे सातनय उताखा ठे..... | १५९ |
| १४६ | धर्मीजीवने समकेतनी स्थिरता करवा सारु सातनयनुं स्वरूप. | १६० |
| १४७ | जहागति तहामति ए वचनने अनुसारें सातनय..... | १६२ |
| १४८ | अष्टावीश उपनयमां प्रथम द्रव्यास्तिकनयना दश जेदनुंस्वरूप. | १६२ |
| १४९ | पर्यायास्तिक नयना ठ जेदनुं स्वरूप. | १६३ |
| १५० | नैगमादि सात नयना जेदो तथा तेनुं स्वरूप. | १६३ |
| १५१ | विशेषावश्यकने अनुसारें सात नयना जेद. | १६६ |
| १५२ | नित्यानित्यादि आठपदे निश्चय व्यवहार नयें जीवनुं स्वरूप. | १६६ |
| १५३ | द्रव्य समकेतादिक नव प्रकारना समकेतनुं स्वरूप. | १६८ |
| १५४ | जीवने कर्मना कर्त्तापणामां अने जोक्तापणामां नैगमादि सातनय मांहेला केटला नय पामीयें. | १७२ |
| १५५ | जीवने स्वरूपना कर्त्तापणामां केटला नय पामीयें. | १७३ |
| १५६ | जीवने स्वरूपना जोक्ता पणामां केटला नय पामीयें. | १७४ |
| १५७ | जीव कर्मनो अकर्त्ता तथा अजोक्ता क्या नयें करी जाणवो. | १७५ |
| १५८ | मंजूषा ऊपर सातनयमां चार निक्षेपा उत्सर्गापवादे कहाठे. | १७५ |

| अंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|--|--------|
| १५९ | सातनयमां त्रण निक्षेपानुं उत्सर्गापवादें स्वरूप. | १५५ |
| १६० | समकेतरूप रत्नो लाज केवीरीतें पामीयें. | १५६ |
| १६१ | ठ ड्रव्यमां हेय, ज्ञेय, उपादेय तथा ठड्रव्यना गुण पर्याय अने ठ ड्रव्यना पर्यायनुं परस्पर साधर्मीपणुं दर्शाव्युं ठे. | १५९ |
| १६२ | ठ ड्रव्यमां परिणामि केटला अने अपरिणामि केटला. | १६१ |
| १६३ | ठ ड्रव्यमां जीव केटलां अने अजीव केटलां. | १६२ |
| १६४ | ठ ड्रव्यमां मूर्ति केटलां अने अमूर्ति केटलां. | १६३ |
| १६५ | ठ ड्रव्यमां सप्रदेशीकेटलां अने अप्रदेशी केटलां. | १६३ |
| १६६ | ठ ड्रव्यमां एक केटलां अने अनेक केटलां. | १६३ |
| १६७ | ठड्रव्यमां क्षेत्रकेटलां अने क्षेत्री केटलां एमां पुञ्जलनो विचारठे. | १६४ |
| १६८ | ठ ड्रव्यमां सक्रिय केटलां अने अक्रिय केटलां. | १६६ |
| १६९ | ठ ड्रव्यमां नित्य केटलां अने अनित्य केटलां. | १६७ |
| १७० | ठ ड्रव्यमां कारण केटलां अने अकारण केटलां. | १६९ |
| १७१ | ठ ड्रव्यमां कर्ता केटलां अने अकर्ता केटलां. | १६९ |
| १७२ | ठ ड्रव्यमां सर्वव्यापि केटलां अने देशव्यापि केटलां. | १७१ |
| १७३ | ठ ड्रव्यमां अप्रवेशी पणानुं स्वरूप. | १७१ |
| १७४ | ठ ड्रव्यमां एक अनेकादिक आठ पदानुं स्वरूप. | १७२ |
| १७५ | सम्यक्त्वनुं स्वरूप. | १७५ |
| १७६ | समकेतनी निःसर्गरुचि आदिक दशप्रकारनी रुचिनुं स्वरूप. | १७६ |
| १७७ | ठ ड्रव्यमां अस्तित्व, वस्तुत्व, ड्रव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्त्व, अने अ गुरुलघु ए ठ ठ सामान्य गुण कहाठे. तथा निगोदनुं स्वरूप. | १७७ |
| १७८ | जीवने स्वरूपनुं ध्यान करवा रूप विचार कह्यो ठे. | १७५ |
| १७९ | ठड्रव्यमां अगीथार सामान्य स्वप्नाव निश्चयव्यवहारशीकह्योठे. | १७७ |
| १८० | ठ ड्रव्यमां चेतनत्वादि विशेष स्वप्नाव कहा ठे. | १८० |
| १८१ | नवतत्त्व तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप अनेक नयनी अपेक्षायें ड्रव्य अने ज्ञावनी चोत्रंगीयें करी देखाड्यो ठे. | १८२ |
| १८२ | नवतत्त्व तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप कर्ता, कारण अने कार्य रूप त्रिजंगीयें करी देखाड्युं ठे. तथा समकेतनी प्रसंसा. | १८६ |

| शंक. | विषय. | पृष्ठ. |
|------|---|--------|
| १७३ | सिद्धपरमात्माना पंदर जेद कही देखाड्या ठे. | १११ |
| १७४ | नामथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, जावथकी, ड्रव्यथकी, गुणथकी, तथा, उत्पाद, व्यय अने ध्रौव, ए नवजांगे सिद्धनुं स्वरूप. | १११ |
| १७५ | नित्य अनित्यादिक आठ पदें करी सिद्धनुं स्वरूप. | ११३ |
| १७६ | सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप स्यादस्ति स्यान्नास्तिनी सप्तजंगी तथा नित्य अनित्यनी सप्तजंगी आदिक अनेक सप्तजंगीयें करी कछुं. | ११४ |
| १७७ | सिद्धपरमात्मानां ज्ञानगुणमां, दर्शनगुणमां, चारित्रगुणमां, अने वीर्यगुणमां, षट् कारक लगाव्याठे. | ११७ |
| १७८ | सिद्धना स्वरूपमां एकरूप, असंख्यरूप, असंख्य अनंतरूप, अनंत अनंतरूप अने अनंत अनंत धर्मरूप ए पंचजंगी कही ठे. | ११८ |
| १७९ | चारनिक्षेपें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप कछुं ठे. | ११९ |
| १८० | सिद्धपरमात्मानां अजोगी, उपजोगी अने जोगी एत्रिजंगी कही ठे. | ११९ |
| १८१ | सिद्धमां नित्यस्वजाव, अनित्यस्वजाव, अस्ति, नास्ति, योगी, अयोगी, कर्त्ता, अकर्त्ता, जव्यस्वजाव, अजव्यस्वजाव, लाज, अलाज, ग्राहक, अग्राहक, स्थिर, अस्थिर, रक्षक, अरक्षक, अचलित, चलित, रमणिक, अरमणिक, व्यापक, अव्यापक स्वजाव. | १३० |
| १८२ | सिद्धपरमात्माना अन्वयी गुण लख्या ठे. | १३१ |
| १८३ | सिद्धपरमात्मानां दानादिक पांचनी अनंतता दर्शावी ठे. | १३३ |
| १८४ | सिद्धनी उलखाण जेणे नथी करी तेने उपदेश कह्यो ठे. | १३४ |
| १८५ | पांच ज्ञान तथा ष ड्रव्यनुं स्वरूप, रूपी अरूपीपणे, निश्चय अने व्यवहारनयें, उत्सर्ग अपवादे करी, देशव्यापी सर्वव्यापीपणे, प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए बे प्रमाणें करी तथा कर्त्ता कारण अने कार्यरूप त्रिजंगीयें करी कछुं ठे. | १३५ |
| १८६ | जे जाणें, आदरे ने पाळे तथा जे जाणें न आदरे अने न पाळे, तथा जे जाणें न आदरे अने पाळे, तेनो स्वरूप तेमज न जाणें न आदरे अने न पाळे इत्यादिक अजाणनी चोजंगीनुं स्वरूप. | १३९ |
| १८७ | ग्रंथसमाप्तिना दोहा तथा चोपाद् प्रशंसा रूप. | १४१ |
| १८८ | केटला एक जाणवा योग्य बूटक बोल दाखल कख्या ठे. | १४३ |

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अध्यात्मसारप्रश्नोत्तरग्रंथः प्रारभ्यते ॥

॥ श्लोक ॥

॥ चेतःकैरवकौमुदीसहचरः स्याद्वादविद्याकरः, कैवल्यद्रुममंजरीमधुकरः
संपल्लतांजोधरः॥ मुक्तिस्त्रीकमनीयजालतिलकःसर्द्धर्मदःशर्मकृत्, श्रीमद्गीर-
जिनेश्वरस्त्रिभुवने द्वेमंकरः पातु वः॥१॥खिमाविजय जिन उत्तम पद, तेहने
सेवे सुरनर वृंद ॥ निजरूप प्रगटे अमी वरसंत, कुंवर कहे प्रश्नोत्तर वृत्तंत॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ हितोपदेश करवा जणी, ए प्रश्नोत्तर ग्रंथ ॥ ज
णशे गुणशे जे जविक, लेहेशे ते शिवपंथ ॥ ३ ॥

तिहां प्रथम श्री जिनस्तुति लखियें ठैयें.

॥ जय जगवान्, त्रैलोक्य तारण, अशरण शरण, परमात्मा, परमेश्वर,
जगन्नयाधार, कृपावतार, महिमानिधान, ज्ञापितसकलनिधान, समग्र
जंतुना करुणाबंधु, जव्य जीवोने धर्म पमाडता, जवसिंधुमां अनाथनाथ,
शिवपुर साथ, परमदयाल, वचन रसाल, जगद्रुपकारी, बंदे नर नारी,
तथा जे सुधासंयमी, निर्ग्रंथपंथ पालता, चारित्र दूषण टालता, सर्व
जीवने हित करता, आव्याने उरुरता एवा चौद हजार मुनिवरें परवस्थां
अलंकस्या क्रोडो गमे देवतायें सेवित, अनंतज्ञानमय, अनंतदर्शनमय,
अनंतचारित्रमय, अनंततपोमय, अनंतदानमय, अनंतवीर्यमय, अनंतं
लाजमय, अनंतजोगमय, अनंतउपजोगमय, क्रोधरहित, मानरहित,
मायारहित, लोजरहित, हास्यरहित, रतिरहित, अरतिरहित, जयरहित,
शोकरहित, दुगंठारहित, रागरहित, द्वेषरहित, मोहरहित, मिथ्यात्वरहित
निद्रारहित, कामरहित, अज्ञानरहित, कंदर्परहित, रोगरहित, निरालंबी
निराशी, निरुपाधि, निर्विकारी, अनंतचतुष्टयी, अक्षय, अचल, अकल,
अमल, अगम, अनामी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अज्ञेदी, अवेदी, अ
छेदी, अखेदी, असखायी, अलेशी, अनवगाही, अव्यापी, अनाश्रयी, अ

कंप, अस्खलित, अविरोध, अनाश्रव, अलख, अशोक, अलोक, लोका
लोकज्ञायक, शुरू, बुरू, स्वभावमणी, सहजानंदी, एक, असंख्य, अनंत
गुणें करी विराजमान, एवा अनंत सुखना जोगी, त्रैलोक्यना राजा, त्रैलो
क्यना पति, त्रैलोक्यस्वामी, त्रैलोक्यनाथ, त्रैलोक्यतिलक, त्रैलोक्यने विपे
मुकुट मुद्रासमान, त्रैलोक्यने विपे ठत्र समान, त्रैलोक्यने विपे सूर्यसमान
उद्योतना करनार, मिथ्यात्वरूप अंधकारना टालनार, चंद्रमानी परें शीत
लताना करनार. विषय कषायरूप बलतराना टालनार, ऋक्तवत्सल, जगन्न
यना हितकारी, जगन्नयना प्रीतिकारी, जगन्नय उपकारी, करुणासागर, ऋ
वसमुद्रथी पार उतारनार, तथा उक्तं च॥ अशोकवृद्धः सुरपुष्पवृष्टि, दिव्य
ध्वनिश्चामरमासनं च, जामंफलं दुंदुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वरा
णाम् ॥ १ ॥ ए आठ प्रातिहार्यनी संपदायें करी विराजमान तथा पूजाति
शय, वचनातिशय, ज्ञानातिशय अने अपायापगमातिशय, ए चार अतिशय
पूर्वोक्त आठ प्रातिहार्य साथें मेलवीयें तेवारें वार थाय, ते वार गुणें करी
शोभित तेमज चार अतिशय सहजनां जन्मथकी होय, अने कर्मद्वय थया
थकी अगीयार तथा देवताना करेला उंगणीश मलीने चोत्रीश अतिशयें
करी विराजमानथका एवा श्री वीर जगवान् चोवीशमा तीर्थकर ते ऋव्य
प्राणीयोने हितोपदेश करता मिथ्यात्वरूप अंधकारने चूरता थका श्री
राजगृही नगरीना उद्यानने विपे समोसखा, ते वखतें हर्ष ऋक्तियें जाविक
थका ऋवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक, ए चार निकायना देवतायें
मलीने रूप, सुवर्ण तथा रत्नमय त्रण गढनी रचना करी, तेना मध्यमां रत्न
जडित सिंहासनने विपे श्रीवीर जगवान् वेठा, मस्तकें त्रण ठत्र शोभे ठे,
चार चामर वीजाय ठे. सुर, असुर, मनुष्यमां स्त्री, पुरुष, विद्याधर, किन्नर,
गंधर्व, श्ल्यादिक सर्व पर्यदा मली, ते वखतें श्री श्रेणिकराजा पण अंतःपुर
सहित चतुरंगिणी सेना लश्ने अति प्रमोद सहित श्रीसमवसरणने विपे
आवी प्रभुने वांदीने बेठो अने वीजां पण सहु यथोचित स्थानकें वेठा.

प्रभुयें पण वाणीना पांतीश गुणें करी दिव्यध्वनियें देशना आ
पवा मांकी, ते देशना केवी होय? तो के सहशक्तिमंत अर्क माग
धी जाषामां होय, स्वर उदात्तपणे होय, मेघध्वनिनी परें होय, सर्व
वाजित्रमां मेल उचित प्रमुख गुण सहित होय, अतिविस्तारपणे होय,

त्रणे काल मलती होय, पदसापेक्षपणें होय, प्रशस्ति विशेषें होय, अक्षर पदनी चातुरी होय, मालकोश रागमां होय, श्रोतानां मनने राजी कर नारी होय, सूत्र थोडुं अने अर्थ घणो होय, विविधप्रकारें श्रोताने बोध दायक होय, नय जंग प्रमाण सहित होय, चित्तने तथा श्रोत्रेंद्रियने सुखकारी होय, यथार्थपणे सुबोधकारी होय, कारक प्रमुख सहित होय, षड्द्रव्यादिक वि जेनोशुद्धपणे होय, श्रवणशी श्रोताना रोग नाश पामे, पडढंदा उठे, परस्पर विरोध नहिं, वचनमांहे संदेह नही, वादी दूषण आपी शके नहिं, श्रोताना संदेह टखे, बाल गोपाल सर्वे समजे, कोशनां मर्म जांखे नहीं, जेमां पोताना स्तुति तथा पारकी निंदा नही, लोक प्रशंसा करे, श्रोताने आश्चर्य उपजे, अति वद्वज उड्डित नही, वचमां अंतराय पडे नहिं, श्रोतानां दुःख टाखे, जेमां ग्रामिक वचन न होय, एक योजनमां सरखी संजलाय, जेनो फलविडेद नही, सद्दुको पोत पोतानी जाषामां समजी जाय, आषाढना मेघनी परें प्रणमे, संशय छेदनकारिणी, चतुर्विधसंघमनोहारिणी, चतुर्विधधर्मप्रकाशि नी, जविजनकर्णामृतस्रवणी, सकलकुमतिविद्वाविणी, संसारसमुद्रतारिणी, सर्वसंशयनिवारिणी, सुखकारिणी, बहुल मिथ्यात्व तिमिरफुल दिनकरा नुकारिणी, एवी वाणी ते नित्य, अनित्य, एक, अनेक, सत्य, असत्य, वक्तव्य, अवक्तव्य, नाम, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, गुण, पर्याय, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, नय, निक्षेपा, कारक, प्रमाण, समवाय, द्रव्यास्तिक नय, पर्या यास्तिक नय, कर्त्ता, कारण, कार्य, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवाद, हेय, ज्ञेय, उपादेय, चौजंगी, त्रिजंगी, सप्तजंगी, अनेकजंगी, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्झारा, बंध, मोक्ष, धर्म, अधर्म, आश्रव, परआ श्रव, अतिचार, अनाचार, अतिक्रम, व्यतिक्रम, इत्यादिक सर्व गुणोपदे शिनी, सर्व जाषावबोधिनी, जगवान् देशना देता ह्वा, ते कहीयें ठैयें.

॥ अत्र गाथा ॥ जीवाजीवा पुष्पं, पावासव संवरो य निर्झरणा ॥ बंधो मुक्तो य तहा, नव तत्ता हुंति नायवा ॥१॥ श्रीवीतराग देवें त्रिगडा गढने विषे बेसीने वार पर्षदामां ए रीतें उपदेश कह्यो के:- जीवादिक नव त त्वने जे निपुण बुद्धियें करी जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें, अंतरंग सद्दे, तेने समकित्ती कहीयें, “अणुवर्णो दवं” ए श्री अनुयोगद्वार सूत्रनुं वचन ठे, वली कहुं ठे जे पद, अक्षर, मात्रा सहित शुरु सिद्धांत वांचता पठतां

अर्थ करे ठे, गुरुमुखें सही ठे, तेपण गुरु निश्चयें आत्मसत्ता उलख्या विना सर्व द्रव्य निक्षेपे ठे अने जे जाव विना मात्र एकहुं द्रव्य ठे ते पुण्यबंधनुं कारण ठे परंतु मोक्षनुं कारण नथी. एटले जे करणीरूप कष्ट तपस्या करे ठे परंतु जीव अजीवनी सत्ता उलखी नथी तेने जगवतीसूत्रमां अ वती अपञ्चरकाणी कहा ठे, तथा जे एकली बाह्य करणी करे ठे अने पोताने साधु कहेवरावे ठे ते मृषावादी ठे “ए मुणी रमवासेण” मिति श्रीउत्तराध्य यनसूत्रवचनात् ॥ तथा “नाणेण य मुणी होइ” ए वचनें जे ज्ञानी ते मु नि ठे अने अज्ञानी ते मिथ्यात्वी ठे.

तथा गणितानुयोग जे नारकी देवाता प्रमुखना बोल अथवा यति आ वकनो आचार जाणीने कोइक कहे जे अमें ज्ञानी ठैयें परंतु ते ज्ञानी कहे वाय नहिं जे द्रव्य गुण पर्यायनुं स्वरूप जाणे तेनेज ज्ञानी कहीयें. एमं श्रीउत्तराध्ययनना मोक्षमार्गाध्ययनमां कष्टुं ठे, तथा च तत्पाठः ॥ एवं पंच विहं नाणं, दवाण य गुणाण य ॥ पववाण य सवेसिं, जं नाणीहिय दंसियं ॥ १ ॥ ए वस्तु सत्ता जाण्या विना ज्ञानी नही, परंतु नव तत्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप उलखे, ते समकित्ती कहेवाय. एवा ज्ञान, दर्शन, विना जे कहे, के अमें चा रित्रीया ठैयें, ते पण मृषावादी ठे जे माटे श्री उत्तराध्ययनमां “णो दंसण णाणेण विणा ए हुंति चरण गुणा” ए वचन ठे माटे आज केटला एक ज्ञानहीन थका मात्र क्रियानो आरुंबर देखाडे ते उग ठे, तेहनो संग करवो नहिं केम के? ए बाह्यकरणी अजव्यने पण आवे ठे माटे तेउपर राचवुं नहिं.

तथा आत्मस्वरूप उलख्या विना सामायिक, पडिकमणुं, पञ्चरकाण प्र मुख जे ठे ते द्रव्य निक्षेपामां पुण्याश्रव ठे, परंतु संवर नथी. श्रीजगवतीसूत्र मां “आया खलु सामाश्यं” ए आलावाची जाणवुं. तथा जीवनुं स्वरूप जाण्या विना तप, संयम, पुण्यप्रकृति देवजवनुं कारण ठे. उक्तं च “पुवत वेणं पुवसंजमेणं देवलोए उववधंति णोचेव णं आया जावतवयाय” ए आ लावो श्रीजगवतीसूत्रमां कह्यो ठे, एवं सांजलीने शिष्य स्तुति करी पूठे ठे,

१ हे जगवंत ! एटले ज्ञानवंत, अर्थात् सर्व प्रकारें करी लोकालोकना स्वरूपना जाण ठे तेने जगवान् कहीयें. २ हे जिनराज ! तिहां जिन एटले राग द्वेष रहित एवा जे सामान्य केवली तेने विषे राजा समान तेने जि नराज कहीयें. ३ हे अलख ! एटले जेनुं स्वरूप कोइ प्रकारें लख्यामां

आवे नहीं, तेने अखख कहियें ४ हे चिदघन ! एटले चिद् कहैतां ज्ञान तेनो घन केतां समूह एवुं जेतुं स्वरूप तेने चिदघन कहियें. ५ हे चिदा नंद ! तिहां चिद् एटले ज्ञान अने आनंद एटले चारित्र, एटले ज्ञान अने चारित्रमय जेतुं स्वरूप ठे, तेने चिदानंद कहीयें. ६ हे निरंजन ! एटले जेना आत्मप्रदेशने विपे कर्मरूप अंजन नथी तेने निरंजन कहीयें. ७ हे वीतराग ! एटले वीत केतां वीत्या ठे राग अने द्वेष जेना तेने वीतराग क हीयें. ८ हे सत्चिदानंद ! एटले (सत् के०) दर्शन अने (चिद् के०) ज्ञान तथा (आनंद के०) चारित्र एटले दर्शन, ज्ञान अने चारित्रमय जेहनुं स्वरूप ठे तेने सच्चिदानंद कहियें. ९ हे अरिहंत ! एटले (अरि के०) कर्मरूप वैरी तेने अव्यथकी अने जावथकी जेणें (हंत के०) हृष्या ठे तेने अरिहंत कहियें. १० हे तीर्थकर ! एटले (तीर्थ के०) साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका रूप चतुर्विध संघ, तेनी स्थापनाना (कर के०) कर नार तेने तीर्थकर कहियें. ११ हे परमात्मा ! एटले (परम के०) उक्क ष्ट प्रण जगतने पूजवा योग्य ठे आत्मा जेनो तेने परमात्मा कहीयें. १२ हे परमेश्वर ! एटले (परम के०) उक्कष्टी (ईश्वर के०) ठकुराइ अर्थात् ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप जे लक्ष्मी, ते जेणें प्रगट करी ठे तेने परमेश्वर कहियें. ए रीतें स्तवन करीने शिष्य प्रश्न पूठे ठे.

१३ शिष्यः—नव तत्त्वमां जीवने तत्त्व कही बोलाव्यो तेनो श्यो परमार्थ ?
गुरुः—ज्ञानादिक गुणें करी चेतना सहित ठे, निश्चय नयें करी सत्तायें सिद्ध समान अने व्यवहार नयें करी शुभाशुभ कर्मनो चोकाठे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१४ शिष्यः—अजीवने तत्त्व कही बोलाव्यो तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ज्ञानादिक चेतना रूप गुणें करी रहित जड स्वभाव वालो अने जेने सुख दुःखनुं ज्ञान नथी ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१५ शिष्यः—पुण्यने तत्त्व कही बोलाव्युं तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेम साकरनुं तत्त्व मीठाश ठे, तेम एना मीठा विपाक जीव जो गवे ठे ते पुण्य कहेवाय ठे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१६ शिष्यः—पापने तत्त्व कही बोलाव्युं तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेम अफीणनुं तत्त्व कडवाश ठे तेम एना कडवा विपाक जीव जोगवे ठे ए एनुं त व जाणवुं.

१३ शिष्यः—आश्रवने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—पुण्य तथा पाप ए बे तो कस्यां आवे ठे अने आश्रव तो कस्यां पण आवे अने अणकस्यां पण आवे, जे कारणें पुण्य पापनां जे दलीयां ठे, ते आश्रवरूप ठे तैतो कस्यां आवे ठे, अने अवतिपणानां जे आश्रव ठे, तैतो अणकस्यां आवे ठे, अहीयां फरी शिष्यें पूढ्युं के अणकस्यां आश्रव केम आवे ? तेवारें गुरुयें कहुं जे एकेंद्रियने पण अवतिपणे अ हारे पाप स्थानकनां अणकस्यां आश्रव आवे ठे, एम जगवतीसूत्रमां कहुं ठे, माटे आश्रव कस्यां पण आवे अने अणकस्यां पण आवे, ए एनुं तत्त्व ठे.

१४ शिष्यः—संवरने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—आवता कर्मने रोके एटले शुच कर्मनां दलीयांने पण रोके अने अशुच कर्मनां दलीयांने पण रोके, तेषी आवता कर्मने रोके, ए एनुं तत्त्व.

१५ शिष्यः—निर्झराने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—संवर तो मात्र आवता कर्मने रोके ठे, पण निर्झरा तो अश्रिरूप ठे एटले अंतरमां पेशीने शुच कर्मनां दलीयांने पण वाली नाखे, अने अ शुच कर्मनां दलीयांने पण वाली नाखे, अर्थात् सत्तार्यें शुचाशुचनां दली यां रखां ठे, तेने निर्झरावे, ए एनुं तत्त्व जाणवुं.

१६ शिष्यः—बंधने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—शुचनां दलीयां पण बांधे, अने अशुचनां दलीयां पण बांधे, एज एनुं तत्त्व जाणवुं जे ए शुचने पण बांधे अने अशुचने पण बांधे.

१७ शिष्यः—मोहने तत्त्व कही बोलाव्यो, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—बारमे गुणगणे रांग, द्वेष, अने मोहनो द्वय कस्यो अने तेरमे गु णगणे केवल ज्ञान, केवल दर्शन अने यथाख्यातचारित्र रूप जे बद्धी ते जेणें प्रगट करी, तेने अव्यमोह कहीयें. अने जे सर्व कर्मथकी मूकाणा ते जा वमोह कहीयें. ए एनुं तत्त्व जाणवुं. ए रीतें श्री वीतराग देवें त्रिगडाने विषे बेसी बार पर्षदाने उपदेश कस्यो, ते उपदेशमां ए नवेने तत्त्व करी बोलाव्यां.

१८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां हेय एटले ठांरवा योग्य केटला तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—निश्चय नयें करी पुण्य, पाप, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जी वने ठांरवा योग्य ठे, केम के ए चारमां पुण्य जे ठे, ते शुचप्रकृतिरूप कर्मनो उदय ठे अने पाप ठे, ते अशुच प्रकृतिरूप कर्मनो उदय ठे. माटें ए वे

कर्म ठे अने ते कर्म तो जीवने मोक्षमार्गने विषे विघ्नकर्त्ता ठे, तेमाटें निश्चय नयने मत्तें करी शुभाशुभ विकाररूप जे वेदनीय कर्म ते जीवने बांधवा योग्य ठे अने व्यवहार नयने मत्तें तो एक पुण्य आदरवा योग्य ठे, केम के मोक्षनगरें जातां जीवने विघ्नना करनारा एवा जे क्रोध, मान, माया, लोभ आधि, व्याधि, जन्म, जरा, मरण, शोक, पीडा, विषय, कषाय, निद्रा, ममता, मूर्छा, अज्ञान, मिथ्यात्व, अव्रत, आदिक अनेक मोहराजाना सुप्तदो फरे ठे, ते सर्व जीवने मोक्षमार्गें जातां विघ्नकर्त्ता ठे, माटें तिहां पुण्यरूप वला वो ठावको जलो रूडो होय, तो निर्विघ्नपणे जीव, मोक्ष नगरें पहांचे, तेथी व्यवहार नयने मत्तें पुण्य आदरवा योग्य ठे केम के समकित्ती जीव एने वोला वारूप करी जाणे ठे, एटले जिनराजनां वचनमां बे नय प्रमाण ठे एमां जो कोइ एक नय उहापे, तो तेनुं वचन अप्रमाण जाणवुं.

३३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां ज्ञेय एटले जाणवा योग्य केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः— जीव अने अजीव ए बे तत्त्वनुं स्वरूप जाणवा योग्य ठे, तेवारें फरी शिष्यें पूठयुं जे जीवनुं स्वरूप शुं ठे ? तेवारें गुरु कहे ठे. नैगम अने संग्रहनयें करी सर्व जीव सत्तायें एक रूप ठे, केम के ज्ञानादिक चेतना गुणें करी सहित सर्वजीव एकरूप ठे सत्तायें सरखा सिद्ध समान ठे, माटे एक जेदें सर्व जीव कहीयें अने व्यवहार नयें करी तो जीवना चौद जेद ब्रह्मीश जेद तथा पांचशोने त्रेशठ जेद थाय ठे, तेनो विचारबाशठ मार्गणा थी धारवो, तेनी गाथा लखीयें ठेयें “गइ इंदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, जव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १ ॥ ए बाशठ मार्ग णानो यंत्र नीचें लख्यो ठे, तेथी पांचशो त्रेशठ जेदनो विवरो समजी लेवो.

तिहां पहेला कोठामां बाशठ मार्गणाना नाम लख्यां ठे, बीजा कोठामां नारकी जीवना चौदजेद मांहेला जे मार्गणाने विषे जेटला जेद पामीयें ते देखाड्या ठे, त्रीजा कोठामां तिर्यचना अदतालीश जेद मांहेला जे मार्ग णाने विषे जेटला जेद पामीयें ते देखाड्या ठे. चोथा कोठामां मनुष्यना त्रण शो त्रण जेदमांथी जे मार्गणामां जेटला जेद पामीयें ते देखाड्या ठे, पांचमा कोठामां देवताना एकशो अष्टाणुं जेदमांथी जे मार्गणाने विषे जेटला जेद पामीयें ते देखाड्या ठे. बछा कोठामां शरवाले पांचशो त्रेशठ जेदमांथी जे मार्गणायें जेटला जेद पामीयें तेना शरवाला देखाड्या ठे.

॥ अथ द्विषष्टिमार्गणायां पंचशताधिकत्रिषष्टिजीवनेदानां यंत्रमिदम् ॥

| बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम. | नारकी. १४ | तिर्यंच. ४८ | मनुष्य. ३०३ | देवता. १९८ | सर्व संख्या. १६३ |
|-------------------------------|--------------|----------------|----------------|---------------|---------------------|
| १ देवगति. | ० | ० | ० | १९८ | १९८ |
| २ मनुष्यगति. | ० | ० | ३०३ | ० | ३९३ |
| ३ तिर्यंचगति. | ० | ४८ | ० | ० | ४८ |
| ४ नरकगति. | १४ | ० | ० | ० | १४ |
| ५ एकेंद्रियजाति | ० | २२ | ० | ० | २२ |
| ६ बेंद्रियजाति. | ० | २ | ० | ० | २ |
| ७ तेंद्रियजाति. | ० | २ | ० | ० | २ |
| ८ चौरेंद्रियजाति | ० | २ | ० | ० | २ |
| ९ पंचेंद्रियजाति | १४ | २० | ३०३ | १९८ | ५३५ |
| १० पृथ्वीकाय. | ० | ४ | ० | ० | ४ |
| ११ अप्काय. | ० | ४ | ० | ० | ४ |
| १२ तैलकाय. | ० | ४ | ० | ० | ४ |
| १३ वायुकाय. | ० | ४ | ० | ० | ४ |
| १४ वनस्पतिकाय. | ० | ४१२ | ० | ० | ४१२ |
| १५ त्रसकाय. | १४ | २६ | ३०३ | १९८ | ५४१ |
| १६ मनोयोग. | ७ | ५ | १०१ | ९९ | २१२ |
| १७ वचनयोग. | ७ | १३ | १०१ | ९९ | २२० |
| १८ काययोग. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| १९ स्त्रीवेद. | ० | १० | २०२ | १२८ | ३४० |
| २० पुरुषवेद. | ० | १० | २०२ | १९८ | ४१० |
| २१ नपुंसकवेद. | १४ | ४८ | १३१ | ० | १९३ |
| २२ क्रोध. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| २३ मान. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| २४ माया. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| २५ लोज. | १४ | ४८ | ३३० | १९८ | ५६३ |

| बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम. | नारकी. १४ | तिर्यच. ४८ | मनुष्य. ३०३ | देवता. १९८ | सर्व संख्या. ५६३ |
|-------------------------------|--------------|---------------|----------------|---------------|---------------------|
| २६ मतिज्ञान. | १३ | १० | २०२ | १९८ | ४२३ |
| २७ श्रुतज्ञान. | १३ | १० | २०२ | १९८ | ४२३ |
| २८ अविज्ञान. | १३ | ५१० | ३० | १९८ | २४६२५१ |
| २९ मनःपर्यवज्ञान | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ३० केवलज्ञान. | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ३१ मतिअज्ञान. | १४ | ४८ | ३०३ | १९० | ५३५ |
| ३२ श्रुतअज्ञान. | १४ | ४८ | ३०३ | १९० | ५३५ |
| ३३ विभंगज्ञान. | १४ | १०५ | ३०१५ | १९० | २२४२०४ |
| ३४ सामायिक. | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ३५ भेदोपस्थापण | ० | ० | १० | ० | १० |
| ३६ परिहारविशुण | ० | ० | १० | ० | १० |
| ३७ यथाख्यात. | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ३८ सूक्ष्मसंपराय. | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ३९ देशविरति. | ० | ५ | १५ | ० | २० |
| ४० अविरति. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| ४१ चक्षुर्दर्शन. | ७ | ११ | १०१ | ९९ | २१८ |
| ४२ अचक्षुर्दर्शन. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| ४३ अविदर्शन. | १३ | १०५ | ३० | १९८ | २५१२४६ |
| ४४ केवलदर्शन. | ० | ० | १५ | ० | १५ |
| ४५ कृष्णलेश्या. | ६ | ४८ | ३०३ | ७२ | ४२९ |
| ४६ नीललेश्या. | ६ | ४८ | ३०३ | ७२ | ४२९ |
| ४७ कापोतलेश्या. | ६ | ४८ | ३०३ | ७२ | ४२९ |
| ४८. तेजोलेश्या. | ० | १३ | २०२ | ९०१२७ | ३१३३४३ |
| ४९ पद्मलेश्या. | ० | १० | ३० | २६ | ६६ |
| ५० शुक्ललेश्या. | ० | १० | ३० | ४४ | ८४ |
| ५१ जव्यजीव. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |

| बाशठ मार्गणा स्थाननां नाम. | नारकी. १४ | तिर्यच. ४८ | मनुष्य. ३०३ | देवता. १९८ | सर्व संख्या. ५६३ |
|-------------------------------|--------------|---------------|----------------|---------------|---------------------|
| ५२ अज्ञव्यजीव. | १४ | ४८ | ३०३।१३१ | १९०।१४० | ५३५।३३३ |
| ५३ उपशमसम० | ७ | ५ | १०१ | ९० | २०३ |
| ५४ द्वायिकसम० | ६ | ३ | ९० | ९० | १६८ |
| ५५ द्वायोपशमस | १३ | १० | २०२ | १९८ | ४२३ |
| ५६ मिश्रसमकित | ७ | ५ | १०१ | ८५ | १९८ |
| ५७ साखादन. | ७ | २१ | २०२ | १९० | ४०० |
| ५८ मिथ्यात्व. | १४ | ४८ | ३०३ | १९० | ५३५ |
| ५९ संझी. | १४ | १० | २०२ | १९८ | ४२४ |
| ६० असंझी. | ० | ३८ | १०१ | ० | १३९ |
| ६१ आहारी. | १४ | ४८ | ३०३ | १९८ | ५६३ |
| ६२ अयाहारी. | ७ | २४ | २१७ | ९९ | ३४७ |

॥ इति द्विषष्टिमार्गणायां पंचशताधिक त्रिषष्टिजीव
ज्जेदानां यंत्र समाप्तम् ॥

२४ शिष्यः—जीवने शाश्वतो कहीयें किं वा अशाश्वतो कहीयें ?

गुरुः—निश्चय नयने मत्तें जीव शाश्वतो ठे अने व्यवहारनयने मत्तें जीव अशाश्वतो ठे, केम के निश्चय नयने मत्तें जीव ठेद्यो ठेदाय नहीं अने जेद्यो जेदाय नहीं सत्तायें शाश्वतो सिद्ध समान ठे, अने व्यवहारनयने मत्तें तो एकेंझी, बेंझी, तेंझी, चौरिंझी, देवता, नारकी, मनुष्य, तिर्यच एम अनेक प्रकारें जीव, गति संबधीया जन्म करे ठे. वली तिहांथी मरण पामे ठे. वली तिहांज पाठो जइ उपजे ठे. एम अनेक प्रकारें जन्म मरणनां दुःख जोगवे ठे, माटें जीव अनेकविध ठे तेथी व्यवहार नयने मत्तें जीव अशाश्वतो कहीयें.

२५ शिष्यः—जीवनां डव्यप्राण ते शुं ? अने जावप्राण ते शुं ?

गुरुः—संग्रहनयने मत्तें तो जे गतिनुं आयु इहां बांध्युं ठे ते गतिनां डव्य प्राण कहीयें. जो देवतानुं आयु बांध्युं होय, तो तेने डव्यदेव कहीयें. तेवारें ते देवतानी गतिनां डव्यप्राण थयां, अने जो नारकीनुं आयु बांध्युं होय, तो तेने डव्य नारकी कहीयें, तेवारें नरकगतिनां डव्यप्राण थयां.

॥ हवे जावप्राण कहे ठे—जे गतिनुं आयु इहां बांध्युं हतुं ते गतिमां जइ उपयो, एटखे व्यवहारनयने मते तिहां जावप्राण प्रगट थयां माटे तेने जावप्राण कहीये. ^{कथय} अर्थात् आपणे आगळ मनुष्यगतिनुं आयु बांध्युं हतुं ते वारें तिहां मनुष्यगतिनां डव्यप्राण हतां अने इहां हमणां मनुष्यगति पणे मनुष्यमां जोगवीयें ठेये, ते जावप्राण कहीये. ए रीतें डव्यप्राण तथा जावप्राणनुं स्वरूप संग्रहनय अने व्यवहारनयने मते जाणतुं.

वली निश्चय अने व्यवहारनयने मते डव्यप्राण तथा जावप्राणनुं स्वरूप कहे ठे—एटखे हमणां इहांनी गति संबंधी जे प्राण जोगवीयें ठेये, ते डव्यप्राण कहीये. अने जे अंतरंग ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य अने उपयोग जे सत्तागतें जीवने रहां ठे, ते जावप्राण कहीये.

१६ शिष्यः—वाटे वहेतां जीवनां केटलां प्राण पामीये ?

गुरुः—डव्यथकी तो जे गतिनुं आयु बांध्युं ठे, ते गतिनां जेटलां प्राण होय, तेटलां पामीये. जो एकेंद्रियनुं आयु बांध्युं होय. तो चार प्राण पामीये, जो बेंद्री, तेंद्रीनुं आयु बांध्युं होय, तो ष, सात प्राण पामीये, जो चौरिंद्रीनुं आयु बांध्युं होय, तो आठ प्राण पामीये अने जो पंचेंद्रीनुं आयु बांध्युं होय तो नव, दश प्राण पामीये. ए रीतें डव्यथकी तो जे गतिनुं आयु बांध्युं होय, ते गतिनां तेटलां प्राण पामीये अने जावथकी आगड्युं आयुष्य जे समयें पूर्ण थयुं, ते समयें आगळी गतिनुं डव्यआयुखुं सत्ताये बांध्युं हतुं, ते जावपणे उदय थयुं एटखे वाटे वहेतां एक समय तथा बे समय लागे, ते वेलाये जाव आडखुं जोगव्युं, तेमाटे वाटे वहेतां जावप्राण एकज पामीये.

१७ शिष्यः—जीवने व्यवहारथकी नित्य कहीयें ठेयें तेमज व्यवहारथकी अनित्य पण कहीयें ठेयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जे गतिमां जीव बेठो ठे ते गतिमां व्यवहार थकी नित्य कहीये अने समयें समयें आयु घटे ठे तेणे करी व्यवहारथकी अनित्य पण कहीये.

१८ शिष्यः—जीवने निश्चैथकी नित्य कहीयें ठेयें तेमज निश्चै थकी अ नित्य पण कहीयें ठेयें तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—डव्यथकी जीव असंख्यातप्रदेशी शाश्वतो नित्य ठे, तेथी नित्य क हीये अने पर्यायथकी तो समय समय अनंतो उत्पाद व्ययरूप अगुरु लघु

पर्याय हानि वृद्धि करे ठे, माटे अनित्य कहीयें, ए रीतें निश्चयथकी नित्या नित्यनुं स्वरूप जाणवुं. एम जीवनुं स्वरूप सामान्य प्रकारें कळुं.

शिष्यः—जीवनुं स्वरूप तो कळुं पण अजीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

गुरुः—अजीवनो मूल ज्ञेद तो एक ठे अने उत्तरज्ञेद चौद ठे तथा ज्ञेदां तर तो पांचशे ने शाठ ठे तेमां पण पांचशेने त्रीश ज्ञेद तो रूपी ठे अने त्रीश ज्ञेद अरूपी ठे, एनुं विशेष स्वरूप गुरुमुखथकी जळी रीतें जाणवुं.

१६ शिष्यः—पुजल, पुजलने नथी ग्रहण करतां ते कया नयें करीने ? तथा पुजल, पुजलने ग्रहण करे ठे ते कया नयें करीने ?

गुरुः—निश्चयनयें करी पुजल परमाणुआ मळी खंध थता नथी जो निश्चयनयें करी परमाणुआ मळी खंध थता होय, तो ते खंध कोइ वारें वि खरायज नहीं अने व्यवहार नयें पुजल परमाणुआ मळी खंध थाय ठे ते पाठा विखरे पण ठे, ते माटे व्यवहारनयें करी पुजल पुजलने ग्रहे ठे अने निश्चयनयें करी पुजल पुजलने ग्रहण नथी करता ए परमार्थ जाणवो.

१७ शिष्यः—जीव पुजलने ग्रहण करे ठे, ते कया नयें करीने ग्रहण करे ठे ? अने जीव पुजलने नथी ग्रहण करतो ते कया नयें करीने ?

गुरुः—व्यवहार नयने मतें जीव, राग द्वेषरूप अशुच परिणामें करी स मय समय अनंता कर्मवर्गणाणा पुजल ग्रहे ठे अने निश्चयनयने मतें तो जीव स्वसत्ताने ग्रहण करे ठे परंतु जो निश्चय नयने मतें जीव, कर्मपुजलने ग्रहण करतो होत तो कोइकालें सिद्धि पामत नही ते माटें निश्चयन यने मतें जीव पोतानी सत्ताने ग्रहण करे ठे अने व्यवहार नयने मतें जीव, कर्मपुजलनुं ग्रहण करे ठे ए रीतें जीव तथा अजीव, ए वे तत्व ज्ञेय षटले जाणवा योग्य ठे: तेनो परमार्थ संक्षेपमात्र कळो.

१८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जपादेय षटले आदरवा योग्य केटलां तत्व ठे ?

गुरुः—नव तत्वमां त्रण तत्व आदरवा योग्य ठे, केम के जीव पोताना स्वरूपमां रमे, तेवारें संवर कहीयें अने जेवारें जीव संवरमां रहे तेवारें समय समय अनंतां कर्मनी निर्झारा करे ठे अने जेवारें निर्झारा थाय, तेवारें जीव मोक्षपद पामे माटे संवर, निर्झारा अने मोक्ष, ए त्रण तत्व जपादेय ठे.

१९ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी अव्यजीवमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—“अणुवर्णगोदवं” ए अनुयोगद्वार सूत्रनुं वचन ठे षटले शब्द

नयने मत्तें जेने स्वपरनी वेंचणरूप उपयोग वर्ततो नथी तेने अनुपयोगी द्रव्य जीव कहीयें, तेमां ठ तत्त्वपामीयें. ते मध्ये एक तो जीवतत्त्व अने सत्तायें पुण्य पापनां दळीयां अजीवरूप अनंतां लागीं रह्यां ठे, ते आश्रवचूत जाणवां. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां. अने ए दळीये जीव बंधाणो ठे माटे ठहुं बंधतत्त्व पण ठे, ए रीतें द्रव्य जीवमां नव तत्त्व मांहेलां ठ तत्त्व जाणवां.

३३ शिष्यः—नव तत्त्व मांहेला जावजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः— जावजीवमां आठ तत्त्व पामीयें. तथा नव तत्त्व पण पामियें. अने त्रण तत्त्व पण पामीयें. तेमां प्रथम आठ तत्त्व आवी रीतें पामीयेंः— के “ उवठगोचाव ” ए अनुयोगद्वार सूत्रतुं वचन ठे. एटले जे जीवने शब्द नयने मत्तें स्व परनी वेंचणरूप स्वरूपज्ञोग उपयोग वर्तें ठे, तेने उपयोगी जावजीव कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें. तेनां नाम कहे ठे. एक तो जीव अने सत्तायें पुण्य पापनां दळीयां अजीवरूप अनंतां रह्यां ठे, ते आश्रव चूत जाणवां, एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां, अने ए दळीये जीव बंधाणो ठे, माटे ठहुं बंधतत्त्व पण थयुं अने स्व परनी वेंचण करी जीव स्वरूपमां रहे, तेवारें तेने सातमुं संवरतत्त्व कहीयें. तथा जीव ज्यां सुधी संवरमां रहे, त्यां सुधी समयें समयें अनंतां कर्मनां दळीयां निर्झारावे, ते आठमुं निर्झारातत्त्व पामीयें. एम आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समजिरूढ नयने मत्तें केवलीने जावजीव कहीयें. तेमां नवे तत्त्व पामीयें. ते आवी रीतेंः— एक तो केवलीनो जीव, अने सत्तायें पुण्य पापनां दळीयां अजीव रूप अनंतां रह्यां ठे ते आश्रवप्राय जाणवां एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां. ए दळीयायें केवलीने बांधी राख्या ठे, तेथी मोक्षपुरीयें जतां रोकाणा वे, माटे ए ठहुं बंधतत्त्व जाणवुं. अने स्वसत्ता तथा परसत्तानी वेंचण करी शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या थका स्वरूपमां वर्तें ठे ते सातमुं संवर तत्त्व ठे, अने संवरमां रहेतां समयें समयें अनंतां कर्म निर्झारावे ठे, ते आठमुं निर्झारा तत्त्व ठे, अने निर्झारा थइ तेवारें वारमे गुणठाणे अज्ञान, राग, द्वेष अने मोहनी य कर्म खपावीने तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्या ठे एटले एमने द्रव्यथी मोक्ष पद कहीयें. ए नवमुं मोक्ष तत्त्व थयुं. ए रीतें नव तत्त्व पामीयें.

तथा एवंचूत नयने ममें सिद्धने जावजीव कहीयें तेमां त्रण तत्त्व पा मीयें, ते आवी रीतें:-एक तो सिद्धनो जीव पोतें जीवतत्त्व ठे, तथा यथा ख्यात चारित्ररूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे ते वीजुं सं वर तत्त्व कहीयें. अने जावमोक्ष पद पाम्या ठे, ते त्रीजुं मोक्षतत्त्व कहीयें. एम एवंचूत नयने मत्तें सिद्धजावजीवमां त्रण तत्त्व पामीयें. ए परमार्थ.

३३ शिष्य:-नव तत्त्व मांहेला मिथ्यात्वी जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरु:-मिथ्यात्वीने ड्रव्यजीव कहीयें.तेमां आगल कहांतेरीतें ठ तत्त्व पामीयें.

३५ शिष्य:-नव तत्त्व मांहेलां समकेतीजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरु:-समकेती जीवमां आठ तत्त्व पामीयें, नव तत्त्व पण पामीयें, अने त्रण तत्त्व पण पामीयें, तेमां आठ तत्त्व आवी रीतें:-शब्द नयने मत्तें स्वप रनी वेंहचण करी सत्तागतना उपयोगमां जेनो जाव वत्तें ठे, तेने समकेती जी व कहीयें. तेमां आगल जावजीवमां कहां तेज रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समजिरूढ नयने मत्तें केवली जगवान् पण द्वायिक समकेत वंत ठे तेमां आगल जावजीवमां कहां तेज रीतें नव तत्त्व पामीयें.

तथा-एवंचूत नयने मत्तें सिद्ध जगवान् पण द्वायिक समकेती ठे ते मां आगल कहां ते रीतें अहिंथां पण त्रण तत्त्व जाणी लेवां, ए रीतें नव तत्त्वमांथी समकेती जीवमां आठ, नव अने त्रण तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

३६ शिष्य:- नव तत्त्व मांहेला अजव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरु:-अजव्यजीवमां आगल ड्रव्य जीवमां कहां ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें.

३७ शिष्य:-ए नव तत्त्व मांहेला जव्य जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरु:-जव्यजीवमां ठ तत्त्व, आठ तत्त्व, नव तत्त्व अने त्रण तत्त्व पण पामीयें,ते आवी रीतें के, जे जव्यजीव मिथ्यात्वी होय, तेमां आगल ड्रव्यजी वमां कहां ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें अने जे जव्यजीव समकेती होय तेमां आगल कहां प्रमाणें आठ तत्त्व पामीयें तथा केवलीजव्यजीवमां आगल कहां प्रमाणें नव तत्त्व पामीयें अने सिद्धने पण जव्यजीव कहीयें, तेमां आगल कहां प्रमाणें त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें ड्रव्यजीव, जावजीव, मि थ्यात्वी जीव, समकेती जीव, अजव्य जीव अने जव्य जीव, ए ठ प्रकारें जीवनुं स्वरूप सामान्यें करी जाणवुं. एवुं सांजली शिष्य प्रश्न करे ठे. शिष्य:- तमें केवली जगवान्ने तथा सिद्ध जगवान्ने जव्य जीव कहां, तो हजी शुं सं

सारमां ज्ञव करवा बाकी रह्या ठे ? गुरुः—ए वचन मूर्खापणानुं बोले ठे, जे कारणे जेने पलटण स्वभाव ठे तेने ज्ञव्य स्वभाव कहीयें. अने अपलटण स्वभावने अज्ञव्यस्वभाव कहीयें माटे केवलीने तथा सिद्धने तो समय समय अनंता पर्यायनो उत्पाद व्ययरूप स्वभाव पलटाइ रह्यो ठे,तेणें करी अनंतुं सुख जोगवे ठे, तेमाटें एमां ज्ञव्य स्वभाव जाणवो.

३७ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला रूपी अजीवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीवने सत्तायें पुण्य अने पापनां दलीयां आश्रवरूप अनंतां लागं ठे, ते सर्व दलीयां अजीव ठे माटे पुण्य, पाप,आश्रव अने अजीव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीयां मली बंधाय ठे एटले पांचमुं बंधतत्त्व पण थयुं. एम रूपी अजीवमां पांच तत्त्व पामीयें.

३८ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला पुण्यमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें चार तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें जे पुण्यनां दलीयां पोतें अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां एटले पुण्य, अजीव अने आश्रव, ए त्रण तत्त्व थयां. तथा ए दलीयां मली बंधाय ठे ते चोथुं बंधतत्त्व थयुं, ए रीतें पुण्यमां चार तत्त्व पामीयें.

३९ शिष्यः—ए नव तत्त्व मांहेला पापमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीव जेवारें पाप बांधे, तेवारें चार तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें—पापनां दलीयां पोतें अजीवरूप ठे ते आश्रवरूप जाणवां एटले पाप, अजीव अने आश्रव, ए त्रण तत्त्व थयां अने ए पापनां दलीयां मली बंधाय ठे ते चोथुं बंधतत्त्व थयुं. ए रीतें पापमां चार तत्त्व जाणवां.

४० शिष्यः—नव तत्त्वमांहेला आश्रवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जेवारें जीव, आश्रवनुं ग्रहण करे, तेवारें पांच तत्त्व पामीयें, ते आवी रीतें—पुण्य अने पापनां दलीयां अजीवरूप ठे ते पण आश्रव प्राय जाणवां. एटले पुण्य, पाप,अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीयां मली बंधाय ठे, ते पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

४१ शिष्यः—नव तत्त्व मांहेला संवरमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जेवारें जीव स्वपरनी वेंचणरूप स्वभावमां आवे, तेवारें संवर कहेवाय, अने संवरमां जेटली वार जीव रहे, तेटली वार निर्झरा पण अ वश्य करे एटले जीव, संवर अने निर्झरा, ए त्रण तत्त्व संवरमां पामीयें.

૪૩ શિષ્ય:- નવ તત્ત્વ માંહેલા નિર્જ્જારામાં કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:- જેવારેં જીવ તત્ત્વાતત્ત્વ વિચારરૂપ હપયોગમાં વત્તેં, તેવારેં સંવર કહીયેં અને સંવરમાં જીવ રહે, તિહાં સુધી સમય સમય અનંતા કર્મની નિર્જ્જારા કરે ઇટલે જીવ, સંવર અને નિર્જ્જારા, ઇત્રણ તત્ત્વ નિર્જ્જારામાં પામીયેં.

૪૪ શિષ્ય:- નવ તત્ત્વમાંથી બંધ તત્ત્વમાં કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:- કોઈ જીવ કર્મ બાંધે તેવારેં પુણ્ય, પાપ અને આશ્રવ તેનાં દલીયાં હોય, તેને અજીવ કહીયેં. તે દલીયાં કર્મરૂપ મલી સર્વ બંધાય છે. ઇ રીતેં પુણ્ય, પાપ, આશ્રવ, અજીવ અને બંધ, ઇ પાંચ તત્ત્વ બંધમાં પામીયેં.

૪૫ શિષ્ય:- નવ તત્ત્વમાંથી દ્રવ્યમોક્ષપદમાં કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:- દ્રવ્યમોક્ષપદ તો અજ્ઞાન, રાગ, દ્રેષ અને મોહનીય કર્મનો બાર મે ગુણઠાણે ક્ષય કસ્યો અને તેરમે ગુણઠાણે કેવલ જ્ઞાન પામ્યા ઇવા કેવલી જગવાનુ તેને દ્રવ્યમોક્ષપદ કહીયેં, તેમાં તો ઇ નવે તત્ત્વ પામીયેં. તે આવી રીતેં:- ઇક તો કેવલી જગવાનનો જીવ તે પોતેં જીવતત્ત્વ છે અને તેને સત્તાયેં પુણ્ય પાપનાં દલીયાં અજીવરૂપ અનંતાં રહ્યાં છે, તે આશ્રવરૂપ જાણવાં. ઇટલે જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ અને આશ્રવ, ઇ પાંચ તત્ત્વ થયાં. અને ઇ દલીયે કેવલીને બાંધી રાખ્યા છે, તેણેં કરી મોક્ષમાં જતાં રોકાણા છે માટે ઠહું બંધતત્ત્વ થયું અને સ્વસત્તા પરસત્તાની વેંચણ કરી શુક્લધ્યા નના બીજા ત્રીજા પાયા વચાલેં રહ્યા થકા સ્વરૂપમાં વત્તેં છે, તે સાતમું સંવરતત્ત્વ થયું અને સંવરમાં રહેતાં સમય સમય અનંતાં કર્મ નિર્જ્જારાવે છે, તે આઠમું નિર્જ્જારાતત્ત્વ કહીયેં તથા અજ્ઞાન, રાગ, દ્રેષ અને મોહનીય કર્મ બારમે ગુણઠાણે સ્વપાવીને દ્રવ્યમોક્ષપદ પામ્યા છે, તે નવમું મોક્ષ તત્ત્વ કહીયેં. ઇ રીતેં દ્રવ્યમોક્ષપદમાં નવે તત્ત્વ પામીયેં.

૪૬ શિષ્ય:- નવ તત્ત્વમાંથી જાવમોક્ષપદમાં કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:- જાવમોક્ષપદમાં ત્રણ તત્ત્વ પામીયેં, કેમ કે જે સમસ્ત કર્મક્ષય કરીને લોકની અંતેં બિરાજમાન વત્તેં, તેને જાવમોક્ષપદ કહીયેં. તેસાં ઇક તો જીવતત્ત્વ અને યથાસ્યાત ચારિત્રરૂપ ગુણેં કરીને પોતાના સ્વરૂપમાં રમણ કરે છે તે બીજું સંવર તત્ત્વ કહીયેં અને જાવ મોક્ષપદ પામ્યા છે તે ત્રીજું મોક્ષ તત્ત્વ જાણવું. ઇ જાવમોક્ષપદમાં ત્રણ તત્ત્વ જાણવાં. ઇ રીતેં ઇ નવ તત્ત્વનું સ્વરૂપ જે જાણે, તેને જ્ઞાની કહીયેં અને જે અંતરંગ પ્રતીતિ સર્દ

हे, तेने समकेती कह्यीं. एवा समकेत सहित जे जीव ठे, तेनी सर्व करणी लेखे ठे, एतुं सांजळीने फरी शिष्य पूढे ठे.

४७ शिष्यः—ए नवतत्त्वमां मूल तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—मूलतत्त्व तो एक जीव अने बीजो अजीव ए वे तत्त्व पामीयें. तिहां जीवमां चार तत्त्व थाय, ते आवी रीतें:—जीव, जेवारें स्वसत्ता अने परसत्तानी वेंचण करी स्वरूपमां रमे, तेवारें संवर कह्यीं, अने संवरमां जीव वत्तें, तेवारें समय समय अनंतां कर्म निर्जरावे, तेथी निर्जरा तत्त्व थाय. ते निर्जरा थाय तेवारें मोक्ष पामे, ए रीतें जीव, संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए चार तत्त्व जीवमां जाणवां. अने अजीवमां पांच तत्त्व थाय ते कहे ठे.

पुण्य अने पापरूप जे आश्रवनां दळीयां ठे ते अजीव कह्यीं. अने ए दळीयां मली बंधाय ठे ते बंध कह्यीं एटले पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए रीतें अजीवमां पांच तत्त्व थाय, एटले जीवमां चार अने अजीवमां पांच मली नव तत्त्व ठे, अने मूल तत्त्व बे जाणवां.

४८ शिष्यः—पूर्वें कहेलां मूल वे तत्त्वनां उत्तर तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—गाथा ॥ जीवाजीवा पुसं, पावासव संवरो य निज्जरणा ॥ बंधो मुखो य तहा, नव तत्ता हुंति नायवा ॥१॥ अर्थः—एक(जीव के०)जीव तत्त्व बीजुं (अजीवा के०) अजीवतत्त्व, त्रीजुं (पुसं के०) पुण्यतत्त्व, चोथुं (पाव के०) पाप तत्त्व, पांचमुं (आसव के०) आश्रव तत्त्व, षडुं (संवरो के०) संवर तत्त्व, (य के०) वली सातमुं (निज्जरणा के०) निर्जरा तत्त्व, आठमुं (बंधो के०) बंधतत्त्व, नवमुं (मुखो के०) मोक्षतत्त्व, ए (नवतत्ता के०) नव तत्त्व (हुंति के०) होय ते (नायवा के०) निपुणबुद्धियें करी जाणवां. एटले ए नवतत्त्व निपुण बुद्धियें करीने जाणे, ते ज्ञानी जाणवा अने ए नव तत्त्व अंतरंग प्रतीतें करीने सर्वदे तेने समकेती जाणवा. माटें ए नव तत्त्वनुं स्वरूप अनेक रीतें जिन्न जिन्न प्रकारें गुरुमुखथी धारवुं, केम के जे प्राणीने ए जीवादिक नव पदार्थनुं जाणपणुं ठे, तेने समकेती कह्यीं अने समकेत विना अज्ञान दशायें करी सर्व करणी आंक विनानां मीमांसर खी व्यर्थ जाणवी एटले अज्ञानी जीव जीवस्वरूपना उपयोग विना द्रव्य जीव ठे “अणुवर्णगोदवं” इति अनुयोग द्वार सूत्रवचनात् ॥

एटले पूजा, प्रभावना, दान, शील, तप, क्रिया, ध्यान, स्मरण, ज्ञा

न, ए सर्व ज्ञावनिक्षेपे समकित सहित लाजकारी ठे. अहीयां कोइ कहे ठे जे मनःपरिणामदृढ करीने करीयें ते ज्ञाव कहीयें एवचन मृषा ठे. एतो सुखनी वांढायें ममत्वी पणे घणाय करे ठे परंतु ते ज्ञावमां गणाय नहीं. इहां तो जे सूत्र साखें श्री वीतरागनी आझायें हेय उपादेयनी परीक्षा करी शुजाशुज अजीव रूप जे आश्रव बंध ते उपरें (हेय के०) त्यागवुद्धि तथा जीवना स्वगुण, संवर, निर्जारा अने मोक्ष, तेने (उपादेय के०) आदरवा योग्य परिणाम ते ज्ञाव कहीयें. एटले शुजाशुजरूपी गुण ते ड्रव्य ठे, अने अरूपी गुण ते ज्ञाव ठे. एटले जे कारण मन, वचन अने कायाशी लेख्या दिकें एक चित्तें करे ठे पण ते सर्व, ड्रव्यनिक्षेपामां ठे माटे ज्ञाव विनानुं ड्रव्य ठे ते सर्व अंक विनानां मीकां सरखुं वृथा जाणवुं. ए श्री देव चंद्रजी कृत आगमसारोद्धार ग्रंथशी परमार्थ जाणवो. अत्र सूत्रपाठः ॥ ॥गाथा॥ मेरुस्त सरिसव स्तम, जितीय मित्तं तु अंतरं होइ ॥ दव्वड य ज्ञाव ह्य, अंतरमिह तत्तियं नेयं ॥ १ ॥ अर्थः—मेरुपर्वत अने सरशवना दाणा ने जेटळुं अंतर होय, तेटळुं ड्रव्य अने ज्ञावमां अंतर जाणवुं माटे समकेतज्ञावविना सिद्धपद न पामे.

श्लोक ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ ध्यानं दुःखनिधानमेव तपसां संतापमात्रं फलं, स्वाध्यायोपि हि बंधएव कुधिया तेऽजिग्रहाः कुग्रहाः ॥ अश्लाघ्या खलु दानशीलतुलना तीर्थादियात्रा वृथा, सम्यक्त्वेन विहीनमन्यदपि यत्तत्सर्वमंतर्गडुः ॥ १ ॥ अर्थः—सम्यक्त्व विना ध्यान ते दुःखनोजनिधान एटले जंमार ठे, एम जे तप ठे ते पण संतापरूप मात्र ठे अर्थात् कष्टरूप ठे, सहाय ध्यान ठे, ते पण हि इति निश्चयें एटले निश्चयनयें करीने बंदीखाना रूप ठे, (कुधिया के०) माठी बुद्धियें करीने जे कोइ अजिग्रह लेवा तेतो कुग्रह एटले माठा ग्रह बरोवर ठे तथा निश्चें दान, शील आदि देइ परिणामनी तुलना ते सर्व (अश्लाघ्या के०) अप्रशंसनीय ठे, वली तीर्थ प्रमुखनी यात्रा करवी ते पण वृथा ठे, समकेतें करीने हीनथको जो एटलां काम करे, तो ते सर्व शरीरमां गडगुंबड तुल्य ठे, एटले दुःखरूप ठे एशी कांइ गरज सरे नहीं कदापि नवग्रैवेयकें जाय, तो पण गरज सरे नहीं. समकेत विना सिद्धपद न पामे, ए परमार्थ जाणवो.

४ए शिष्यः— नव तत्त्वनां ज्ञेदांतर तत्व केटलां पामीयें ?

गुरुः— जेदांतर तत्त्व (१९६) पामीयें ॥ अत्र गाथा ॥ चउदस चउदस बाया, व्हीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ नव जेया कमे णेसिं ॥ १ ॥ अर्थः— जीव तत्त्वना चउद. जेद, अजीवना चउद, पुण्यना वहे ताळीश, पापना व्यासी, आश्रवना वहेताळीश, संवरना सत्तावन, निर्झराना बार, बंधना चार अने मोहना नव, एवं सर्व मली (१९६) जेद ठे, तेने जे दांतर कहीयें. तेनो विस्तारें परमार्थ, गुरुमुखशी जाणवो.

५० शिष्यः—नव तत्त्वमां अरूपी तत्त्व अने रूपी तत्त्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—एक जीवतत्त्व, बीजुं संवरतत्त्व, त्रीजुं निर्झरातत्त्व, चोथुं मोह तत्त्व, ए चार अरूपी जाणवां अने एक पुण्यतत्त्व, बीजुं पापतत्त्व, त्रीजुं आश्रव तत्त्व, चोथुं बंधतत्त्व, ए चार रूपी जाणवां अने एक अजीव तत्त्व मिश्र जाणवुं. उक्तं च ॥ गाथा ॥ जीवो संवर निज्जर, मुक्को चत्तारि हुंति अरूवी ॥ हवे बंधासव पुण, पावा मिस्स हुंति अजीवा ॥ १ ॥ इति ॥

५१ शिष्यः—ए नव तत्त्वना वशेने बहोतेर जेद ठे, तेमां अरूपी जेद के टला पामीयें अने रूपी जेद केटला पामीयें ?

गुरुः—धर्मास्तिकायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण जेद तथा अधर्मास्ति कायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण जेद तथा आकाशास्तिकायना खंध, देश अने प्रदेश, ए त्रण जेद अने कालनो एक जेद, ए सर्व मली दश जेद, अजीव तत्त्वना अरूपी जाणवा, अने संवरना सत्तावन जेद, निर्झराना बार जेद, मोहना नव जेद, ए सर्व मली अष्टाशी जेद अरूपी जाणवा. हवे रूपी जेद कही देखाडे ठे, पुज्जना खंध, देश, प्रदेश अने परमाणु ए चार जेद, जीव ना चौद जेद, पुण्यना वहेताळीश जेद, पापना व्याशी जेद, आश्रवना वहेता लीश जेद, बंधना चार जेद, ए रीतें सर्व मली (१८८) जेद रूपी जाणवा. एनी साथें पूर्वोक्त (८८) जेद अरूपी मेलवीयें तेवारें सर्व मली नवे तत्त्वना (१९६) जेद थाय. एटले आगला प्रश्नमां जीवने अरूपी कही बोलाव्यो ते निश्चय नयने मते जाणवो अने आ ठेकाणें नव तत्त्वना (१९६) जे दमां जीवना चौदजेद रूपीपणे गण्णा ते व्यवहार नयने मते जाणवुं ॥ गा था ॥ धम्माधम्मागासा, तिय तिय अरू अजीव दसगा य ॥ सत्तावन्नं संवर, निज्जर दुदस मुत्ति नवगा य ॥ १ ॥ अष्टासीय अरूवी, संपइ जसा मि जेय रूवीणं ॥ परमाणु देस पएसा, खंधा चउ अजीव रूवीणं ॥ २ ॥

જીવે દસ ચઢ ડુ ચઢ, બાસી બાયાલા હુંતિ ચત્તારી ॥ સય અઠાસી રૂવી,
ડુસય ઠસત્ત નવ તત્તે ॥ ૩ ॥ એ રીતે એ સૂત્રની ત્રણ ગાથા મઝ્યે (૧૭૬)
જેદમાં રૂપી અરૂપીનો વિચાર જાણી લેવો.

૫૨ શિષ્ય:-એ નવ તત્ત્વમાંથી નિગોદના જીવ આશ્રી કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:-એક તો જીવ તત્ત્વ અને સત્તાર્યે પુણ્ય પાપનાં દલીયાં તે અજીવ
રૂપ અનંતાં લાગાં ઠે તે આશ્રવચૂત જાણવાં એટલે જીવ, અજીવ, પુણ્ય,
પાપ અને આશ્રવ, એ પાંચ તત્ત્વ થયાં અને એ દલીયે જીવ વંધાણો ઠે, તે
ઠહું બંધતત્ત્વ જાણવું. એ નિગોદીયા જીવમાં ઠ તત્ત્વ જાણવાં.

૫૩ શિષ્ય:-એ નવ તત્ત્વમાંથી નરકગતિના જીવમાં કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:-નરકગતિમાં જે મિથ્યાત્વી જીવ તે આશ્રયી તો ઠ તત્ત્વ પામી
યેં, એક જીવ અને સત્તાર્યે પુણ્ય પાપરૂપ અજીવનાં અનંતાં દલીયાં આ
શ્રવચૂત થઈ લાગાં ઠે એ પાંચ તત્ત્વ થયાં અને એ દલીયે જીવ વંધાણો ઠે
તે ઠહું બંધતત્ત્વ થયું, એ રીતે મિથ્યાત્વી જીવ આશ્રયી ઠ તત્ત્વ જાણવાં અ
ને નરકગતિ મઝ્યે જે સમકેતી જીવ ઠે, તે આશ્રયી આઠ તત્ત્વ પામીયેં, એ
માં ઠ તો પૂર્વોક્ત મિથ્યાત્વી જીવની પરેં જાણવાં અને સમકેતી જીવ તત્ત્વા
તત્ત્વવિચારરૂપ સ્વપરની વેંચણ કરી સ્વરૂપમાં રહે, એટલે સંવર કહીયેં તથા
સંવરમાં જીવ રહે. તિહાં સુધી સમય સમય અનંતી નિર્જ્જરા કરે, તે નિર્જ્જરા,
એ રીતે સમકેતી જીવ આશ્રયી આઠ તત્ત્વ પામીયેં. એ પરમાર્થ જાણવો.

૫૪ શિષ્ય:-નવતત્ત્વમાંથી ઞરતદ્વેષે મનુષ્યગતિ આશ્રયી કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં.

ગુરુ:-ઞરતદ્વેષમાં સમકેતી જીવ આશ્રયી આઠ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે
જાણવાં અને મિથ્યાત્વી જીવ આશ્રયી ઠ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે જાણવાં,

૫૫ શિષ્ય:-નવતત્ત્વમાંથી માહાવિદેહદ્વેષે મનુષ્ય આશ્રયી કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં.

ગુરુ:-માહાવિદેહદ્વેષે મિથ્યાત્વી જીવ ઠે, તે આશ્રયી ઠ તત્ત્વ અને સમ
કેતિ જીવ આશ્રયી આઠ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે જાણવાં અને તિહાં કે
વલી ઞગવાન્ ઠે તે આશ્રયી નવ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે જાણવાં.

૫૬ શિષ્ય:-એ નવતત્ત્વમાંથી તિર્યચગતિ આશ્રયી કેટલાં તત્ત્વ પામીયેં ?

ગુરુ:-તિર્યચ જીવ એક રાજલોકમાં ઠે માટે સમકેતી તિર્યચ જીવ આ
શ્રયી આઠ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે પામીયેં અને મિથ્યાત્વી તિર્યચ જીવ
આશ્રયી ઠ તત્ત્વ આગલ કહ્યાં તે રીતે પામીયેં.

५५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी व्यंतर, ऋचनपति, ज्योतिषी, वैमानिक अने नवप्रैवेयकना देवगति आश्रयी देवोमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—मिथ्यात्वी देवआश्रयी ठ तत्त्व अने समकेती देव आश्रयी आ ठ तत्त्व पामीयें. एनो परमार्थ आगल कह्यो, ते रीतें जाणवो.

५६ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पंचानुत्तर देव आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः— पांच अनुत्तर विमानमां तो सर्व समकेतदृष्टि देव जाणवा माटे तेमां आगल कहां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

५७ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी ईषत्प्राग्जार नामें पृथ्वीना जीवो आश्रयी केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ईषत् प्राग्जार नामें पृथिवी ते सिद्धशिला जाणवी. तिहां निगोदी या मिथ्यात्वी जीव ठे ते आश्रयी आगल कहां, ते रीतें ठ तत्त्व पामी यें अने तिहां सिद्ध परमात्मा रह्या ठे ते आश्रयी त्रण तत्त्व पामीयें.

६० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसमकेती जीवमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्य समकेती जीव पहेले गुणठाणें कहीयें. माटे एमां मिथ्यात्वी जीवनी परें ठ तत्त्व पामीयें. कारण के देवदर्शन, पूजा, उत्सव, ऋक्ति, संघ यात्रा, साह्मीवत्सल आदिक अनेक करणी समकेतीनी करे ठे, तथा देव ते अरिहंत, गुरु ते सुसाधु अने धर्म केवलीनो जांख्यो आदरे ठे, कुदेव, कुगुरु, अने कुधर्मने परिहस्या ठे, तथापि तादृश जीव अजीवनी उलखाण करी नथी स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी नथी, नव तत्त्व अने षड्द्रव्यनुं जाण पणुं गुरु मुखें कखुं नथी माटे द्रव्य समकेती जीव पहेले गुणठाणे जाणवा.

६१ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी जावसमकेतीमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्दनयने मतें जेना परिणाम वर्त्तता होय, ते जावसमकेती जीव चोथा गुणठाणांथी मांन्दीने यावत् दशमा बारमा गुणठाणा पर्यंत जाणवा. एटले जेणें जीव, अजीव, नव तत्त्व अने षड्द्रव्यनुं जाणपणुं करी स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी ठे अने साध्य एक, साधन अनेक, जे समकेतनी करणीरूप यात्रा, दर्शन, प्रजावना, पूजा, ऋक्ति, साह्मीवत्सल, संघयात्रा, तीर्थयात्रा प्रमुख करे ठे तथा निश्चयदेव, व्यवहारदेव, निश्चयगुरु, व्यवहार गुरु, निश्चयधर्म, व्यवहारधर्म, ए रीतें जेणें सत्तागतें प्रतीति करी ठे एवा जाव समकेती जीवमां आठ तत्त्व पामीयें, एक तो जीव अने सत्तायें पुष्ट पापनां

दक्षीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां ठे ते आश्रवचूत जाणवां. एटले जीव, अ जीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व जाणवां अने ए दक्षीये जीव बंधाणो ठे, ते ठहुं बंधतत्त्व तथा जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपमां रद्दे ते सातमुं संवरतत्त्व अने संवरमां रद्दे त्यां सुधी समयसमय अनंती निर्झरा करे, ते आठमुं निर्झरा तत्त्व. ए रीतें जावसमके तिजीवमां आठ तत्त्व पामीयें तथा केवळीने समजिरूढ नयने मते जाव समकेती कहीयें. तेमां आगल क ह्या प्रमाणे नवे तत्त्व पामीयें. तथा सिरूपरमात्माने एवंचूतनयने मते जाव समकेती कहीयें. तेमां आगल क ह्या प्रमाणे त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें जावसमकेती जीवमां आठ, नव अने त्रण तत्त्व पाम्यानुं स्वरूप जाणवुं.

६१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ड्रव्यलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—ड्रव्यलिंग श्रावक तो जे ऋजुसूत्र नयने मते पद्देले गुणठाणे होय ते जाणवा जो पण तेना संसार उदासी, विषयसुखशी विरक्त जाव परिणाम वर्त्ते ठे. वैराग्य जावनायें चित्त वर्त्ते ठे. अने श्रावकना वार व्रत रूप लिंग अंगीकार कछुं ठे, तोपण तादृश जीव अजीवनी उलखाण करी नथी, तथा स्वसत्ता परसत्तानुं ज्ञासनरूप जाणपणुं कछुं नथी माटे ते जीव यथा प्रवृत्तिकरणमां वर्त्तता पद्देले गुणठाणे जाणवा. तेमां आगल क ह्यां ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें.

६२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांहे ड्रव्य श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ड्रव्य श्रावक तो समकेतीने कहियें एटले श्रावकनुं ड्रव्य ते समके ती चोथे गुणठाणें जाणवो, तेमध्ये आगल क ह्या प्रमाणे आठ तत्त्व पामीयें

६३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांहे जावश्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्द नयने मते ए समकेत सहित ठे अने श्रावकनां वार व्रतले वानो जाव उच्छ्रयो वर्त्ते ठे, एटले गुणठाणुं तो चोथुं ठे पण पांचमा गुण ठाणाना जाव वर्त्ते ठे तेने जावश्रावक कहीयें. तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावलिंग श्रावकमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—जावलिंग श्रावक पांचमे गुणठाणे कहीयें एटले आगल समकेत सहित हुता, अने श्रावकनां वार व्रत उच्चारी ते रूप लिंग जेणें पद्देखुं ठे, तेने जावलिंग श्रावक पांचमे गुणठाणे वर्त्तता कहीयें तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६६ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी ड्रव्यज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्य ज्ञानतुं जाणपणुं पहेले गुणठाणे कहीयें कारण के अन्यमतनां सर्वशास्त्र प्रत्ये जाणे ठे तथा अंतरंग उपयोग विना जैनमतनां सर्व सूत्र प्रत्ये वांचे ठे, अर्थ करे ठे, पद, अक्षर, मात्रा, शुद्धसिद्धांत, ज्ञाप्य, निर्युक्ति, टीका, वांचतां, पूढतां, अर्थ करतां, गुरुमुखें सर्दहे ठे तो पण शुद्ध निश्चयनयें आत्मसत्ता उलख्या विना तत्त्वातत्त्वरूप स्वरूपनी प्रतीति कख्या विना ए सर्व द्रव्यज्ञान, पहेले गुणठाणे कहीयें. तेमां ठ तत्त्व पामीयें.

६१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञावज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्दनयने मते समकेती जीवने ज्ञावज्ञान कहीयें तेमां आगल कख्यां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें अने समजिरूढनयने मते केवलीने ज्ञाव ज्ञान कहीयें तेमां आगल कख्यां ते रीतें नवे तत्त्व पामीयें तथा एवंचूत नयने मते सिद्धना जीव ज्ञावज्ञानी कहीयें. तेमां त्रण तत्त्व पामीयें,

६८ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी क्रोध, मान, माया अने लोचनी चोकडीमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—पहेले गुणठाणे क्रोधादिक चारनो जे जीवने उदय ठे तेमां ठ तत्त्व पामीयें अने चौथा गुणठाणाथी मांकी बछा गुणठाणा लगे क्रोधादिक चारनो जे जीवने उदय ठे तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

६९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञावलिंग आचार्यमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ज्ञावलिंग आचार्य ठे अने सातमे गुणठाणे कहीयें जे कारणे ठत्रीश गुणें विराजमान, सर्व क्रियामां तत्पर, जिनमत परमतनां जाण, सर्व समय सावधान, निश्चयव्यवहार रूप तत्त्वातत्त्वना जाण, गहनायक, गहना धोरी, पंचप्रस्थाने सेवित, सर्व सिद्धांतना जाण, पारंगामी, श्रुत उपयोगी, चरणानंदी, परमतना जीतनार, सारणावारणादिकें करी शिक्षाना दा तार, गहनी मर्यादाना राखनार, आठ प्रमादना तजनार, सात विकथाना निवारनार, स्वसत्तारमणी, परसत्ताथी विरक्त परिणाम, युगप्रधान सरखा, जव्य प्राणीने हितोपदेश करता, अनेक जीवने तारता, परवादीना मद गालवा गंधहस्ती सरखा, जव्यप्राणीना हृदयरूप आरामथकी मिथ्यात्वरूप अंधकार टालवाने विषे दीपक सरखा उद्योतना करनार, आत्मसत्ताना रसीया, अनुभवरूप अमृतकुंरुमां फीलता, साध्य एक, साधन अनेक, एवा उपयोग सहित साधन करता, अने जव्य प्राणीने पण ए रीतें उपदेश देता, तीर्थ

सात रात्रि, नगरें पांच रात्रि, ग्रामें एक रात्रि ए रीतें उग्रविहारें विचरता, खद या परदयाने विषे तत्पर, ठठे अने सातमे गुणठाणे जेना परिणामनी तुल्यता वर्त्ते ठे एवा चावलिंग आचार्यमां आगल कहां ते रीतें आठ तत्व पामीयें.

१० शिष्यः—ए तत्त्वमांथी ड्रव्यलिंग आचार्यमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—ए ड्रव्यलिंग आचार्य पहले गुणठाणे जाणीयें कारण के जेणे गुण विना आचार्यनी पदवीनुं लिंग धारण कछुं ठे, आचार्य नाम धरावी अति आम्बरें करी शोचता, मंत्र, यंत्र, जामा औषधियें करी चोला लोकोनां मन रीजवता, पत्रीबंध खोटा रूपैया सरखा, लोक पासें आपणो महिमा करा वता पूजाय ठे पण यथार्थपणे जीव अजीवनुं जाणपणुं कछुं नथी अने अंतरंग निश्चयनयें आत्मसत्ता जेणें उलखी नथी तेहने ड्रव्यलिंग आचार्य कहीयें तेमां आगल मिथ्यात्व गुणठाणे कहां ते रीतें ठ तत्व पामीयें.

११ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ड्रव्य आचार्यमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—साधु पणामांथी आचार्यपणुं नीपजे ठे, ते करण माटे आचार्यनुं ड्रव्य ते साधु कहीयें अने साधु तो ठठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता होय तेमां आगल समकेति जीवमां कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें.

१२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी चावआचार्यमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—आचार्यनुं ड्रव्य ते साधु होय, परंतु ते गुणें करी आचार्यपदवीने योग्य, वैरागी, त्यागी होय, यद्यपि आचार्य तो नथी तथापि आचार्यना गुणें करी शोजे ठे. अने आचार्य पदवी खेवानो चाव वर्त्ते ठे तेने चाव आचार्य कहीयें. ते ठठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता होय तेमां आठ तत्व पामीयें.

१३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ड्रव्य अरिहंतमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—जे अरिहंतनो जीव आगल त्रीजे जवें एकाग्रचित्तें करीने एक पद आराधे, अथवा वीश स्थानक पद आराधे तथा एवी चावना जावे जे सर्व जगतना जीवने शासनना रसीया करी धर्म पमाडी कर्मथकी मूकावुं? अने सर्व जीवने सुखीया करी मोक्ष नगरें पहाँचाहुं ? एवा प्रकारनी उत्तम चावना चावी श्रेणिकाहि प्रमुखें जिननाम कर्म पुण्य उपाज्युं त्यां थकी मांकीने ज्यां लगें केवलज्ञान न उपन्युं होय, त्यां लर्में बद्धस्थ अवस्थायें ड्रव्यअरिहंत कहीयें तेमां आगल कहां ते रीतें आठ तत्व पामीयें.

१४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी चाव अरिहंतमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—जाव अरिहंतमां नव तत्त्व पामीयें, ते कहे ठेः—जे देवलोकथी अथवा नरकथकी चवी त्रण ज्ञान सहित मातानी कुखने विषे उपजे, पठी जन्मावसरें ठप्पन्न कुमारिका महोत्सव करे, तेवार पठी सौधमेंद्र माता पा सेंथी मागी पांच रूपे करी अति आरुंवरें मेरुजपर लइ जाय तिहां सिंहासन उपर खोले बेसाडी चोशठ इंद्र मली महोत्सव करी पोतानो आत्मा निर्मल करे. पठी पाठा लइ आवी माताजीने आपे, वालावस्थायें क्रीडा करता पठी यौवनावस्थायें माता पिता परणावे, तथापि उदासी जावें संसारनां सुख विलसे. पठी समय अवसरें लोकांतिक देवताने वचने वैराग्य जाव नायें संसार उदासी विषय कषायथकी विरक्तजावें दीक्षा लेवाने मनोरथें दिनप्रत्यें एक क्रोड अने आठ लाख सोनैयानुं दान एक वर्ष पर्यंत आपी अति आरुंवरें दीक्षा अवसरें स्वयमेव पोताने हाथे लोच करे, ते वेलायें चो थुं मनःपर्यव ज्ञान उपजे, पठी एकलमहूपडिमा आदरी जगतमां विहार करता, गाम, नगर, अटवीमां फरता, घोर उपसर्गने सहन करता, अघोर तपें करी कर्मने चूरता, शुक्लध्यानना पायाने ध्यावता, शुद्ध निश्चयनयें करी आत्मसत्ताने गवेषता, आत्मसत्ताना रसीया, अनुचवरूप अमृत कुंभमां जीलता, शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणामें करी घातीकर्मने चूरी केवलज्ञान रूप अनंत चतुष्टय लक्ष्मी जेवारें प्रगट थाय, तेवारें त्रण जवनने विषे उद्योत थयो तेवखत नारकीना जीवने पण एक मुहूर्त शाता थाय. पठी त्रिगडाने विषे वेसीने चतुर्विध संघनी स्थापना करी वार पर्यदाने धर्मदेशना देता, अनेक जीवने तारता, पांत्रीश वाणीरूप मधुरध्वनियें करी ज्ञानप्राणीना मन हरता, कोडीगमे देवतायें सेवित, चोत्रीश अतिशयें करी विराजमान, आठ महाप्रातिहार्यें करी शोजता, अनेक जीवने संसारसमुद्रथकी तारीने मोक्ष नगरें पहुँचाडता, सुखना दातार, दयाना चंकार, करुणाना समुद्र, जूमंरुलने विषे अज्ञानरूप अंधकार चूरवाने सूर्यसमान जाणवा. एवा अरिहंतदेव शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या तेरमे गुणठाणे वर्चता कहीयें. तेमां आगल कहां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें.

१५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ड्रव्यसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—सिद्धनुं ड्रव्य ते केवली कहीयें केम के केवलीमांथी सिद्धपणुं नी पजे ठे माटे केवलीमां आगल कहां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें ?

१६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावसिद्धमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जावसिद्धमां त्रण तत्त्व पामीयें. केम के शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणाम रूप कपकश्रेणीयें करी आत्मप्रदेशकरी कर्मावरणने चूरी जेणें स्वसत्ता निरावरण करी लोकने अग्रजागें बिराजमान, अनंत ज्ञानमय, अनंतदर्शनमय, अनंतचारित्रमय, अनंतवीर्यमय, अनंतदानमय, अनंतलाजमय, अनंतजोगमय, अनंत उपजोगमय, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अविनाशी, अचलित, अस्खलित, अयोगी, अवेदी, अमोही, अलेशी, अणाहारी, अशरीरी, अरक्षक, अव्यापक, एक, असंख्य अनंतगुणें करी बिराजमान, परमानंद सुखना विलासी, एवा जावसिद्ध प्रभु तेहमां त्रण तत्त्व पामीयें. एक तो सिद्धनो जीव ते जीवतत्त्व अने यथा ख्यात चारित्र रूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे ते वीजुं संवर तत्त्व कह्यीयें अने जावमोक्ष पदवी पाम्या ठे ते वीजुं मोक्षतत्त्व जाणवुं.

१७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यचारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्यचारित्री जीव पहेले गुणठाणे होय तेमां ठ तत्त्व पामीयें, केम के संसारथकी उदासीजावें जेणें पांच महाव्रत रूप चारित्र अंगीकार कखुं ठे, उकायनी रक्षा करे ठे, सूजतो आहार लीये ठे, साधुनी क्रिया, पढिक्रमणुं, पढिलेहण आदिक करे ठे, निरंतर वैराग्यजावनायें परिणाम व चें ठे, पण यथार्थ पणे जीव अजीवनी उलखाण करी नथी, अने शुद्धनिश्चयनयें अंतरंग सिद्धसमान आत्मसत्ता उलखी नथी, अने नरकनिगोदनां दुःखथकी बीहीतो थको अंतरंग पुण्यादिकनी वांठायें निरतिचार पणे चारित्र पाळे ठे, पण यथार्थ साध्य साधन पणानी उलखाण नथी; तेने द्रव्य चारित्र पहेले गुणठाणे जाणवुं. तेमां आगल कहां, ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें.

१८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावचारित्रमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—शब्दनयने मत्तें जावचारित्रवंत जीवमां आठ तत्त्व पामीयें. जे कारणें कोइ जीवें घर, कुटुंब, परिवार, पुत्र, कलत्र, धन, माल, बत्ती कृद्दिने त्यागी, चारित्र अंगीकार कखुं ठे, पांच समितियें समितो, त्रण गुप्तियें गुप्तो, आठ प्रवचनमाताने पाळे ठे, सत्तर जेदें संयम आराधे ठे, सूजतो आहार लीये ठे. मांखलाना पांच दोष टाळी आहार करे ठे, सांज सवारें पढिक्रमणुं पढिलेहणादिक क्रिया करे ठे, संग्रहनयने मत्तें सर्व जी

वने पोतानी आत्मसत्ता वरोबर करी जाणी तेहनी दया पावे ठे, संसार उदासी, वैरागी, त्यागी जावनायें परिणाम वत्तें ठे अने जीव, अजीव, नवतत्त्व, षड्द्रव्यना गुणपर्याय, नित्य अनित्यादिकनुं जाणपणुं कळुं ठे तथा नव निक्षेपा, प्रमाण, द्रव्य, जाव, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवादनुं स्वरूप जाणी, जीवसत्ताने घ्यावे ठे, अने अजीवसत्तानो त्याग करे ठे, ए रीतें जेणें स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करी ठे. शुद्धनिश्चयनयें करी जेणें सिद्धसमान पोताना आत्माना प्रतीति करी ठे, साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें पोताना अत्माने साधतां ठे सातमे गुणठाणें जे जीव वत्तें ठे, तेने शब्दनयने मत्तें जावचारित्रीयो कहीयें. तेमां आगल कहां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. अने समजिरूढनयने मत्तें केवलीने पण जावचारित्र कहीयें. तेमां आगल कहां ते रीतें नव तत्त्व पामीयें. तथा एवंचूतनयने मत्तें सिद्धना जीवने पण जावचारित्र कहीयें. तेमां आगल कहां ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

७९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसाधुमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—साधुनुं द्रव्य ते श्रावक पांचमे गुणठाणे जाणवो, एटले श्रावकमांथी साधुपणुं नीपजे ठे, माटे द्रव्यसाधु ते पांचमे गुणठाणे श्रावकने कहीयें, तेमां आगल कहां ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें.

८० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जावसाधुमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जावसाधुमां, आठ तत्त्व पामीयें, कारण के जे जीवें समकेत सहित श्रावकनां वार व्रत उच्चर्यां ठे अने संसारथकी उदासी वैराग्यरूप परिणामें वत्तें ठे अने निरंतर साधुपणुं लेवानी जावनायें चित्त रमे ठे. तथा एवुं चिंतवे ठे जे संसाररूप बंदीखानाथी केवारें हुं बूटीश ? अने निर्विकारी पदनुं आपनार एवुं साधुपणुं केवारें हुं अंगीकार करीश ? अने एकाकी पणे विहार करी कांस मसादि तथा देव मनुष्योना करेला घोर उपसर्ग केवारें सहन करीश ? महातप तपी इंद्रियरूप शत्रुने दमन करी सर्वकर्मने चूरी महारो आत्मा केवारें निरावरण करीश ? ज्ञानरूप अनंत चतुष्टय लक्ष्मी केवारें प्रगट करीश ? एवुं साधुपणुं मने केवारें उदय आवशे ? आ संसाररूप हडमांहेथी नीकली वनमां एकाकी पणे निर्जयथको सिंहनी परें केवारें हुं विचरीश ? ते जीव गृहस्थपणे रह्यो थको पण ऋजुसूत्र नयने मत्तें जावसाधु जाणवो, अने शब्दनयने मत्तें अंतरंग स्वसत्ता परसत्तारूप प्रतीति करी

हे एतले गृहस्थपणे पांचमे गुणगणे ठे, पण मनोरथ ठठा सातमा गुण गणाना वर्त्ते ठे, माटे एने जावसाधु कहीयें तेमां आठ तत्व पामीयें ?

८१ शिष्यः—ए नव तत्वमांशी ड्रव्यलिंग साधुमांहे केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—ड्रव्यलिंग साधु पहेले गुणगणे होय, तेमां आगल कद्यां ते रीतें ठ तत्व पामीयें. कारण के कोइ जीवें नरक निगोदनां दुःखयकी नय पामीने अथवा देवेंद्र नरेंद्रनी कृद्धि देखीने तेनी वांढायें मोहगृहीत वैराग्यें अथवा आ जवें इंद्रियसुखनी वांढायें चारित्ररूप लिंग अंगीकार कखुं ठे, पांच महाव्रत सूधां पाळे ठे, इंद्रिय दमे ठे, परिसहना उपसर्गने सहन करे ठे, पडि बेहणादि क्रिया शुरु करे ठे, ठता जोग तज्या ठे, वैराग्यजावें चित्त वर्त्ते ठे, पण तादृश जीव अजीवनुं जाणपणुं कखुं नथी. अने अंतरंग पुण्यादिकनी वांढारूप परिणाम वर्त्ते ठे तथा निश्चयनयें सत्तागतनी उलखाण नथी. तेणें करी तेने ड्रव्यलिंग साधु व्यवहारनयने मतें कहीयें. ने ते संसारी जाणवा.

८२ शिष्यः—ए नव तत्वमांशी जावलिंग साधुमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीवें संसार थकी उदासिजावें राजकृद्धि, धन, माल, ठांकी कु दुंब, परिवारनो मोह मूकी, संसाररूप चारगति थकी उदासी परिणामें चारित्र रूप लिंग अंगीकार कखुं ठे तेहने निवृत्तिचारित्र कहीयें. एतले ते जीव संसार थकी निवृत्त्यों ठे अने प्रवृत्ति चारित्र ते जे साधुनी क्रिया, पडिक्कमाणुं, पडिलेहण आदि शुरु रीतें करे ठे तेने प्रवृत्ति चारित्र कहीयें, पांच महाव्रत सूधां पाळे ठे, आ जवें तथा परजवें इंद्र नरेंद्रना सुखनी वांढा रहित एक पो तानो आत्मा निरावरण करवाने वास्ते तथा पोताने जन्म भरणां दुःख थकी मूकाववा निमित्तें एक पोताना आत्मानुंज साधन करे ठे ते प्रवृत्ति चारित्र कहीयें अने जीव, अजीव, नव तत्व, षड्द्रव्य, नय, निक्षेपा, ड्रव्य, जाव, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवादनुं स्वरूप जाणी स्वसत्ता पर सत्तानी जेणें प्रतीति करी ठे, शुरुनिश्चय नयें करी पोताना आत्मानी सत्ता जेणें उलखी ठे, साध्य एक तेने कर्मथकी रहित निरावरण कर वानां, साधन अनेक करणीरूप, ए रीतें पोताना आत्मस्वरूपने साधे, तेने शब्दनयने मतें ठठे सातमे गुणगणे वर्त्तता जावलिंग साधु कहीयें. तेमां आठ तत्व पामीयें. ते आवी रीतें—एक तो तेनो जीव पोतें जीव तत्व ठे अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां ठे ते आ

श्रवचूत जाणवां. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप अने आश्रव, ए पांच तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो ठे, ते ठहुं बंधतत्त्व थयुं अने तत्त्वातत्त्व स्वरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपमां रहे, एटली वार संवर कहियें. ते सा तमुं संवर तत्त्व तथा संवरमां जीव रहे तिहां सुधी समयसमय अनंती निर्झरा करे, ते आठमुं निर्झरा तत्त्व जाणवुं एणी रीतें चावलिंग साधुमां आठ तत्त्व जाणवां. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहियें, अने अंतरंग सर्दहे तेने समकेती कहियें ॥ इतिश्री बालबुद्ध्यवबोधार्थ नवतत्त्वमयप्रश्नोत्तराणि समाप्तानि ॥ हवे नव तत्त्वना स्वरूपमां मांहोमांहे संबंधनो विचार जाणवा रूप प्रश्नोत्तर लखियें ठैयें.

७३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शत्रुरूप पांच तत्त्व जाणवां कारण के जीवने एकेक प्रदेशें पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां लाग्यां ठे ते आश्रवचूत जाणवां एटले पुण्य, पाप, अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीये जीव बंधाणो थको चारगतिरूप संसारमां अनंता काल थया रखडे ठे माटे पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं. ए रीते ए पांच तत्त्व जीवने शत्रुचूत थइने अनादि कालनां लागं ठे तेषें करी जीव, चारगतिरूप संसारमां परित्रमण करे ठे माटें ए नव तत्त्वमां जीवने पांच तत्त्व, शत्रुरूप जाणवां.

७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने वोलावारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—पुण्य प्रमुखरूप चार तत्त्व जीवने वोलावा समान जाणवां ते देखाडे ठे. एक तो पुण्यतत्त्व ठे ते व्यवहारनयने मत्तें आदरवा योग्य ठे, केम के ए पुण्य ठे ते जीवने मोक्ष नगरें जातां वोलावा रूप ठे, कारण के जवरूप अटवीमां चोराशी लाख जीवायोनिरूप ग्रामने विषे जन्म, जरा, मरण, जय, शोक, पीडा, आधि, व्याधि, माया, मोह, मूर्छा, मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय आदिक अनेक मोहराजाना मूकेला सुजट ते जीवने मोक्ष नगरें जातां विघ्नकर्ता ठे, माटे तिहां पुण्यरूप वोलावो जीवने ठावको सहायकारी होय तो जीव, निर्विघ्नपणे मोक्षनगरें पहुँचे तेषी पुण्यतत्त्व व्यवहारनयने मत्तें जीवने आदरवा योग्य ठे, एटले समकेती जीव ठे ते पुण्य तत्त्वने वोलावा रूप करी जाणे ठे, पण अंतरंग निश्चयें आत्माना गुणरूप पुण्यने नथी जाणतो. जेम कोइ नगरें जावुं होय अने मार्गमां जय घणो होय, तेवारें वा

टमां बोलावो लीधो जोइयें, केमके बोलावो लीधा विता निर्विघ्न पणे प होंचाय नहिं अने जेवारें वांबितपुर नगरें पहाँचे तेवारें बोलावाने शी ख आपे. ते दृष्टांते अहीयां जीवने मोक्ष नगरें जावुं ठे अने मागें मोह राजाना सुजटोनो जय घणो ठे, जेथी पुण्यरूप बोलावो जो साचो ठावको होय, तो निर्विघ्नपणे जीव, मोक्ष नगरें पहाँचे, ए परमार्थ जाणवो. मा टे कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें चार तत्त्व जेलां आवे, ते आवी रीतें:—जे पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप ठे, अने ए दलीयां बंधाय ठे, एटले पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां. ए रीतें ए नव तत्त्वमां व्यवहारनयने मत्तें पुण्यतत्त्व जीवने बोलावा रूप आदरवा योग्य ठे.

७५ शिष्य:—ए नव तत्त्वमांथी जीवने वाणोतर रूप केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरु:—ए नव तत्त्वमांथी एक निर्झरा तत्त्व जीवने वाणोतर रूप जाणवुं. जेम के कोइ एक साहुकार घणोक करजें वीटाणो होय तेणें करी दुःखी थयो होय, पण तेने वाणोतर ठावको मळो होय तो शेठने करजथकी ठोडावे अने नवी कमाणी करी आपे, तेम इहां जीव घणा कालनो कर्मरूप करजें वीटाणो महादुःख जोगवतो थको संसार मां फरे ठे, एम फरतां फरतां जवस्थितिने योगें करी सकाम निर्झरा रूप वाणोतर जीवने मळे, तेवारें सर्वकर्मरूप कारजथकी जीवने ठोडावे, अ ने ज्ञानादिक गुणरूप अनंती लक्ष्मी जीवने प्रगट करी आपे.

७६ शिष्य:—ए नव तत्त्वमांथी जीवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीमें?

गुरु:—ए नव तत्त्वमांथी एक संवर तत्त्व जीवने मित्ररूप जाणवुं. कारण के घणा काल थया संसारमां जीव दुःख जोगवे ठे, ते दुःख जोगवतां जोग वतां रखडतां रखडतां पुण्यरूप बोलावो जीवने सहायकारी थयो, तेवारें निर्विघ्नपणे जीवने संवररूप मित्रने घरे पहाँचाळ्यो, ते संवररूप मित्रने घरे जीव पहाँच्यो, तेवारें संवररूप मित्रें पुण्य पापरूप जे दलीयां नवा कर्मनां आश्रव आवतां हतां ते सर्व रोक्यां, ए रीतें एक अंतर मुहूर्त्त पर्यंत संवररूप मित्रना घरमां रहेतां घातिकर्म क्षय करी अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्यआदि देइ अनंत गुणरूप लक्ष्मी जीवने संवररूप मित्रनी सहायें प्रगट थाय, माटे संवर तत्त्व जीवने मित्ररूप जाणवुं.

७७ शिष्य:—ए नव तत्त्वमांथी जीवने धररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने एक मोक्षतत्त्व धररूप जाणवुं. कारण के पुण्य पापरूप अजीवनां दलीयां अनंतां सत्तायें आश्रवञ्चूत थइ लागां ठे, तेषैं करी जीव बंधाणो ठे, तेथी संसाररूप चार गतिमां फरे ठे, एटले पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व जीवने अनादि काल नां शत्रुरूप थइ लागां ठे, तेषैं करी जीव अनेक प्रकारें विटंवना जोग वे ठे, एम संसारमां फरतां फरतां पुण्यरूप बोलावानी सहायें करी जव स्थितिने योगें जीव संवररूप मित्रने घरे पहुँच्यो, तेवारें संवर रूप मित्र वारणुं रोकी वेठो, एटले पुण्य पाप रूप नवा कर्मना आश्रव जीवने सम यें समयें अनंतां दलियां आवतां हतां, ते दलीयां सर्वें रोकाणां अने तेथी आगल जीवने एकेक प्रदेशे अनंती कर्मनी वर्गणाना थोकडा लागा हता, तेने निर्झरारूप वाणोतरें अंतरमां पेशी वालवा मांक्या. ए रीतें एक अंतर मुहूर्त आत्मस्वरूपनां ध्यानमां रहेतां घाती कर्म क्षय करी ज्ञानादि अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, पठी अनेक जीवने धर्मदेशना दइ संसारथकी निस्तारी घाती कर्म खपावी, जीव अने संवर रूप मित्र ए वे तत्त्व मोक्षपुरी पहुँचे, माटे जीवने मोक्षतत्त्व धररूप जाणवुं.

७७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी रूपी अजीवनेमित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—अजीवने मित्र रूप पांच तत्त्व जाणवां, केमके पुण्य पापनां दलीयां आश्रव रूप ते अजीव ठे, अने ए दलीयां मली बंधाय ठे, माटे पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध ए पांच तत्त्व, रूपी अजीवने मित्र रूप ठे.

७८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी अजीवने शत्रुरूप एक निर्झरा तत्त्व जाणवुं. कारण के सकाम निर्झरा गुण जेवारें जीवने आवे, तेवारें अजीवरूप पांच तत्त्वनां दलीयां सत्तायें अनंतां रह्यां ठे, तेने वालीने क्षय करी नाखे, माटे.

७९ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवने रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं, कारण के शब्द अने समञ्जिरूढ नयने मते संवरगुण जीवने आवे, तेवारें पुण्य, पाप, अजीवरूप आश्रवनां दलीयां आवतां रोकाय ठे, माटे.

८१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीव, केटलां तत्त्वने रोकी शके ?

गुरुः—अजीव एकजजीव तत्त्वने रोकी शके, कारण के जीवने एकेक

प्रदेशों अनन्तां कर्मरूप दलीयां अजीवनां लागां ठे, तेणें करी जीव, मोक्ष नगरें जातां रोकाणो ठे, माटे अजीव एक जीवतत्त्वने रोकी शके ठे.

ए१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अजीवें केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमां अजीवें एक मोक्षतत्त्वनुं घर दीतुं नथी, कारण के जीव, जेवारें मोक्ष नगरें पधारे, तेवारें कर्मरूप अजीवनां दलीयां सत्तायें अनन्तां लागां हतां, ते सर्व शुद्ध ध्यानरूप अग्नियें करी वाली क्षय करीने मोक्ष नगरें पधारे ठे, माटे अजीवें एक मोक्षतत्त्वनुं घर दीतुं नथी.

ए२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने मित्ररूप चार तत्त्व पामीयें ते कहे ठे, पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीयां मली बंधाय ठे, एटले बंध थयो माटे पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां, एटले कोइ जीव पुण्य बांधे, तेवारें ए चार तत्त्व मित्ररूप साथें आवे, माटे.

ए३ शिष्यः—ए एव तत्त्वमांथी पुण्यने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने शत्रुरूप एक निर्जरा तत्त्व जाणवुं, कारण के जेवारें सकाम निर्जरा गुण जीवने आवे, तेवारे पुण्यनां दलीयां जे सत्तायें बांध्यां ठे, ते खपावीने, जीव मोक्ष नगरे पहुँचे, माटे.

ए४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यनां प्रतिपद्दीरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—पुण्यनुं प्रतिपद्दी एक पाप तत्त्व जाणवुं. कारण के जे समयें शुच परिणामें जीव पुण्यनां दलीयानुं ग्रहण करे ठे, ते समयें पापनां दलीयानुं ग्रहण नथी, कारण के एक समयें बे क्रिया न होय ए परमार्थ ठे.

ए५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्यने रोकवा रूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पुण्यनां दलीयां रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं कारण के शब्द नयने मते जे समय जीव स्वरूप चिंतनरूप संवरमां आवे, ते समय नवा कर्मरूप दलीयानुं ग्रहण नथी, माटे पुण्यने संवर रोके ठे.

ए६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्य केटलां तत्त्वने रोकी शके ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी मोक्ष नगरे जतां एक जीव तत्त्वने पुण्य रोकी शके ठे, केम के पुण्यनां दलीयां सत्तायें निकाचित बांध्यां होय, ते संपूर्ण जोगव्या विना केवली जगवान् पण मोक्ष नगरे जइ शके नहीं, माटे.

ए७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पुण्य केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पुण्ये एक मोक्ष नगरनुं घर दीतुं नथी. केम के मोक्ष नगरें जातां जीवने पुण्यनां दक्षीयां साथें जतां नथी, जेवारें पुण्यनां दक्षीयां सर्व खपावी रहै, तेवारेंज जीव, मोक्ष नगरें पहुँचे ठे, तेमाटें.

एण शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापने मित्ररूप चार तत्त्व जाणवां. कारण के पाप नां दक्षीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दक्षीयां मली बंधाय ठे, ऐटले बंध कहीयें माटे पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व थयां. एटले कोइ जीव पाप बांधे, तेवारें ए चार तत्त्व जेलां आवे.

१०० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापने शत्रुरूप एक निर्जारा तत्त्व जाणवुं. कारण के जेवारें सकाम निर्जारा गुण जीवने आवे तेवारें पापनां दक्षीयां जे सत्तायें अनंतां लागीं ठे, तेने वालीने ह्य करे, माटे पापनुं शत्रु निर्जारा ठे.

१०१ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापनां प्रतिपक्षी रूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पापनुं प्रतिपक्षी रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं, कारण के जीव जे समये अशुभ परिणामें पापनां दक्षीयानुं ग्रहण करे ठे, ते समयें पुण्यनां दक्षीयानुं ग्रहण नथी, केम के एक समयें बे क्रिया न होय, ए परमार्थ ठे, माटे नव तत्त्वमां पापनुं प्रतिपक्षी रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं.

१०२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापने रोकवारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पापनां दक्षीयां रोकवा रूप एक संवर तत्त्व जाणवुं. कारण के शब्द नयने मतें जे समयें जीव स्वरूपना चिंतनरूप संवर मां आवे, ते समय नवा कर्मरूप दक्षीयानुं ग्रहण नथी माटे.

१०३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने पाप रोकै शके ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी मोक्ष नगरें जातां एक जीव तत्त्वने पाप रोकै शके ठे, कारण के पापनां दक्षीयां निकाचित पणे सत्तायें बांध्यां होय, ते खपाव्या विना कोइ जीव, मोक्षनगरें पहुँचे नहीं.

१०४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी पापें केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी पापें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीतुं नथी कारण के मोक्ष नगरें जातां जीवने पापनां दक्षीयां साथें आवतां नथी, एटले शुभा

शुच विकाररूप पुण्य पापनां दलीयां सत्तायें रक्षां ठे, ते खपाव्या विना कौंइ जीव मोक्ष नगरें पहुँची शके नही.

१०५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने मित्ररूप पांच तत्त्व पामीयें. कारण के पुण्य पापनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां. अने ए दलीयां मली बंधाय ठे, ते बंध कहीयें. एटले पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्व आश्रवने मित्ररूप जाणवां.

१०६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने शत्रुरूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी आश्रवने शत्रुरूप एक निर्झरा तत्त्व पामीयें. कारण के जेवारें सकामनिर्झरा गुण जीवने आवे, तेवारें आश्रवनां दलीयां सत्तायें अनन्तां रक्षां ठे, तेने बालीने क्षय करे, माटे ते शत्रुरूप जाणवुं.

१०७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवने रोकवारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी आश्रवने रोकवारूप एक संवर तत्त्व जाणवुं. केम के शब्दनयने मतेँ जे समय जीव सत्तागतना चिंतनरूप संवरमां आवे, ते समयें शुचाशुच विकाररूप आश्रवनां दलीयांने आवतां रोके, माटे.

१०८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने आश्रव रोक़ी शके ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक जीव तत्त्वने आश्रव रोक़ी शके, कारण के आश्रवनां दलीयां शत्रुरूप थइने जीवने सत्तायें लागं ठे, तेणें करी जीव, मोक्ष नगरें जातां रोक़ाणो ठे, माटे एक जीव तत्त्वने आश्रव रोक़े ठे.

१०९ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी आश्रवें केटलां तत्त्वतुं घर दीतुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवें एक मोक्ष तत्त्वतुं घर दीतुं नथी, कारण के मोक्षनगरें जातां जीवने शुचाशुच विकाररूप आश्रवनां दलीयां साथें आवतां नथी, माटे नव तत्त्वमां एक मोक्ष तत्त्वतुं घर आश्रवें दीतुं नथी.

११० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी संवरने मित्ररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—संवरने मित्ररूप एक जीवतत्त्व जाणवुं. कारण के जीव, मोक्ष नगरें जाय, तेवारें संवरतत्त्व मित्ररूप ठे, तेने साथें खेतुं जाय. एटले मोक्षमा जीवने यथाख्यात चारित्ररूप संवरतत्त्व सदा काल साथें वर्ते ठे, माटे.

१११ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने संवर रोक़ी शके ठे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी पांच तत्त्वने संवर रोक़ी शके ठे, कारण के शब्द

अने समजिरूढ नयने मते जेवारें जीवने शुक्लध्यानरूप संवर गुण आवे, तेवारें शुजाशुच नवां कर्म रूप पांचे तत्त्वनां आश्रव रोकाय, एटले संवर तत्त्वनुं ए लक्षण ठे, जे आवता कर्मने रोके, माटे ए नव तत्त्वमांथी पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्त्वने संवर रोके ठे.

११२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक निर्झारा तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति जाणवी, कारण के जीव घणां कर्में करी विंटाणो थको अनेक प्रकारनी पीडा पामतो पामतो दुःख विटंबना सहेतो, रखडतो, रखडतो, पुण्यरूप बोलावांनी सहायें जवस्थितिने योगें करी संवररूप मित्रने घरे पहाँच्यो, एटले संवर अने निर्झारा, ए बे तत्त्वे साथें मल्ली जीवने कर्मथकी ठोडाव्यो, अने ज्ञानादि अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी. पठी जीव अने संवर, ए बे तत्व मित्ररूप ठे, माटे मोक्षपुरीमां साथें गयां. अने संवरने निर्झारातत्त्वनी साथें प्रीति हती तो पण निर्झाराने मूकी अने जीवतत्त्वने लई मोक्ष पुरीमां गयो, तेथी निर्झारा तत्त्वनी साथें संवरने प्रीति ठे,

११३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी संवरने घररूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी एक मोक्ष तत्व संवरने घररूप जाणवुं. कारण के मोक्षपुरीमां सिरूना जीवने यथाख्यात चारित्ररूप संवर तत्व सदा काळें साथें वनें ठे, माटे ए नव तत्त्वमां संवरने घररूप एक मोक्ष तत्व ठे.

११४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी केटलां तत्त्वने निर्झारा बाळे ठे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी आश्रवरूप पांच तत्त्वनां दलीयां जीवनी सत्तायें लागीं ठे, तेहने निर्झारा बाळीने दय करे ठे, कारण के जेवारें सकाम निर्झाररूप गुण जीवने आवे, तेवारें शुजाशुचकर्मरूप पांच तत्त्वनां दलीयां जीवने सत्तायें अनंतां रहेलां ठे, तेने निर्झारावेमाटे पांच तत्त्वने बाळे ठे.

११५ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी केटलां तत्व निर्झाराने स्वामीरूप पामीयें ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी एक जीवतत्व निर्झाराने स्वामीरूप जाणवुं. एटले जे कारणे जीवने एक एक प्रदेशें अनंता कर्मरूप वर्गणानां थोकडा लागीं हता, ए रीतें कर्मरूप करजें जीव, विंटाणो थको दुःखी हतो, पण सकाम निर्झाररूप वाणोतर मळे, तेवारें जीवने सर्व कर्मरूप करजथकी

ढोडावे, अने ज्ञानादि अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी, जीवने सुखी यो करी मोक्ष नगरें पढोंचाडे, माटे निर्झरानुं स्वामी एक जीव तत्व ठे.

११६ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी केटला तत्वनी साथें निर्झराने प्रीति ठे?

गुरुः—ए नव तत्वमांथी एक संवर तत्वनी साथें निर्झराने प्रीति ठे. कारण के जीव कर्मरूप करजें वीटाणो थको दुःख पामतो पामतो पुण्यरूप वो लावानी सहायें करी संवररूप मित्रने घेर पढोंच्यो, तेवारे संवररूप मित्रें निर्झराने तेडी पोतानो मित्र जाणी जीवने कर्मरूप करजथकी ढोडाव्यो, पढी निर्झराने इहां मूकी संवर तत्व जीवने लक्ष्मोक्षपुरीमां गयुं.

११७ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी केटलां तत्वनुं घर निर्झरायें दीतुं नथी?

गुरुः—नव तत्वमांथी एक मोक्षतत्वनुं घर निर्झरायें दीतुं नथी, कारण के मोक्ष नगरमां जीवने आत्मप्रदेशें कर्मनी एक परमाणु मात्र रज र ही नथी, ते कारण माटे मोक्षपुरीमां निर्झरा तत्वनो खप नथी.

११८ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी बंधने मित्ररूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्वमांथी पांच तत्व, बंधने मित्ररूप जाणवां. कारण के कोइ जीव कर्म बांधे, तेवारे पुण्य, पाप आश्रवरूप तेनां दलीयां अजीव रूप ठे, ते सर्व बंधाय ठे, माटे ए नवमांथी पुण्य, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए पांच तत्व-बंधने मित्ररूप जाणवां,

११९ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी बंधने शत्रुरूप केटलां तत्व पामीयें?

गुरुः—बंधने शत्रु रूप एक निर्झरा तत्व जाणवुं कारण के जेवारें सका म निर्झरारूप गुण जीवने आवे, तेवारे ए पांच तत्व आश्रवचूत तेनां द लीयां बंधाणां ठे, तेने बाळीने ह्य करे, माटे बंधनी शत्रु निर्झरा ठे.

१२० शिष्यः—ए नव तत्वमांथी केटलां तत्वने बंध रोकी शके ठे ?

गुरुः—एक जीव तत्वने बंध रोकी शके ठे, जे कारणें शुचाशुचकर्म रूप दलीये करी जीव बंधाणोथको संसारमां अनेक प्रकारें करी पीडा पा मे ठे माटे कर्मरूपबंधें बंधाणो तेणें करी मोक्षनगरें जातां रोकाणो ठे.

१२१ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी बंधतत्वने कयुं तत्व रोके ठे ?

गुरुः—ए बंधतत्वने रोकनार एक संवरतत्व जाणवुं, कारण के शब्द न यने मते जेवारे जीवने संवर गुण आवे, तेवारे आवता कर्म रूप जे दली यां ते सर्वे बंधातां रोकाय, माटे ए नवतत्वमां बंधने रोकवारूप एक संवर ठे.

१२१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी बंधें केटलां तत्त्वनुं घर दीतुं नथी ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी बंधें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीतुं नथी, केम के जे वारे मोक्ष नगरें जीव जाय, तेवारे सर्व कर्मनां बंध रूप जे दलीयां सत्तायें रह्यां ठे ते सर्व तोडी बाली दाय करी जाय ठे. ते कारणें जीवने मोक्ष पुरी मां बंध नथी माटे ए नव तत्त्वमां बंधें एक मोक्ष तत्त्वनुं घर दीतुं नथी.

१२२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां ड्रव्यसिद्धपरमात्माने शत्रुरूप केटलां तत्त्व ठे?

गुरुः—ड्रव्यसिद्ध परमात्माने शत्रुरूप पांच तत्त्व पामीयें. इहां सिद्धनुं ड्रव्य ते केवली ठे केम के केवलीमांथी सिद्धपणुं नीपजे ठे माटे ड्रव्यसिद्धपरमात्मा ते केवलीने जाणवा. ते केवलीजगवानने पुण्य पापनां दलीयां अजीवरूप अनंतां सत्तायें रह्यां ठे, ते आश्रवरूप जाणवां एटले पुण्य, पाप, अजीव अने आश्रव, ए चार तत्त्व थयां अने ए दलीये केवलीने बांधी राख्या ठे, ते पांचमो बंध थयो, तेणें करी केवली मोक्षपुरीमां जतां रोकाणा ठे, ए रीतें ड्रव्यसिद्ध परमात्माने पांच तत्त्व शत्रुरूप जाणवां.

१२३ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी ड्रव्यसिद्ध परमात्माने मित्ररूप केटलां तत्त्वठे?

गुरुः—ड्रव्यसिद्धपरमात्माने मित्ररूप एक संवर तत्त्व जाणवुं, जे कारणें ड्रव्यसिद्धपरमात्मा शुद्धध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या, संवररूप मित्रने घरे वत्तें ठे, एटले संवररूप मित्रें पांच तत्त्वनां दलीयां अजीवरूप नवा कर्मनां आश्रव आवतां रोक्यां, एटले समजिरूढ नयने मत्तें शुद्धध्यान रूप संवरने घरे वत्तें ठे, तेणें करी नवा कर्मरूप आश्रवनां दलीयां आवतां रोकाणां ठे, ए परमार्थ जाणवो. माटे ड्रव्यसिद्धने एक संवर तत्त्वमित्ररूप कहीयें.

१२४ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी ड्रव्यसिद्धपरमात्माने वाणोतररूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ड्रव्यसिद्ध परमात्माने वाणोतररूप एक निर्झरा तत्त्व जाणीयें. केम के जीवने संसारमां जमतां जमतां अनंता पुजलपरावर्तन काल गयो, तेणें करी घणी आशातनायें कर्म बांध्यां, माटे कर्म विंटाणो थको दुःख पाम तो पामतो सकाम निर्झरा रूप वाणोतर मढ्यो, तेवारे जीवने कर्मरूप कर जथकी ठोडाव्यो, अने अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपी, अने हजी शुद्धध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या, समय समय अनंता कर्मना थोकडा खपावे ठे, एटले अंतें निर्झरारूप वाणोतर, सर्व कर्मरूप क

रजथकी ठोडावी अने द्रव्यसिद्ध परमात्माने जावमोक्षपदें पहाँचाडशे.
१२६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यसिद्ध परमात्माने धररूप केटखां तत्त्व?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी, द्रव्यसिद्ध परमात्माने धररूप, एक जाव मोक्ष तत्त्व जाणीयें, तेनुं दृष्टांत बतावीयें ठैयें. जेम कोइ एक प्राणी करजें वींटा णो होय, घणो दुःखी थातो होय, तेवारें परदेश कमावा नीकले, पढी अनेक देशावर फरतो फरतो धन कमाई. उपार्जनकरी करज उतारी धन लइ सुखी थो थइ पोताने घरे जइ बेसे, तेम इहां जीव अनंता कर्मरूप करजें वींटाणो थको दुःख जोगवतो जोगवतो काल स्थितिने योगें करी निगोदथकी बाहेर निकळ्यो. पढी चोराशी लाख जीवाथोनिरूप ग्राम तथा जवपाटण रूप नगरमां जमतो जमतो कोइ एक अवसरें जवस्थितिने योगें करी पुण्यरूप बोला वो साचो सहायकारी थयो, तेवारे तेणे संवररूप मित्रने घरे जीवने पहाँचा ड्यो एटले संवरें पोतानो मित्र जाणी हित आणीने निर्जारा रूप वाणोतर जीवने राखी आप्यो, तेणें सर्व कर्मरूप करजथकी जीवने ठोडाववा मां क्यो अने पोतें बारणुं बांधी रोक्री वेठो, तेवारें पांचे तत्त्वनां दळीयां। अ जीवरूप नवा कर्मनां आश्रव आवतां रुंध्या, एणी रीतें अनेक प्रकारें मेहे नत करी जीवने कर्मरूप करजथकी ठोडाव्यो तेथी अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत चारित्र, अनंतवीर्य, अव्याबाध, अमूर्ति, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अविनाशी, ए आदि देइने अनंत गुणरूप लक्ष्मीने प्रगट करी, परमानंदसुखनो विलासी थइ, जावमोक्षपदप्रत्यें जीव पामे, माटे ए नव तत्त्वमां द्रव्यसिद्ध परमात्माने धररूप एक जावमोक्ष तत्त्व जाणवुं.

१२७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां जावसिद्ध परमात्माने धर रूप केटखां तत्त्व ठे ?

गुरुः—जावसिद्ध परमात्माने धररूप एक जावमोक्षपुरीरूप तत्त्व जाणवुं. कारण के जाव मोक्षपुरी लोकने अंतें कहीयें तिहां जन्म नही, जरा नही, मरण नही, जय नही, शोक नही, रोग नही, पीडा नही, निद्रा नही, आहार नही, निहार नही, शत्रु नही, मित्र नही, राजा नही, चाकर नही, शेर नही, शैपति नही, वाणोतर नही, खावुं नही, पीवुं नही, उठवुं नही, पहरवुं नही, खेवुं नही, देवुं नही, हसवुं नही, खेखवुं नही, रमवुं नही, जमवुं नही, बोलवुं नही, चालवुं नही, नाडी नही, न्याय नही, रात नही, दिवस नही, माया नही, ममता नही, राग नही, द्वेष नही, द्वे

श नहीं, कजियो नहीं, वाद नहीं, विवाद नहीं, जणवुं नहीं, गणवुं नहीं, अर्थ नहीं, विचार नहीं, व्रत नहीं, पञ्चस्काण नहीं, गुरु नहीं, चेलो नहीं, आधि नहीं, व्याधि नहीं, एवा अजरामरस्थानके अनंत परमानंदसुखनो विलास ते प्रत्ये जोगवता अनंत जाव सिद्ध परमात्मा ज्योतिःस्वरूपे आ प आपने स्वजावे सुख जोगवे ठे.

एवुं सांजलीने शिष्य बोड्यो जे ते सुख ते शुं कहीयें ?

गुरु:- सुखनुं वर्णन करतां केवलीनां आउखां अनंतां पूरां थइ जाय, तो पण वर्णवुं जाय नहीं, एटबुं ठे तो पण दृष्टांतें करी लेशमात्र बतावुं बुं ॥गाथा ॥ सुरगण सुख त्रिहुं कालनां, अनंत गुणां ते कीध । अनंतवर्गे वर्गित कक्षां, तो पण सुख समीध ॥ १ ॥ अर्थ:- (सुर के०) देवता ते जवनपति, ज्योतिषी, व्यंतर, वैमानिक, नवग्रैवेयक, अनुत्तरविमान, सर्वा र्थसिद्ध, ए रीतें जे सर्व देवतानां सुख तेना (गण के०) समूह ते त्रिहुं कालनां एटले आगल आदिरहित अनंतो काल गयो ते कालमां थइ गयेलां सर्व चार निकायनां अनंतां देवतानां सुख तथा वर्तमान कालें असंख्याता देवता वर्ते ठे, तेनां सुख तथा अनागत काल ते आवतो ठेहेडा रहित काल तेमां थनारां अनंतां देवतानां सुख, ए रीतें त्रणे कालना देवतानां सुख लझे जेलां करीयें, तेने वली अनंत गुणां करीयें, तेना पाठा अनंतावर्ग करीयें, वली अनंत वर्गित कीजें, ए रीते अतीतादि काल ठेडा रहित ठे तेहनां सर्वे देवतानां सुख वर्गवर्गित करीनें जेलां करीनें तोपण सिद्धशिष्यायें अजरामर स्थानके जावसिद्ध परमात्मा जे सुख जागवे ठे, तेना एक समयमात्रना सुखने तोले ते देवतानां सुख नावे, ए परग्रार्थ जाणवो,

११० शिष्य:-सिद्धना जीव चौदमे गुणठाणे कर्मथकी मूकाणा, तेवारें क्रिया रहित एटले अक्रिय थया, तेम ठतां सातराज लोक उंचा लोकने अग्रजागें जइ रह्या ते क्रिया केम करी ?

गुरु:-जेम तुंबडाने कचराना पट लाग्या, एटले तुंबडुं कचरे करी ले पाणुं थकुं जारी थइने पाणीमांहे हेतुं जइ बेसे, अने ज्यारें पाणीयें करी कचरो धोवाइ जाय, तेवारें तरत उंचुं चडी आवे, एटले कचरो धोवाणो तेवारें आहुं अवलुं हेतुं जइ शके नहीं, एने उंचे आववानो स्वजाव ठे, मांटे उंचुं आवे, तेम जीवने पण आठ कर्मरूप कचराना पट लाग्या ठे,

एटले कर्मरूप कचरो करी खेपाणो, तेवारें जारे थश्ने संसाररूप समुद्रमां हेठो वेठो, ते जेवारें कर्मरूप कचरो अनुभव ज्ञानरूप अमृत कुंममां धो वाय, तेवारें तुंवडानी परें तरत जीव, उंचो जइ लोकने अग्रजागें बेसे, पण आडो अबलो नीचो जइ न शके, तुंवडानी परें तरत उंचो आवे.

१३६ शिष्यः—सिद्धना जीवने कर्म केम लागतां नथी ?

गुरुः—“ये चलंति ते वप्रंति” एटले जे जीवनो चखित स्वभाव ठे, ते ज जीव कमें करी वंधाय ठे, तेमां जे जीवनो शुभचिंतवनरूप चखित स्वभाव ठे, ते जीव, पुण्यने दलीये करी वंधाय ठे, अने जे जीवनो अशुभचिंतवनरूप चखित स्वभाव ठे, ते जीव, पापने दलीये करी वंधाय ठे, एटले शुभाशुभ परिणामनी चीकाशें जीवने कर्मनी धूड चहोटे पण सिद्धगवाने शुद्धध्यानरूप अप्रियें करी शुभाशुभ परिणामनी चीकाश वाळी नाखी, तेथी तेने चिकाशविना कर्मरूप धूल चोटी न शके.

१३७ शिष्यः—सिद्धना सुखनो स्वाद केहवो हशे ?

गुरुः—जेम घृतनो स्वाद खाटो नही, खादो नही, मोलो नही, तीखो नही, तमतमो नही, कडवो नही, कषायेलो नही, गढ्यो नही, मधुरो नही, ए रीतें घृतनो स्वाद तो जे खाय ते जाणे, पण महोठे कह्यो न जाय, अने ए घृत विना सर्वें वस्तु अटके एटले घृत विना सर्वें खोटुं जाणवुं, तेम सिद्धना सुखने पण जे चोगवे, तेज जाणे, परंतु केवली जगवानथी पण मुखें कहेवाय नही अने ए सुख विना सर्वें सुख खोटां, एटले व्यर्थ जाणवां.

१३८ शिष्यः—सिद्धि सिद्धि लोक करे ठे, ते सिद्धि किहां ठे ?

गुरुः—जेवारें आत्मानुं स्वरूप साधवा उठ्या, तेवारें साधु कहेवाणा, अने क्रियारूप साधनें करी जेवारें आत्मिक स्वरूप साधी रह्या एटले संपूर्ण कार्य नीपन्युं तेवारें सिद्ध कहेवाणा, माटे कार्यनी सिद्धि तो इहां थइ तेथी सिद्धि इहां कहीयें अने सिद्ध तो उंचा लोकने अग्रजागें ठे.

१३९ शिष्यः—मुक्ति मुक्ति लोक करे ठे, ते मुक्ति किहां ठे ?

गुरुः—(मुक्ति के) गतिथकी जे मूकाणो तेने मुक्ति कहीयें. एटले चार गतिरूप संसारथकी जीव मूकाणो, तेने मुक्ति कहीयें. ते चार गतिरूप कर्मथकी तो जीव इहां मूकाय ठे, तेथी मुक्तिपद इहां जाणवुं अने उंचुं सिद्ध शिखा उपर तो जीवने रहेवानुं ठेकाणुं ठे, कारण के जेवारें जीव,

कर्मथकी हलवो थाय, तेवारें उंचो जाय, तेमज कमें करीने चारे थाय तेवारें नीचो जाय, ए जीवनो स्वभावज ठे, पण मुक्तिपद तो इहां जाणवुं.

शिष्यः—इहांथी उंचो जतां जीव, सिद्धशिला उपरज रोकाइ रह्यो पण तेथी आगल उंचो केम गयो नहिं ?

गुरुः—आगल अलोकमां धर्मास्तिकायनुं सहाय नथी, तेथी सिद्ध शि लायेंज रोकाणो, पण उंचो गयो नही, ए परमार्थ जाणवो.

१३३ शिष्यः—मोक्ष मोक्ष लोक करे ठे, ते मोक्षपद किहां ठे ?

गुरुः—राग, द्वेष अने मोहनो क्षय कस्यो तेनुं नाम द्रव्यमोक्ष कहीयें, केम के राग, द्वेष अने मोहनो क्षय तो बारमे गुणठाणे कस्यो अने तेरमे गुणठाणे द्रव्यमोक्ष पद पामी चूक्यो माटे बारमे गुणठाणे मोहनीय कर्मरूप राग, द्वेष, अज्ञान खपावी, तेरमे गुणठाणे देशें जणी पूर्वकोटि सुधी विचरे ते द्रव्यमोक्ष जाणवो. अने सकलकर्मथकी मूकाणा ते जावमोक्ष जाण वो. अने ते सकलकर्मथकी जीव इहां मूकाय ठे माटे जावमोक्षपद तो इहां ठे अने मोक्षपुरी तो लोकने अंतें ठे ए परमार्थ जाणवो.

१३४ शिष्यः—सिद्धने मोक्षपुरीमां धर्म ठे के धर्म नथी ?

गुरुः—सिद्ध जगवान्, व्यवहार धर्मकरणीरूप जे ठे तेतो इहां मूकी गया, एटले व्यवहार धर्मकरणीरूपथकी तो सिद्ध रहित ठे, अने सत्तागतें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अव्याबाध, अमूर्त्ति, अगुरुलघु, ए आदें अनंतो धर्म सिद्धने प्रगट थयो ठे, तेणें करी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख जोगवे ठे, माटे निश्चयथकी सिद्ध, धर्म सहित ठे. अने व्यवहारकरणीथी रहित ठे ए परमार्थ ठे. ए रीतें नव तत्त्वना संबंधनुं स्वरूप, सामान्य प्रकारें जाणवुं.

१३५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्दित स्वभावमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—द्वित स्वभाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो. तेमां ठ तत्व पामीयें कारण के क्जुसूत्र नयने मत्तें शुजाशुज विकाररूप चिंतनमां जेवारें कोइ जीवनुं मन प्रवत्तें, तेवारें शुजाशुज एटले पुण्य पाप उपाजें, एटले पुण्य पापमां जीव लेपाणो, तेने पहेले गुणठाणे द्वित स्वभाव जाणवो. तेमां ठ तत्व पामीयें, एक तो स्वभाव ते जीवनो पोतानो जाणवो. माटे एक तो जीवतत्व अने (शुजाशुज के०) पुण्य, पाप, ए त्रण तत्व थयां, ते

पुण्य पापनां दक्षीयां ते चोथुं अजीवतत्त्व, ए आश्रवरूप जाणवां, ते पांचमुं आश्रव तत्त्व, तथा ए दक्षीये जीव बंधाय ठे, ते ठहुं बंध तत्त्व जाणवुं.
१३६ शिष्यः—एनवतत्त्वमांशीअशुजप्रकारेंद्विसस्वजावमांकेटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें अशुज प्रकारें द्विस स्वजाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो, तेमां पांच तत्त्व पामीयें. एक तो स्वजाव जीवनो ते जीवतत्त्व, बीजुं (अशुज के०) पाप तत्त्व, ए पापनां दक्षीयां ते त्रीजुं अजीव तत्त्व, अने ए दक्षीयां आश्रवरूप जाणवां, ते चोथुं आश्रव तत्त्व, अने ए दक्षीये जीव बंधाणो, एटले पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

१३७ शिष्यः—एनवतत्त्वमांशीशुजप्रकारेंद्विसस्वजावमांकेटलां तत्त्वपामीयें?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें शुजप्रकारें द्विस स्वजाव पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने जाणवो, तेमां पांच तत्त्व पामीयें, एक तो जीवनो स्वजाव ते जीवतत्त्व, बीजुं शुजप्रकार ते पुण्य तत्त्व, त्रीजुं पुण्यनां दक्षीयां ते अजीवरूप ठे माटे अजीवतत्त्व, ए आश्रवरूप जाणवां माटे चोथुं आश्रव तत्त्व अने ए दक्षीये जीव बंधाणो, ते पांचमुं बंधतत्त्व जाणवुं.

१३८ शिष्यः—नव तत्त्वमांशी अद्विसस्वजावमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—जे प्राणी अंतरंग पुण्य पापरूप कर्मनी वांठाथकी रहित एक मोक्षपदनी वांठाये अनेक प्रकारें क्रिया करे ठे, ते जीवनो अद्विस स्वजाव जाणवो, ते शब्दनयने मत्तें तो चोथे गुणठाणे समकेतीथी मांमी पांचमे गुणठाणे देशविरति जीव तथा ठे, सातमे गुणठाणे साधु मुनिराज अथ वा समजिरूढनयें यावत् ठद्वस्थ अवस्था ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी उपन्युं, तिहां सुधी अद्विस स्वजाव जाणवो. तेमां आठ तत्त्व पामीयें, एक तो जीव तथा सत्तायें पुण्यपापनां दक्षीयां, अजीवरूप अ नंतां रह्यां ठे, ते आश्रवरूप जाणवां. एटले पांच तत्त्व थयां, अने ए दक्षीयें जीव बंधाणो ठे, ते ठहुं बंध तत्त्व, तथा जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी जीव स्वजावमां रहे, एटली वार संवर कहीयें, अने संवरमां जीव रहे, एटली वार समयें समयें अनंतां कर्मोनी निजारा करे. ए रीतें शब्द अने समजिरूढ नयने मत्तें अद्विस स्वजावमां आठ तत्त्व जाणवां. अने एकला समजिरूढ नयने मत्तें तो केवली जगवानने अद्विस स्वजाव कहीयें. तेमां आगल कहां ते रीतें नवे तत्त्व पामीयें, तथा

एवंभूत नयने मते सिद्धजगवान् लोकने अतें विराजमान ठे, तेने अखिस खजाव कहियें. तेमां आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१३९ शिष्यः—द्रव्यथकी षडावश्यकतुं स्वरूप ते शुं कहियें ?

गुरुः—कुलाचारें अंतरंग सत्तागतना उपयोग विना पुण्यरूप फलनी वांठारूप परिणामें १ सामायिक, २ चउविसठो, ३ वंदनक, ४ पडिक्कम णुं, ५ काउस्सग्ग अने ६ पच्चस्काण, ए षडावश्यक रूप जे करणी कर वी, ते द्रव्यथकी षट् आवश्यकरूप करणी जाणवी.

१४० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी द्रव्य सामायिकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ऋजुसूत्रनयने मते द्रव्य सामायिक पहेले गणठाणे जीवने क हीयें. तेमां पांच तत्त्व पामीयें. जे कारण मन, वचन, कायायें करी एक चित्तें वैराग्य जावना सहित सामायिक करे ठे, पण अंतरंग सत्तागतना उपयोगमां वर्त्ततो नथी अने पुण्यरूप फलनी वांठायें तेना परिणाम वर्त्तें ठे माटे ए जीवने द्रव्य सामायिक, पुण्यरूप शुच कर्मतुं हेतु जाणवुं. ते मां पांच तत्त्व पामीयें, एक तो तेनो जीव, ते जीवतत्त्व, बीजुं शुच कर्म ते पुण्य तत्त्व, त्रीजुं पुण्यनां दळीयां ते अजीवतत्त्व, चोथुं ए आश्रवरूप ठे ते आश्रवतत्त्व, पांचमुं ए दळीये जीव बंधाणो, ते बंधतत्त्व, ए रीतें नव तत्त्वमांथी द्रव्य सामायिकमां पांच तत्त्व पामीयें.

१४१ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी द्रव्य चउविसठामां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्य चउविसठामां आठ तत्त्व पामीयें, जे कारणें आवते कालें चोवीश जिन थारो, ते श्रीवीतराग देवें कहा ठे, तेने जव शरीर आश्रथी द्रव्य चउविसठो कहियें, एटले कोइ जीव समकित जावें वर्त्तता हशे, अ थवा कोइ देशविरति अथवा सर्वविरति मुनिराज पणे वर्त्तता हशे, परं तुं हमणां तेमनी सेवा, स्तुति, जक्ति, पूजा प्रमुख जे करीयें, ते नैगमन यने मते वर्त्तमानें पोताना जावशुं आवता कालना द्रव्यनी गवेषणा जा णवी, माटे तेमां समकेति जीवनी परें आठ तत्त्व कहियें.

१४२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्यवंदनमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—व्यवहार नयने मते जो वीरा शालवीनी परें वंदना करे, तो एक तत्त्व पामीयें अने ऋजुसूत्र नयने मयें द्रव्यवंदन करे, तो पांच तत्त्व पा मीयें, कारण के वंदन एटले कृति कर्मादि गुरुवंदन जाणवुं, तिहां जे वीरा

शालवीयें वंदना करी, तेने अंतरमां पुण्य पाप रूप फलनी वांढा न हती, एक निकेवल कृष्ण वासुदेवनुं मन रीजववा सारु वंदना करी हती, माटे तेणें पुण्यरूप फल उपाज्युं नथी तेथी तेमां तो एक जीवतत्व पामीयें. तथा व्यवहारनयने मत्तें अंतरंग राग सहित भक्ति सहित विधिपूर्वक वंदना करे ठे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणा विना तथा साध्य साधन रूप वद्देंचण विना कुलाचारें अंतरंग पुण्य रूप इंद्रिय सुखनी वांढायें वादें ठे, तेमां पांच तत्व पामीयें. एक तो तेनो जीव अने ऋजुसूत्र नयने मत्तें द्रव्य वंदन करतां शुच फल उपाज्युं ते, बीजुं (शुच के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्यनां दळीयां ते अजीव, ए आश्रव रूप जाणवां. ते चौथुं आश्रव तथा ए दळीये जीव बंधाणो, ते पांचमो बंध. ए रीतें द्रव्यवंदनमां पांच तत्व ठे.

१४३ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी द्रव्य पडिक्रमणामां केटळां तत्व पामीयें?

गुरुः—ए द्रव्य पडिक्रमणामें आवश्यक जे ठे, ते ऋजुसूत्र नयने मत्तें पद्देल्ले गुणठाणे कहीयें, तेमां पांच तत्व पामीयें. एटले जे पापथकी निवर्तवुं तेनु नाम पडिक्रमणुं ठे, तिहां मन, वचन अने कायायें एकाग्र चित्तें पडिक्रमणुं करे ठे, पण अंतरंग निश्चयनय सत्तागतना उपयोग विना तथा साध्य साधन रूप कार्य कारणनी खबर विना, कोइ जीव, पापथकी निवर्तें नहीं, माटे द्रव्यपडिक्रमणुं ते शुच फलादि पुण्यहेतु जाणवुं तेमां आगल कहां ते रीतें पांच तत्व जाणवां.

१४४ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी द्रव्यथकी काउस्संगरूप आवश्यक मां केटळां तत्व पामीयें ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें द्रव्यकाउस्संग पद्देल्ले गुणठाणे मिथ्यात्व व्द शायें होय, कारण के जीव अजीव रूप अंतरंग सत्तानी प्रतीति कख्या विना कठिणपणुं आदरी अनेक रुंश, मशक, वाघ, सिंह, रीठ, शीयाल, सर्प आदिक तिर्यंच जीवना तथा मनुष्यना अने देवताना करेला उपसर्ग सहन करे ठे, आत्मज्ञान विना एक चित्तें धैर्यपणुं आदरीने काउस्संग करे ठे. तथापि ते कष्टरूप शुचफलनुं हेतु जाणवुं. पण अंतरंग ज्ञासनविना आत्मप्रदेशकी कर्म आवरण टले नहीं, मात्र शुच एटले पुण्यफल उपाजें माटे तेमां जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्व पामीयें.

१४५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी द्रव्य पञ्चकाणरूप आवश्यकमां केट
खां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—द्रव्यपञ्चकाण, पहले गुणठाणे मिथ्यात्व दशायें जाणीयें. कारण
के अंतरंग इहानो रोध कल्या विना जे जीव, व्रत पञ्चकाण करे ठे, ते अ
व्रती जाणवां. एटले ए सर्वे पूर्वजवना अंतरायकर्मनो उदय जाणवो. माटे
ए कष्टरूप, पुण्यफल हेतु जाणवुं. पण अंतरंग सत्तागतें निर्झरानुं हेतु
नहीं माटे एमां पण आगल कल्यां ते रीतें पांच तत्त्व जाणवां.

हवे द्रव्यथकी ए ठ आवश्यक रूप करणी करवी, तेनुं फल विशेष
रीतें नयनी युक्तियें करी थोडामां समजावे ठे.

तिहां व्यवहारनयने मतें उपरथकी षडावश्यकरूप करणी विधि
सहित जळी रीतें करे ठे, अने ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंग परिणाम लोक
देखाडवारूप यशःकीर्त्तिनी वांढायें अथवा कोशुं मन रीजववा रूप जळुं
मनाववानी वांढायें करे, ते जीवनी महेनत वीरा शालवीनी परें वृथा जा
णवी. एटले ऋजुसूत्रनयने मतें जेना अंतरंग परिणाम वीरा शालवीनी परें
कोशुं मन मनाववादिक फलनी वांढारूप ठे, तेज फल प्रत्यें ते ते वखतें
पामे, परंतु एवो परिणाम, परजवें पुण्यरूप फल हेतु पण नहीं जाणवो.

वली कोइ जीव, व्यवहार नयने मतें उपरथकी षडावश्यकरूप करणी
विधि सहित जळी करे ठे, अने ऋजुसूत्र नयने मतें लोकने ठगवारूप धन
हरवा रूप अथवा घात दगो करवारूप उदाइ राजाने मारनारानी परें
अंतरंग परिणाम वत्तें ठे. अथवा ह्यादिकने पोतानी चतुराइ देखाडी विष
यसुखना परिणाम वत्तें ठे, एटले व्यवहारनयने मतें क्रिया तो घणी रूढी
करे ठे, पण ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंग परिणाम माठा वत्तें ठे, ते माटे
ते जीव, पापकर्मरूप फल प्रत्यें उपाजें ठे, ए परमार्थ जाणवो.

वली कोइ जीव, व्यवहार नयने मतें उपरथकी षडावश्यक रूप करणी
विधिसहित जळी रीतें करे ठे, अने ऋजुसूत्र नयने मतें अंतरंग वैराग्य
सहित उदासीपरिणामें नरक निगोदना दुःखथकी बीहितो सुखनी लालचें
परजवें पुण्यरूप फलनी वांढारूप परिणाम वत्तें ठे, ते जीव, ऋजुसूत्रनय
ने मतें शुभ फल रूप पुण्यनां दक्षियां उपाजें ठे, अने कर्मरूप निर्झरा तो
जेवारें शब्द नयने मतें करणी करे, तेवारें थाय, तेनुं स्वरूप आगल देखा

इशुं माटे विवेकी पुरुषें सर्व ठेकाणे नयतुं स्वरूप विचारी चित्तमां समज
ण उतारी पढी काम करतुं.

१४६ शिष्यः— जावथकी षडावश्यकतुं स्वरूप शुं कहीयें ?

गुरुः—शब्द नयने मते अंतरंग निश्चय नये सत्तागतना उपयोगरूप प
रिणामें साध्य साधनरूप उल्लखाण सहित आ जवनी तथा परजवनी
वांढा रहित तथा यशःकीर्ति, मान, शोचा अने पूजानी वांढा तजीने एक
पोताना आत्माने निरावरण करवारूप परिणामें सामायिक, चउविसठो,
वंदनक, पडिक्कमाणुं, काउस्सग अने पञ्चक्काण रूप करणी करे, तेने
जावथकी षडावश्यकरूप करणी जाणवी.

१४७ शिष्यः—जावथकी षडावश्यक रूप करणी करवी, तेनो हेतु शुं कहीयें ?

गुरुः—प्रथम सामायिक लेतुं, पढी षडावश्यकरूप करणी करवी, जेम म
लीन बुगडा उपर रंग लगाडवायी ते बुगडानी किमत घटे, माटे मेल
टाळी बुगडुं उजळुं करी पढी रंग चडावे, तो तेनी किम्मत घणी वघे,
तेम श्हां जीव पण संसारमां आर्त्त, रौद्ररूप परिणामें करी तथा गम
नागमन करतां अनेक प्रकारें जीवनी विराधना रूप पापें करी मलीन थयो,
माटे ते पाप आलोया विना मलीन पणे व्रतरूप रंग लगावे, तो ते न
शोचे, ते कारणें प्रथम इरियावहि पडिक्कमवी, एटळे एकेंडी, बेंडी, तें
डी, चौरिंडी अने पंचेंडी प्रमुख जीवना (५६३) जेद थाय. ते आवी
रीतेंः—एकेंडियना बावीश, बेंडियना बे, तेंडियना बे, चौरिंडियना बे, मली
अष्टावीश थया, तथा पंचेंडियमां नारकीना सात पर्यासा अने सात अप
र्यासा मली चौद जेद, तथा देवतोना नवाणुं पर्यासा अने नवाणुं अपर्या
सा, मली एकशोने अष्टाणुं जेद, तथा तिर्यचना वीश जेद, तथा मनुष्य
ना एक शो एक पर्यासा, एकशो एक अपर्यासा अने एकशो एक संमूर्धिम,
मली त्रणशो ने त्रण जेद, ए सर्व एकठा करीयें तेवारें (५६३) थाय. तेने
अग्निह्या वत्तिया प्रमुख दश बोलें करी दश गुणा करीयें, तेवारें (५६३०)
थाय. तेमां केटला एक रागें करी ह्या, केटला एक द्वेषें करी ह्या एटळे
राग द्वेषें बमणा करतां (११२६०) थाय. ते वली मन, वचन, अने काया
यें करी त्रिगुणा करतां (३३७००) थाय. वली करतां, करावतां अने अ
नुमोदतां पाप लागुं तेथी त्रण गुणा करतां (१०१३४०) जेद थाय. ते

पढी अतीत अनागत अने वर्तमान कालें जे पाप लाग्युं होय माटे त्रण गुणा करतां (३०४०१०) थाय, ते अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें, अने पोताना आत्मानी साखें, ए रीतें ठनी साखें मिळामि डुकड देतां थकां ढ गुणा करीयें तेवारें (१०१४११०) थाय. ए रीतें मिळामि डुकड देतां थकां ऐमंता मुनिने केवल ज्ञान उपन्युं. ते माटे मन शुद्धें प्रथम श्रियावहि पडिक्रमवी तेनो अर्थ विचारी (१०१४११०) मिळामि डुकड देवा. पढी तेनी आलोयणानो एक लोगस्सनो काउत्सग कर वो उपर एक लोगस्स प्रगट कहेवो. ए रीतें पापथकी रहित शुद्ध निर्मल थइ पढी “करेमि जंते” उच्चरवुं, ते व्रतरूप रंग लग्गाडवो, पण पापरूप मल टाव्या विना व्रतरूप रंग शोचे नहीं, ते कारणें प्रथम श्रियावहि पडि क्रमवी, पढी चार थोड्यें देव वांदवा, पढी गुरुनो आदेश मागी पडिक्रम णुं ठाववुं. तेवार पढी षडावश्यकरूप करणी करवी, ते आवी रीतें:-

तिहां प्रथम सामायिक आवश्यक करवुं, तेनो अर्थ कहे ठे. (सम के०) समता तेनो (आय के०) लाज तेने सामायिक कहीयें. ते अवश्य करवुं. माटे ते आवश्यक कहीयें. ए पढी ते समता जे परमसुखना निधान तेनो लाज श्रीऋषजादिक चोवीश तीर्थकरने थयो, तेथी समताना विधान, पर मोपकारी, जगत् गुरु, जगन्नयना जीवने उपकारना करनार, परम सुखना दातार, एवा चोवीश तीर्थकरनुं ध्यान करीयें. जे थकी संसारनो पार पा मीयें ए वीजुं चउविसठानामें आवश्यक. तेवार पढी ए चोवीश तीर्थकरना ळं लखावनार गुर्वादिक श्रीआचार्य जगवान् ढत्रीश गुणें करी बिराजमान, परमो पकारी तेनो उपकार संजारीने विधिपूर्वक हर्ष सहित तेने वंदना करवी, ते त्रीजुं वंदन आवश्यक जाणवुं. ए वंदण शा वास्ते करवुं? ते कहे ठे. आगल पाप आलोचीने पापथकी निवर्तवुं ठे माटे विनतिपणे नर्माश गुण विना कोइ जीव पापथकी निवृत्ति शके नहीं, तेमाटे वंदना करवी. पढी गुर्वादिक पासेंथी प्रतिक्रमण नामक आवश्यक करवानो आदेश मागवो, एटले पाप थी निवृत्तवुं, तेनुं नाम पडिक्रमणुं ठे. ते पापथकी निवर्तवाने अर्थें साधु तो आदेश मागी पगाम सहाय कही पाप आलोवे, अने श्रावक बार व्रतरूप अतिचार आलोवे. ए रीतें पाप आलोची पापथकी रहित शुद्ध निर्मल जाज ननी परें थयो थको वली कांइ थोडुं एक पण पाप रळुं होय, तेमाटे “आय

रिय उवद्याय' प्रमुख त्रणे गाथा कही सर्व जीवने खमावे, ए चोथुं आवश्यक.

ए रीतें पापथकी रहित जेवारें आत्मरूप जाजन खाळी थाय, तेवारें तेने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी पूरवुं (जरवुं) जोश्यें, तेने माटे पांचमुं आवश्यक करवुं. ते आवी रीतें:—प्रथम चारित्रनुं आराधन करवा सारु 'करेमि जंतै' कही पढी बे लोगस्सनो काउस्सग करवो. पढी उपर एक लोगस्स प्रगट कहेवो, एटले ए चारित्रनुं आराधन जाणवुं पढी दर्शननुं आराधन करवा निमित्तें "सबलोए अरिहंत चेझ्याणं" एटले सर्व लोकने विषे जेटलां श्रीअरिहंतनां चैत्य ठे, तेने वांदवा पूजवा रूप कही, एक लो गस्सनो काउस्सग करवो, एटले ए दर्शननुं आराधन जाणवुं. पढी ज्ञाननुं आराधन करवा निमित्तें "पुस्करवर दीवड्डे" कही एक लोगस्सनो काउस्सग करवो, एटले ए ज्ञाननुं आराधन जाणवुं. ए रीतें ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना आराधनरूप काउस्सग करी ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी आत्मरूप जाजनने पूरवुं. कारण के आगल पापनी आलोचना करी पापथकी रहित आत्मरूप जाजन खाळी थयुं ठे, माटे इहां पांचमा आवश्यकमां ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी पूरवुं, तथापि महोटा उत्तम वली यानुं सहाय होय तो निर्विघ्न पणे आराधन थाय, तेमाटे सहाय निमित्तें श्रुतदेवतानुं आराधन करवुं. पढी जे क्षेत्रें देवता आसख्या ठे, ते क्षेत्र देवनुं आराधन करवुं, एटले महोटानी सहायथकी ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं साधन निर्विघ्नपणे थाय. ए रीतें ए पांचमुं काउस्सग नामा आवश्यक जाणवुं.

ए रीतें आत्मरूप जाजन ते ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणें करी संपूर्ण जराणुं एटले हवे फरी पाबुं पाप करवाना नियम करवा सारु ठठा आवश्यकने विषे चार प्रकारना आहाररूप पाप करवाना पञ्चस्काण करवां माटे नोकारसी, पोरिसी, एकासणुं, आयंबिल, उपवास, ठठ, अठम, अछाछ, मासखमण, पासखमण, ठम्मासी, वरसी अथवा जावजीव, इत्यादिक पोतानी शक्ति माफक चार आहाररूप पाप करवानां पञ्चस्काण करवां, ए ठठुं पञ्चस्काण आवश्यक जाणवुं. ए रीतें ए ठ आवश्यकनुं स्वरूप जाणी विवेकी पुरुष, हृदयमांधारी नित्य प्रत्ये उजय टंक करतां थकां जीव अल्पकालमां कर्म रहित थइ सिद्धिपद बरे, पामे. एम, शब्द नयने मते ए सामान्य प्रकारें जावथकी षडावश्यकनुं स्वरूप जाणवुं.

१४७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञावसामायिकमां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—श्रीजगवतीसूत्रमां “आथा खलु सामाश्या ” ए आलावे सामायिकनो अर्थ कस्यो ठे, एटले जेटली वार खस्वरूपमां रहेवुं, तेटली वार सामायिकनो लाज जाणवो, माटे शब्दनयने मतें चोथा गुणगणावाला सम केती, अने पांचमा गुणगणावाला देशविरतिश्रावक, तथा षष्ठा सातमा गुणगणावाला मुनिराजने सामायिक जाणवुं, तेमां आठ तत्त्व पामीयें, अने सम जिरूढनयने मतें केवली जगवान्ने सामायिक जाणवुं. तेमां नव तत्त्व पामीयें. तथा एवंचूतनयने मतें सिद्धजगवानने सामायिक जाणवुं. तेमां त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें ज्ञाव सामायिकना स्वरूपनो परमार्थ जाणवो.

१४८ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञाव चउविसहामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—एवंचूत नयने मतें हमणां ऋषजादि चोवीश तीर्थकर ज्ञावनिक्षेपे सिद्धक्षेत्रमां विराजमान वत्तें ठे, तेने ज्ञाव चउविसहो कहीयें. एटले हमणां एमनी सेवा, जक्ति, स्तुति, पूजादि करीयें ठैयें. ते नैगम नयने मतें वर्तमाने पोताना ज्ञावथी गया कालना ज्ञावनी गवेषणा जाणवी, ए सिद्धमां वत्तें ठे, माटे तेमां आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें.

१४९ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी ज्ञाववंदन आवश्यकमां केटलांतत्त्वपामीयें?

गुरुः—श्रीवीतरागनी आज्ञा पालनार, शुद्धमार्गना प्ररूपक, आत्म तत्त्वना रसीया, मोक्षाजिलाषीपणे पोताना आत्मानुं साधन करे ठे, एवा गुरु आदिक आचार्य जगवान्ने कृति कर्मादिक एटले द्वादशावर्त वंदन, विधिपूर्वक करवुं, परंतु आ जव तथा परजवनी वांढा रहित, मान अहंकार गाली, यशःकीर्त्तिनी वांढा रहित, एक पोताना आत्माने कर्मथकी मूकाववा निमित्तें करे, तो महोटी लाज उपार्जन करे ॥ उक्तं च ॥ तिष्ठयरत्तं सम्मत्तं, खाई यं सत्तमी तईयाए ॥ वंदणएण विहीणा, बरुं च दसारसीहेणं ॥ १ ॥ अस्यार्थः—श्रीकृष्ण वासुदेवें विधिपूर्वक एक साध्यें अंतरंग राग सहित वंदणा करतां तीर्थकर गोत्र उपाज्युं अने द्वायिक सम्यक्त्वं पाम्या, तथा सातमी नरकनां दलियां एकठां मेलव्या हतां, तेमांथी चार नरकनां काप्यां, माटे ज्ञाव वंदन आवश्यकमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्त्व जाणवां.

१५० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ज्ञावपडिक्कमणामां केटलां तत्त्व पामीयें?

गुरुः—शब्दनयने मतें पापथकी निवर्त्तवुं तेने पडिक्कमणुं कहीयें तिहां

जे दिवसनुं पाप लाग्युं होय ते सांजने पडिक्कमणे निवर्त्ते, अने रात्रिनुं पाप लाग्युं होय, ते प्रजातने पडिक्कमणे निवर्त्ते. तथा पन्नर दिवसनुं पाप लाग्युं होय, ते पाखीने पडिक्कमणे निवर्त्ते, अने चार मासनुं पाप लाग्युं होय, ते चोमासीने पडिक्कमणे निवर्त्ते, तथा बार मासनुं पाप लाग्युं होय, ते संवत्सरीने पडिक्कमणे निवर्त्ते, ए रीतें पडिक्कमणुं करवाथकी पाप निवर्त्ते खरुं परंतु ते कोने निवर्त्ते? के जे अंतरंग सत्तागतें वस्तु धर्म रह्यो ठे, ते निरावरण पणे प्रगट करवाने अर्थें पडिक्कएणुं करे ठे, ते प्राणी पाप थकी निवर्त्ते ठे, परंतु सत्तागतना जाणपणा विना पाप टले नही, माटे ए वी आलोयणा सहित जे पडिक्कमणुं करवुं, तेतो देशविरति पांचमा गुण ठाणा वाला श्रावक तथा ठठे सातमे गुणठाणे वर्त्तनारा साधु मुनिराज ते ने उदयें आव्युं ठे, माटे तेमां पूर्वे कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें.

१५१ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जावकाउस्सग्गमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—जे शब्द नयने मत्तें जाणपणा सहित बाह्यथकी तो मेरुनी परें निश्चल पणे थइने दुष्ट जीव जे वाघ सिंह, शीयाल, रीछ अने सर्पादिक तिर्यचना करेला उपसर्ग तथा देवता अने मनुष्यना कस्या उपसर्ग जेवा के ठेदन, भेदन, ताडन, तर्जनादिक तथा क्रूर वचन, कडवां वचन रूप अनेक प्रकारना उपसर्ग थाय, पण समता रसें जीनो एयो जे मुनिराज, ते निश्चलित पणे वत्ते, परंतु कोप करे नहिं, अने अंतरंगथकी तो सत्तागतना उपयोगमां स्वपरनी वेंचण करतो थको अमोल पणे वत्ते, ते प्राणी म्होटी निर्झरा प्रत्यें करे, तेने जावकाउस्सग्ग कहीयें. तेमां आठ तत्व पामीयें.

१५२ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जावपच्चक्काण आवश्यकर्मां केटलां तत्व ?

गुरुः—शब्द नयने मत्तें इहानिरोध पणे जाव पच्चक्काण जे जे वस्तुनां प्राणी करे ठे, ते प्राणी मोक्ष नगरने नजीक करे ठे, एटले आ जवने विपे यशःकीर्त्ति, मान, शोजा, तथा इंद्रियसुखनी लाखचथकी रहित निरिह पणे तेमज परजवनी इहा जे देवता, चक्रवर्ती, वासुदेव, तथा इंद्रादिकनी कृद्धिनी वांढ थकी रहित थको एक पोताना आत्माने निरावरण करवारूप जे जे, पच्चक्काण करे ठे, ते तो सर्व जावपच्चक्काण आवश्यक कहीयें. तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें. ए रीतें जावथकी षडावश्यकनुं स्तरूप संक्षेपमात्रें करी कछुं.

१५४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी रमणिक तत्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमां अनेक नयनी अपेदायें करी एक जीव तत्त्व रमणिक जाणवुं. केम के नैगम अने संग्रह ए बे नयने मत्तें पारिणामिक जावें करी सर्व जीव पोताना स्वरूपमां रमणिक जाणवा. अने व्यवहार नयें करी तो जीवने अजीवरूप पुज्जलमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा ऋजुसूत्र नयने मत्तें जीवने शुजाशुज रूप परिणामें करी पुण्य अने पाप रूप आश्रवमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा शब्द अने समजिरूढ ए बे नयने मत्तें तो जीवने संवर अने निर्झारा ए बे तत्त्वमां रमणिक पणुं जाणवुं. तथा एकला समजिरूढ नयने मत्तें जेवारें जीवें घातीकर्म खपावी, ज्ञानादि अनंत चतुष्टय रूप लक्ष्मी प्रगट करी, तेवारें एने ड्रव्यमोह पदमां रमणिकपणुं जाणवुं, ए रीतें ए नव तत्त्वमां रमणिक पणुं एक जीव तत्त्वने जाणवुं, पण जे प्राणीने इष्टदेव तथा गुरुकृपाथकी नय निक्षेपानी कला प्राप्त थइ हरो, ते प्राणीने ए प्रश्नोतो अर्थ विचारतांघणी रीज उपजरो माटे नय, निक्षेपा, ड्रव्य, जाव, निश्चय व्यवहारनुं जाण पणुं विशेष रीतें करवुं, एटले समकेत रूप रत्ननी प्रतीति थाय.

१५५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथीअशुजप्रकारें रमणिकस्वजावमांकेटलांतत्त्व?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें अशुज प्रकारें रमणिक स्वजावमां पांच तत्व पामीयें, ते कहे ठेः—एक तो रमणिक ते जीव अने अशुज ते पाप तथा ए पापनां दलीयां अजीव ते आश्रवचूत जाणवां. अने ए दलीये जीव बंधाय ठे माटे जीव, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्व पामीयें.

१५६ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीशुजप्रकारें रमणिकस्वजावमांकेटलांतत्त्वठे ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे शुज प्रकारें रमणिक स्वजाव होय तेमां पांच तत्व पामीयें, एक तो (रमणिक के०) जीव पोतें, बीजुं (शुज के०) पुण्य, ते पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाय ठे, ते बंध तत्व थयुं, एटले जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए पांच तत्व थयां.

१५७ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथीशुद्धप्रकारेंरमणिकस्वजावमांकेटलांतत्त्वपामीयें

गुरुः—शब्द अने समजिरूढ नयने मत्तें चोथा गुणठाणाथी थावत् ते रमा अने चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीवने शुद्ध प्रकारें रमणिक दशा जा

एवी, तेमां आठ तत्त्व अने नव तत्त्व पामीयें. एटले (शुच के०) पुण्य नां दलीयां अने (अशुच के०) पापनां दलीयां आगल ए वे प्रश्न कहा ठे, तेमांहे जीव लेपाणो ठे, अर्थात् ए शुचाशुच कर्मरूप कचरामां जीव लेपाणो ठे, पण तिहां थकी शुद्धिना करनारा एक संवर अने वीजुं निर्जारा ए वे तत्त्व जाणवां. एटले शब्द अने समजिरूढ नयने मत्तें समकेत जा वें चोथा गुणगणाथकी मांकीने यावत् अगीयारमा बारमा गुणगणा ल गें जे जीव वत्तें ठे, तेमां पूर्वे कहां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. एक तो जीव अने सत्तायें पुण्य पापनां दलीयां अजीव रूप अनंतां रखां ठे, ते आश्रव रूप जाणवां तथा ए दलीये जीव बंधाणो ठे, एटले जीव, पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए ठ तत्त्व थयां तथा जीव अजीव रूप स्वपरनी वेंचण करी जिहांसुधी जीव, स्वरूपमां रहे, तिहां सुधी संवर क हीयें. अने जिहां सुधी संवरमां जीव रहे, तिहां सुधी समय समय अनं ती निर्जारा करे, ए रीतें पूर्वोक्त ठ तत्त्वमां संवर तथा निर्जारा जेहीयें, ते वारें आठ तत्त्व पामीयें:- अने समजिरूढ नयने मत्तें तेरमे गुणगणें शु रू प्रकारें रमणिकपणुं केवली जगवानने जाणवुं. तेमां पूर्वोक्त आठ त त्वनी सायें केवलज्ञान पाम्या, एटले ड्रव्य मोह पद पाम्या तेनवमुं कहेवुं.

१५७ शिष्य:- ए नव तत्त्वमांथी निश्चयथकी रमणिक स्वभावमां के टळां तत्त्व पामीयें ?

गुरु:- एवंचूत नयने मत्तें निश्चयथकी रमणिक स्वभावमां त्रण तत्त्व पामीयें. केम के निश्चयथकी रमणिकपणुं तो मोह पुरीमां सिद्धना जीव ने ठे, तेमां तो एक सिद्धना जीव ते जीव तत्त्व अने यथाख्यात चारित्र रूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे ते बीजुं संवर तत्त्व जा णवुं. तथा त्रीजुं जावमोह पद पाम्या ठे, ते त्रीजुं मोहतत्त्व जाणवुं.

१५८ शिष्य:- ए नव तत्त्वमांथी ध्यातारूप केटळां तत्त्व पामीयें ?

गुरु:- एनव तत्त्वमांथी ध्याता रूप एक जीव तत्त्व जाणवुं, कारण के कोइ जीव कजुसूत्र नयने मत्तें क्रोध, मान, माया, लोच, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हास्य, विनोद निंदा अने ईर्ष्या, ए आदें अनेक प्रकारें अ शुच परिणामें करी नरक अने तिर्यच गतिनां सुखने ध्यावे ठे, अने वली कोइएक जीव तो कजुसूत्र नयने मत्तें दान, शील, तप, जावना, पूजा, प्र

भावना, संघजक्ति, गुरुजक्ति, उपकार बुद्धि, ए आदि देहने अनेक प्रकारें शुभ परिणामें करी मनुष्यगति तथा देवगतिना सुखने ध्यावे ठे, तथा कोश्य कजीव तो वली समजिरूढ नयने मत्तें शुद्ध परिणामें करी मोक्ष गतिने ध्यावे ठे. ए रीतें नव तत्त्वमांथी ध्यातारूप एक जीव तत्व जाणवुं.

१६० शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी अशुभ प्रकारें ध्यातारूपमांकेटलांतत्त्वपामीयें ?

गुरुः—अशुभ प्रकारें ध्याता रूपमां पांच तत्व जाणवां. तेमां एक तो (ध्याता के०) जीव, बीजुं (अशुभ के०) पाप, त्रीजुं पापनां दलियां ते अजीव ठे, चोथुं ए आश्रव रूप जाणवुं, अने पांचमुं बंध तत्व जाणवुं.

१६१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुभ प्रकारें ध्यातारूपमांकेटलांतत्त्वपामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी शुभ प्रकारें ध्यातारूपमां पांच तत्व पामीयें. एक तो ध्यातारूप जीवतत्व अने बीजुं (शुभ के०) पुण्य ते पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दलीये जीव बंधाणो ठे, एटले जीव, पुण्य, अजीव आश्रव अने बंध, ए पांच तत्व पामीयें.

१६२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी श्रुद्ध प्रकारें ध्यातारूपमांकेटलां तत्व ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी शुद्ध प्रकारें ध्याता रूपमां आठ तत्व तथा नव तत्व पामीयें. कारण के शुजाशुभ विकाररूप जे कर्म, तिहांथकी जीवने शुद्धनां करनार, एक संवर अने बीजुं निर्झारा, ए बे तत्व ठे, केम के शब्द अने समजिरूढ नयने मत्तें चोथा गुणगणाथी मांकीने यावत् ठदस्थ अ वस्था लगे जीवने शुद्ध प्रकारें ध्याता रूपमां पूर्वे कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें, अने समजिरूढ नयने मत्तें तेरमे गुणगणे शुद्ध प्रकारें ध्याता के वली जगवान् कहीयें तेमां आगल कहां, ते रीतें नव तत्व पामीयें.

१६३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी बहिरात्मांमांकेटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—बहिरात्मा जीव, पहेले मिथ्यात्व गुणगणे होय, जे माटे बाह्य संपदायें रत होय, तेने बहिरात्मा कहीयें ॥ गायथा ॥ पुज्जलसें रातो रहे, जाणे एह निधान ॥ तस लाजें लोच्यो रहे, बहिरातम अजिधान ॥ १ ॥ अर्थः—एटले शुजाशुभ कर्म विपाक फलने उदर्ये करी राज्य, कृद्धि, जंकार, हुकम, दास, दासी, सुजट, सीपाइ, आबरू, इज्जत, शोचा, पुत्र, कलत्र, कुटुंब, परिवार, राग, रंग, कला, विकला, काहापण, चतुराइ, हाव, जाव, नाटक, कौतुक, पोताना शरीरनी कांति, बल, जुवानी, मद, अहंकार, ए आदें देह अनेक

प्रकारें पोतानी शोचा देखी तेना उपर एकाग्रचित्तें रीज माने मनमां एम जाणे जे संसारमां सुख एक हुंज जोगवुं हुं, ए रीतें पोताना स्वरूपथकी जे बाह्य जाव ठे, तेने आदरी तेनां सुख विखसे तेने बहिरात्मा कहीयें. तेमां आगल मिथ्यात्वगुणठाणे कहां, ते रीतें तत्व पामीयें.

१६४ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी अंतरात्मांमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—दोहा ॥ पुजलजाव रुचे नहीं, ताथें रहे उदास ॥ सो अंतर आत्मा लहे, परमानंद प्रकाश ॥ १ ॥ पुजल खल संगीपरें, सेवे अवसर देख ॥ तनु शक्ति ज्युं लकडी, ग्यान जेद पद लेख ॥ २ ॥ बहिरात्म तज आत्मा, अंतर आत्म रूप ॥ परमात्मने ध्यावतां, प्रगटे सिद्धस्वरूप ॥ ३ ॥ माटे बाह्या संपदा थकी जेनो विरक्त जाव वत्तें ठे, अने पोताना आत्म स्वजावमां रक्तजाव वत्तें ठे तथा पोताना सहज समाधिपदने विरहें दुःखें करी असमर्थ थको फुरे ठे, एवो जीव, चोथा गुणठाणाथी मांकीने वारमा गुणठाणा लगे अंतरात्मा कहीयें. ए अंतरात्मा जीव, ते सम्यग्दृष्टि जाग्यो थको विवेकरूप लोचनें करी सहितथको परजावथकी उदासी होय, ते वारें साचो नय देखतां एतुं जगतमां शत्रुमित्र कोइ नथी, एने कोइ जीवथी वैर विरोध पण नथी, ए सर्व जीवने पोता सरखा जाणी तेनी दया पाखे, रक्षा करे, उपकार करे, ते परदया जाणवी. अने पोतानो आत्मा कर्मने वशें करी दुःखी ठे, अनेक प्रकारें पीडा पामे ठे, जन्म, जरा, मरणनां दुःख जोगवे ठे, तेने कर्मरूप दुःखथकी मूकाववाना जे परिणाम ते स्वदया जाणवी. एटखे जे कारणें आत्माने ज्ञानजावें करी समजावे. के रे जीव ! तुं अनादि कालनो जमतो थको जे तें जोग जोगवीने, ठोड्या, ते महा विकाररूप अनंत दुःखना दातार, तेहनी फरीथी तुं वांढा करे ठे, तेथी तुं जने लाज केम नथी उपजती ? अने जे आहार लइने ठोड्या ते बली पाढा आहार पणे करे ठे ? एतुं आचरण उत्तम विवेकी आदरे नहीं, केम के वन्या आहारनी श्छा तो श्वान होय, ते करे ? ए रीतें मनःपश्चात्तापें करी पोताना बोधबीज सुख सहज रसने चाखे, एटखे समकेत रूप ज्ञान दृष्टियें करी स्वस्वरूपप्रकाश, चिदानंद, विशु, विनाशरहित, एक तुं शाश्वतो, सर्व जगतना जाव प्रपंच जाणवाने शक्तिमंत, एतुं तां स्वरूप असंख्यात प्रदेशें करी सहित ठे, पण एक एक प्रदेशें अनंता कर्म परमाणु रागद्वेषनी चि

काशें अति स्निग्ध पणें निविडचूत थइ लागा ठे, तेषें करी ज्ञानस्वरूप द बाइ गयुं ठे, ते प्रगट करवाने अर्थें संसार उदासी त्यागरूप वैराग्य जावना जावतो खपरनी वेंचण करी स्वरूपतुं ग्रहण करे, अने परस्वरूपने विज्ञा वरूप जाणी त्याग करे, ए रीतें अनुभवसमां जीवतो ध्यानरूप अग्रियें करी कर्म आवरणे चस्म करतो थको, थोडा कालमां परमानंद पद प्रत्यें पामे, तेने अंतरात्मा कहीयें. तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें.

१६५ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी ड्रव्यपरमात्मां केटळां तत्व पामीयें ?

गुरुः—समच्चिरूढ नयने मतें तेरमे गुणठाणे केवलीने ड्रव्यपरमात्मा कहीयें, तेमां आगल कहां, ते रीतें नव तत्व पामीयें.

१६६ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जावपरमात्मां केटळां तत्व पामीयें ?

गुरुः—एवंचूत नयने मतें जे लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे जागें वर्ते ठे. एवा सिद्ध जगवानने जावपरमात्मा कहीयें, तेमां आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्व पामीयें.

१६७ शिष्यः—सिद्ध परमात्माना स्वरूपमां ज्ञान, ज्ञाता अने ज्ञेय, ए त्रिचंगी उपजे ठे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—(ज्ञान केठ) जाणपणुं ते जीवो गुण ठे, ते ज्ञान गुणें करीने त्रण कालतुं स्वरूप प्रत्यक्ष पणें एक समयमां सिद्धपरमात्मा जाणे ठे, तेथी सिद्धनो जीव, ज्ञाता ठे, अने जेने ज्ञान गुणें करी जाणे ठे, एवां सर्व ड्रव्य ते ज्ञेय ठे, ए सिद्ध परमात्माने विषे त्रिचंगीतुं स्वरूप जाणवुं.

१६८ शिष्यः—सिद्ध जगवानना स्वरूपमां कर्त्ता, कारण अने कार्य, ए त्रिचंगी उपजे ठे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—कर्त्ता सिद्धनो पोतानो जीव जाणवो, अने ज्ञान, दर्शन, चारि त्र तथा वीर्थ रूप अनंता गुण जे ठे, ते कारण जाणवां, तथा (कार्य केठ) पर्यायतुं उत्पाद व्यय रूप नव नवा ज्ञेयनी समय समय अनंती अनंती वर्तना रूप जे सुख, ते सुखतुं आस्वादन ते कार्य जावुं.

१६९ शिष्यः—सिद्ध जगवानना स्वरूपमां ध्यान, ध्याता अने ध्येय, ए त्रिचंगी उपजे ठे, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ध्यान ते सिद्धना जीवोने पोताना स्वरूपतुं ठे. ते चार ध्यान थ की उत्तर जाणवुं, अने तेनो ध्याता ते सिद्धनो पोतानो जीव तथा ध्येय

ते आत्मिक स्वरूप जाणवुं. ए रीतें जे जीव, सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणे, तेवारें तेने सिद्धनां सुख प्रगट करवानो जाव उपजे, अने सिद्धनां सुख प्रगट करवानी वांढायें जे कारण सेवे ठे, तेने समकेतनी प्राप्ति जाणवी.

१९० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अशुच ध्यानमां केटलां तत्व पामीर्यें ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे अशुच ध्यान होय, तेमां पांच तत्व जाणवां, कारण के एक तो अशुच ध्याननो कर्त्ता जीव तत्व अने (अशुच के०) क्रोध, मान, माया, लोच, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, निंदा, ईर्ष्या, क्लेश, कजीयो, वाद, विवाद, ए आदें अनेक प्रकारनुं अशुच ध्यान ठे, ते सर्व बीजुं पाप तत्व जाणवुं अने ते पापनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रव रूप जाणवां, माटे त्रीजुं अजीव अने चोथुं आश्रव तत्व तथा ते दलीये जीव बंधाणो ते पांचमुं बंधतत्व जाणवुं.

१९१ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी शुच प्रकारें ध्यानमां केटलां तत्व पामीर्यें ?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे शुचध्यानरूपमां पांच तत्व जाणवां. तेमां एक तो ध्याननो कर्त्ता जीवतत्व पोतें जाणवुं अनेक (शुच के०) दान, शील, तप, जावना, परोपकार, करुणा, दया, चैत्यजक्ति, पूजा, प्रजावना, ए आदिक अनेक प्रकारनुं शुच ध्यान जाणवुं, एवा अनेक प्रकार ना शुच ध्यानमां जीव वर्त्ते ठे, तथापि अंतरमां इंद्रियरूप सुखनी लालचना परिणाम ठे, तेणें करी (शुच के०) पुण्य उपार्जन करे ठे, ते बीजुं पुण्यतत्व थयुं, अने ते पुण्यनां दलीयां अजीव ठे, ते आश्रवरूप जाणवां, एटले त्रीजुं जीव तत्व अने चोथुं आश्रवतत्व थयुं. अने ए दलीये जीव बंधाय ठे, ते पांचमुं बंधतत्व थयुं.

१९२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुद्ध ध्यानरूपमां केटलां तत्व पामीर्यें ?

गुरुः—शब्द समजिरूढ नयने मत्तें समकेत जावें चाथा गुणठाणाथी मां नीने थावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें शुद्ध ध्यान जाणवुं. तेमध्ये शब्द नयने मत्तें समकेत जावें ठे, सातमे गुणठाणे जे जीव शुद्ध ध्यानमां वर्त्ते ठे, तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीर्यें, अने समजिरूढ नयने मत्तें तेरमे, चौदमे गुणठाणे केवली जगवान् शुद्धध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें शुद्ध ध्यान वर्त्ते ठे, तेमां आगल कहां, ते रीतें नवतत्व पामीर्यें?

१९३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी कर्मफल चेतनामां केटलां तत्व पामीर्यें ?

गुरुः—जे जीव, कर्मनां फल जोगवे ठे तेने कर्मफल चेतना कहीयें, ते प हेला गुणठाणाथी मांकीने चौदमा गुणठाणा लगे जाणवी, तिहां जे पहे ले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीव कर्मनां फल जोगवे ठे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें ठ तत्व पामीयें. अने समकेत जावें चोथा गुणठाणाथी मांकीने यावत् अगीधारमा बारमा गुणठाणा पर्यंत जे जीव, कर्मनां फल जोगवे ठे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें. तथा समजिरूढ नय ने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे वर्त्तता केवली जगवान्, पण कर्मनां फल जोगवे ठे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्व पामीयें.

१५४ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी ज्ञानचेतनामां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—शब्द नयने मतें चोथे गुणठाणे समकेती जीवने ज्ञानचेतना जाणवी, अने पांचमे गुणठाणे देशविरति श्रावकने पण ज्ञानचेतना जा णवी, तथा ठठे, सातमे, यावत् अग्यारमे, बारमे गुणठाणे वर्त्तता साधु मु निराजने पण ज्ञानचेतना कहीयें, कारण के एक रूपैयानी पूंजीवालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, अने दश रूपैयावालो पण रूपैयानो धणी कहेवा य, अने सो रूपैयावालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, तथा हजार रूपैया वालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, एमं यावत् लाख रूपैया अने कोड रूपैया वालो पण रूपैयानो धणी कहेवाय, तेम इहां चोथा गुणठाणाथी यावत् चौदमा गुणठाणा पर्यंत तथा मोक्ष पर्यंतना सर्व जीव ज्ञानी कहीयें तिहां शब्दसमजिरूढ नयने मतें समकेतजावथी मांकी यावत् अगीधारमा बारमा गुणठाणा लगे जे साधु, मुनिराजपणे विचरे ठे, तेमां आठ तत्व पामीयें अने समजिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जग वान् विचरे ठे, तेमां आगल कह्यां, ते रीतें नव तत्व पामीयें, तथा एवंचूत नयने मतें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें बिराजमान अनंत सुखने विलासें करी सादि अनंतमे जागें सिद्ध परमात्मा वचें ठे, तेमां आगल कह्यां ते रीतें त्रण तत्व पामीयें.

१५५ शिष्यः—नवतत्वमांथी अशुज प्रकारें कर्मचेतनामां केटलांतत्वपामीयें?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मतें पहेले गुणठाणे अशुज प्रकारें कर्म चेतना मां पांच तत्व पामीयें, ते आबी रीतेंः—कोइ जीवनी चेतना पापरूप प रिणामें वचें ठे, तेने अशुज प्रकारें कर्मचेतना कहियें. तेमां एक तो जी

वनी चेतना ते जीवतत्त्व, बीजुं अशुच एटले पाप तत्त्व, त्रीजुं पापनां द
द्वीयां ते अजीवतत्त्व, चोथुं ए आश्रव रूप ठे माटे आश्रव तत्त्व अने
पांचमुं ए दक्षीये जीव बंधाय ठे, माटे बंधतत्त्व जाणवुं.

१९६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमां शुच प्रकारें कर्म चेतनामां केटला तत्त्वठे?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे शुच प्रकारें कर्म चेतनामां
पांच तत्त्व पामीयें, तिहां कोइ जीवनी चेतना पुण्यरूप परिणामें वत्तें ठे,
तेने शुच प्रकारें कर्मचेतना कहीयें, तेमां एक जीवनी चेतना अने बी
जुं (शुच के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्यनां दक्षीयां ते अजीव तत्त्व, चोथुं ए आश्रव
रूप ठे माटे आश्रव तत्त्व, पांचमुं ए दक्षीये जीव बंधाय ठे माटे बंधतत्त्व ठे.

१९७ शिष्यः—एनवतत्त्वमांशीआर्त्तरीड्रध्याननीजावनामांकेटलांतत्त्वपामीयें.

गुरुः—आर्त्त रौड्रध्यान पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने होय, तेमां आ
गल कहां, ते रीतें ठ तत्त्व पामीयें, अने चोथे गुणठाणे समकेती जीव तथा
पांचमे गुणठाणे देशविरति जीवने पण आर्त्त रौड्र ध्यान होय, ए परमार्थ
देवचंद्रजीकृत आगमसार थकी जाणवो तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

१९८ शिष्यः—एनवतत्त्वमांशीधर्मध्यानशुक्लध्याननीजावनामांकेटलांतत्त्वठे?

गुरुः—शब्दसमच्चिरूढ नयने मत्तें धर्मध्यान तथा शुक्लध्याननी जाव
नामां आठ तथा नव तत्त्व पामीयें, तिहां शब्द नयने मत्तें धर्मध्याननी
जावनायें चोथे गुणठाणे समकेती जीव अने पांचमे गुणठाणे देशविरति
जीव, तथा ठे सातमे गुणठाणे साधुमुनिराज होय, तेमां आगल कहां,
ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. तथा शुक्लध्याननी जावना वाला जीव, नवमे
गुणठाणेची यावत् अगीयारमा बारमा गुणठाणा लगें बद्धस्थ मुनिराज
होय. तेमां पण आठ तत्त्व पामीयें. अने तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली
जगवान् शुक्लध्यान ध्यावे ठे, तेमां नव तत्त्व पामीयें.

१९९ शिष्यः—एनवतत्त्वमांशीअशुचप्रकारेंजीवनेबाधकरूपकेटलांतत्त्वठे?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे अशुच प्रकारें जीवने बाधक
रूप पांच तत्त्व पामीयें. तेमां एक तो जीव तत्त्व, बीजुं अशुच प्रकारें बा
धक ते पाप, तथा ए पापनां दक्षीयां अजीव ते आश्रवरूप जाणवां, एटले
त्रीजुं अजीव, चोथुं आश्रव अने पांचमुं ए दक्षीये जीव बंधाय ठे, ते बंध.

२०० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांशी शुचप्रकारें जीवने बाधकरूप केटलां तत्त्व?

गुरुः—ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे जीवने शुचप्रकारें बाधकरूप पांच तत्त्व जाणवां. तेमां एक तो जीव, बीजुं शुचप्रकारें बाधक ते पुण्य, त्रीजुं ए दलीयां अजीव ठे. चोथुं ए आश्रव रूप ठे अने पांचमुं बंधतत्त्व. १७१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुचप्रकारें साधकरूप केटलां तत्त्व?

गुरुः—चोथे गुणठाणे समकेती जीव, पांचमे गुणठाणे देशविरति, अने षष्ठे सातमे गुणठाणे साधुमुनिराज अने धावत् अगीधारमा बारमा गुणठाणापर्यंत शब्द समजिरूढनयने मत्तें शुद्धप्रकारें साधक दशा जाणवी, तेमां आगल कक्षां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीयें. अने समजिरूढ नयने मत्तें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जगवानने शुद्धप्रकारें साधक दशा जाणवी, तेमां आगल कक्षां, ते नव तत्त्व पामीयें.

१७२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी कर्त्तारूप केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमां अनेक नयनी अपेदायें करी कर्त्तारूप एक जीव तत्त्व जाणवुं. ते आवी रीतें—नैगम अने संग्रह नयने मत्तें सर्व जीव, पोताना स्वरूपमां पारिणामिक जावें वर्त्ते ठे, अने व्यवहारनयें करी जीव शुचाशुच रूप करणीनो कर्त्ता कहियें, एटले कोइ जीव व्यवहारथकी शुचाशुचरूप करणी करे ठे, अने ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंगजावनी चिकाशरूप परिणाम वर्त्तता नथी. तेमाटे ते जीव, पुण्य पापरूप फल प्रत्यें न पामे, केम के ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग जावनी चिकाशरूप परिणाम विना उपरथकी व्यवहार नयने मत्तें शुचकरणीरूप वीरा शालवीयें अठार हजार साधु प्रत्यें वांघ्या, तथापि पुण्यरूप फलप्रत्यें न उपाज्युं, तेमाटे अंतरंग जावनी चिकाशविना पुण्यरूप दलीयां चोटे नहीं ॥ गाथा ॥ आत्मसाखें धर्म जे, त्यां जननुं शुं काम ॥ जनमनरंजन धर्मनुं, मूढ्य न एक बदाम ॥ १ ॥ अर्थः—अंतरंग आत्मानि साखें जे धर्म करवो, ते धर्म प्रमाण ठे, एटले आत्मा निरावरण करवा सारु धर्म करवो ते प्रमाण ठे अने (जन के०) लोक तेनां मन रीज ववा रूप अथवा यशःकीर्त्ति शोचानी वांढारूप परिणामें जे धर्म करवो, ते धर्मनुं मूढ्य एक बदाम मात्र पण नथी, एटले वीरा शालवीनी पेरें कृष्ण वासुदेवनुं मन रीजववारूप व्यवहारथकी तो शुचकरणी घणीए करी, पण बदाम मात्र फल प्रत्यें न पाम्यो. ए परमार्थ जाणवो. अने ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंगजावनी चिकाश विना उपरथकी व्यवहार नयने मत्तें

समकेती जीव, कर्मने वशें करी जोगादिक अशुच करणी अनेक प्रकारें करे ठे, परंतु अंतरंग जावनी चिकाश विना तेने पापरूप दळीयां चोटतां नथी. अत्र गाथा “ज्ञानीको जोग है, सो निर्झाराको हेतु है ॥ अज्ञानीको जोग है, सो बंधफल देतु है” ॥ माटे समकेती जीव, कर्मने वशें करी अत्रतीने उदयें संसारमां व्यवहार नयें करी उपर थकी विषयादिक अशुच करणी करे ठे, पण ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग परिणामरूप जावनी चिकाश विना कर्मरूप दळीयां लागतां नथी, ए परमार्थ जाणवो, एम व्यवहार नयने मत्तें जीव अशुचप्रकारें करणीनो कर्त्ता ठे, तेहनूं स्वरूप सामान्य प्रकारें कळूं

वली ऋजुसूत्र नयने मत्तें जावना चिकाशरूप परिणामें करी जीव, पुण्यरूप फल प्रत्यें पामे, कारण के जीरणशेतें व्यवहार नयने मत्तें उपर थकी तो दान आप्युं नथी, परंतु ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग दान देवाना जावना चिकाशरूप परिणाम हता, तेषे करी जावचिकाशें बारमा देवलोक नां पुण्यरूप दळीयां लाग्तां, तथा तेमज श्री तीर्थकर जगवाने पण आगल श्रीजे जवें ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग जावनी चिकाशरूप परिणामें करी सर्व जीवने धर्म पमाडी दुःखथकी मूकावी सुखीयां करूं ? एवी जावना जावी, ते जावना चिकाशरूप परिणामें तीर्थकर नामगोत्रनां दळीयां वांध्यां, पण व्यवहार नयने मत्तें तो एक जीवने पण धर्म पमाडी दुःखथकी मूकावीने सुखीयो कस्यो नथी, तथापि परदयारूप जावथकी जिननाम कर्म उपाज्युं ए परमार्थ ठे, एटले ऋजुसूत्रनयने मत्तें जीव, शुच प्रकारें कर्मनो कर्त्ता तेनो ए परमार्थ कळो.

वली ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग अशुच जावना चिकाशरूप परिणाम ते थकी जीव जे ठे, ते पापरूप फल प्रत्यें उपाजें, जेम कालक सूरियो खाटकी ते राजगृही नगरी मध्ये दिन प्रत्यें पांचशे पाडा मारतो हतो. ते सारु तेने श्रेणिक राजायें कूवामां टांग्यो अने पाडा मूकाव्या, एटले व्यवहार नयने मत्तें ते खाटकी हिंसा नथी करतो, पण ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग पाडा मारवाना जावरूप परिणामनी चिकाशें वत्तें ठे, तेशी श्रीवीर प्रजुयें कळूं के हजी पाडा मारे ठे अने पापरूप दळीयां उपाजें ठे एटले व्यवहारनयें तो पाडा नथी मारतो परंतु ऋजुसूत्र नयने मत्तें अंतरंग हिंसारूप जावनी चिकाश वत्तें ठे, माटे हजी पाडा मारे ठे, एम कळूं मत

खव के चिकारों पापनां दलीयां लागे ठे, एम रजुसूत्रनयने मत्तें जीव अशुच प्रकारें कर्त्ता तेनुं स्वरूप कद्युं. ए रीतें व्यवहार नयनो अने रजुसूत्र नयनो ए परमार्थ जाणवो, सम्यग्दृष्टि जीवने ए बे नय प्रमाण ठे, एटले व्यवहारनयें करणी करवी अने रजुसूत्रनय हृदयमां धारवो, ते थकी जीवने कार्यनी सिद्धि नीपजे.

हवे शब्द समच्चिरूढ नयने मत्तें जीव ज्ञानदृष्टियें करी धर्मध्यान शुक्ल ध्यानरूप शुद्ध परिणामें करी स्वरूपना चिंतनरूप संवरमां रहेतां समय समय अनंता कर्मनी निर्झारा करे, अत्र गाथा ॥ ठठ अठम दसम, डुवाल सेहिं मासरू मास खमणेहिं ॥ एतोउ अणोग गुणो, सोहिं जिमीयस्स नाण स्स ॥१॥ जं अन्नाणी कम्मं, खवेश बहुआइं वास कोडीहिं ॥ तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेश उस्सासमित्तेणं ॥ २ ॥ अर्थः—सम्यक्ज्ञान रहित एवो अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव, ते ठठ, अठम, दशम, डुवालस, पासखमण, मासखमण प्रमुख अनेक प्रकारें तपस्या करतो, तथा ए तपस्या आदें देइने अनेकगुणें करी शोचतो घणा वर्षनी कोडी गमे तपस्यायें करी जेटलां कर्म खपावे, तेटलां कर्म, सम्यक् ज्ञानी जीव, मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें सत्तागतनां चिंतनमां रहेतां थकां एक श्वासोह्वासमां खपावे, एटले मिथ्यादृष्टिअज्ञानी जीव, घणा वर्षनी कोडी गमे तपस्या करी जे काम काढे, तेटलुं काम समकेतदृष्टि जीव, एक श्वासोह्वासमां काढे, ए रीतें शब्दसमच्चिरूढ नयने मत्तें करी जीव, संवर निर्झारा रूप कार्यनो कर्त्ता तेनो परमार्थ कह्यो.

हवे एवंचूत नयने मत्तें जीव सर्व कर्म खपावी, मोक्षपद पामी, लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे जागें परमानंद सुखने विलासे, बाधारहित अनंता सिद्ध परमात्मा वत्तें ठे. ए रीतें ए नयनी अपेक्षायें करी नव तत्त्वमां जीवनुं कर्त्तापणुं देखाड्युं, तेमाटे ए पंक्ति जीव चित्तमां उतारी, नयनी अपेक्षा विचारी, सर्वनय प्रमाण करे, ते प्राणी सम्यग्दृष्टि जीव जाणवो. अने जे एमां एक नय पकडे ते जीव मिथ्यादृष्टि जाणवो.

१७३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अशुच प्रकारें कर्त्ता रूप केटलां तत्व ठे.

गुरुः—रजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुणठाणे अशुच प्रकारें कर्त्ता रूपमां पांच तत्व जाणवां. एक तो कर्त्ता जीव पोतें, बीजुं (अशुच के०) पाप,

त्रीजुं पापनां दलीयां ते अजीव, चोथुं ए आश्रव रूप जाणवां ते आश्रव, पांचमुं ए दलीये जीव बंधाय ठे ते बंधतत्त्व जाणवुं.

१७४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुच प्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—शुचसूत्र नयनें मतें पहेले गुणठाणें शुच प्रकारें कर्त्तारूपमां पां च तत्त्व जाणवां, जेम कोइ एक जीव शुच करणी करे ठे, अने तेना अंतरं ग पुण्यरूप इंद्रिय सुखनी वांठायें परिणाम वत्तें ठे, तेने शुच प्रकारें कर्त्ता कहीये. तिहां कर्त्ता जीवतत्त्व, अने वीजुं (शुच के०) पुण्य, त्रीजुं पुण्य नां दलीयां ते अजीव, चोथुं ए आश्रवरूप ठे पांचमुं एणे करी जीव बंधाय ठे.

१७५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी शुच प्रकारें कर्त्तारूपमां केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—शुचप्रकारें कर्त्तारूपमां आठ तथा नव तत्त्व पामीये. जे कारणें शब्द समच्चिरूढ नयने मतें समकेत जावें चोथा गुणठाणाथी मांकीनेथा वत् अगीथारमा बारमा गुणठाणा लगें ठन्नस्थ अवस्थायें शुच प्रकारें कर्त्तारूप कहीये, तेमां आगल कख्यां, ते रीतें आठ तत्त्व पामीये. तथा सम चिरूढ नयने मतें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जगवानने शुचप्रकारें कर्त्ता कहीये, तेमां आगल कख्यां, ते रीतें नव तत्त्व पामीये.

१७६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने अशुच कारणरूप केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—ए नव तत्त्वमांथी अशुच कारणरूप एक पापतत्त्व जाणवुं, कारण के अशुच एटले पाप ते पापनां काम तो हिंसादि परिणाम ते आश्रवरूप जाणवां, एटले कारण तो जीवने अशुच मळ्यां पण जीव तेमांहे जले, तो बंधाय अने जो जीव तेमां जलीने बंधाय तो जीव, पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए पांच तत्त्व पामीये. अने जो जीव नही जले, तो नव तत्त्वमांथी एक पाप तत्त्व पामीये. तेथी अशुच कारणरूप जीवने एक तत्त्व ठे.

१७७ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुचकारणरूप केटलां तत्त्व पामीये ?

गुरुः—जीवने शुच कारण रूप एक पुण्य तत्त्व जाणवुं. एटले शुच कारण ते दान, दया, परोपकार, करुणा, सेवा, चक्ति, उत्तम गुणवान् जीवना बहुमान करवां ए आदें अने प्रकारें शुच कारण जाणवां, एटले (शुच के०) पुण्य रूप फलनी वांठायें परिणाम वत्तें ठे माटे ते आश्रवरूप जाणवां एटले जीवने कारण तो शुच मळ्यां, पण तेमांहे जीवनो उपयोग जले तो पुण्य

रूप दक्षीयां बांधे तेवारें जीव, पुण्य, अजीव, आश्रव अने वंध, ए पांच तत्व पामीयें नहीं तो शुच कारणरूप जीवने एक पुण्य तत्व जाणवुं.

१८७ शिष्यः—एनवतत्वमांथी जीवने शुद्धकारणरूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—जीव, शुजाशुच कर्मरूप कचरे लेपाणो, तेणें करी चार गतिरूप संसारां अनेक प्रकारनी विटवना जोगवे ठे, परंतु जो संवर अने निर्झरारूप वे शुद्ध कारण जीवने मळे, तो कर्मथकी ठोडावी मोक्ष नगरें पहाँचाडे. ए रीतें शुद्ध प्रकारें कारणरूप जीवने संवर अने निर्झरा ए वे तत्व जाणवां.

१८८ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी निश्चयथकी कार्यरूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—एतुंचूतनयने मतें निश्चयथकी कार्यरूप एक मोक्षतत्व जाणवुं. ते मोक्षपुरीमां तो आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्व पामीयें,

१८९ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी लौकिक मार्गमांहे केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—(लौकिकमार्ग के) संसारहेतुमार्ग एटले शुजाशुच विकाररूप संसारवृद्धिनां कारण सेववां तेने लौकिकमार्ग कहीयें, तेमां ठ तत्व पामीयें, जे कारणें राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हांसी, कुतूहल, अहंकार ममकाररूप अनेक प्रकारनी चेष्टाळ करवी, ते सर्व संसार वृद्धिनां कारण जाणवां. तेने लौकिकमार्ग कहीयें. अथवा तप, संयम, पूजा, प्रभावना, जक्ति, इंद्रियदमन, वैराग्य, जावना, ए आदि अनेक प्रकारनी कष्टक्रिया करे ठे, पण आ जवमां यशःकीर्त्ति, लक्ष्मी, पुत्र, कलत्र, परिवार, कृद्धिनी वांठायें अथवा परजवें शेठ, सेनापति, साहुकार, देवता, इंद्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तीनी पदवी पामवारूप वांठायें परिणाम वर्त्ते ठे, एटले ठे तो लोकोत्तर मार्ग, पण अज्ञान दशायें करी संसार वृद्धि हेतुमां गयो माटें लौकिकमां जल्यो, तेमां ठ तत्व पामीयें. एक तो जीव, अने शुजाशुच विकाररूप पुण्य पापनां दक्षीयां अजीवरूप अनंतां सत्तायें लाग्नां ते आश्रवचूत ठे, ए दक्षीये जीव बंधाणो ते ठहुं बंधतत्व ठे.

१९० शिष्यः—ए नव तत्वमांथी लोकोत्तर मार्गमां केटलांतत्वपामीयें ?

गुरुः—ए लोकोत्तर एटले लोकथकी उत्तर चारगतिरूप संसारनी वांठाथकी रहित एक मोक्ष मार्गने साधे, तेने लोकोत्तर मार्ग कहीयें. एटले समकेती, देशविरति तथां ठे सातमे गुणठाणे वर्त्तता जे साधु, मुनिराज, एम थावत् ठदस्थ अवस्था लगें सर्वे जीव, लोकोत्तर मार्गमां जाण-

वा, तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें. तथा तेरमे चौदमे गुणठाणे शुद्ध ध्यानमां वर्तता केवली जगवान् पण लोकोत्तर मार्गमां जा एवा, तेमां आगल कहां, ते रीतें नव तत्व पामीयें.

१९२ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जीवने बाधक दशा केटला तत्वनी साथें ठे ?

गुरुः—ए नव तत्वमांथी जीवने बाधक दशा ठ तत्वनी साथें ठे केम के जीवने अनादि कालना सत्तायें जावकर्मरूप राग अने द्वेष, शत्रु थइ लागे ठे, तेनी चिकाशें शुचाशुच विकाररूप आठ कर्मनां दळीयां लागे ठे, ते दळीयांने डव्यकर्म कहीयें, ते आठ कर्मथकी उत्तर कर्मरूप एक शोने अठावन्न प्रकृति जाणवी, ते प्रकृतिरूप कमें जीव बंधाणो, तेणें करी चार गतिरूप संसारमां फरे ठे, ए रीतें जीवने बाधक दशा कहीयें. तेमां आगल मिथ्यात्वगुणठाणे कहां, ते रीतें ठ तत्व पामीयें.

१९३ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जीवने साधक दशा केटला तत्वनी साथें ठे ?

गुरुः—नव तत्वमांथी जीवने साधकदशा वे तत्वनी साथें जाणवी, कारण के निगोदमां कमें करी जीवनी चेतना दवाणी, पण अकारनो अनंत मो जाग उघाडो हतो, तेणें करी जीवित पणुं हतुं तिहांथकी अकाम निर्झारायें कालस्थितिने योगें करी जीव उंचो आव्यो, त्रसपणुं पाम्यो, अने पुण्यना उदयें श्रावक कुल, देवगुरुनी योगवाइ मळी, परंतु शब्दसमजि रूढ नयने मत्तें समकित जावरूप संवर, निर्झारा, ए वे तत्व जो जीवने सहायकारी थाय, तो सकल कर्मथकी बोडावी जीवने मोक्ष नगरें पहुँचाडे, माटे साधकदशारूप जीवने संवर अने निर्झारा, ए वे तत्व जाणवां.

१९४ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी जीवने सिद्धदशा केटला तत्वनी साथें ठे ?

गुरुः—ए नव तत्वमांथी जीवने सिद्धदशा एक मोक्ष तत्वनी साथें जाणवी, कारण के एवंचूतनयने मत्तें सकल कर्म क्षय करी शुद्ध सत्ता निर्मल, परमज्योति, लोकालोकप्रकाशक, अनंत गुणसंपन्न होय, तेने सिद्ध दशा कहीयें, ते तो मोक्षमां होय, माटे मोक्षतत्वनी साथें सिद्ध दशा ठे.

१९५ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी संसारव्यापि केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—व्यवहारनयने मत्तें 'संसरतीति संसारः' एटले चारगतिरूप संसारमां संसरतुं तेने संसार कहीयें, तिहां पहेले गुणठाणे मिथ्यादृष्टि जीव चारगतिरूप संसारमां संसरे ठे, तेमां आगल कहां, ते रीतें ठ तत्व प

मीयें, अने समकित जावें चोथा गुणठाणाथी मांफी यावत् अग्यारमेवारमे गुणठाणे ठ्ठस्थ अवस्थायें साधु मुनिराज पण वत्तें ठे, ते पण चार गति रूप संसारमां व्यवहारनयने मत्तें संसरे ठे, माटे तेने संसारी कहीयें. तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें, तथा समजिरूढ नयने मत्तें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जगवान् वत्तें ठे, तेने व्यवहार नयने मत्तें संसारी कही बोलाव्या ठे, तेमां आगल कहां, ते रीतें नव तत्व पामीयें.

१६६ शिष्यः—ए नव तत्वमां सिद्धव्यापि केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—शुक्ल ध्यानरूप अश्रियें करी अष्ट कर्म बाळी, अष्ट गुण संपन्न, लोकने अंतें विराजमान, अनंतसुख जोगी, सादि अनंतमे जागे वत्तें ठे, तेने सिद्ध जगवान् कहीयें. तेमां आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्व पामीयें.

१६७ शिष्यः—ए नव तत्वने साते नयें करी जीवतुं गुणीपणुं केम जाणीयें ?

गुरुः—ए नव तत्वमांथी एक जीवतत्वने गुणी कहीयें, कारण के नैगम अने संग्रह नयने मत्तें पारिणामिक जावें करी सर्व जीव, पोताना खजाव रूप गुणमां रह्या वत्तें ठे, माटे ए वेहु नयने मत्तें सर्व जीव, सत्तायें ए क समान ठे, तेथी एक जेदें कहीयें, अने व्यवहार नयने मत्तें जीवना चौद जेद, बत्रीश जेद, तथा पांचशो त्रेशठ जेदपणे सर्वे कर्मरूप जडनी साथें अनंतो काल जेला रह्या, माटे जडरूप पणें करी जड कहेवाणा, अने ऋजुसूत्र नयने मत्तें अतरंग परिणामनी चिकाशें शुजाशुज कर्मने हेतुयें जीव, पुण्य पाप अजीवरूप आश्रवमां बंधाणो, तेणें करी चार गति रूप संसारमां पड्यो, माटे संसारी कहेवाणो अने शब्द तथा समजिरूढ नयने मते संवर निर्झरारूपपणे करी घाति कर्म ह्य कद्यां, तेवारें तेरमे गुणठाणे केवली कहेवाणो तथा एवंचूतनयने मत्तें सकल कर्म ह्य करी मोक्ष पण पामी लोकने अंतें विराजमान वत्त्यों, तेवारें सिद्ध कहेवाणो, एम अनेक नयनी अपेक्षायें पंक्ति लोकने ए नवतत्वमां जीवतुं गुणीपणुं जाणवुं.

१६८ शिष्यः—ए नव तत्वमां जीवने अशुज गुण रूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—अशुज गुण ते पापने कहीयें, अने ते पापनां दळीयां अजीव, ते आश्रवरूप जाणवां, अने ए दळीये जीव बंधाणो ठे, ए रीतें पाप, अ जीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्व जीवने अशुज गुणरूप जाणवां.

१६९ शिष्यः—ए नव तत्वमां जीवने शुज गुणरूप केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—शुभ्रगुण ते पुण्यने कहीयें ते पुण्यनां दक्षीयां अजीव ठे ते आश्रव रूप जाणवां, अने ए दक्षीये जीव बंधाणो ठे. ए रीतें पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्त्व जीवने शुभ्रगुणरूप जाणवां.

१०० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने शुद्ध गुणरूप केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—जीव, शुभाऽशुभ विकाररूप कर्म करी छेपाणो, तेथी चारगति रूप संसारमां अनेक प्रकारें पीडा जोगवे ठे, पण जो शब्द समजिरूढ नयने मत्तें संवर निर्झरारूप वे गुण सहायकारी थाय, तो जीवने सर्व कर्मथकी ठोडावी शुद्ध करे, अने अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी आपे, माटे संवर अने निर्झरारूप वे तत्त्व जीवने शुद्ध गुणरूप जाणवां.

१०१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी जीवने निश्चयगुणरूप केटलां तत्त्व ठे ?

गुरुः—एवंभूतनयने मत्तें निश्चय गुणरूप एक मोक्षतत्त्व जाणवुं, जे कारणें जिहां जन्म नही, जरा नही, मरण नही, रोग नही, शोक नही पीडा नही, आधि नही, व्याधि नही, हर्ष नही, हेत नही, प्रीति नही, संताप नही, कर्म नही, क्रोध नही, वाद नही, विवाद नही, शत्रु नही, मित्र नही, एवुं (शिव के०) निरुपद्रव अचक्षित अक्षय पदनी स्थिति, अनंत त सुखनुं वासरूप, ते मोक्ष पद कहीयें. ते जीवने निश्चयगुणरूप जाणवुं.

१०२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी प्रत्यक्ष ज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—प्रत्यक्ष ज्ञानना वे जेद ठे, एक सर्वप्रत्यक्ष, अने बीजुं देशप्रत्यक्ष, तेमां सर्वप्रत्यक्ष तो केवल ज्ञान ठे, तिहां केवली जगवान् लोका लोकनुं स्वरूप केवलज्ञानें करी प्रत्यक्षपणे जाणे ठे, तेमां नवे तत्त्व पामीयें, अने सिरूना जीव पण केवलज्ञानें करी सर्वज्ञाव, प्रत्यक्ष पणे जाणे ठे, तेमां त्रण तत्त्व पामीयें, ए रीतें सर्वप्रत्यक्षनुं स्वरूप कछुं, ह वे देशप्रत्यक्ष ज्ञानना वली बे जेद ठे. एक तो मनःपर्यवज्ञान, ते मनो वर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे, अने बीजुं अवधिज्ञान, ते पुञ्जलवर्गणाने प्रत्यक्ष पणे जाणे, ए देशप्रत्यक्षना बे जेद जाणवा, तेमां आठ तत्त्व पामीयें. ए रीते प्रत्यक्ष ज्ञानना स्वरूपमां आठ, नव तथा त्रण तत्त्व जाणवां.

१०३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी परोक्षज्ञानमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—परोक्षज्ञानना त्रण जेद ठे, एक आगमप्रमाण, बीजुं अनुमान प्रमाण, त्रीजुं उपमा प्रमाण, तिहां जे देवतानां सुख, नरकनिगोदनां

दुःख, ऊर्ध्वलोकना जाव, अधोलोकना जाव, तिर्था लोकना जाव, ए सर्वे श्री जिन आगमथकी प्रमाण करे, ते प्रथम आगमप्रमाण जाण वुं. तथा कोइ जीव, अजीवरूप वस्तुने अनेक प्रकारनी उपमा आपी बोला वीयें, जेम तीर्थकरने गंधहस्तीनी उपमा, चिंतामणि रत्ननी उपमा, ए री तें ते वस्तुना गुणप्रमाणें जीव अजीव वस्तुने उपमा देवी, ते वीजुं उप माप्रमाण जाणवुं. तथा कोइना घरमां धूमाडो देखी अग्निनुं प्रमाण थाय, तेमज कोइकनुं मुख देखी हर्ष, शोक अथवा रोग चिंतानुं प्रमाण था य, एवुं अनेक प्रकारनुं जे जाणपणुं तेने अनुमानप्रमाण कह्यीयें. ए रीतें सम्यक् ज्ञानना धणीने ए त्रण प्रकारें परोक्ष ज्ञाननुं जाणपणुं होय, तेमां आगल कहां, ते रीतें आठ तत्व पामीयें. अने जे मिथ्यात्वी जीवने ए त्रणे प्रकारें परोक्षज्ञाननुं जाणपणुं होय, तेमां उ तत्व पामीयें,

१०४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी स्वाज्ञाविक तत्व केटलां पामीयें.

गुरुः—जीव, जेवारें पोताना स्वज्ञावमां रहे, तेवारें संवर कह्यीयें अने ज्यां सुधी संवरमां जीव रहे, त्यां सुधी समय समय अनंतां कर्म निर्जारा वे, अने निर्जारा थाय, तेवारें जीव, मोक्षपद पामे, कारण के ॥ गाथा ॥ द्वाण अर्द्ध जे अघ टले, ते न टले जवनी कोड ॥ तपस्या करतां अति घणी, पण नावे ज्ञान तणी कोइ जोड ॥ १ ॥ अर्थः—एक घडीमां उ द्वाण थाय तेवुं अर्द्ध द्वाण एटले एक घडीनो वारमो जाग थयो, एटली वार सत्ताग तना चिंतनरूप संवरमां जीव रहेतो थको जेटलां कर्म खपावे, तेटलां कर्म कोडिचव सुधी बघ, अछम, मास, खमण आदिक तपस्या करतां न खपे. ए परमार्थ जाणवो. ए रीतें एक अंतरमुहूर्त्त स्वरूपना चिंतनरूप संवरमां रहेतो थको जीव, घातीकर्म द्वाय करी केवल ज्ञान पामे, अने पठी अघाति कर्म खपावी मोक्षपद पामे, एम ए नव तत्त्वमांथी जीव, संवर, निर्जारा अने मोक्ष, ए चार तत्व स्वाज्ञाविक जाणवां.

१०५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी विज्ञाविक तत्व केटलां पामीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, शुजाशुज विज्ञाव दशारूप परिणामें करी, पुण्य पा पनां दळीयां अजीवरूप बांधे, ते आश्रवचूत जाणवां. माटे जीव, पुण्य, पाप, अजीव, बंध अने आश्रव, ए उ तत्व विज्ञाविक जाणवां.

१०६ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी समकेतीने साध्यसाधनरूप केटलांतत्त्व ठे ?

गुरुः—नव तत्त्वमांथी समकेतीने साध्यरूप एक तत्व अने साधन रूप बे तत्व पामीयें, ते आवी रीतेंः—शब्दनयने मत्तें समकेत जावें जे जीव वत्तें ठे, ते एतुं चिंतवन करे ठे, जे माहारे जीवें कर्मवशें करी संसारां फरतां अनंता पुजल परावर्तन कख्यां, तेषेंकरी अज्ञानपणे घणी विराधनाळ करी, एटले केवली, ब्रह्मस्थ मुनिराज, तीर्थयात्रा, केवली प्ररूपित धर्म, समकेती, देशविरति, ब्रह्मचारी, ए आदें देइने अनेक प्रकारना गुणी जीवो तेना अर्वाणवाद बोलीने विराधनाळ करी, एम संसारमां फरतां अज्ञानने वशें करी में एवा उत्तम, गुणीजीवोनी निंदा करी, ईर्ष्या करी, ते कमें वीटाणो थको अनेक प्रकारें विटंबना जोगवी, तथा में दुष्ट पापी जीवें आज्ञानपणे एक इंद्रिय सुखनाज सावय माटे अनेक प्रकारें जीवने ठेदना, भेदना, ताडना, तर्जना, प्रमुख दुःख पीडा उपजा वी, एटले एक समकित गुण विना माहारे जीवें मिथ्यात्वजावें करी महा आकरा निविड कर्मना बंधप्रत्यें बांध्या, तेषें करी जारी थइने माहारे जीवें नरक निगोदमां अनंतां दुःख जोगव्यां, एम दुःख जोगवतां जोगवतां अवस्थितिने योगें करी जेवारें पुण्यरूप बोलावानी सहायें त्रसपणुं, पंचेंद्रिय परवडा, मनुष्यनो अवतार, देव गुरुनी योगवाइ मळी, तेवारें महोटे पुण्ये करी तत्वमयी, तत्व प्रकाशिनी, तत्वस्वरूपजासिनी देशना, गुरुमुखें सांजळी, तेथी महारी मिथ्यात्वनी बुद्धि विलय थइ, अने हुं बोधवीजना लाजप्रत्यें पाम्यो, एवा प्रकारनी जावनायें समकेतदृष्टि जीव, तत्वस्वरूपनी निर्मल प्रतीति करवा सारु जीवादिक नव पदार्थतुं जाणपणुं गुरुमुखें करे, ते आवी रीतेंः—नैगमादि सात नय, द्रव्यास्तिक दश नय, पर्यायास्तिक ठ नय, कारण पांच, कारक ठ, हेय, ज्ञेय, उपादेय, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, जाव, उत्सर्ग, अपवाद, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, निक्षेप, प्रमाण, तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, ए द्रव्यादि चार जांगे करी तथा नित्य, अनित्य, सत्, असत्, एक, अनेक, वक्तव्य, अवक्तव्य, ए नित्यादि आठ पदें करी, षट्द्रव्यतुं तथा नव तत्वतुं स्वरूप गुरुमुखें जाणे, अथवा त्रिजंगी, सप्तजंगी, अनेकजंगी, ए रीतें अनेक प्रकारें नव तत्व षट्द्रव्यतुं जाणपणुं करी स्वसत्ता परसत्तानी जासनरूप जेषें प्रतीति करी ठे.

तिहां स्वसत्ता ते एक निश्चयनयें करी शुद्ध, निर्मल, परमज्योति, कर्म

कलंकथकी रहित, शुद्ध, चिदानंद, वस्तुगतैः सत्तायै सिद्धसमान, अखंड, अखिस, शाश्वत, एवं पोताना आत्मानुं स्वरूप तेनी जेणें अंतरंग जा सनरूप जाणपणानी प्रतीति करी ठे, ते जीव, स्वसत्तायें रक्त कहियें अने परसत्ता ते शुजाऽशुज विकाररूप कर्मनुं ग्रहण करवुं अने पठी तैथकी उपना जे फलरूप विकार, इंद्रियना सावद्य, तेनेविषे मग्नपणे, एकाग्र चित्तें वर्तवुं, एवा परिणाम जे जीवना वर्तें ठे, ते जीव, परसत्तायें रक्त कहियें. ए स्वसत्ता अने परसत्तानो अर्थ जाणवो.

हवे समकेती जीव, अज्ञानदशाथी रहितथको उदासी परिणामरूप विरक्तजावें इंद्रियरूप विकारथकी रहित, एक पोताना आत्मानी सिद्ध समान जेणें प्रतीति करी ठे ॥ श्लोक ॥ यः परात्मा परंज्योतिः, परमः परमेष्ठिनाम् ॥ आदित्यवर्णस्तमसः, परस्तादामनंति थं ॥ १ ॥ सर्वे येनोन्मूढ्यंते, समूलाः क्लेशपादपाः ॥ मूर्ध्ना यस्मिन्नमस्यंति, सुरासुरनरेश्वराः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥ अस्यार्थः—जीव ठे ते परमात्मा ठे, परमज्योति ठे, पंचपरमेष्ठी थी पण अधिको पूज्य ठे, केम के पंचपरमेष्ठी तो मोक्ष मार्गना देखाड नार ठे, पण मोक्षनो जावावालो तो आपणो जीव ठे, अज्ञाननो मटाड नार ज्ञानदृष्टियें करी पोताना स्वरूपनो जाणनार, सर्व कर्मक्लेशनो खपाव नार, एवो पोतानो आत्मा ध्यावो. तेहीज परम श्रेयनुं कारण ठे, शुद्ध ठे, परम निर्मल ठे, एवो आत्मा उपादेय जाणी सईहे. जेहवुं पोताथी निर्वहे, तेवो त्यागवैराग्यमां प्रवर्तें. एवे श्लोक श्रीहेमाचार्यकृत वीतरागस्तोत्रना ठे.

एटखे धनने परवस्तु जाणी, सुपात्रने दान आये, इंद्रियना विकारने कर्म बंधनां कारण जाणी, तेने परिहरी शील पाखे, आहार पुजल परवस्तुनो ठे, ते शरीरपुष्टिनुं कारण ठे, अने शरीरपुष्ट क्रीधे इंद्रियना विषयनी पुष्टि थाय, ते सर्व परस्वजाव जाणवो. माटे तिहांथकी समकेती जीव, विरक्त जावें, संसार उदासी, त्यागरूप वैराग्य जावनायें वर्ततां एक पोतानी सत्तायें वस्तुधर्मनी जेणें प्रतीति करी ठे, अने पोतानी आत्मसत्ता साधवाने विषे जेनुं चित्त उजमालपणे उद्यममां प्रवर्तें ठे, एवी रीतें साध्य जेनुं एक चोखुं ठे, अने (साधन के०) जे संवर निर्झरारूप व्रत, पञ्चस्काण, पोसा, सामायिक, पडिकमणुं, तीर्थयात्रा, पूजा, प्रजावना, महोत्सव, ध्यान, स्मरण, इत्यादि अनेक प्रकारें साधना ठे, पण साध्य तो

पोताना आत्माने कर्मथकी रहित निरावरण करवारूप एकज ठे, एम खसत्ता परसत्तानी वेंचण करी पोतना स्वरूपमां रहे, तेतली वार जीवने संवर कह्दीयें. अने ए संवरमां जीव रहे, तिहां सुधी समय समय अ नंता कर्मना थोकडा निर्झारावे, एटले निर्झारातत्व कह्दीयें, माटे ए नव तत्वमां समकेती जीवने साध्यरूप एक मोक्षतत्व जाणवुं. अने साधन रूप संवर अने निर्झारा ए बे तत्व जाणवां.

१०९ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी मिथ्यात्वीनेसाध्यसाधनरूपकेटलां तत्व ठे.

गुरुः—मिथ्यादृष्टि जीव, पहेले गुणठाणे शुचकरणीरूप पुण्यफलहेतु इंद्रिय सुखनी बालचें अनेक प्रकारें कष्टक्रिया, व्रत, पंचस्काण, तप, ज प करे ठे, पण अंतरंग पुण्यरूप फलनी वांढायें परिणाम वर्त्ते ठे, एटले एक कर्त्ता जीवतत्व, अने वांढा पुण्यनी ते वीजुं पुण्यतत्व, तथा पुण्यनां दलीयां अजीव ठे ते आश्रवरूप जाणवां, एटले त्रीजुं अजीवतत्व, चोथुं आश्रवतत्व अने ए दलीये जीव बंधाणो, ते पांचमुं बंधतत्व थयुं. ए रीतें नव तत्वमांथी मिथ्यादृष्टि जीवने साध्य साधनरूप पांच तत्व जाणवां.

११० शिष्यः—ए नव तत्वमांथी द्रव्यनयमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार द्रव्य नय कह्दीयें, ए चार नयनुं जाणपणुं प्रथम गुणठाणे जाणवुं. माटे ए द्रव्य नयने मतें जे जीवना परिणाम वर्त्ते ठे, ते जीव, शुचाशुच कर्मरूप पुण्य पापना फल प्रत्ये उपाजें ठे, माटे कर्त्ता जीव अने पुण्यपापनां दलीयां अजीव ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीये मली जीव बंधाणो, ए रीतें जीव, पुण्य, पाप, अजीव, आश्रव अने बंध, ए ठ तत्व, द्रव्यनयें जे जीवना परिणाम वर्त्तता होय, तेमां जाणवा.

१११ शिष्यः—ए नव तत्वमांथी ज्ञाननयमां केटलां तत्व पामीयें ?

गुरुः—शब्द, समजिरूढ अने एवंचूत ए त्रण ज्ञाननय जाणवा, एट ले जे जीवना शब्द अने समजिरूढ नयने मतें बद्धस्थ अवस्थापर्यंत प रिणाम वर्त्ते ठे, तेमां आठ तत्व पामीयें, अने समजिरूढ नयने मतें तेर मे गुणठाणे केवली जगवान् वर्त्ते ठे, तेमां नव तत्व पामीयें, तथा एवं चूत नयने मतें सिद्ध जगवान् वर्त्ते ठे, तेमां त्रण तत्व पामीयें, ए रीतें ज्ञान नयें जे जीव वर्त्तता होय, तेमां आठ नव अने त्रण तत्व जाणवां.

११० शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अढीछीपव्यापिकेटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—अढी छीपमां मिथ्यात्वी जीव रह्या ठे, ते आश्रयी ठ तत्त्व पामीयें, अने समकेतजावें ठद्वस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वत्तें ठे, ते निर्ज्ज राप्रत्यें करे ठे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें, अने तेरमे गुणठाणे केवली जग वान् वत्तें ठे, तेमां नव तत्त्व पामीयें,

१११ शिष्यः—एनवतत्त्वमांथी अढीछीपथी वाहेरना लोकमां केटलां तत्त्व ?

गुरुः—अढी छीपथी वाहेर तिर्यच जीव रह्या ठे, अने देवता, विद्याधर तथा मुनिराजनुं अढीछीप वाहेर आवागमन ठे, माटे तिहां मिथ्यात्वी जीवमां ठ तत्त्व पामीयें, अने समकेत जावें जे जीव वत्तें ठे, तेमां आठतत्त्व पामीयें.

११२ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी ऊर्ध्व लोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—ऊर्ध्वलोकमां वैमानिक देव रह्या ठे, सिद्धना जीव रह्या ठे, पांच स्थावरना जीव रह्या ठे, अने निगोदीया जीव रह्या ठे, तेमां सिद्धना जीव आश्रयी त्रण तत्त्व पामीयें, अने मिथ्यात्वी जीव आश्रयी ठ तत्त्व पामीयें, तथा समकेती जीव आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें.

११३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी तिर्था लोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—तिर्था लोकमां जे मिथ्यात्वी जीव ठे, ते आश्रयी ठ तत्त्व अने समकेतजावें ठद्वस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वत्तें ठे, तेमां आठ तत्त्व, तथा तेरमे गुणठाणे केवली जगवान् वत्तें ठे, तेमां नव तत्त्व पामीयें.

११४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी अधोलोकमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—अधोलोकमां जवनपति, देव तथा नारकीना जीव अने पांच स्थावरना जीव, तथा निगोदीया जीव रह्या ठे, तेमां समकेती जीव आश्रयी आठ तत्त्व पामीयें, अने मिथ्यात्वीजीव आश्रयी ठ तत्त्व पामीयें.

११५ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी व्यवहार नयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—व्यवहारनयनो मूलभेद तो एक ठे, अने विस्तारथकी ठ भेद जाणवा. ते आवी रीतें—एक तो अशुद्धव्यवहार नय ठे, ते अशुद्धव्यवहारनयें करी जीवमां अज्ञान, राग, द्वेष, ए अनादिकालनां शत्रुचूत थइ लाग्यां ठे, तेणें करी जीवमां अशुद्धपणुं जाणवुं, माटे ए अशुद्धतानी चि काशें करी जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दक्षीयां सत्तायें लागे ठे,

ए अशुद्धता जीवने अनादिनी जाणवी, ए रीतें ए अशुद्ध व्यवहारनयें जीव कर्त्ता जाणवो. तेनुं स्वरूप संक्षेपमात्र कळुं.

हवे वीजो शुद्धव्यवहार नय ठे. तेणें करी जीव, दान, शीयल, तप, ज्ञान, पूजा, प्रज्ञावना, सेवा, प्रकृति, साहम्मिवात्सल्य अने विनय, वैयावच, उपकार, करुणा, दया, यत्ना, मनोहर वचन बोलवुं, सर्व जीवनुं रूढुं चिंतवुं, ए आदें देइ अनेक प्रकारें जीव शुद्धव्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो.

हवे त्रीजो अशुद्धव्यवहार नय. तेणे करी जीव क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हांसी, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाडी, मूर्खा, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, ए आदें देइ अनेक प्रकारें जीव, अशुद्ध व्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो.

हवे चोथो उपचरितव्यवहारनय. तेणें करी जीव, धन, कुटुंब, परिवार, हाट, घर, वखार, गाम, गरास, देश, चाकररूप दास, दासी, वाणोतर, राजकृति, क्षेत्र, खलां, वाडी, वन, आराम, कूवा, वाव्य, सरोवर, नवाण, ए आदि अनेक प्रकारनी जे वस्तु पोताथकी प्रत्यक्ष जूदी ठे, तेने जीव, अज्ञानपणे पोतानी करी जाणे ठे, तेने महारुं महारुं करतो फरे ठे, तेथी तेना पापनो अधिकारी थाय ठे, ए उपचरितव्यवहारनयें जीव; कर्त्ता जाणवो.

हवे पांचमो अनुपचरित व्यवहारनय. तेणें करी जीव, शरीरादिक पर वस्तु जे पोताना आत्मस्वरूपथकी प्रत्यक्षपणे जूदी ठे, परंतु पारिणामिक जावें लोखीभूतपणे एकठी जीवनी साथें मली रद्दी ठे, तेने जीव, पोतानी करी जाणे ठे, जो पण जीवें एवां शरीर तो संसारमां अनंती वार कख्यां, अने अनंती वार मूक्यां, तो पण अज्ञानपणे जीव, पोतानी करी जाणे ठे, तेथी तेने वास्ते अनेक प्रकारनां हिंसादिक पापें करी जीवने पुष्ट करे ठे, ए अनुपचरितव्यवहारनयें जीवने कर्त्ता जाणवो.

ए पांच प्रकारें व्यवहारनयमां जे जीवना परिणाम वर्त्ते ठे, ते जीव, शुद्ध शुद्धरूप फल प्रत्यें पामे. ए पांच व्यवहार ते ऋजुसूत्र नयने मत्तें पहेले गुण गाणे जाणवा. एमां वर्त्तनारो जीव, मिथ्यादृष्टि होय, तेमां ठ तत्व पामीयें.

हवे षष्ठो शुद्धव्यवहार-नय, एटले शुद्धाशुद्धकर्मरूप कचरामां जीव, खेपाणो ठे तिहांथकी शुद्धनिर्मलतानो करनार, तेने षष्ठो शुद्धव्यवहार नय कहीयें. एटले नीचेना गुणगाणानुं बोडवुं अने उपरला गुणगाणानुं खेवुं,

तेने शुद्धव्यवहारनय जाणवो. माटे पहेले गुणठाणे मोहनीय कर्मनी सात प्रकृति खपावी, चोथे गुणठाणे आव्यो, तेवारें आत्माना अनंता गुणमां हेथी एक समकेत गुण प्रगट्यो, एटली जीवने शुद्धता थइ, एमज चोथे थी पांचमे, पांचमेथी ठठे, ठठेथी सातमे, एम यावत् अगीयारमे वारमे गुणठाणे ठन्नस्थ अवस्था पर्यंत जे जीव वत्ते ठे, तेमां आठ तत्त्व पामीयें.

तथा समञ्जिरूढनयने मत्तें तेरमे चौदमे गुणठाणे केवली जगवान् शुद्ध व्यवहारमां वत्ते ठे, तेमां नव तत्त्व पामीयें, एटले चौदमे गुणठाणे केवली जगवानने पण पंचलघु अक्षररूप कार्य करवुं बाकी ठे, तेथी एटली जीवने अशुद्धता जाणवी. ते अशुद्धताने टाले अने शुद्धता निपजावे, तेने शुद्धव्यवहार नय कहीयें. एटले जेम जेम आगलनां गुणठाणानुं ठोडवुं अने उपरलां गुणठाणानुं लेवुं, तेने शुद्धव्यवहारनय जाणवो. ए रीतेंठ प्रकारें व्यवहारनयना स्वरूपमां ठ, आठ तथा नव तत्त्व जाणवां.

११६ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी निश्चयनयमां केटलां तत्त्व पामीयें ?

गुरुः—एवंचूतनयने मत्तें जीवें ? ज्ञानावरणीयकर्मनी पांच प्रकृति क्षय करी अनंत ज्ञान प्रगट कखुं, १ दर्शनावरणीय कर्मनी नव प्रकृति क्षय करी अनंत दर्शन प्रगट कखुं, २ वेदनीयकर्मनी वे प्रकृति क्षय करी अव्याबाध सुख प्रगट कखुं. ४ मोहनीय कर्मनी अठावीश प्रकृति खपावी, द्वायिक समकेत अने यथाख्यातचारित्र प्रगट कखुं. ५ नामकर्मनी एकशो त्रण प्रकृति खपावी, अरूपी गुण प्रगट कख्यो. ६ आयुःकर्मनी चार प्रकृति खपावी, अक्षयस्थितिगुण प्रगट कख्यो, ७ गोत्रकर्मनी वे प्रकृति खपावी, अ गुरुलघुगुण प्रगट कख्यो, ८ अंतरायकर्मनी पांच प्रकृति खपावीने, अनंत वीर्यशक्तिरूप गुण प्रगट कख्यो. ए रीतें ए आठ कर्म अनादिकालनां आत्म गुणने घातक हतां, आत्मगुणने रोधक हतां, आत्मगुणने आवस्था हता, तेने शुक्लध्यानरूप अग्निं करी आत्मप्रदेशथकी अष्ट कर्म बाळी अष्टगुणसंपन्न लोकने अतें विराजमान सादि अनंतमे जागें अनंता सिद्ध परमात्मा एवंचूतनयने मत्तें थया ठे, तेमां आगल कहां, ते रीतें त्रण तत्त्व पामीयें. ए रीतें नव तत्त्वमांथी निश्चयनयमां त्रण तत्त्व जाणवां.

११७ शिष्यः—जीवना व्यवहारप्राण ते कयां ? अने निश्चयप्राण ते कयां ?

गुरुः—व्यवहार नयना मतवालो तो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे,

તેને તેહવું કહી બોલાવે, ઇટલે ચાર ગતિરૂપ સંસારમાં જીવ નવ નવા જ વેં કરી એકેંદ્રિયથી માંકી પંચેંદ્રિય પર્યંત દેવતા, નારકી, તિર્યંચ અને મનુષ્ય નામ ધરાવી ચવવું ડપજવું કરે છે, માટે જે ગતિમાં ડપજે, તે ગતિનાં જે પ્રાણ જીવ ધરે છે, તે વ્યવહારનયેં પ્રાણ જાણવાં, અને નિશ્ચય પ્રાણ તો જીવને સત્તાગતેં જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર, તપ, વીર્ય અને ડપયોગરૂપ છે. એ જીવનાં નિશ્ચયપ્રાણ તે સદાકાલ શાશ્વતાં છે, એનો કોઈ કાલેં વિનાશ થતો નથી. ઇટલે વ્યવહારપ્રાણની તો ઘટ વધ થાય, ગતિયેં ગતિયેં વિનાશ થાય, પરંતુ નિશ્ચયપ્રાણ તો શાશ્વતાં જાણવાં.

૨૧૬ શિષ્ય:—એક મુઠીમાં જીવ કેટલા પામીયેં ?

ગુરુ:—નિગોદિયા ગોલા લોકાકાશપ્રમાણે અસંખ્યાતા છે, ઇટલે ચૌદ રાજલોક, જીવેં કરી કાજલની કૂપી પ્રમાણેં જસ્યો છે, અને એક મુઠીમાં પણ નિગોદના ગોલા અસંખ્યાતા છે, તેમાં અનંતા જીવ પામીયેં.

૨૧૭ શિષ્ય:—ષડ્દ્રવ્યમાંહેલાં એક મુઠીમાં કેટલાં દ્રવ્ય પામીયેં ?

ગુરુ:—એક મુઠીમાં બે દ્રવ્ય પામીયેં, કેમ કે લોકમાં ધર્માસ્તિકાયના અસંખ્યાતા પ્રદેશ છે, અધર્માસ્તિકાયના પણ અસંખ્યાતા પ્રદેશ છે, અને આ કાશાસ્તિકાયના પણ અસંખ્યાતા પ્રદેશ છે, તેમ નિગોદિયા ગોલા પણ તે પ્રમાણેં અસંખ્યાતા છે, અને તે અસંખ્યાતા અસંખ્યાતા જેદ છે, તેથી એક મુઠીમાં પણ ધર્મ, અધર્મ અને આકાશના અસંખ્યાતા અસંખ્યાતા પ્રદેશ જાણવા. તેમ જીવ પણ અનંતા જાણવા. જેમ કોઈ એક વૈદ્યેં પૈશાજાર પૈશાજાર લાલ ઓષધી ઝાંકીને જેલી કરી તેમાંથી એક ચપટી જરીને આપે, તેને લલ ઓષધી કહીયેં, અને મહોટો ઢગલો પચ્યો છે તેને પણ લલ ઓષધી કહીયેં. એ દૃષ્ટાંતેં ચૌદ રાજલોકમાં પણ એકેક દ્રવ્યના અસંખ્યાતા અસંખ્યાતા પ્રદેશ જાણવા અને એક મુઠીમાં પણ અસંખ્યાતા અસંખ્યાતા પ્રદેશ જાણવા, ઇટલે એક મુઠીમાં ધર્મ, અધર્મ, આકાશ અને નિગોદિયા જીવના ગોલા પણ અસંખ્યાતા આવ્યા, માટે એક ધર્માસ્તિકાય બીજું અધર્માસ્તિકાય, ત્રીજું આકાશાસ્તિકાય અને ચોથું જીવાસ્તિકાય, એ ચાર દ્રવ્ય થયાં. હવે તે નિગોદમાંહેલો એક ગોલો લહિયેં, તેમાં અસંખ્યાતી નિગોદ છે, તે અસંખ્યાતીમાંથી એક નિગોદ લહિયેં તેમાં અનંતા જીવ છે, તેમાંહેલો એક જીવ લહ્યેં, તેના અસંખ્યાતા પ્રદેશ છે, અને જીવના એકેકા પ્રદે

शें कर्मनी अनंती वर्गणाळ लागीं ठे, अने एकेक वर्गणामां अनंता पुजल परमाणुआ रखा ठे, ए पांचमुं पुजलद्रव्य थयुं, अने ए परमाणुआ सदा काल शाश्वता ठे, माटे एकेका परमाणुआमां अनंतो उत्पादव्यय रूप काल वहीं गयो, माटे ठहुं कालद्रव्य पण अनंतुं कहींयें. अने परमाणुआ तो एना ए शाश्वता ठे. ए रीते एक मुठीमां ठ द्रव्य जाणवां,

१३० शिष्यः—जीवना पांचशें त्रेशठ जेद ठे, तेमांशी केटला जेदना जीव मरण पामे अने केटला जेदना जीव नहींं मरण पामे ?

गुरुः—जीवना पांचशो त्रेशठ जेदमांशी देवताना अपर्याप्तावस्थाना नवा णुं जेद नहींं मरे, तथा नारकीना अपर्याप्तावस्थाना सात जेद नहींं मरे, तथा युगलीया मनुष्यना अपर्याप्तावस्थाना ब्याशी जेद नहींं मरे, ए रीतें सर्व मली (१९९) जेद नहींं मरे, बाकीना (३७१) जेदवाला मरे.

ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप समकेतदृष्टि जीवना हितने अर्थें समकित रूप रत्न निर्मल करवाने वास्ते स्वसत्ता परसत्तानी प्रतीति करवाने दीपक समान, आत्मारथीं जीवने आचरण समान नवतत्त्व विचार कइयो ॥

॥ हवे अघ्यात्मस्वरूपबावनी कहींयें ठैयें ॥

॥ दोहा ॥ माया जाल मूकी परी, श्रुत शारीत्र विचार ॥ जवजल तारण पोतसम, धर्म हियामां धार ॥ १ ॥ धर्मथकी धन संपजे, धर्में सुखी या होय ॥ धर्में धन्न वधे घणुं, धर्म करे जग कोय ॥ २ ॥ धर्म करे जे प्राणीया, ते सुखीया जवमांय ॥ जगमां सहु जीजी करे, आवी लागे पाय ॥ ३ ॥ धर्म धर्म सहु को करे, धर्म न जाणे कोय ॥ धर्म शब्द जगमां वडो, विरखा बूके सोय ॥ ४ ॥ आतमसाखें धर्म जे, त्यां जननुं शुं काम ॥ जनमन रंजन धर्मनुं, मूढ्य न एक बदाम ॥ ५ ॥ पोचेगा तब कहेगा, तब लग क ह्यो न जाय ॥ मनमें रोष नहींं करो, जडके जागी जाय ॥ ६ ॥ माणस होणां मुसकिल्ल है, तो साध्य कहांसें होत ॥ साध हुवा तब सिद्ध जया, केनी न रही ज्योत ॥ ७ ॥ साधु जया तो क्या हुवा, न गया मनका देख ॥ समता सूं चित्त लाय कर, अंतरदृष्टि देख ॥ ८ ॥ चेतन तें परच्यो नहीं, क्या हुवा व्रतधार ॥ शाखि विहूणा खेतमें, वृथा बनाइ वाड ॥ ९ ॥ आतम अनुभव वासकी, कोशक नवली रीत ॥ नाक न पकरे वासना, कानग्रहे परतीत ॥ १० ॥ श्री जिनवाणी त्पुं नमी, कीजें आतम शुद्ध ॥ चिदानंद सुख

पामीयें, मिटे अनादि अशुद्ध ॥ ११ ॥ शुद्धात्मदर्शन विना, कर्म न बूटे
 कोय ॥ ते कारण शुद्धात्मा, दर्शन करो थिर होय ॥ १२ ॥ आत्म अनु
 जव रमण्यें, मटे मोहअंधार ॥ आपस्वरूपमें जलहले, नहीं तस अंत
 अपार ॥ १३ ॥ तिहां आत्म त्रिविधा कह्यो, बाहिर अंतर नाम ॥ परमात्म
 तिहां तीसरो, सो अनंत गुणधाम ॥ १४ ॥ प्रथम बहिरात्मलक्षण ॥ पुजलसैं
 रातो रहे, जाने एहनिधान ॥ तसलाजें लोच्यो रहे, बहिरात्मअधिधान ॥ १५ ॥
 द्वितीय अंतरात्म लक्षण ॥ पुजल खलसंगीपरें, सेवे अवसर देख ॥ तनु
 शक्ति ज्युं लकडी, ग्यानजेद पद लेख ॥ १६ ॥ बहिरात्म तज आत्मा,
 अंतर आत्म रूप ॥ परमात्मने ध्यावतां, प्रगटे सिद्ध स्वरूप ॥ १७ ॥ पु
 जल जाव रुचे नहीं, ताथें रहे उदास ॥ सो अंतर आत्म लहे, परमात्म
 परकाश ॥ १८ ॥ सिद्ध स्वरूपी जो कहूं, पण कबु देखुं न रूप ॥ अंतरदृष्टि
 विचारतां, अैसे न सिद्ध अनूप ॥ १९ ॥ अनुभव गोचर वस्तुका, जाणे ए
 हि अलाद ॥ कहन सुननमें किसुं नहीं, पामे परम आल्हाद ॥ २० ॥ अं
 तम परमात्म हुई, अनुभव रस संगतें ॥ द्वैतजाव मल नीसरे, जगवंतनी ज
 कतें ॥ २१ ॥ दोहा ॥ आत्मसंगें विलसतां, प्रगटे वचनातीत ॥ महानंद रस मो
 कलो, सकल उपाधि रहीत ॥ २२ ॥ सिद्धस्वरूपी आत्मा, समता रस जरपूर ॥
 अंतरदृष्टि विचारतां, प्रगटे आत्म नूर ॥ २३ ॥ आपें आप विचारतां, मन पा
 मे विशराम ॥ रस स्वादित सुख उपजे, अनुभव ताको नाम ॥ २४ ॥ अनु
 जव चिंतामणि रतन, अनुभव है रसकूप ॥ अनुभव मारग मोक्षको, अनु
 जव शुद्ध स्वरूप ॥ २५ ॥ चिदानंद चिन्मय सदा, अविचल जाव अनं
 त ॥ निर्मलज्योति निरंजनो, निराखंब जगवंत ॥ २६ ॥ कतकमल पर
 पंथकी, निःसंगें निर्लेप ॥ जिहां विजाव दुर्जावनो, नहीं लवलेशें खेप ॥
 २७ ॥ ज्युं नवनीतको जल बले, तब प्रगटे घृत खास ॥ तिम अंत
 र आत्मथकी, परमात्म परकाश ॥ २८ ॥ शुद्धात्म जावें रहे, प्रगटे
 निर्मल ज्योति ॥ ते त्रिभुवनशिर मुकुटमणि, गइ पाप सवि षोति ॥
 २९ ॥ निजस्वरूप रहेतां थकां, परस्वरूपको नाश ॥ सहज जावथी
 संपजे, उरते वचन विलास ॥ ३० ॥ अंतरदृष्टि देखीयें, पुजल चेतन रू
 प ॥ परपरिणति होय वेगली, न पडे ते जवकूप ॥ ३१ ॥ अंतर्गत जा
 ण्या विना, जे पहेरे मुनिवेश ॥ शुद्धकिया तस नवि हुवे, इम जाणो ध

रो नेह ॥ ३३ ॥ अंतर्गतनी वातडी, नवि जाणे मति अंध ॥ केवलखिंग धारी तणो, न करो तेह प्रसंग ॥ ३३ ॥ अंतर आत्मस्वभाव ठे, ते जाणे मुनिराय ॥ कर्ममल दूरें करे, एम जाणो मनमाय ॥ ३४ ॥ आत्म वस्तु स्वभाव ठे, ते जाणे ऋषिराय ॥ अध्यात्म वेदी कहे, इम जाणो चित्तमाय ॥ ३६ ॥ आत्म ध्यानै पूर्णता, रमता आत्म स्वभाव ॥ अष्ट कर्म दूरें करे, प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥ ३६ ॥ लाख कोड वरसां लगे, किरिया ये करी कर्म ॥ ज्ञानी श्वासोह्वासमां, इम जाणे ते मर्म ॥ ३७ ॥ अंतर मे ल सवि उपशमे, प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥ अव्याबाध सुख जोगवे, करी कर्म अज्ञाव ॥ ३७ ॥ अक्षय ऋद्धि लेवा जणी, अष्ट कर्म करो दूर ॥ अष्ट कर्म ना नाशथी, सुख पामे जरपूर ॥ ३९ ॥ संतोषीय सदा सुखी, सदा सुधार स लीन ॥ इंद्रादिक जस आगलें, दीसे दुःखीया दीन ॥ ४० ॥ जे सुख न हिं सुररायने, नही राया नही राय ॥ आत्म सुखने अनुजवे, ते संतोष पसाय ॥ ४१ ॥ सुरगण सुख त्रिहुं कालनां, अनंत गुणां ते कीध ॥ अनं तवर्गे वर्गित कस्यां, तोपण सुख समीध ॥ ४२ ॥ ते सुखनी श्वा करो, मूको पुजलसंग ॥ अल्पसुखने कारणें, दुःख जोगवो परसंग ॥ ४३ ॥ अथ तृतीय परमात्म लक्षण ॥ दोहा ॥ प्यारो आप स्वरूपमां, न्यारो पुजल खे ल ॥ सो परमात्म जाणीये, नही जस जवको मेल ॥ ४४ ॥ नामात्म वहिरातमा, थापना कारण जेह ॥ सो अंतर अव्यातमा, परमात्म गुण जेह ॥ ४५ ॥ ज्ञावात्म सो देखीये, कर्म मर्मको नाश ॥ स करुणा जगवं तकी, ज्ञावें ज्ञाव उदास ॥ ४६ ॥ परम अध्यात्मने लखे, सद्गुरु केरे संग ॥ तिनको जव सफलो हुवे, अविहड प्रगटे रंग ॥ ४७ ॥ धर्म ध्या नको हेतु है, शिवसाधनको खेल ॥ असो अवसर कब मिले, चेत सके तो चेत ॥ ४८ ॥ वक्ता श्रोता सब मिले, प्रगटे निज गुण रूप ॥ अखय खजानो ग्यानको, तीन जवनको रूप ॥ ४९ ॥ अष्टकर्म वन दाहिकें, तप सिद्ध जिनचंद ॥ तासम जो अप्पा गणे, ताकूं वंदे इंद ॥ ५० ॥ कर्मरोग औषध समी, ग्यान सुधारस वृष्टि ॥ शिवसुख अमृत सरोवरें, जय जय सम्यग्दृष्टि ॥ ५१ ॥ ज्ञानवृद्ध सेवो जविक, चारित्र समकित मूल ॥ अ जर अगम फल पद लहो, जिनवर पदवी फूल ॥ ५२ ॥ ए रीतें बहिरात्मा दिक त्रण आत्मानुं स्वरूप अध्यात्म बावनीये करी जाणवुं.

हवे जीव स्वरूपनुं ध्यान करवाने गाथा कहे ठे:- अहमिक्को खलु सुद्धो, निम्ममउ नाण दंसण सम्मग्गो ॥ निम्मम निउत्तचित्तो, सबेएए स्खयं नेमि ॥१॥ अर्थ:-ज्ञानी जीव एवी रीतें ध्यान करे जे हुं एक हुं, परपुत्र लथी न्यारो हुं, निश्चयनयें करी शुद्ध हुं, माहारं ज्ञान कर्ममलथी न्यारं ठे, निर्म्मम एटले ममताथी रहित हुं, ज्ञान दर्शनथी जख्यो हुं, हुं महारा ज्ञानजाव सहित हुं, हुं महारा गुणमां रह्यो हुं, ते चेतना गुण महारी सत्ता ठे, एवुं पोतानुं आत्मस्वरूप तेने ध्यावतो सर्व कर्मने क्षय करे ठे.

हवे समकेतनी शुद्धि करवा सारु निश्चय व्यवहाररूप चोचंगीयें करी देव, गुरु अने धर्मनुं स्वरूप देखाडे ठे.

३११ निश्चयथकी शुद्ध देव ते आपणो जीव, निष्पन्नस्वरूपी, तत्पर मणी, आपणा आत्मानुं तरण तारण ऊहाज ते आपणो आत्मा ठे, सर्व कर्म क्लेशनो खपावनार अने अनंतगुणरूप लक्ष्मीनो प्रगट करवा वालो आपणो जीव ठे, माटे पोताना आत्मानुं ध्यान एकाग्र चित्तें करतो आ राधना करतोथको जीव, संसार समुद्रना (तीर के०) कांठा प्रत्यें पामे.

३१२ तथा व्यवहारथकी सुदेव ते श्रीअरिहंत जगवान् बार गुणें करी सहित, चोत्रीश अतिशयें करी बिराजमान, पांत्रीश वाणीरूप गुणें करी ज व्य प्राणीने हितोपदेश करता आरीसानी पेरें निमित्त कारणरूप जाणवा.

३१३ तथा निश्चयथकी कुदेव ते पोताना आत्मानुं स्वरूप न उलख्युं अने ज्ञान दशायें करी जडरूप विभावदशामांजेनुं चित्त सदाकाल लागी रहुं ठे ए रीतें पोताना आत्मानीविराधना करतो थको प्राणी संसाररूपसमुद्रमांजूवे ३१४ व्यवहारथकी कुदेव ते कृष्ण, महादेव, क्षेत्रपाल, ब्रह्मा, पितृ प्रमुख जाणवा. ए रीतें निश्चयव्यवहाररूपदेवनुं स्वरूप जाणी समकित्त शुद्ध करवुं.

हवे निश्चय व्यवहारथी गुरु उलखवा रूप चोचंगी कहे ठे.

३१५ प्रथम निश्चयथकी सुगुरु ते आपणा जीवने एकांतें बेसाडी रूडी शीखामण आपी, मिथ्यात्वरूप कुमार्गथकी निवारी अने समकेतरूप शुद्धमागें चढावे, एवी रीतें आत्माने मागें आणे, तो तुरत आवे, माटे निश्चय सुगुरु ते आपणो आत्मा जाणवो.

३१६ व्यवहारथकी सुगुरु ते जे साधुमुनिराज सत्तावीश गुणें करी स

हित आचार व्यवहार सहित, कृपापात्र, शुद्धमार्गना प्ररूपक, ज्ञानप्राणीने प्रतिबोधवा ज्यमवंत, ते व्यवहार सुगुरु कारणरूप जाणवा.

१११ निश्चयथकी कुगुरु ते जे जिन वचनना खोटा अर्थ करे अने अज्ञानने वशें खोटी प्ररूपणा करी संसारवृद्धिनां कारण सेवी पोतें रूबे, अने परने रूवावे.

११२ व्यवहारथकी कुगुरु ते योगी, संन्यासी, ब्राह्मण, कुलिंग प्रमुख तेमज स्वर्लिंगी जे आचार रहित जेखधारी एवा यति प्रमुख जाणवा.

हवे धर्मनुं स्वरूप निश्चय व्यवहाररूप चोजंगीयें करी देखाडे ठे.
११३ निश्चयथकी सुधर्म ते जीवने अंतरंग सत्तागमें अनंतचतुष्टयरूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य वीर्यरूप अनंतो धर्म रह्यो ठे, ते कमें करी आवराणो ठे. जे म आडां वादलां आव्याथी सूर्यनी कांति दबाइ जाय, पण अंतरमां देदीप्यमान कांति ठे. तेम आत्माने कर्मरूप वादलां आडां आव्यां, तेणें करी आत्मानी कांति दबाणी पण अंतरंग आत्मानी कांति सूर्यनी पेरें देदीप्यमान ठे, ते निश्चयधर्म कहीयें.

११४ ते पूर्वोक्त धर्म निरावरण प्रगट करवाने वास्ते साध्य एक चोखुं निर्मल राखीने जे बाह्य व्यवहार क्रियारूप व्रत पञ्चकाण आदि जे करणी करवी, ते व्यवहारथकी सुधर्म जाणवो.

११५ निश्चयथकी कुधर्म ते जे एकांत मार्ग बाह्यकरणी ते उपर राच्यो परंतु अंतरंग ज्ञानहिन आत्मधर्म ओलख्यो नथी, ते निश्चयकुधर्म ठे.

११६ व्यवहारथकी कुधर्म, ते पारका परदर्शनीना मतने अनुयायी जे धर्म करणी करवी, ते व्यवहारथकी कुधर्म जाणवो. ए रीतें निश्चय व्यवहाररूप चोजंगीयें करी देव, गुरु अने धर्मनुं स्वरूप जाणे, अने अंतरंग प्रतीतें निर्मल पणे सर्व्हे, ते निश्चयसमकेतना धणी जाणवा.

हवे निश्चय व्यवहाररूप पांच महाव्रतनुं स्वरूप जे जाणे तेने ज्ञानी कहीयें. अने जाणीने पाळे, तेने साधुमुनिराज कहीयें ?

११७ शिष्यः— ए पांच महाव्रतनुं स्वरूप केवी रीतें जाणीयें ?

गुरुः—एकेंद्रियथी मांकीने पंचेंद्रिय पर्यंत त्रस अने स्थावर जीव ते स हुने पोताना जीव सरखा जाणी, ते जीवोनी यत्ना करे, रक्षा करे, दया पाळे, कोइ जीवने मनथकी, वचनथकी अने कायाथकी पोतें डुहवे नहिं,

अने बीजाने पण एज रीतें उपदेश आपे, ते जीवने व्यवहारप्राणातिपातथकी विरम्यो कहीयें. ए व्यवहार प्राणातिपातविरमणुं स्वरूप कछुं.

३३४ हवे निश्चय प्राणातिपातविरमणुं स्वरूप कहे ठे. आपणो जीव अज्ञानने वशें करी दुःखी ठे, जन्म, जरा मरण, जय, शोक, आधि, व्याधि रूप पीडायें करी संसारमां अनंता काल थया दुःख जोगवे ठे, तेथी आत्मज्ञानरूप लोचनें करी अज्ञानरूप मिथ्यात्वने खपावी ज्ञान, दर्शनरूप गुण प्रगट करी आपणा जीवने कर्मधी ठोडाववो, तेवारें जन्म जरारूप सर्व दुःख मटे अने आत्मज्ञानने बलें करी आत्मप्रदेशें नवा कर्मनी रज लागवा न आपे, एवा जेना शब्द नयने मतें परिणाम वत्तें ठे, ते जीव, निश्चय प्राणातिपातथकी विरम्या कहीयें.

३३५ हवे व्यवहारथकी मृषावादनुं स्वरूप कहे ठे. कडवुं वचन बोलवुं. परजीवने विश्वास प्रतीति उपजावी असत्य वचन बोलवुं, तेथी जे विरम्याठे अने मुखथकी सत्यवचन बोलेठे ते व्यवहार मृषावादथकी विरम्या कहीयें.

३३६ हवे निश्चयथकी मृषावाद विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे ठे. पौनल्लिक परवस्तुने आपणी कहेवी, ते निश्चय मृषावाद जाणवो कारण के पुज्ज परमाणुआ ठे ते शाश्वता ठे, ते एकेक जीवें अनंती वार आहार पणे लइ निहार पणे करी अनंता जीव सिद्धि वस्था अने हजी पण सर्वे जीव आहार पणे लइ निहारपणे करे ठे, तेम आपणा जीवें पण अनंती वार आहारपणे लइ निहारपणे कस्या, ते कारणें ए साधारण वस्तु कहीयें. माटे ते पौनल्लिक वस्तुने जीव आपणी करी माने ते निश्चय मृषावाद कहीयें. अने जीवने अजीव करी जाणे इत्यादिक अज्ञानपणुं तेने निश्चयमृषावाद जाणवो. अथवा सिद्धांतना अर्थ खोटा कहे, ते पण मृषावादमां ठे, ए मृषावाद जेणें त्याग्यो ते निश्चय मृषावादथकी विरम्यो कहीयें. एटले बीजां सर्वे व्रत जांगे तेथी एक चारित्र जंग थाय, परंतु ज्ञान दर्शननो जंग न थाय, अने नेणें निश्चयमृषावाद जांग्यो, तेणे दर्शन, ज्ञान अने चारित्र ए त्रणे जांग्या, जे कारणे आगममां एम कछुं ठे के एक साधुयें चोथुं व्रत जांग्युं अने एक साधुयें बीजुं मृषावादव्रत जांग्युं तेमां जेणें चोथुं व्रत जांग्युं ते आलोचना बीधि शुरू थाय, परंतु जेणें सिद्धांतना खोटा अ

र्थ कही मृषावाद उपदेश दीधो, ते आलोचना लीधे पण शुद्ध न थाय. ए निश्चयथकी बीजा मृषावाद विरमणव्रतनुं स्वरूप कह्युं.

३३७ हवे व्यवहारथकी अदत्तादान विरमणव्रतनुं स्वरूप कहे ठे, जे पारकुं धन वस्तु प्रमुख बुपावे, चोरावे, ठगी लीये, तेने चोर कहीयें एटले अण दीधी पारकी वस्तु लेवी, तेने अदत्तादान कहीयें. तेथी जे विरम्यो ठे, ते व्यवहार अदत्तादानथी विरम्यो कहीयें.

३३८ हवे निश्चय अदत्तादान विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे ठे. जीव, पांच इंद्रियनां त्रेवीश विषयरूप सुख, तेनी वांढायें आठ कर्मनी वर्गणाने ग्रहण करे ठे, इत्यादिक परवस्तुने लेवा वांढे, ते निश्चय अदत्तादान जाणवुं. इहां शिष्य पूढे ठे के विषयनी अने कर्मनी वांढा कोण करे ठे ? तेवारें गुरु कहे ठे. पुण्यप्रकृतिना जे वहेतालीश जेद ठे, ते चारं कर्मनी शुभ प्रकृति ठे, तेने योगें जीव, आगल जतां इंद्रियसुख पामे ठे, तेमाटे जे जीव पुण्यने आ गल जेवुं लेवा योग्य कहे ठे, ते जीव, कर्मनी अने विषयनी वांढा करे ठे, एटले कोइक जीव व्यवहारथकी तो अदत्तादान एक तृणमात्र पण ले तो नथी तो पण तेने जो अंतरंग पुण्यादिकनी वांढा ठे, तो तेंणी करी तेने निश्चय अदत्तादान लागे ठे.

३३९ हवे व्यवहारथकी मैथुनव्रतनुं स्वरूप कहे ठे. जे पुरुष, परस्त्रीनो परिहार करे, तेने व्यवहारथकी मैथुनविरमण व्रत कहीयें, एटले साधुने सर्वथा स्त्रीनो त्याग ठे, तथा गृहस्थने हाथे परणेढी स्त्री मोकली ठे अने परस्त्रीनां पञ्चस्काण ठे, ते सर्व व्यवहार मैथुनविरमणव्रत जाणवुं.

३४० हवे निश्चय मैथुनविरमणव्रत कहे ठे. जे जीव, अंतरंग विषय अजिलाषनो त्याग अने मननी तृष्णानो त्याग करी पोतानी आत्मपरिणतिने विषे रमण करे ठे, पण परपरिणतिमांहे पेसतो नथी पोताना गुणनुं चिंतन करे ठे, पण परनुं चिंतन करतो नथी एटले पोताना स्वप्नावरूप घर मूकी विज्ञावरूप परघरमां पेशी कुशीलीयो थतो नथी ते जीव निश्चय मैथुनथकी विरम्यो ठे.

३४१ हवे व्यवहारथकी परिग्रह व्रतनुं स्वरूप कहे ठे. जे धन, धान्य, दास, दासी, चतुष्पद, घर, धरती, वस्त्र, आचरणादिकनो त्याग, ते व्यवहारथी परिग्रहत्याग व्रत जाणवुं. एटले साधुने सर्वथा परिग्रहनो त्याग ठे अने गृह

स्यने श्वा प्रमाणें परिग्रह ठे, ते जेटली श्वा होय, तेठलो परिग्रह मोकलो राखेअने उपरांत परिग्रहनी निवृत्ति करे, ते व्यवहारथकी पांचमुं व्रत कहीयें.

३४३ हवे निश्चयथकी परिग्रह विरमण व्रतनुं स्वरूप कहे ठे:- जे चावकर्म रूप राग, द्वेष, अज्ञान तेनी चिकाशें अव्यक्तरूप ज्ञानावरणादि आठ कर्म नीपण्यां तेने मूके, शरीर इंद्रियनो परिहार एटले शरीर अने इंद्रिय उपरथी मूर्खा मूकी अने शुचाशुच विकाररूप जे कर्म, तेने पर जाणीने ठांके, ते निश्चयपरिग्रहनो त्याग कहीयें. एटले आ जवसंबंधि तथा परजवसंबंधी शरीरादि परवस्तुनी मूर्खा ठोडी ते जीवें निश्चय परिग्रह ठोड्यो, एम जाणवुं. ए रीतें निश्चय व्यवहारथकी पांच महाव्रतनुं स्वरूप संक्षेपमात्र जाणवुं.

ए रीतें पांच महाव्रत पाळे पण ज्ञानदृष्टि विना पांच महाव्रत पळे न हीं, माटे ज्ञाननुं जाणपणुं करवा सारु जीवनुं स्वरूप चोचंगीयें करी उल खावे ठे, एटले एक जीव, हिंसा करता नथी पण हिंसानां फल जोगवे ठे, अने बीजा जीव, हिंसा करे ठे, पण हिंसानां फल जोगवता नथी तथा त्रीजा जीव, हिंसा करे ठे अने हिंसानां फल पण जोगवे ठे, चोथा जीव, हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल पण जोगवता नथी, एवी रीतें ए चार प्रकारना जीव उलखवा जोश्यें.

३४६ शिष्य:-पहेला जीव जे हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल जोगवे ठे, ते कया जीव जाणवा? अने तेमां गुणगाणां केटलां पामीयें? तथा तेमां सात नय मांहेला केटला नय पामीयें? तथा तेमां नव तत्वमांहेलां केटलां तत्व पामीयें? तथा तेना चार निक्षेपा केम जाणियें? ए चार प्रश्नोनी पृष्ठा ठे.

गुरु:-समुद्रने विषे हजार हजार योजनना शरीरवाला महोटा मत्स्य ठे, तेनी आंखनी पापणमां तंदूळीयो मत्स्य गर्जज पर्यासो उपजे ठे, तेनुं आयुष्य एक अंतर मुहूर्त्तनुं होय ठे, तथापि एटला आयुष्यमां ते एवुं चि तवन करे ठे जे आ मत्स्यना मुखमांहे क्रोडो गमे जीव आवे ठे अने जाय ठे, पण हुं जो एटलुं महोडुं शरीर पाम्यो होत तो एक पण जीवने जी वतो जवा देत नहीं! ए रीतें यद्यपि ए मत्स्य व्यवहार नयनेमते एक जी वने पण हणतो नथी, तथापि ऋजुसूत्र नयने मते जीवहिंसारूप अशुच परिणामें करी पाप बांधी मरीने सातमी नरकें जाय ठे, ए जीव मिथ्यात्वी जाणवा. एनुं गुणगाणुं पहेलुं जाणवुं. तथा ए जीवमां नव तत्वमांहेलां

ठ तत्व पामीयें. हवे ए मिथ्यात्वी जीवमां चार निक्षेपा आवी रीतें लगा डवा. प्रथम तो जेनुं मिथ्यात्वी एवुं नाम होय ते नाममिथ्यात्वी कहेवो अने बीजो स्थापनामिथ्यात्वी ते मिथ्यात्व एवा अक्षर लखी स्थापवा अथवा मूर्ति स्थापवी, तथा त्रीजो द्रव्यमिथ्यात्वी ते जीवने सत्तायें द्रव्यमिथ्यात्वरूप दक्षीयां रक्षां ठे, चोथो ज्ञावमिथ्यात्वी, ते मिथ्यात्वनां दक्षीयां उदयरूप ज्ञावें जोगवे ठे. वक्षी प्रकारांतरें चार निक्षेपा कहे ठे. प्रथम नाममिथ्यात्वी, एटले जे कोइनुं मिथ्यात्वी एवुं नाम होय ते, तथा बीजो स्थापनामिथ्यात्वी ते तेनी मूर्ति स्थापवी, तथा त्रीजो द्रव्यमिथ्यात्वी ते ब्राह्मण, अतीत, वैरागी प्र मुख कृष्ण महादेवने माने तेने द्रव्य मिथ्यात्वी कहीयें, अने चोथा ज्ञाव मिथ्यात्वी ते ढूंढीया प्रमुख जिनशासनना द्वेषी शत्रुरूप जाणवा.

१५० शिष्यः—बीजा जीव जे हिंसा करे ठे अने हिंसानां फल जोगवता नथी, ते जीव कया ? अने तेमां चौद गुणगणां मांहेलां केटलां गुणगणां पामीयें ? अने नव तत्वमांहेलां केटलां तत्व पामीयें ? तथा सातनय मां हेला केटला नय पामीयें ? अने तेना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरुः— ए जीव समकेती जाणवा. एनुं गुणगणुं चोथुं जाणवुं. शब्द नयने मत्तें अंतरंग सत्तागतना ज्ञासनरूप साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें श्रीवीतरागनी आज्ञा प्रमाणें जेणें प्रतीति करी ठे, पण पूर्वकृतकर्मने योगें करी संसारमां व्यवहार नयने मत्तें अरुचिपणे विषयादिक आश्रवरूप हिंसानां काम करे ठे, अने आरंजना कामना आदेश उपदेश आपे ठे, एटले शब्दनयने मत्तें समकितज्ञावें वर्चतां जे पोतानां पूर्वकृत कर्म ठे, तेने निर्जा रावे ठे, पण तेने अज्ञुजरूप नवा कर्मनो बंध पडतो नथी. ए जीवमां नव तत्वमांहेलां आठ तत्व पामीयें. हवे एना उपर चार निक्षेपा लगावे ठे. प्रथम कोइनुं समकेती एवुं नाम ते नामसमकेती, बीजुं समकेतनी मूर्ति प्रमुख स्थापीयें, ते स्थापना समकेत, त्रीजुं यात्रा, दर्शन, सेवा, जक्ति, संघ, सामीवत्सल इत्यादि समकेतनी करणी करवी पण अंतरंग जीव अजीवनी वेंचणरूप प्रतीति करी नथी, तेने द्रव्य समकेत कहीयें. चोथुं आगल कह्या प्रमाणे सर्व कार्य करे, अने अजीवरूप नवतत्व षड्द्रव्यनुं जाणपणुं करी अंतरंग स्वसत्तापरसत्तानी प्रतीति पण करी ठे, तेने ज्ञावसमकेत कहीयें.

१५४ शिष्यः—त्रीजा जीव जे हिंसा करे ठे अने हिंसानां फल पण जो

गवे ठे, ते जीव कया ? तेमां गुणगणां केटलां पामीयें ? अने नव तत्त्वमां हेलां तत्व केटलां पामीयें ? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें ? अने एमां चार निक्षेपा शी रीतें जाणवा ?

गुरुः— ए जीव, मिथ्यादृष्टि पहेले गुणगणे जाणवा. ऋजुसूत्र नयने मते तेना परिणाम महाआरंजपरिग्रहरूप हिंसाचावे वत्ते ठे, तथा व्यवहार नयने मते उपरधी पण हिंसारूप आश्रवनां काम करे ठे, एमां ठ तत्व पामीयें. एना चार निक्षेपा आगल प्रश्नें लगाव्या ठे, ते रीतें जाणवा.

१५७ शिष्यः— चोथा जीव जे हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल पण जोगवता नथी ते कया ? तेमां गुणगणां केटलां पामीयें ? अने नव तत्व मांहेलां तत्व केटलां पामीयें ? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें ? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरुः— ए जीव साधुमुनिराज जाणवा. ते संग्रहनयने मते सर्व जीवने पोताना जीव समान जाणी ऋजुसूत्रनयने मते तेवाज मनःपरिणाम वत्ते ठे, व्यवहार नयने मते उपरथकी ठकायनी दया पाले ठे, अने शब्दसमजिरूढ नयने मते ठहा सातमा गुणगणाधी मांमीने यावत् बारमा गुणगणा पर्यंत बद्धस्थ मुनिराज आत्मस्वरूपमां रमण करता कर्मरूप लेपने लागवा देता नथी. ए रीतें जावदयामां वर्चता पोताना आत्मानि रक्षा करे ठे, तेमां आठ तत्व पामीयें. एना चार निक्षेपा आवी रीतें कहेवा. ते कोशुं साधु एवुं नाम ते नामसाधु, साधुनी मूर्ति स्थापीयें, ते स्थापनासाधु, साधुनी क्रिया पाले, सूजतो आहार लीये, पडिलेहण पडिकमणुं करे, पांच महाव्रत पाले, सत्तर जेदें संयम आराधे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणा विना ज्ञान ध्याननो तेवो उपयोग वर्चतो नथी, तेमाटे ते ड्रव्य साधु कहीयें. तथा आगल जे रीतें साधुनी क्रिया कही, ते प्रमाणें सर्व क्रिया पण करे ठे, अने अंतरंग जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, ते जावसाधु ठे.

१६३ वली हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल जोगवता नथी ए जांगामां अरिहंत केवली पण जाणवा. ए अरिहंत, व्यवहारनयें करी ड्रव्यदयारूप ठकायना प्रतिपालक ठे, समजिरूढनयने मते तेरमे चौदमे गुणगणे शुद्ध ध्यानना बीजा त्रीजा पाया ब्रचालें रखा वत्ते ठे, तेमां आगल कहां, ते

रीतें नवे तत्व पामीयें, एना चार निक्षेपा कहे ठे. अरिहंत एवं नाम, ते नामअरिहंत, एनी मूर्त्तिप्रमुख करी स्थापवी, ते स्थापनाअरिहंत अने ज्यां सुधी केवलज्ञान नथी उपन्युं तिहां सुधी ठद्वस्थावस्थापर्यंत अरिहंतनो जीव, ते द्रव्यअरिहंत जाणवो, तथा अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणे अने त्रिग डाने विषे वेसी ज्ञव्यप्राणीने हितोपदेश आपे, तेने जावअरिहंत कहीयें.

१६६ वली हिंसा करता नथी अने हिंसानां फल जोगवता नथी ए चां गामां सिद्ध परमात्माना जीव पण जाणवा. ए जीव, गुणगणवर्जित ठे, एवंचूतनयने मत्तें सकलकर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान वत्तें ठे. एमां आगल कक्षां, ते रीतें त्रण तत्व पामीयें. हवे एना चार निक्षेपा कहे ठे:—प्रथम सिद्ध एवं नाम ते नामसिद्ध, बीजो श्रीजिनप्रतिमा स्या पीयें ते स्थापनासिद्ध, त्रीजा केवली जगवानने द्रव्यसिद्ध कहीयें, चोथा सकल कर्मनो क्षय करी अनंतगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान वत्तें, ते जावसिद्ध कहीयें. ए रीतें चोचंगीनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें रत्नत्रयीनुं स्वरूप जाणी जे चारित्र पाळे, तेने साधु मुनिराज कहीयें. ए साधु मुनिराजनुं स्वरूप जाणवारूप चोचंगी लखियें ठैयें. एक जीव, उपरथी तो साधुपणा सहित ठे अने अंतरंगथकी साधुपणा रहित ठे, तथा बीजा जीव, अंतरथकी साधुपणा सहित ठे अने उपरथकी साधुपणा रहित ठे तथा त्रीजा जीव, अंतरथकी साधुपणा रहित ठे अने उपरथकी पण साधुपणा रहित ठे, चोथा जीव, अंतरथकी पण साधुपणा सहित ठे अने उपरथकी पण साधुपणा सहित ठे.

१७० शिष्य:—पहेला जीव जे उपरथकी साधुपणा सहित अने अंतरथकी साधुपणा रहित ते कया जीव ? तेमां गुणगणां केटलां पामीयें ? तथा सात नयमांहेला नय केटला पामीयें ? तथा तेमां नव तत्वमांहेलां तत्व केटलां पामीयें ? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरु:—ते जीव, साधुलिंगधारक पहेले गुणगणे होय, तेमां नयनुं स्वरूप वतावे ठे, ते जीवने नरकनिगोदनां दुःखथकी बीहीतां सुखनी लालचें पुण्यरूप वांठायें साधुपणुं लेवानो मनमां अंश उपन्यो एटले नैगमनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, कारण के ए नयना मतवालो एकअं

श ग्रहीने सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे ठे तेमाटे. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्ताने ग्रहण करे ठे, माटे साधुपणानां उपकरण जे उँघो, मुहपत्ती, कपडां, पात्रां प्रमुख ए सर्व साधुपणानी सत्ता ठे तेने ग्रहे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे. तथा व्यवहारनयने मत्ते जे उपरथी आचार व्यवहार क्रिया प्रमुख पांच महाव्रत पाळे ठे, सूजतो आहार लीये ठे, बे टंकनां आवश्यक साचवे ठे, ए रीतें उपरथकी प्रवर्त्ततो देखीने व्यवहारनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, तथा ऋजुसूत्रनयने मत्ते जे अंतरंग वैराग्यत्रावरूप संसारनां दुःख देखी उदासीचावें वर्त्ते, तो शुचफल उपार्जन करे, अने कोइ जीवना मनना परिणाम लोकने ठ गवारूप अथवा उदरपूर्णा माटे कपटरूप वर्त्तता होय, ते जीव अशुच फल उपार्जन करे, ए ऋजुसूत्रनयना मत्ते साधु कहेवाय. ए रीतें द्रव्य लिंगी जीवमां चार नय जाणवा. हवे चार निक्षेपा बतावे ठे. प्रथम कोइ नुं साधु एवुं नाम होय, ते नामकाधु, वीजो साधुनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापीयें, ते स्थापनासाधु, त्रीजो जे साधुनी क्रिया, आचार, व्यवहार प्रमुख करे ठे, पांच महाव्रत पाळे ठे, सूजतो आहार लीये ठे, पण अंतरंग सत्ता गतना जाणपणा विना ज्ञान ध्याननो तेहवो उपयोग वर्त्ततो नथी, अने पुण्याधिकनी बाँठायें अनेक रीतें साधन तो करे ठे, तोपण ते व्यवहार नयने मत्ते द्रव्यसाधु जाणवा. ए त्रण निक्षेपा द्रव्यलिंगी साधुमां कहीयें. हवे एमां नव तत्त्वनुं स्वरूप बतावे ठे, ए लिंगी जीवनी सत्तायें पुण्य पाप रूप अजीवनां दलीयां अनंतां लागीं ठे, ते आश्रवरूप जाणवां अने ए दलीये ए जीव बंधाणोथको चार गतिरूप संसारमां फरे ठे, माटे जीव, पुण्य, पाप, अजीव, अने बंध, ए ठ तत्त्व जाणवां.

१३४ शिष्यः—वीजा जीव जे अंतरथकी साधुपणा सहित ठे, अने उपरथकी साधुपणा रहित ठे, ते जीव कया ? तेमां गुणठाणां केटलां पामीयें ? तथा तेम सात नयमांहेला नय केटला पामीयें ? नव, तत्त्व मांहेलां तत्त्व केटलां पामीयें ? अने एना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरुः—ते जीव, चोथा गुणठाणा वाला समकेती तथा पांचमा गुणठाणा वाला देशविरति श्रावक जाणवा, एटले ते जीव, व्यवहार नयने मत्ते उपरथकी तो साधु पणा रहित ठे पण अंतरंग वैराग्य सहित उदासी जा

वें विषयकषायथकी विरक्त त्याग वैराग्यरूप साधु समान एवा ऋजु सूत्रनयने मत्तें अंतरमां परिणाम वर्त्ते ठे, अने शब्दनयने मत्तें स्वसत्ता परसत्तारूप जीव अजीवनी वेंचण करतां स्वरूपना चिंतनमां वर्त्ते ठे, ते णें करी महानिर्झरा प्रत्यें करे ठे, एमां नव तत्व मांहेलां आठ तत्व आ गल कह्यां, ते रीतें जाणवां. हवे एमां चार निक्षेपा कहे ठे. ते जीव, व्यवहारनयने मत्तें तो संसारी गृहस्थ कहियें. पण अंतरंग जाव साधु समान परिणाम वर्त्ते ठे, माटे तेमां एक जाव निक्षेपोज पामीयें.

३७७शिष्यः—त्रीजा जीव, जे उपरथकी साधु पणा रहित ठे, अने अंतरथकी पण साधुपणा रहित ठे, ते जीव कया ? तथा तेमां गुणगणां केटलां पामीयें ? अने सात नयमांहेला केटला नय पामीयें ? तथा नव तत्व मांहेलां केटलां तत्व पामीयें ? तथा तेना चार निक्षेपा केम जाणीयें ?

गुरुः—ते जीव, मिथ्यादृष्टि पहेले गुणगणे जाणवा, तेमां नयनुं स्वरूप आवी रीतें ठे, नैगम नयने मत्तें आगल गये कालें मिथ्यात्वी हतो अने आवते कालें मिथ्यात्वरूप गुणें करी मिथ्यात्व जावें वर्त्तेशे तथा वर्त्तमा नकालें पण मिथ्यात्व जावें वर्त्ते ठे. ए रीतें तेने नैगमनयना मतवालो मिथ्यात्वी करी बोलावे, अने संग्रहनयना मतवालो तो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे जे जीवने मिथ्यात्वरूप दळीयां सत्तायें अनतां रह्यां ठे, तेथी ते जीवने संग्रह नयना मतवालो पण मिथ्यात्वी करी बोलावे, अने व्यवहार नयना मतवालो बाह्यथकी उपरथी मिथ्यात्वरूप आचरण करतो देखे ठे. माटे ए पण मिथ्यात्वी करी बोलावे, तथा ऋजुसूत्र नयना मतवालो पण एने अंतरंग परिणामें मिथ्यात्वरूप कार्यनुं चिंतन करतो देखी मिथ्यात्वी करी बोलावे. ए रीतें ए मिथ्यात्वी जीवमां चार नय जाणवा. तथा एमां आगल कहेली रीतें नव तत्वमांहेलां ठ तत्व पामीयें. हवे एमां चार निक्षेपा कहे ठेः—जे कोशुं नाम, मिथ्यात्वी होय ते नामनिक्षेपो अने अक्षर लखवा अथवां तेनी मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनामिथ्यात्व, तथा ते जीवने सत्तायें मिथ्यात्वरूप दळीयां रह्यां ठे, ते अव्यमिथ्यात्व कहियें. तथा ते दळीयां उदयरूप जावपणे जोगवे ठे, ते जावमिथ्यात्व जाणवुं. वली वीजी रीतें चार निक्षेपा कहे ठेः—जे कोशुं मिथ्यात्वी एतुं नाम, ते नाममिथ्यात्व, तथा मिथ्यात्वीनी मूर्ति प्रमुख स्थापवी, ते स्थापनामि

थ्यात्व. तथा अन्यदर्शनी जे अतीत, वैरागी, ब्राह्मण प्रमुख ते अव्यमि थ्यात्वी जाणवा. तथा जे जिनशासनना द्वेषी, श्रवला, विपरीतमार्गना देखाडनारा, दुंदुभीया प्रमुख ते जावमिथ्यात्वी जाणवा. ए मिथ्यात्वीना चार निक्षेपा ठे, तेमां नवतत्त्व मांहेलां तत्त्व आगल कहां, तेप्रमाणें जाणवां.

शुभ शिष्यः—चोथा जीव, उपरथकी साधु पणा सहित ठे, अने अंतर थकी पण साधु पणा सहित ठे, ते जीव कया? तथा तेमां गुणगणां केटलां पामीयें? अने सात नय मांहेला नय केटला पामीयें? तथा नव तत्त्वमां हेलां केटलां तत्त्व पामीयें? तथा तेमां चार निक्षेपा केवी रीतें जाणवा?

गुरुः—ते जीव, साधु मुनिराज ठछा सातमा गुणगणाथी मांनीने यावत् अगीथारमा बारमा गुणगणा पर्यंत ठद्वस्थ मुनिराज जाणवा, हवे तेमां नयनुं स्वरूप बतावे ठे, कोइ जीव, संसारथकी उजग्यो साचा धर्मनी परी द्हा करतो मोक्षसुखनी लालचें साधुपणुं लेवानो तेना मनमां अंश उत्प न्न थयो पटले नैगमनयना मतवालो एक अंश ग्रहीने ते जीवने साधु क ही बोलावे, तथा ते जीव, जेवारें साधुपणुं लेवाने अर्थें उपकरणादि उं धो, मुहपत्ती, कपडां, कांबली, पात्रां प्रमुख साधुपणानी सत्ताने ग्रहे, ते वारें संग्रहनयना मतवालो तेने साधु कही बोलावे, तथा जे पांच महाव्र त सूधां पावे अने साधुनी क्रिया आचार व्यवहार प्रमुख सूधी रीतें करे उजय टंकना आवश्यक साचवे, सांज सवार पडिलेहणां, पोरिसी जणावे, ए रीतें उपरथी आचरणारूप क्रिया देखे, तेने व्यवहारनयना मतवालो साधु क ही बोलावे, तथा ऋजुसूत्रनयना मतवालो पारिणामिक जाव ग्रहण करे ठे, माटे संसारउदासी, विषय कषायथकी विरक्त जाव त्याग वैराग्यरूप परि णाम जेना वत्तें ठे, तेने ऋजुसूत्रनयना मतवालो साधु कहे, तथा शब्द नयने मतें तो जे, जीव अजीवरूप नव तत्त्व षड्द्रव्यनी उलखाण करी जीव स त्ताने ध्यावे, अजीवसत्तानो त्याग करे, तेवा शुद्ध निश्चयनयरूप परिणाम होय अने साधुनी क्रिया पण जे आगल कही, ते रीतें सर्वे करे, तथा सा ध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, तेने शब्द नयना मतवालो साधु कही बोलावे. तथा समजिरूढ नयना मतवालो श्रेणिजा वने ग्रहे ठे, माटे कोइ जीव, नवमा दशमा गुणगणाथी मांनी यावत् अ गीश्वारमा बारमा गुणगणा पर्यंत शुद्ध शुद्ध ध्यान रूपातीत परिणाम

हृदयकश्रेणिरूप ध्यानं वर्त्ते, तेने समजिरूढ नयना मतवालो साधु कही बोलावे, ए रीतें साधुनुं स्वरूप ठ नयें करी कहुं. हवे चार निक्षेपे करी साधुनुं स्वरूप उलखावे ठे. तिहां जे कोशुनुं साधु एवुं नाम ठे, ते नामसाधु. तथा जे साधु एवा अक्षर लखवा ते असद्भावस्थापना जाणवी अने जे साधुनी मूर्ति प्रमुख स्थापवी, ते सद्भावस्थापना जाणवी, तथा जे साधुनी क्रिया, पडिक्रमणुं पडिलेहण शुद्धरीतें करे, सूजतो आहार लीये, पण तेह वो ज्ञान, ध्यान, मोक्षरूप साधननो उपयोग वर्त्ततो नथी माटे तने ड्रव्य साधु कहीयें. तथा ज्ञानसाधु कहेतां जे आगला त्रण निक्षेपामांहे साधुनी क्रिया कही, ते रीतें सर्व क्रिया करे अने साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्मने साधे, तेने ज्ञानसाधु कहीयें. ए चार निक्षेपा साधुमां कहेता, एमां आगल एटले आ पठीना प्रश्नमां केहेशे ते प्रमाणे नव तत्व मांहेलां आठ तत्व पामीयें. ए रीतें चोजंगीयें करी साधुपणानुं स्वरूप जाणीने जे पावे, ते प्राणी, गण्टा दिवसमां परमानंद पदप्रत्यें पामे.

हवे समकेतनी शुद्धि करवा वास्ते षड्द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप, ड्रव्य, क्षेत्र, काल, ज्ञानची चोजंगीयें करी देखाडे ठे एमां प्रत्येकमां चार चार प्रश्नठे.

१७६ तिहां प्रथम जीवद्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:—द्रव्यथकी जीवद्रव्य, निश्चयनयने मत्तें ज्ञानादि गुणें करी सर्व एक सरखां ठे अने व्यवहार नयें करी देवता, नारकी, मनुष्य, निर्यचरूप जीवनी अनेक जाति जाणवी, तथा क्षेत्रथकी सर्व जीव, असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापि जाणवा, तथा कालथकी निश्चयनयें करी सर्व जीव, अनादि अनंत जांगे वर्त्ते ठे, अने व्यवहार नयें करी संसारी जीव, चारगतिरूप संसारमां उत्पाद व्ययरूप पलटण स्वजावें करी सादि सांत जांगे वर्त्ते ठे, तथा ज्ञानथकी जोतां तो सर्व जीव, पारिणामिक जावें पोताना स्वजावमां रखा वर्त्ते ठे अने व्यवहार नयें करी संसारी जीव शुजाऽशुज ज्ञानमां प्रवर्त्ते ठे.

१७७ हवे धर्मास्तिकाय ड्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:—द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय ड्रव्यनो चलणसहायक गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथकी एना असंख्याता प्रदेश लोकव्यापी जाणवा तथा कालथकी धर्मास्तिकाय ड्रव्य, अनादि अनंत जांगे वर्त्ते ठे अने एना देश, प्रदेश तथा अशुखधु सादि सांत जांगे जाणवा, तथा ज्ञानथकी धर्मास्तिकाय ड्रव्य अचणें, अरसें, अगंधें, अफरसें जाणवुं.

३९५ हवे अधर्मास्तिकायद्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:-द्रव्यथकी अधर्मास्ति काय द्रव्यनो स्थिर सहायक गुण, तथा क्षेत्रथकी एना असंख्याता प्रदेश लोकव्यापी जाणवा, तथा कालथकी अनादि अनंत जागे वर्त्ते ठे अने देश, प्रदेश तथा अगुरु लघु, सादि सात जागे जाणवा, तथा जावथ की अधर्मास्तिकाय अवर्णें, अगंधे, अरसें अने अफरसें जाणवुं.

३९६ हवे आकाशास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:-द्रव्यथकी आकाशास्तिकाय द्रव्यनो अवगाहना गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथी अनंतप्रदेशी लोकालोकव्यापी जाणवो, तथा कालथकी अनादि अनंत जागे वर्त्ते ठे, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु सादि सांत जागे जाणवा, तथा जावथकी आकाशास्तिकाय अवर्णें, अगंधे, अरसें, अफरसें जाणवो.

३९७ हवे कालद्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:-द्रव्यथकी काल द्रव्यनो नवा पुराणा वर्त्तनालक्षण गुण जाणवो, तथा क्षेत्रथकी कालद्रव्य, अढी द्नी प व्यापि जाणवुं. तथा कालथकी अनादि अनंत जागे वर्त्ते ठे, अने उत्पाद व्ययरूप पलटण काल सादि सांत जागे जाणवुं. तथा जावथकी कालद्रव्य अवर्णें अगंधें अफरसें जाणवुं.

३९८ हवे पुञ्जलद्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे:-द्रव्यथकी पुञ्जलद्रव्यनो मिलण विखरण पूर्णगहन गुण जाणवो तथा क्षेत्रथकी पुञ्जल परमाणुआ लोकव्यापी जाणवा. तथा कालथकी पुञ्जलद्रव्यना अनंता परमाणुआ निश्चयनयें करी अनादि अनंतजागे वर्त्ते ठे. अने व्यवहारनयें करी पुञ्जलना खंध सवें सादिसांत जागे जाणवा, तथा जावथकी वर्ण, गंध, रस, फरस सहित ठे. ए रीतें जीव अजीवरूप षड्द्रव्यना स्वरूपमां चोचंगी जाणवी. एटले ए षड्द्रव्यना स्वरूपमां नव तत्त्वमांहेलां जीव अने अजीव, ए बे तत्त्वनुं स्वरूप कहेवाणुं. हवे शेष पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप कहे ठे.

३९९ पुण्यतत्त्व द्रव्यथकी वेंतालीश जेदें कहीयें, तथा क्षेत्रथकी पुण्यतत्त्व लोकव्यापी जाणवुं तथा कालथकी पुण्यतत्त्व अजव्यजीव आश्रयी संतति जावे अनादि अनंतजागे वर्त्ते ठे अने जव्यजीव आश्रयी अनादि सांत जागे जाणवुं, तथा जावथकी पुण्यतत्त्वने उपार्जन करवाना नव प्रकार जाणवा.

४०० पापतत्त्व, द्रव्यथकी व्याशी जेदें कहीयें, तथा क्षेत्रथकी पापतत्त्व लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालथकी अजव्यजीव आश्रयी संततिजावें अना

दि अनंत जांगे जाणवुं. अने जव्यजीव आश्रयी अनादि सांत जागे जाणवुं. तथा जावथकी पाप उपार्जन करवाना अढार जेद जाणवा.

३१८ आश्रवतत्त्वनां ड्रव्यथकी पुण्यपापरूप दक्षीयां ते ड्रव्याश्रव कहीयें. तथा क्षेत्रथकी आश्रवतत्त्व लोकव्यापि जाणवुं. तथा कालथकी आश्रवतत्त्व अजव्यजीव आश्रयी संततिजावें अनादि अनंतजांगे वचें ठे, अने जव्य जीव आश्रयी अनादिसांतजांगे वचें ठे, तथा जावथकी आश्रवतत्त्व ते पुण्य पापरूप दक्षीयां उपार्जन करवा वहेतालीश जेद जाणवा.

३१९ ड्रव्यथकी संवरतत्त्वना सत्तावन जेद कहीयें. तथा क्षेत्रथकी संवर तत्त्व चौदराज लोक त्रसनाडी प्रमाणे जाणवुं. तथा कालथकी संवर तत्त्व द्वायिक जाव आश्रयी तो सादि अनंत जांगे वचें ठे, अने द्वा योपशम जाव आश्रयी सादि सांत जांगे वचें ठे, तथा जावथकी पोताना स्वरूपमां रमण करवुं ते संवरतत्त्व कहीयें.

३२० ड्रव्यथकी निर्झरातत्त्व वार जेदें कहीयें. तथा क्षेत्रथकी चौद राज लोक त्रस नाडी प्रमाणे जाणवुं तथा कालथकी सादि सांत जांगे वचें ठे, तथा जावथकी सर्व प्रकारें श्छानो रोध करी समताजावें वर्त्तवुं, ते निर्झरा.

३२१ बंधतत्त्वना ड्रव्यथकी चार जेद कहीयें. तथा क्षेत्रथकी लोक व्यापि जाणवुं अने कालथकी बंधतत्त्व सादिसांत जागे वचें ठे, तथा जावथकी जे अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश ते जावबंध जाणवो.

३२२ मोक्षतत्त्व ड्रव्यथकी तेरमे चौदमे गुणठाणे केवलीने कहीयें, तथा क्षेत्रथकी अढीद्वीपव्यापि जाणवुं. तथा कालथकी सर्वे सिद्धआश्रयी अनादि अनंतजांगे वचें ठे अने एक सिद्धआश्रयी सादि अनंत जांगे जाणवुं. तथा जावथकी मोक्षतत्त्व ते सकल कर्म ह्य करी लोकने अंतें बिराजमान एवा सिद्धपरमात्माने कहीयें. ए रीतें नव तत्त्वना स्वरूपमां ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जावरूप चोजंगीतुं स्वरूप जाणवुं.

३२३ शिष्यः— ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जाव, ए चारमांथी कोण कोणथी सूक्ष्म अने कोण कोणथी वादर ठे ? ए चार प्रश्न ठे.

गुरुः—एक आंखना मिचकारामांहे असंख्याता समय थाय, माटे ए समयरूप काल, सूक्ष्म ठे अने ते थकी वली क्षेत्र घणुंज सूक्ष्म ठे. केम के एक अंगुल श्रेणि प्रमाणें जे क्षेत्र, तेमांथी आकाशरूप ड्रव्यना जे प्र

देश, तेने समय समय एकेको अपहरतां असंख्याती उत्सर्पिणी अने अ वसर्पिणी काल व्यतीत थइ जाय, माटे कालथकी क्षेत्र घणुं सूक्ष्म ठे, तथा क्षेत्रथकी द्रव्य सूक्ष्म ठे जे माटे एकेक आकाश प्रदेशरूप क्षेत्रमां अनंतानंत पुञ्जद्रव्यना परमाणुआो अवगाही रह्या ठे, माटे क्षेत्रथकी द्रव्य सूक्ष्म जाणवुं तथा द्रव्यथकी जाव सूक्ष्म ठे, केम के एकेका पुञ्जलप रमाणुआमां वही अनंता गुण पर्याय रह्या ठे, माटे द्रव्यथकी जाव सूक्ष्मजा णवो. ए विचार आचारांगनीनिर्यूक्तिनी टीकामां तथा आवश्यकमां जाणवो.

हवे निक्षेपानुं स्वरूप श्रीअनुयोगद्वारसूत्रना पाठथी कहे ठे:—गाथा॥ जह थ जं जाणिजा, निस्केवं निस्केवे निरवितेसं ॥ जह थ नो जाणिजा, चउक्यं निस्केवे तह ॥१॥ अर्थ:—हे शिष्य ! जो जाणपणुं होय तो एकेक वस्तुमां अनेक प्रकारें निक्षेपा उतारजे अने तेहवुं जाणपणुं जो न होय, तो पण जे वस्तुनुं नाम पड्युं तेमां चार निक्षेपा तो जरूर उतारवा.

शिष्य:—ते पूर्वोक्त जीव अजीवरूप नव तत्त्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप चार चार निक्षेपे करी केम जाणीयें ?

३३९ गुरु:—प्रथम (नामजीव के०) जे “ जीव ” एवुं नाम ते गये कालें जीवतो हतो अने आवते कालें पण जीवतो हशे, तथा वर्तमानकालें पण जीवे ठे, ए रीतें नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूप पणे वत्ते, तेने नामजीव कह्यीयें. तथा जेमां चैनैवाणमां जीव ए सज्ञावस्थापना अने जीव एवा अक्षर लखवा, ते असज्ञावस्थापना एटले ए संग्रहनयने मतें स्थापनारूप जीव जाणवो. तथा ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें एकें द्वियथी मांकीने पंचेंद्रिय पर्यंत जे जीव पहेले गुणठाणे अनुपयोगें मिथ्या त्वजावें वत्ते, तेने “अणुवर्तगो दवं” ए वचनथकी द्रव्यजीव कह्यीयें. तथा शब्दनयने मतें समकेत जावें चौथा गुणठाणाथी मांकीने यावत् उठा सातमा गुणठाणा पर्यंत जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी जीवस्वरूप नां उपयोगमां वत्ते, तेने “उवर्तगोजावं” ए वचनथकी जावजीव कह्यीयें. ए रीतें जीवनुं स्वरूप पांच नयें करी चार निक्षेपे जाणवुं.

३४० नामथकी धर्मास्तिकाय एवुं नाम ते नामधर्मास्तिकाय जाणवुं. तथा स्थापनाथकी धर्मास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना धर्मास्ति

काय. तथा द्रव्यथकी धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यातप्रदेशी जाणवुं अने जावथकी धर्मास्तिकायद्रव्य, चलणसहायरूप जाणवुं.

३४१ नामथकी अधर्मास्तिकाय एवुं नाम, ते नाम, अधर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना अधर्मास्तिकाय तथा द्रव्यथकी अधर्मास्तिकाय द्रव्य, असंख्यातप्रदेशी जाणवुं, अने जावथकी अधर्मास्तिकायद्रव्य, स्थिरसहायरूप जाणवुं.

३४२ नामथकी आकाशास्तिकाय एवुं नाम, ते नाम आकाशास्तिकाय जाणवुं. तथा आकाशास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना आकाशास्तिकाय जाणवुं. तथा द्रव्यथकी आकाशास्तिकाय अनंतप्रदेशी जाणवुं. अने जावथकी आकाशास्तिकायद्रव्य, अवगाहनारूप जाणवुं.

३४३ नामथकी कालद्रव्य एवुं नाम, ते नामकालद्रव्य, तथा कालद्रव्य एवा अक्षर लखवा, ते स्थापना कालद्रव्य जाणवुं. तथा द्रव्यथकी तो कालनो एक समय लोकमां सदाकाल शाश्वतो वत्तें ठे, ते द्रव्यकाल जाणवो अने जावथकी कालद्रव्य, नवी पुराणी वर्तनारूप जाणवुं.

३४४ नामथकी पुजलास्तिकाय एवुं नाम, ते नाम पुजलास्तिकाय जाणवुं, तथा पुजलास्तिकाय एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप पुजलास्तिकाय जाणवुं. तथा द्रव्यथकी पुजलद्रव्यना अनंता परमाणुआ लोकमां सदा काल शाश्वता वत्तें ठे, तथा जावथकी पुजलद्रव्य गलण पूर्ण मिलण विखरण रूप जाणवुं. ए रीतें जीव अजीरूप षड्द्रव्यमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४५ पुण्यतत्त्वमां निक्षेपा कहे ठे. षट्ठे प्रथम नामथकी पुण्य कहेतां जे पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मत्तें त्रणेकाल एक रूपपणे वत्तें ठे. अने स्थापनापुण्य कहेतां जे पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा. अने द्रव्यपुण्य कहेतां जे कोइ जीवनी सत्तायें पुण्यनां दक्षियां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यांठे. ते संग्रह नयने मत्तें कर्मसत्तारूप द्रव्यपुण्य जाणवुं. अने जावपुण्य कहेतां जे ते दक्षियानो उदय थयो, ते व्यवहार नयने मत्तें उदयजावरूप जावपुण्य जाणवुं. ए रीतें उदयजावरूप पुण्यनेविषे त्रणनयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४६ पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं. तथा पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनापुण्य जाणवुं. तथा जे कोइ जीवनी सत्तायें पुण्यनां दक्षियां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते सं

ग्रहनयने मत्तें जाणवां अने तेदक्षियांनो उदय थयो, ते व्यवहारनयने मत्तें न्यारा रद्दी उपरथकी लूखे परिणामें जोगवे ठे माटे एने द्रव्यपुण्य कहीयें, तथा जे कोइ जीव, ऋजुसूत्रनयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें पुण्यनां दक्षीयां व्यवहारनयने मत्तें उदयरूप जावें जोगवे ठे, तेने जावपुण्य कहीयें. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पुण्य जोगववा उपर जाणवा.

३४७ नामपुण्य कहेतां पुण्य एवुं नाम ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूप जाणवुं. अने पुण्य एवा अक्षर लखीने स्थापवा ते संग्रह नयने मत्तें स्थापनारूप पुण्य जाणवुं. तथा द्रव्यपुण्य एटले जे कोइ जीव, दान, शी यल, तप, जाव, दया, यत्ना इत्यादिक कष्टक्रियारूप करणी लोकने देखा डवारूप वीराशालवीनी परें कृष्णवासुदेवनुं मन रीजववारूप अथवा पूर्णेशेठनी परें करे, ते व्यवहारनयने मत्तें करणीरूप द्रव्यपुण्य जाणवुं. तथा जावपुण्य ते आगल द्रव्यनिक्षेपामां जे व्यवहारनयने मत्तें पुण्यनी करणी कही, ते करणी सर्व करे, पण अंतरंग ऋजुसूत्रनयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें जीर्णेशेठनी परें करे, ते जावपुण्य जाणवुं. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पुण्य करवा उपर जाणवा.

३४८ हवे पाप उपर निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम नाम थकी पाप एवुं नाम, ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूपपणे वर्त्ते ठे, ते नामपाप जाणवुं. तथा पाप एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप पाप जाणवुं. तथा कोइ जीवनी सत्तायें पापनां दक्षीयां प्रकृतिरूप सात्तापणे बांध्यां ठे, ते संग्रह नयने मत्तें कर्म सत्तारूप द्रव्यपाप जाणवुं तथा ते दक्षीयांनो उदय थयो, ते व्यवहारनयने मत्तें उदयजावरूप जावपाप जाणवुं. ए री तें ए उदयजावरूप पापमांहे त्रण नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३४९ पाप एवुं नाम ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूप पणे वर्त्ते ठे ते नामपाप जाणवुं. तथा पाप एवा अक्षर लखवा ते स्थापनारूप पाप जा णवुं तथा जे कोइ जीवनी सत्तायें पापनां दक्षीयां प्रकृतिरूप सात्तापणे संग्रह नयने मत्तें बांध्यां ठे, तेनो उदय थयो, तेवारें व्यवहार नयने मयें पण जूदा रद्दी उपरथकी लूखे परिणामें जोगवे ठे, तेने द्रव्यपाप कहीयें. तथा जे कोइ जीव, ऋजुसूत्र नयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी दुःखरूप विपाकें पापनां दक्षीयां व्यवहारनयने मत्तें उदयरूप जावें जोगवे ठे, तेने जावपाप

कहीयें. ए रीतें चार नयमां चार निक्षेपा पाप जोगववा उपर जाणवा.

३५० पाप एवुं नाम ते नामपाप ते नैगम नयने मत्तें त्रणे काल एक रूपपणे वर्त्ते ठे. तथा पाप एवा अक्षर लखवा ते संग्रहनयने मत्तें स्थापनारूप पाप जाणवुं. तथा कोश जीव, हिंसा मृषा आदिक कजीया जगडा रूप अनेक प्रकारें उदयरूप जावने योगें करी चेडा राजानी परें करे, ते व्यवहार नयने मत्तें ड्रव्यपाप, करणीरूप जाणवुं. तथा जे आगल त्रीजा निक्षेपामां व्यवहार नयने मत्तें करणी कही, ते सर्व करे, पण अंतरंग क्जुसूत्र नयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें कालकसूरिया खाटकीनी परें करे, ते जावपाप जाणवुं. ए रीतें चार निक्षेपा पाप करवा रूपें जाणवा.

३५१ आश्रवमां चार निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम आश्रव एवुं नाम ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं ते नाम आश्रव. तथा आश्रव एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनारूप आश्रव जाणवुं तथा बहेंतालीश प्रकाररूप आश्रवने गडनालें करी व्यवहार नयने मत्तें शुजाशुच आश्रव रूप दळीयातुं ग्रहण करवुं, ते ड्रव्यआश्रव जाणवुं तथा क्जुसूत्र अने व्यवहार नयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी उदयजावने योगें ते दळीयातुं जोगववुं, ते उदय जावरूप जावआश्रव जाणवुं.

३५२ संवरमां चार निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम संवर एवुं नाम, ते नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवुं, ते नामसंवर तथा संवर एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा संवर रूप मूर्ति स्थापवी, ते संग्रह नयने मत्तें स्थापनारूप संवर जाणवुं. तथा व्यवहार नयने मत्तें उपरथकी अरुचि जावें लोक देखाडवारूप पोसा पडिकमणां सामायिक आदि अनेक प्रकारें संवरनी करणी करवी, ते ड्रव्यसंवर व्यर्थरूप जाणवुं. तथा क्जुसूत्र नयने मत्तें मन, वचन अने कायायें करी यथाप्रवृत्तिरूप करणना परिणामें पोसा, पडिकमणां, व्रत, पञ्चस्काण आदें व्यवहार नयने मत्तें उपरथकी संवररूप करणीतुं करवुं. ते जावसंवर जाणवुं एटले चार नयमां चार निक्षेपे यथाप्रवृत्तिकरणरूप संवर जाणवुं.

३५३ नामथकी संवर एवुं नाम, ते नामसंवर नैगमनयने मत्तें जाणवुं. तथा संवर एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनासंवर अथवा संवररूप

मूर्त्ति स्थापवी, ते संग्रह नयने मते स्थापनारूप संवर जाणवुं तथा ऋजुसूत्र नयने मते मन, वचन, कायार्थे करी व्रत पञ्चस्काररूप, उपरथकी व्यवहारा नयने मते संवररूप करणीनुं करवुं. ते द्रव्यसंवर जाणवुं तथा शब्द नयने मते जीव, अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी स्थिरतारूप परिणामें आगल द्रव्यनिक्षेपा मध्ये जे ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मते संवररूप करणी कही, ते करणी करतां थकां महा निर्झारा प्रत्ये करे, ते जावसंवर जाणवुं. ए रीते संवरविषे पांच नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५४ निर्झारामां निक्षेपा उतारे ठे:- निर्झारा एवुं नाम ते नैगमनयने मते नाम निर्झारा जाणवी तथा निर्झारा एवा अक्षर लखवा, ते संग्रहनयने मते स्थापना रूप निर्झारा जाणवी, तथा जे व्यवहार नयने मते ऋजुसूत्रना उपयोग सहित मिथ्यात्वजावें अकाम निर्झारा करवी, ते सर्व, द्रव्यनिर्झारा जाणवी. तथा शब्द नयने मते जीव अजीवरूप षट् द्रव्य नव तत्त्वनुं जाणपणुं प्रतीत करी ऋजुसूत्रनयना उपयोग सहित उपरथकी व्यवहार नयने मते चार जेदें तपस्यारूप करणीनुं करवुं ते जावनिर्झारा जाणवी. ए रीते पांच नयमां चार निक्षेपा निर्झाराने विषे जाणवा.

३५५ बंधमां चार निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम बंध एवुं नाम ते नैगमनयने मते नामबंध जाणवो. तथा बंध एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना रूप बंध जाणवो. तथा जे प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध अने प्रदेशबंध, ए चार प्रकारें बंधरूप दलीयां जीवनी सत्ताये वांध्यां ठे, ते संग्रहनयने मते कर्म सत्तारूप द्रव्यबंध जाणवो, तथा जे व्यवहारनयने मते ते दलीयांनो उदय थयो, ते उदयजावरूप जावबंध जाणवो. ए रीते उदयजावरूप बंध ने त्रण नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५६ तथा वली नामथकी बंध एवुं नाम, ते नैगमनयने मते नामबंध जाणवो. तथा बंध एवा अक्षर लखवा अथवा बंधरूप मूर्त्ति स्थापवी, ते स्थापनारूप बंध जाणवो. तथा आगल कह्या जे चार प्रकार, ते चार प्रकारें बंधरूप दलीयां संग्रहनयने मते जीवनी सत्ताये रद्यां ठे, तेनो स्थितिपरिपाके व्यवहारनयने मते उदय थयो, ते द्रव्यबंध जाणवो. तथा ऋजुसूत्रनयने मते मिथ्यात्व, अव्रत, कषाय अने योगरूप सत्तावन्न बंध हेतुप्रमुख जीवना परिणाम एटले तेनी चिकाशें वली पाठो कर्मरूप दली

यानो बंध पाडे, माटे ऋजुसूत्रनयने मते तेने जावबंध कहीये. ए रीते बंध बांधवाने विषे चार नयमां चार निक्षेपा जाणवा.

३५७ मोक्षतत्त्व निःकर्मावस्थामां चार निक्षेपा उतारे ठेः—प्रथम नाम थकी मोक्ष एवुं नाम, ते नामनिक्षेपो, तथा जे मोक्षरूपें मूर्ति स्थापवी, अथवा मोक्ष एवा अक्षर लखवा, ते स्थापनामोक्ष जाणवो. तथा समच्चिरूढनयने मते शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप एटले क्षपक श्रेणियें अज्ञानरूप राग, द्वेष अने मोहनीय कर्मनो बारमे गुणठाणे क्षय कस्यो अने तैरमे गुणठाणे केवल ज्ञान पाम्या, एवा केवली जगवानने ज्वयशरीर आश्रयी ड्रव्यमोक्षपद कहीये, ते त्रीजो ड्रव्यनिक्षेपो जाणवो, तथा एवंभूतनयने मते अष्ट कर्मने क्षयें, अष्टगुणसंपन्न लोकने अतें विराजमान, एवा सिद्ध परमात्माने जावमोक्षपद जाणवुं. ए रीते जीव, अजीवरूप षड्द्रव्य नव तत्त्वमां नयसंयुक्त चार निक्षेपा जाणवा.

३५८ व्रतमां निक्षेपा उतारतो थको प्रथम प्राणातिपात विरमणव्रते निक्षेपा कहे ठेः—तिहां प्रथम दया एवुं नाम ते नामदया जाणवी, तथा दया एवा अक्षर लखवा, ते असंज्ञावस्थापना अने दयालुमूर्ति स्थापवी, ते संज्ञावस्थापना, तथा व्यवहार नयने मते उपरथकी लोकने देखाडवारूप दया पालवी, ते ड्रव्यदया जाणवी, तथा ऋजुसूत्र नयने मते मन, वचन, कायायें करी एकचितें परजीवनां प्राण हणे नही, हणावे नही, तथा हणताने अनुमोदे नहीं ते जावदया जाणवी. ए चार निक्षेपा ऋजुसूत्रनयने मते यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे जाणवा.

३५९ तथा वली दया एवुं नाम ते नामदया तथा दया एवा अक्षर लखवा, अथवा दयालुमूर्ति स्थापवी ते स्थापनादया तथा ऋजुसूत्रनयने मते एकचितें करी व्यवहारनयने मते उपरथकी मन, वचन अने कायायें करी परजीवनां प्राण हणे नहि, हणावे नहि, हणताने अनुमोदे नहि, ते ड्रव्यदया जाणवी. तथा शब्दनयने मते जीव अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र प्रमुख जावप्राण पोतानां अने परनां तेने कर्मरूप आवरणपणे हणे नहि, हणावे नहि, हणताने अनुमोदे नहि, ते स्वदया, तथा पोतानो आत्माकर्मरूप आवरणें वीटाणोथको जन्म मरणनां दुःख जोगवे ठे, तेने खर्हिसा कहीये. ते माटे

ते पोताना जीवने कर्मरूप आवरणथकी मूकाववा निमित्तें साध्य चोखो राखी ऋजुसूत्र तथा व्यवहारनयना मत्तें जे रीतें आगल द्रव्यदयारूप आचरण कळुं, ते रीतें करतां थकां सर्वें लेखे जाणवी. ए चोथी जावदया ठे.

३६० बीजा व्रत उपर निक्षेपा उतारे ठे:—प्रथम अमृषावाद एवुं नाम, ते नाम अमृषावाद जाणवो, बीजो जे अमृषा एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनाअमृषावाद जाणवो, त्रीजो व्यवहारनयने मत्तें उपरथकी स्वदर्शनी अन्यदर्शनी मिथ्यादृष्टिजीवने सहेजें सत्यवचन बोलवारूप ढाल पडी गयो ठे, ते व्यवहारनयने मत्तें द्रव्य अमृषावाद जाणवो, चोथो जे ऋजुसूत्रनयने मत्तें मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें व्यवहारनयने मत्तें उपरथकी सत्यवचन बोले ठे, ते जीव, यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे जाणवा. ते जावथकी अमृषावाद जाणवो.

३६१ अमृषावाद एवुं नाम ते नाम अमृषावाद तथा अमृषावाद एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अमृषावाद तथा ऋजुसूत्र नयने मत्तें क्रोधें करी, मानें करी, जयें करी, लोभें करी सूक्ष्म तथा वादर लौकिक तथा लोकोत्तर, मन, वचन अने कायायें करी जूतुं पोतें बोले नहि, वीजाने वो खावे नहि, बोलताने अनुमोदे नहि, ते द्रव्यथकी अमृषावाद जाणवो. तथा जाव अमृषावाद ते सर्व द्रव्य गुण पर्याय नयनिक्षेपा निश्चय व्यवहाररूप द्रव्यजावरूप जाणपणुं सत्यज्ञासनरूप ज्ञायकता शक्ति साधे, ज्ञानसत्य पणुं पाळे, तथा श्रीवीतरागना आगम प्रमाणें जे अर्थ जाव ठे, तेनी सहाय करे, जेथकी पोताना ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप गुण निर्मल थाय, तेवी जावा बोले, ते जाव अमृषावाद जाणवो.

३६२ त्रीजा व्रत उपर निक्षेपा उतारे ठे:—अदत्त रहित एवुं नाम ते नाम अदत्त तथा अदत्त रहित एवा अक्षर लखीने स्थापवा ते स्थापना अदत्त, तथा व्यवहारनयने मत्तें उपरथकी कोइनी अणदीधी वस्तु लेवानो सहजथकी ढाल नथी, ते द्रव्यथकी अदत्तरहित जाणवो. तथा ऋजुसूत्रनयने मत्तें मन, वचन अने कायायें करी अदत्तनो त्याग करे, एटले नरकनिगोदना दुःखथकी विहीतो थको सुखनी लालचें व्यवहार नयने मत्तें उपरथकी कोइनी अणदीधी वस्तु कांइ पण लेतो नथी ते जीव, यथाप्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे जावथकी अदत्तरहित जाणवो.

३६३ वही निक्षेपा कहे ठे. अदत्त रहित एवं नाम,तेनाम अदत्तरहित, अने बीजुं अदत्तरहित एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अदत्त रहित, तथा त्रीजुं ऋजुसूत्र नयने मत्ते मन, वचन, कायायें करी तृण तुष मात्र पण कोइनी अणदीधी वस्तु लीये नहीं, जे लीये, ते कहीने लीये, ए टले संसारी जीवनी वस्तु चोरी लेवी, तेने लौकिक चोरी कहीयें, ते न करे, तथा श्रीतीर्थकरनी आज्ञामां जे न लेवानुं कछुं ते न लीये, तेने लोकोत्तर चोरीथी रहित कहीयें. ए अव्यादत्तरहित कहीयें, तथा चोथुं शब्दनयने मत्ते आत्मानी ग्राहकतारूप जे शक्ति, ते स्वरूपग्रहणरूपकार्यनी कर्ता ठे, ते अनादिनी परजाव ग्राहकता करी रही ठे, तेने परजावग्राहक पणाथकी निवारिने स्वरूपग्राहकपणे परिणमावे, ते जावअदत्तरहित कहीयें.

३६४ हवे अदत्तना चार जेद ठे, ते कहे ठे. जे श्रीतीर्थकरनी आज्ञामां न लेवानुं कछुं, ते सर्व शुजाशुजरूप परस्वजाव लेवानी वांढा, तेने प्रथम तीर्थकर अदत्त लागे तथा जे गुरु आणा परंपरा विना सूत्रना अर्थ कहेवा तेने बीजुं गुरुअदत्त लागे. तथा जे वस्तुनो धणी होय तेनी अणदीधी वस्तु लीये, तेने त्रीजुं स्वामी अदत्त लागे, एटले संग्रहनयने मत्ते सर्व जीव सत्तायें स्वामीरूप जाणवा. अने व्यवहार नयने मत्ते क्रिया आचार प्रवृत्तिरूप एक समाचारी सरखो होय, ते आपणा स्वामी तेनी अणदीधी वस्तु लीये तेने त्रीजुं स्वामीअदत्त लागे. तथा जे कोइ जीवें एम कछुं नथी जे महारां प्राण तमें हणो, तेम ढतां पोताना इंद्रियना स्वाद माटे जे परजीवनां प्राण हणे, तेने चोथुं जीवअदत्त लागे, अने प्रशस्त काम करतां जीववि राधना थाय, तेने जगवंते हिंसा कही नथी. श्रीजगवतीसूत्रे “सुजजोगप डुच्च अणारंजा” ए पाठ ठे, एटले (शुजयोग के०) शुजकार्यमां मन, वचन अने कायाना योगनी प्रवृत्ति करतां थकां हिंसा लागे नहीं, एने अना रंज कह्यो ठे. ए रीते ए चार प्रकारना अदत्तनो परमार्थ जाणवो.

३६५ चोथा महाव्रत उपरें चार निक्षेपा उतारे ठे:—प्रथम सुशील एवं नाम ते नामसुशील, बीजुं सुशील एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथवा सुशीलरूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनासुशील, त्रीजुं व्यवहार नयने मत्ते उपरथकी व्रतनो उच्चार करे अथवा लोकलाजथी कुलमर्यादायें यशःकी चिह्नरूप शोचाने अर्थे अथवा परवश पणे राजादिकना जयथकी शीयल पाले,

पण अंतरंग परिणामनी आतुरतारूप चपलता मटी नथी, ते व्यवहार न यने मते द्रव्यथकी सुशील जाणवुं. तथा ऋजुसूत्र नयने मते मन, वचन अने कायायें करी नववाडें अढार जेद सहित शीयल पाळे, ते जावसुशील ठे.

३६६ वली प्रकारांतरे सुशील उपर चार निकेपा कहे ठे:-एक सुशील एवुं नाम ते नामसुशील, तथा सुशील एवा अक्षर लखीने स्थापना, अथवा मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनासुशील, तथा ऋजुसूत्र नयने मते मन, वचन अने कायायें करी पांचे इंद्रियोना त्रेवीश विषय सेवे नही, सेवरावे नही सेवताने अनुमोदे नही, तथा मनुष्य, तिर्यच अने देवता संबंधि विषयनी वांढा करे नही, करावे नही, अनुमोदे नही, ते ऋजुसूत्र तथा व्यवहार न यने मते करी द्रव्यसुशील जाणवुं. तथा शब्द नयने मते जोतां तो पोतानो आत्मा पोताना ज्ञानादि अनंत गुणनो जोगी ठे, ते परजावने जोगवे, माटे तेने जावमैथुन कहीयें, ते सर्व परजावजोगी पणे जोगववुं नही, अने पोता नो आत्मा निःकर्मा करवा माटे परजाव साधनपणे ग्रहे, पण अग्राह्यपणे अरमणिकपणे माने अने एवुं चिंतवे जे ए आत्मानि चूल ठे, ए रीते आत्माने निंदतो ए परजावने अनंत जीवे अनंती वार लइ जोगवीने वम्युं ते मुज ने ग्रहवुं, जोगववुं घटे नही, एम सर्वे परजाव जोगीपणुं तजीने स्वजाव जो कापणे रहे, ते जीव, शब्दनयने मते करी जावसुशील जाणवो.

३७० द्रव्य, क्षेत्र, काल जावे करी मैथुननुं स्वरूप देखाडे ठे:-प्रथम द्रव्यथकी मैथुन ते करणीरूप सेववुं तथा क्षेत्रथकी मैथुन ते त्रणलो कने विषे इंद्रियना सावधनी इडा, तथा कालथकी मैथुन ते दिवस तथा रात्रि, अने जावथकी मैथुन ते रागथी तथा द्वेषथी ए सर्वथा सेववुं नही.

३७१ पांचमा व्रत उपर चार निकेपा उतारे ठे:-प्रथम अपरिग्रही एवुं नाम, ते नाम अपरिग्रही जाणवुं. वीजुं अपरिग्रही एवा अक्षर लखीने स्थापना अथवा अपरिग्रहीरूप मूर्ति स्थापवी ते स्थापना अपरिग्रही. त्रीजो द्रव्यथकी अपरिग्रही ते व्यवहार नयने मते अतीत, वैरागी, संन्यासी, मिथ्या दृष्टि लिंगी प्रमुख बालजीव जाणवा. चोथो जाव अपरिग्रही ते व्यवहार न, यने मते उपरथकी सात धातुमांहेदी एके धातु मात्र ऋजुसूत्रनयने मते मन वचन अने कायायें करी पासें राखता नथी, रखावता तथी, ते जीव, यथाप्र वृत्तिकरणें करी पहेले गुणनाणे जाव अपरिग्रही जाणवा.

३५२ निक्षेपा कहे ठे:—एक अपरिग्रही एवं नाम ते नाम अपरिग्रही. बीजो अपरिग्रही एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथवा अपरिग्रहीरूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापना अपरिग्रही जाणवो. त्रीजो व्यवहार तथा ऋजुसूत्र नयने मते परिग्रहरूप जे धन, धान्य, दास, दासी, चतुःपद, घर, धरती, वस्त्र, आचरणरूप, नव प्रकारना परिग्रहनो मन, वचन अने कायायें करी त्याग करे, सूक्ष्म बादर परिग्रह राखे नहि, रखावे नहि, राखे तेने अनुमो दे नहि, ते जीव, द्रव्यथकी अपरिग्रही जाणवा. तथा ज्ञाव अपरिग्रही ते निश्चय ज्ञावकर्म जे रागद्वेषरूप अज्ञानदशा ते जीवने अनादिनी ठे, तेने ठांमवी अने तेनी चिकारें द्रव्यकर्म ज्ञानावरणीय प्रमुख आठ कर्मरूप शरीर इंद्रियनो परिहार, एटखे शुजाशुच कर्मरूपने परज्ञाव जाणीने तेने ठांमवा रूप परिणाम, ते निश्चयपरिग्रहनो त्याग जाणवो, एटखे परवस्तु जे ठे, ते पोतामा स्वरूपथकी जूदी ठे, तेनी मूर्धा ठोडवी. जेणें मूर्धा ठोडी, ते जीवने ज्ञावथकी परिग्रहरूप त्याग जाणवो.

ए रीतें ए पांच महाव्रतनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी देखाड्युं, ते साधुसुनिराजने जाणवुं अने एमांथी श्रावकने तो देशरूप धारवुं, ए पांच महाव्रतमां सर्वे व्रत आव्यां. हवे श्रावकनां बारे व्रत कहे ठे, तेमां पांच व्रतना निक्षेपा तो लखाइ गया, हवे शेष व्रतना निक्षेपा कहे ठें.

३५३ प्रथम ठठा व्रत उपर निक्षेपा लगावे ठे. प्रथम दिशिव्रत एवं नाम ते नामथी दिशिव्रत जाणवुं. बीजुं दिशिव्रत एवा अक्षर लखी स्थापवा, ते स्थापना दिशिव्रत, त्रीजुं चार दिशि, चार विदिशि, अधोदिशि अने ऊर्ध्वदिशि, ए रीतें दशदिशि रूप क्षेत्रनुं मान करी व्यवहारनयने मते पञ्चस्काण करे अने ऋजुसूत्रनयने मते मन, वचन, कायायें करी पोतानी शक्ति अनुसारें पालवुं, ते द्रव्यथकी दिशिव्रत जाणवुं अने ज्ञावथकी दिशिव्रत, ते जे चार गतिने दुःखरूप जाणीने तिहांथकी उदासीपणुं त्यागरूप परिणाम अने सिद्ध अवस्था साथें उपादेयपणुं ते ज्ञावथी दिशिव्रत जाणवुं.

३५४ सातमा व्रत उपर निक्षेपा लगावे ठे. प्रथम जोगउपजोग एवं नाम ते नाम जोगउपजोग जाणवुं. बीजुं जोगउपजोग एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनाजोग उपजोग जाणवुं. त्रीजुं जे एकवार जोगवीयें, ते जोग अने जे वारंवार जोगवीयें, ते उपजोग, तेनुं जेणें पञ्चस्काण क

री व्यवहार नयने मत्तें उपरथकी परिणाम करी, ऋजुसूत्र नयने मत्तें मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें पाले ठे, ते द्रव्यथकी जोग उपजोग व्रत जाणवुं. तथा ज्ञावथकी तो अनादि कालना जीवें परस्वभाव विज्ञावरूप पुजलना जोग उपजोगने विषे सुख करी मान्युं ठे, तिहांथकी मन पलटा वीने शब्दनयने मत्तें जीव, अजीवरूप स्वसत्ता परसत्तानी वेंचण करी परसत्ता उपर त्याग बुद्धि अने स्वसत्तारूप ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य आदिक अनन्ता गुण ठे, तेने प्रगट करवारूप बुद्धि, एटले ए गुणनुं उप जोगपणुं जे वारंवार तेना तेज जोगववामां आवे, माटे उपजोग कहीयें. अने तेना पर्याय अनन्ता ठे ते, समय समय पलटाइ रह्या ठे, तेनुं जोगीपणुं कहीयें, एवो वांठारूप परिणाम वत्तें, ते ज्ञावथकी जोग उपजोग व्रत ठे.

३५५ आठमा व्रतमां निक्षेपा लगावे ठें. प्रथम अनर्थदंरुविरमण व्रत, ए वुं नाम, ते नाम अनर्थदंरु विरमणव्रत जाणवुं. वीजुं अनर्थदंरु विरमण व्रत एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अनर्थदंरु विरमणव्रत जाणवुं. व्रीजुं जे अनर्थने कामें जीवने पापरूप आरंज लगाडवा, तथा पारके का में आझा प्रमुख आपवी, तेनाथी जे विरम्या ठे, ते द्रव्य अनर्थदंरुथी रहित जाणवा. चोथुं जे जीवने अनादि कालनी मिथ्यात्वदशायें करी शुजा शुज कर्मरूप फलनी वांठाना परिणाम वत्तें, तेने निवारी आत्मधर्म नि रावरणरूप प्रगट करवानी रुचि, ते ज्ञावथी अनर्थदंरु रहित जाणवा.

३५६ नवमा व्रत उपर निक्षेपा उतारे ठे:—प्रथम सामायिक एवुं नाम ते नामसामायिक जाणवुं. वीजुं सामायिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना सामायिक जाणवुं. व्रीजुं व्यवहार नयने मत्तें उपरथकी व्रत रूप उच्चार करी वे घडी पर्यंत पुण्यपणे रहेवुं, ते द्रव्यसामायिक व्यव हारनयने मत्तें जाणवुं. चोथुं ज्ञावथकी सामायिक ते जे द्रव्यरूप व्यव हारनयने मत्तें उच्चार करी ऋजुसूत्र नयने मत्तें मन, वचन, कायायें करी एकचित्तें सावयने ठोडी वे घडी पर्यंत शुजध्यानमां वर्तवुं ते जीव, यथा प्रवृत्तिकरणरूप पहेले गुणठाणे ज्ञावसामायिकी जाणवो.

३५७ वली चार निक्षेपा कहे ठे. एक सामायिक एवुं नाम, ते नामसामायिक जाणवुं. वीजुं सामायिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते असज्ञाव स्थापना अने सामायिक रूपें मूर्ति स्थापवी, ते सज्ञावस्थापना, ए स्था

पनाथकी सामायिक जाणवुं. त्रीजुं जे ऋजुसूत्रनयने मतें “ करेमि जंतें ” रूप व्रतनो उच्चार करी मन, वचन, कायार्थें करी सावधने ठोडी एक चित्तें वत्रीश दूषण टाळी सव्वायध्यानरूप शुद्धपरिणामें वर्त्तवुं. ते द्रव्यथ की सामायिक व्रत जाणवुं. तथा चोथुं जावथकी सामायिक ते शब्दन यने मतें (सम के०) जे समता, तेनो (आय के०) लाज तेनुं नाम सामायिक ठे, एटले जेटली वार जीव, सत्तागतना ध्यानरूप संवर जाव मां वर्त्तें, तेटली वार सामायिकनो लाज जाणवो. माटे एक अंतरमुहूर्त्त पर्यंत जीव, पोताना स्वरूपना ध्यानरूप चित्तवनमां वर्त्ततो, घातिकर्म खपा वीने केवल ज्ञान पामे. ए जावसामायिक जाणवुं.

३९७ दशमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे:—देशावकाशिक एवुं नाम, ते नामदेशावकाशिक जाणवुं, तथा देशावकाशिक एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादेशावकाशिक जाणवुं. तथा ऋजुसूत्रनयने मतें जे मन, वचन अने कायाना योगने एक ठोर करी, एक स्थानकें चार पहोर वेसी धर्म ध्यान करवुं ते द्रव्यथी देशावकाशिक जाणवुं तथा शब्दन यने मतें श्रुतज्ञानें करी ठ द्रव्यनुं स्वरूप उलखीने पांच द्रव्यनो त्याग कर वो अने एक ज्ञानवंत जीवद्रव्यनुं ध्याववुं ते जावदेशावकाशिक व्रत ठे.

३९८ अगीयारमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम पोसह एवुं नाम, ते नामपोसह जाणवुं. वीजुं पोसह एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनापोसह जाणवुं. त्रीजुं ऋजुसूत्र अने व्यावहारनयने मतें चार पहोर अथवा आठ पहोर पर्यंत एक चित्तें व्रत उच्चरी समता परिणामें निरारंज सावध ठोडी सव्वाय ध्यानमां प्रवर्त्तवुं, ते द्रव्यपोसह जाणवुं. चोथुं शब्दनयने मतें आपणा जीवने ज्ञान ध्यानथी पोषीने पुष्ट करवुं. एटले “ पोषे धर्मने शोषे कर्म, अग्यारमुं व्रत ते पोषो मर्म ” ए रीतें आपणा जीवने स्वगुण साथें पोषीथें, ते जावपोसह जाणवुं.

३९९ वारमा व्रत उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम अतिथि संविज्ञाग एवुं नाम, ते नामथकी अतिथिसंविज्ञाग जाणवुं. वीजुं अतिथि संविज्ञाग एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापना अतिथि संविज्ञाग व्रत जाणवुं. त्रीजुं पौषधने पारणे अथवा सदा काल साधुने तथा जिनधर्मिं श्रावकने पोतानी शक्ति प्रमाणें दान देवुं, ते द्रव्यथकी अतिथिसंविज्ञाग व्रत जा

एवं चोथुं शब्दनयने मत्तें उलखाण सहित ज्ञान ज्ञाणवुं, ज्ञाणवुं. सांज लवुं, संजलाववुं जे रीतें पोताना तथा परना ज्ञानादिक गुण वृद्धि पामे, ते रीतें करवुं, ते जावथकी अतिथिसंविजाग व्रत जाणवुं. ए रीतें पांच महाव्र तरूप बार व्रतमां निक्षेपानुं स्वरूप जाणी प्रतीति करी ने जखी रीतें पालवां.

३०१ हवे क्रोध, मान, माया अने लोभ उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे, तिहां प्रथम क्रोध एवुं नाम, ते नामथकी क्रोध जाणवो, तथा क्रोध एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा क्रोधरूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनाक्रोध जाणवो, तथा संग्रहनयने मत्तें जीवने सत्तायें क्रोधरूप दळीयां ते प्रकृतिरूप सत्ता पणे बांध्यां ठे, ते द्रव्यथकी क्रोध जाणवो, तथा व्यवहारनयने मत्तें ते दळीयांनो उदय थयो, अने ऋजुसूत्रनयने मत्तें क्रोधरूप परिणामें एकचित्त करी लौकिक तथा लोकोत्तर मार्गमां प्रवर्तवुं, तेथकी जीव, महापापरूप कर्मप्रत्यें बांधे, ते जावथकी क्रोध जाणवो.

३०२ मान उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम मान एवुं नाम, ते ना मथकी मान जाणवुं. बीजुं मान एवा अक्षर लखी स्थापवा, अथवा मान रूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापना मान जाणवुं. त्रीजुं संग्रहनयने मत्तें जी वने सत्तायें मानरूप दळीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे, बांध्यां ठे, ते द्रव्यथकी मान जाणवुं. चोथुं व्यवहार नयने मत्तें ते दळीयांनो उदय थयो अने ऋजु सूत्रनयने मत्तें एकचित्तें मानरूप परिणामें लौकिक तथा लोकोत्तर मार्गमां प्रवर्तवुं तेथकी जीव महापापरूप कर्मप्रत्यें बांधे ते जावथकी मान ठे

३०३ माया उपर चार निक्षेपा लगावे ठे:—प्रथम माया एवुं नाम, ते ना मथकी माया जाणवी, बीजो माया एवा अक्षर लखीने स्थापवा, तथा मा यारूप मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनाथकी माया जाणवी, त्रीजो संग्रहनयने मत्तें जीवनी सत्तायें माया एटले कपटरूप दळीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते द्रव्यथकी माया जाणवी. चोथो जे ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मत्तें मायाना उदयरूप जावें करी लौकिक मार्ग एटले संसारी का र्यमां मायारूप कपटनुं करवुं तथा लोकोत्तर मार्ग जे सामायिक, पडिक मणां, पोसह, व्रत, पञ्चस्काररूप धर्म करणीमां माया कपट करीने लोकने ठगवां, तथा आ जव अने परजवनी वांठारूप माया कपटना परिणाम वत्तें, तेथकी जीव महापाप बांधे ते जावथकी मायाकपट जाणवुं.

३०४ लोच उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम लोच एवुं नाम, ते नाम लोच. बीजो लोच एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा लोचरूप मूर्ति स्थापवी ते स्थापनालोच, त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवनी सत्ताये लोचरूप दक्षीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते द्रव्यथकी लोच जाणवो. चोथो ऋजुसूत्र तथा व्यवहार नयने मतें उदयरूप जावें करी लौकिकमार्गमां धन, माल, राज, ऋद्धि, स्त्री, कुटुंब पुत्र, परिवारनी लालचरूप तीव्र लोचना परिणाम अने लोकोत्तरमार्गमां जे धर्मरूप करणी ठे, तेमां आ जावने विषे यशःकीर्त्ति, शोचा, वस्त्र, पात्र, आहार पाणीनी वांठारूप तीव्रलोचना परिणाम, ते जावथकी लोच जाणवो. एरीतें क्रोधादिकनी चोकडीमां निक्षेपाठे.

३०५ दान उपर चार निक्षेपा लगावे ठे. प्रथम दान एवुं नाम ते नामथकी दान जाणवुं. बीजुं दान एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादान जाणवुं, त्रीजुं व्यवहारनयने मतें उपरथकी अरुचिपणे लाज थकी, शरमथकी, जयप्रमुखथकी दान देवुं, ते सर्व द्रव्यथकी दान जाणवुं. चोथुं ऋजुसूत्र तथा व्यवहारनयने मतें मन, वचन, कायाये करी एक चित्तें साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका प्रमुखने पोतानी शक्तिने अनुसारे दान आपवुं, ते सर्वे जावथकी दान जाणवुं.

३०६ वली निक्षेपा कहे ठे:—दान एवुं नाम ते नामदान, तथा दान एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनादान, तथा ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें मन, वचन, कायाये करी एक चित्तें अजयदान, सुपात्रदान, अनुकंपादान, उचितदान, कीर्त्तिदानरूप पांच प्रकारें दान देवुं. ते स द्रव्यदान जाणवुं. तथा शब्दनयने मतें जीव अजीवरूप षट्द्रव्य नवतत्त्वनुं जाणपणुं तथा पोताना जीवने अने शिष्यने प्रतीति कराववीने समकेतरूप रत्ननुं दान देवुं, ते सर्व जावदान जाणवुं.

३०७ लाज उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे:—प्रथम लाज एवुं नाम, ते नाम लाज, बीजो लाज एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनालाज त्रीजो संग्रहनयने मतें जीवने सत्ताये लाजरूप दक्षीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते द्रव्यलाज जाणवो. चोथो ऋजुसूत्र अने व्यवहार नयने मतें ते दक्षीयां उदयरूप जावें प्रगट्यां, तेवारें धन, धान्य, राज, ऋद्धि, पुत्र, क

लाज, परिवार, द्विपद, चतुष्पदरूप एम अनेक प्रकारें वस्तुनो लाज था य, ते सर्व जावथी लाज जाणवो.

३७७ वली प्रकारातरें लाज उपर चार निक्षेपा कहे ठे:— प्रथम लाज एवुं नाम, ते नामलाज, बीजो लाज एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनालाज, त्रीजो जे सांसारिक वस्तुनो लाज ते उदयजावने योगें करी इंद्रियरूप सुखनां कारण मळे, ते सर्व द्रव्यलाज जाणवो. चोथो जे संसारमां जमता जीवने अनंत पुज्जल परावर्तमान थयां, तेमां सर्व वस्तुनो लाज पाम्यो, परंतु ज्यां सुधी एक समकेतरूप रत्ननो लाज पा म्यो नथी, त्यां सुधी सर्व लाज व्यर्थ जाणवा, माटे जे समकेतरूप रत्न नो लाज पामवो, ते जावलाज जाणवो.

३७८ जावमां चार निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम जाव एवुं नाम ते नामजाव, बीजो जाव एवा अक्षर लखीने स्थापवा, ते स्थापनाजाव, त्रीजो जे ऋजु सूत्रनयने मत्तें दान, शील, तप, विनय, वैय्यावच्चरूप जे जीवना परिणा मनुं तद्धीनपणुं ते शुजजाव जाणवो. अने क्रोध, मान, माया, लोभ, विष य, कषाय, निद्रा, विकथारूप जीवना परिणामनुं तद्धीनपणुं ते अशुजजाव जाणवो. ए रीतें शुजाशुजजाव ते द्रव्यथकी जाव जाणवो. तथा वली चोथो शब्द अने समजिरूढनयने मत्तें स्वसता परसत्तारूप स्वजाव परजा वनी वेंचणरूप प्रतीति करी, अजीवरूप परजावने त्यागे, अने जीव स्वरूप पना ध्यानमां रहेवुं, ते शुजजाव जाणवो. ए चोथो जावथकी जाव ठे.

३७९ रूपमां निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम रूप एवुं नाम, ते नामरूप. बीजुं रूप एवा अक्षर लखीने स्थापवा, अथवा रूपवंत मूर्ति स्थापवी, ते स्था पना रूप, त्रीजुं संग्रह नयने मत्तें जीवें सत्तायें रूपनां दल्लीयां प्रकृति रूप सत्तापणें लीधां ठे, ते द्रव्यरूप जाणवुं. चोथुं ते दल्लीयां व्यवहार नयने मत्तें उदयरूप जावें प्रगट्यां, एटले चार गतिमां जीव, काळे, धोळे, राते, नीळे, पीळे रूपें करी अनेक प्रकारें शोजा पामे, ते जावथकी रूप जाणवुं.

३८० तथा वली प्रकारांतरें रूपना चार निक्षेपा कहे ठे:—प्रथम रूप एवुं नाम, ते नामरूप, बीजुं रूप एवा अक्षर लखवा अथवा रूपवंत मूर्ति स्था पवी, ते स्थापनारूप, त्रीजुं रूपवंत पुरुष जे मंरुखिकराजा, बलदेव, वासु देव, चक्रवर्ती, देवता, इंद्र, गणधर तथा तीर्थकरनां रूप, ते सर्वे द्रव्यथी

रूप जाणवां. चोथो शब्दनयने मत्तें जीव, शुजाशुज विजावरूप अशुद्धता थकी रहित शुद्धनिश्चयनयने मत्तें अंतर्दृष्टियें करी एक पोताना आत्मा नुं रूप जीवुं प्रतीति करवी, ते जावरूप जाणवुं.

३६३ अनुजव उपर चार निक्षेपा लगाडे ठेः—प्रथम अनुजव एवुं नाम ते नामथकी अनुजव जाणवो. बीजो अनुजव एवा अक्षर लखीने स्थाप वा, ते स्थापना अनुजव जाणवो. त्रीजो ऋजुसूत्रनयने मते जीवने शुजा शुजरूप परिणाम, तेमां शुजअनुजवरूप परिणाम ते सेवा, स्तुति, जक्ति, पूजा, पडिक्कमणुं, सामाधिक, पोसहरूप व्रत उच्चरी शुजपरिणामें तल्लीन मननुं एकाग्रपणुं ते शुज अनुजव जाणवो. अने अशुज अनुजव ते विषय, कषाय, निद्रा, विकथारूप प्रमादनेविषे जीवना अशुज परिणामें तल्लीन पणुं मननुं एकाग्रपणुं ते अशुज अनुजव जाणवो. ए रीतें शुजाशुज परि णामने विषे जीवने तल्लीनपणुं ते त्रीजो ड्रव्यअनुजव जाणवो. तथा चोथो जे शब्द अने समजिरूढ नयने मत्तें शुद्ध निश्चयनयें आत्मस्वरूपनी प्रतीति करी, एकाग्रचित्तें तल्लीनपणे मन, वचन, कायाना योग रुंधी पो ताना स्वरूपमां रमवुं, ते जाव अनुजव जाणवो.

३६३ मनुष्यगति आश्रयी चार निक्षेपा उतारे ठेः—एक तो पुरुष एवुं नाम, ते नामथकी पुरुष जाणवो. बीजो पुरुष एवा अक्षर लखीने स्थाप वा, अथवा परुषरूपें मनुष्यनी मूर्ति चित्रीने स्थापवी, ते स्थापनापुरुष जाणवो. त्रीजो संग्रहनयने मत्तें जीवें सत्तायें पुरुषवेदनां दळीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, ते ड्रव्यपुरुष जाणवो. चोथो ते दळीयांनो उदय थयो, एटळे उदयजावरूप व्यवहार नयने मत्तें करी जावथकी पुरुष जाणवो.

३६४ वली प्रकारांतरें पुरुष उपर चार निक्षेपा कहे ठेः—प्रथम पुरुष एवुं नाम, ते नामपुरुष, बीजो पुरुष एवा अक्षर लखीने स्थापवा अथ वा पुरुष एवी मूर्ति स्थापवी, ते स्थापना पुरुष, त्रीजो उदयजावरूप व्यव हार नयने मत्तें पुरुषपणानां दळीयां जोगवे ठे, ते ड्रव्यपुरुष जाणवो. चोथो ऋजुसूत्रनयने मत्तें जडिकपणुं सरल स्वजावें दया, यत्ना, करुणा, विनीतपणुं, सेवा जक्तिरूप करणी करे ठे, ते जीव, जावपुरुष कहियें.

३६५ मनुष्यरूप स्त्रीमां चार निक्षेपा लगाडे ठेः—प्रथम स्त्री एवुं नाम ते नामस्त्री जाणवी, बीजो स्त्री एवा अक्षर लखी स्थापवा, अथवा स्त्रीरूपें मू

र्ति चित्रीने स्थापवी, ते स्थापनास्त्री, त्रीजो संग्रहनयने मते जीवे सत्ताये स्त्रीवेदनां दलीयां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां ठे, तेने ड्रव्यस्त्री कहीये. चोथो ते दलीयांनो उदय थयो, एटले उदयज्ञावरूप व्यवहार नयने मते करी जावस्त्री जाणवी.

३१६ वली प्रकारांतरें स्त्री उपरें चार निक्षेपा कहे ठे. प्रथम स्त्री एवुं नाम, ते नामस्त्री जाणवी, वीजुं स्त्री एवा अक्षर लखवा अथवा मूर्ति चि त्रीने स्थापवी, ते स्थापनास्त्री जाणवी. त्रीजो उदयज्ञावने योगें स्त्रीपणा नों जव पामी व्यवहार नयने मते स्त्रीपणानां दलीयां जोगवे, तेने ड्रव्य स्त्री कहीये, अने चोथो मायारूप कूड कपट ठल जेल “ मुखेमिष्टा, हृदये दुष्टा, ” ए रीतें ऋग्विद्यारूप जे जीवना वरिणाम वर्ते, ते जीव, जावस्त्रीरूप जाणवो. ए रीतें चार गतिमां निक्षेपानुं स्वरूप जाणवुं.

हवे जीव अजीवरूप षट् ड्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप चार जांगे करी उं लखावे ठे, तिहां प्रथम जेनी आदि नथी अने अंत एटले ठेडो पण नथी, ते निश्चयनयने मते अनादि अनंत नामें प्रथमजांगो जाणवो. तथा वीजो जेनी आदि नथी, पण अंत ठे, ते व्यवहारनयने मते अनादि सांत नामें बीजो जांगो जाणवो, तथा त्रीजो जेनी आदि ठे अने अंत पण ठे, ते व्यवहार नयने मते सादिसांत नामें त्रीजो जांगो जाणवो. तथा चोथीजेनी आदि ठे पण अंत नथी ते निश्चयनयने मते आदि अनंत नामे चोथो जांगो जाणवो, चार जांगे करी प्रथम षट् ड्रव्यनुं स्वरूप उंलखावे ठे. ४०० तिहां प्रथम जीव ड्रव्यमां चार जांगा लगावे ठे:-तिहां जीवमां जे ज्ञानादिक गुण ठे, तेनी आदि नथी, अने अंत पण नथी, माटे निश्चयनयने मते अनादि अनंत नामे प्रथम जांगो जाणवो. तथा जव्य जीवने कर्म सा थें तथा शरीरनी साथें अनादिनो संबंध ठे ते संबंधनो जेवारें सिद्धि वरशे तेवारें अंत आवशे माटे व्यवहार नयने मते ए अनादिसांत नामें बीजो जांगो जाणवो. तथा जे जीव, देवता, नारकी, तिर्यच अने मनुष्यरूप ना ना जव करी चववुं उपजवुं करे ठे, एटले ते ते जवनी आदि पण थाय ठे, अने अंत पण थाय ठे, माटे व्यवहार नयने मते ए सादिसांत नामें त्रीजो जांगो जाणवो. तथा जे जीव, कर्म खपावी मोक्षें गया, तिहां मोक्ष

मां सिद्धपणे करी तेनी आदि ठे, पण ते जीवोने वली पाबुं जरीने संसार मां आवुं नथी, माटे निश्चयनयने मत्तें ए सादि अनंत नामें चोथो जांगो ठे,

४०४ अजीवनुं स्वरूप चार जांगे करी उलखावे ठे:- तिहां प्रथम धर्मास्तिकायमां गुण चार, अने पर्यायमां खंधपणुं. ते निश्चयनयने मत्तें अनादि अनंत नामे पहेले जांगे ठे, एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी तथा अनादि सांतनामें बीजो जांगो धर्मास्तिकायमां लागतो नथी, तथा धर्मास्तिकायना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु ते व्यवहारनयने मत्तें सादि सांत नामें बीजे जांगे जाणवा, तथा सिद्धना जीवें जे धर्मास्तिकायना प्रदेश फरस्या ठे ते प्रदेश मूकीने बीजे प्रदेशें सिद्धना जीवने जवुं नथी माटे ते निश्चयनयने मत्तें सादि अनंत नामे चोथो जांगो जाणवो, केम के जे सिद्धनो जीव मोक्षे पहेले, ते बखत धर्मास्तिकायना प्रदेशने फरसे, माटे तेनी आदि ठे, परंतु पठी ते प्रदेशाथकी बीजे प्रदेशें जाय नथी, माटे अंत नथी, ए धर्मास्तिकायमां चोजंगी कही, तेज रीतें अधर्मास्तिकायमां पण चोजंगी ठे,

४०८ आकाशास्तिकायमां चोजंगी कहे ठे. आकाशास्तिकायमां गुण चार, अने पर्यायमां खंधपणुं ते निश्चयनयने मत्तें अनादि अनंत पहेले जांगे जाणवुं, एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी, तथा अनादि सांत नामें बीजो जांगो आकाशास्तिकायमां लागतो नथी, तथा आकाशास्तिकायना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ते व्यवहारनयने मत्तें सादिसांत नामें बीजे जांगे जाणवा, एटले तेनी आदि ठे, अने ठेडो पण ठे तथा जे सिद्धना जीव, मोक्षे गया ठे, ते आकाशास्तिकायना जे प्रदेश फरशीने लोकने अंतें रह्या ठे, ते प्रदेश मूकीने बीजे प्रदेशें जाता नथी, माटे निश्चयनयने मत्तें ए सादि अनंत नामें चोथो जांगो जाणवो.

४१२ पुजलास्तिकायमां चार जांगा लगावे ठे. पुजलमां गुण चार ठे, ते तो निश्चयनयने मत्तें अनादि अनंत नामें पहेले जांगे जाणवा. एटले तेनी आदि नथी अने अंत पण नथी, तथा जीव पुजलनो संबंध, जव्यजीवने तो व्यवहारनयने मत्तें अनादिसांत नामें बीजे जांगे जाणवो केमके जव्यजीव केवारेंक कर्मरूप पुजलने ठांकीने मोक्षे जाशे, तथा अजव्य जीवने पुजल साथें संबंध अनादिअनंतनामें पहेले जांगे ठे, ए संततिपणे जाणवो. केवारें टलशे नहीं माजे अजव्य जीवने कर्मरूप पुजलसाथें संबंध ते निश्च

यनयने मत्तें संततिपण्णे जाणवो, तथा पुज्जल खंध सादि सांत ठे, केम के जे बंधाय ठे, ते स्थितिप्रमाणें रही वली पाठा विखरे ठे, वली नवा खंध थाय ठे, माटे पुज्जलना खंध ते व्यवहार नयने मत्तें सादि सांत नामें त्रीजे जांगे जाणवा अने चोथो सादि अनंत नामें जांगो पुज्जलमां लाजतो नथी,

४१६ कालद्रव्यमां चार जांगा लगावे ठे. तिहां कालद्रव्यमां गुण चार तो निश्चयनयने मत्तें अनादि अनंत नामें पहेले जांगे जाणवा अने पर्यायमां अतीतकाल तो अनादि सांत नामें बीजे जांगे ठे. तथा वर्त्तमानकाल, सादि सांत नामें त्रीजे जांगे ठे, तथा अनागतकाल ते सादि अनंत नामें चोथे जांगे ठे, ए कालनुं स्वरूप, ते सर्व उपचारमात्र ठे, ए रीतें एठ द्रव्यनुं स्वरूप चार जांगे करी उलखवुं. इहां षट्द्रव्यमां नव तत्त्वमांहेला जीव अने अजीव, ए बे तत्त्व उपर चार जांगा लगाव्या.

४१७ पुण्य तत्त्वमां चार जांगा लगावे ठे. तिहां अजव्य जीव आश्रयी पुण्यमां अनादि अनंत नामें पहेलो जांगो जाणवो, केम के अजव्य जीवने पुण्यनी साथे संबंध अनादि अनंत जांगे ठे. कारण के अजव्य जीव पुण्यनां दलीयां क्षय करीने केवारें पण सिद्धि वरशे नहीं माटे अनादि अनंत संबंध जाणवो. तथा जव्य जीवने पुण्यनी साथे संबंध अनादि सांत नामें बीजे जांगे ठे, केम के व्यवहार राशियां जव्य जीव, स्थितिपाकें एक दिवस, पुण्यनां दलीयां ठोडी सिद्धि वरशे, तेवारें ठेहेडो आवशे, माटे अनादि सांत बीजो जांगो जाणवो. तथा जीव, पुण्यनां दलीयां समय समय अनंतां लीये ठे अने समय समय अनंतां खेरवे ठे, ते सादिसांत त्रीजे जांगे जाणवां. तथा सादि अनंत नामें चोथो जांगो पुण्यमां लागतो नथी.

४१४ पाप तत्त्वमां चार जांगा लगावे ठे. प्रथम पापमां अनादि अनंत नामें पहेलो जांगो अजव्य जीव आश्रयी जाणवो. केम के अजव्य जीव, पापनां दलीयां ठोडी केवारें सिद्धि वरशे नहीं माटे अजव्य जीवने पापनी साथे संबंध ते अनादि अनंत पहेले जांगे जाणवो. तथा जव्य जीवने पापनी साथे संबंध अनादि सांत नामें बीजे जांगे जाणवो, केम के व्यवहार राशि जव्य जीव, स्थितिपाकें एक दिवस पापनां दलीयां ठोडी सिद्धि वरशे, तेवारें पापनो ठेहेडो आवशे माटे अनादि सांत बीजो जांगो जाणवो तथा जे जीव समय समय पापनां अनंतां दलीयां लीये ठे अने समय समय

अनन्तां खेरवे ठे, ते आश्रयी सादि सांत नामें त्रीजो चांगो जाणवो. तथा सादि अनन्त चोथो चांगो पापमां लागतो नथी.

४१७ आश्रवमां चार चांगा लगावे ठे. आश्रवने अज्ञव्य जीव साथें संबंध ते अनादि अनन्त पहेले चांगे जाणवो. केम के अज्ञव्य जीवने शुचाशु च आश्रवनुं आववुं केवारें मटशे नहीं, तथा आश्रवने ज्ञव्य जीवनी साथें संबंध ते अनादिसांत बीजे चांगे जाणवो. एटले व्यवहारराशि ज्ञव्य जीवने आश्रवनां अनन्तां दलीयां समय समय आवे ठे, ते एक दिवसें यथा ख्यातरूप संवरजावें करी आश्रवनुं आववुं रुंधशे माटे अनादिसांत बीजो चांगो जाणवो. तथा जे जीव, आश्रवनां दलीयां समय समय अनन्तां लीये ठे अने समय समय अनन्तां खेरवे ठे, ते सादिसांत त्रीजो चांगो जाणवो. तथा अनादि अनन्त चोथो चांगो आश्रवमां लागतो नथी.

४३३ संवरनुं स्वरूप चार चांगे करी उलखावे ठे. प्रथम सर्व सिद्धना जीव आश्रयी संवरजाव जोतां तो अनादि अनन्त पहेले चांगे जाणवो. एटले सिद्धना जीव, सदा संवरजावमां रह्या वत्ते ठे, तेनी आदि पण नथी जने अंतपण नथी तथा अनादिसांत नामें बीजो चांगो संवरमां लागतो नथी तथा क्षयोपशम जावआश्रयी जे जीव, संवरजावें वत्ते ठे, ते सादि सांत त्रीजो चांगो जाणवो क्षायिक जावआश्रयी जे जीवने संवरगुण प्रगथ्यो ठे, ते सादिअनन्त चोथो चांगो जाणवो.

४३६ निर्झरानुं स्वरूप चार चांगे करी देखाडे ठे, प्रथम अज्ञव्य जीव आश्रयी अकाम निर्झरा तो अनादि अनन्त पहेले चांगे जाणवी. केम के अज्ञव्य जीव सदा काल अकाम निर्झरा करतांज फिरशे, पण सकाम निर्झरा अज्ञव्यने कोइ वारें उदय आवशे नहीं, माटे अनादि अनन्त पहेलो चांगो जाणवो. तथा अनादिसांत बीजो चांगो व्यवहारराशिया ज्ञव्यजीव आश्रयी जाणवो, केम के ज्ञव्यजीव अकामनिर्झरा अनादि कालनी करे ठे, परं तु जेवारें समकेत गुणरूप धर्मध्यानमां आवशे, तेवारें अकामनिर्झराने ढोडशे, माटे अनादिसांत बीजो चांगो जाणवो, ए बे चांगा अकामनिर्झरामां लगाव्या, पण ते सर्व व्यर्थ जाणवा. तथा सादि सांत त्रीजो चांगोते समकेती जीव आश्रयी चोथा गुणगणणी मांन्दीने यावत् तेरमे चौदमे गुण

ठाणे केवलीपर्यंत सर्वे जीवने सकाम निर्झरा जाणवी, ते सकामनिर्झरा सा दि सांत जांगे ठे, तथा सादि अनंत चोथो जांगो निर्झरामां लागतो नथी.

४४० बंधतत्त्वनुं स्वरूप चार जांगे करी उलखावे ठे. प्रथम अनादि अनंत पहेलो जांगो बंधमां अज्ञव्य जीव आश्रयी जाणवो. केम के अज्ञव्य जीवने ज्ञानावरणी प्रमुख कर्मनां दलीयां सत्तामां रह्यां ठे, ते कोई दिवसें बूटशे नहीं ते आश्रयी अनादि अनंत पहेलो जांगो जाणवो. तथा अज्ञव्य जीवने कर्मरूप दलीयां सत्तायें बांध्यां ठे, ते जे वारें सिद्धि वरशे तेयारें सर्व बूटशे, ते आश्रयी अनादिसांत बीजो जांगो जाणवो. तथा जे जीव कर्मरूप दलीयां बांधे ठे अने वली पाठा स्थितिपाकें ठोडे ठे, ते जीवआश्रयी सादिसांत त्रीजो जांगो जाणवो. तथा सादिअनंत चोथो जांगो बंधतत्त्वमां लागतो नथी.

४४४ मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप चार जांगे करी उलखावे ठे. प्रथम सर्व सिद्धिआश्रयी अनादि अनंत पहेलो जांगो जाणवो. केम के सिद्धि वक्ष्या तेनी आदि पण नथी अने अमुक दिवसें सिद्धि वरी रहेशे, हवे कोई सिद्धि वरशेज नही एवो अंत पण नथी माटे. तथा अनादि सांत नामें बीजो जांगो सिद्धिमां लागतो नथी तथा सिद्धना अनंता गुणने विषे पर्यायनी हानिवृद्धिरूप उपजवुं विणसवुं समय समय थइ रहुं ठे ते सादिसांत त्रीजो जांगो जाणवो. तथा श्रीकृष्णादि एवुं नाम खेतां एक सिद्ध आश्रयी सादिअनंत चोथो जांगो जाणवो. ए रीतें षट्कव्य नव तत्व स्वरूप, चार जांगे करी जाणवुं.

४४८ निगोदीया जीव आश्रयी चार जांगा कहे ठे:-प्रथम अनादि अनंत पहेले जांगे निगोदमां अनंता जीव रह्या ठे, केम के ते जीव, कोई काळें निगोदमांथी निकलवा पामशेज नही माटे ते आश्रयी अनादि अनंत पहेलो जांगो जाणवो. तथा जे जीव, निगोदमांथी निकली निकलीने सिद्धि वरे ठे पण फरी पाठा निगोदमां जाता नथी ते जीव आश्रयी अनादि सांत बीजो जांगो जाणवो. तथा जे जीव, निगोदमांथी निकली फरी पाठा निगोदमां जइ पडे ठे, वली पाठा निकले ठे, ते जीवआश्रयी सादि सांत त्रीजो जांगो जाणवो. तथा सादि अनंत चोथो जांगो निगोदमां लागतो नथी.

४५५ देवलोकना जीव उपर चार जांगा लगाडे ठे, प्रथम देव गति आ अथी जोतां तो अनादि अनंत पहेलो जांगो जाणवो. केम के देवगतिनी आदि पण नथी अने अंत पण नथी, तथा अनादि सांत नामे बीजो जांगो देवगतिमां लागतो नथी अने देवगतिमां जीव, समय समय असं ख्याता चवे ठे अने असंख्याता उपजे ठे माटे ते सादि सांत त्रीजो जांगो जाणवो तथा सादि अनंत नामें चोथो जांगो देवगतिमां लागे नहीं. एवी रीतें मनुष्यादि चारे गतिमां जांगा जाणवा.

४५६ शाश्वती अशाश्वती वस्तुमां चार जांगा लगाडे ठे. एटले शाश्वती वस्तु सर्वे अनादि अनंत पहेले जांगे जाणवी अने अनादि सांत बीजो जांगो शाश्वती वस्तुमां लागतो नथी तथा त्रीजो शाश्वतो वस्तुमां पुजल परमाणुआ समय समय अनंता पेसे ठे अने निकले ठे, माटे सादिसांत त्रीजो जांगो जाणवो अने अशाश्वती वस्तु पण सर्वे सादिसांत त्रीजे जांगे जाणवी, केम के अशाश्वती वस्तु नीपनी तेनी आदि ठे अने वली क्य थाशे तेवारें अंत पण आवशे तथा सादि अनंत चोथो जांगो एमां लागतो नथी. ए रीतें सर्वे वस्तुनुं चार जांगे करी प्रमाण करतुं.

४५७ हवे ठ ड्रव्यना परस्पर संबंधनी चोत्रंगी कहे ठे:—तेमां प्रथम आ काश ड्रव्य ठे, ते लोकालोकव्यापि ठे अने शेष पांच ड्रव्य तो लोकव्यापि जाणवां, तेमां वली लोकमां एक आकाशड्रव्य, बीजुं धर्मास्तिकाय ड्रव्य, त्रीजुं अधर्मास्तिकायड्रव्य, ए त्रणे ड्रव्यनो एकेक प्रदेश जेखो रह्यो ठे, ते पण कोइ कालें विठडशे नहीं माटे ए निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेलो जांगे संबंध जाणवो. तथा लोकमां आकाशरूप क्षेत्रनी साथें सर्वजीवड्रव्यने संबंध, ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत ठे, तथा संसारी जीव, कर्म सहितने आकाशप्रदेशनी साथें संबंध ते सादिसांत ठे, कारण के संसारी जीवें जेटला आकाशड्रव्यना प्रदेश ठे, ते एकेक जीवें सर्वे फरश्या ठे अने वली फरसशे माटे व्यवहारनयने मतें सादिसांत संबंध जाणवो. तथा लोकाकाश अने पुजलने मांहोमांहे संबंध ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेले जांगे जाणवो. तथा आकाशप्रदेशनी साथें पुजलपरमाणुआने संबंध ते व्यवहारनयने मतें सादिसांत त्रीजे जांगे ठे, कारण के एक पुजल परमाणु ते सर्वे आकाश प्रदेशने फरश्या ठे अने वली फरसशे माटे सादिसांत

संबंध कहियें. ए रीतें आकाशद्रव्यनी पेरें धर्मास्तिकाय तथा अधर्मास्ति कायनो पण मांहोमांहे संबंध जाणवो.

हवे जीवपुजलनो संबंध कहे ठे:- अज्ञव्यजीवने पुजलनी साथें संबंध, ते निश्चयनयने मतें अनादि अनंत पहेले जांगे ठे, केम के अज्ञव्य जीव नां कर्म, केवारें पण खपशे नही, अने ज्ञव्यजीवने कर्मरूप पुजलनी साथें संबंध ते अनादिनो ठे, पण कारण सामग्री मले, त्यारें केवारेंक बूटशे, माटे व्यवहारनयने मतें अनादि सांत जाणवो अने निश्चयनयने मतें करी ठए द्रव्य स्वजावरूप परिणामें करीने परिणामी ठे, माटे परिणामिपणुं सदा शाश्वतुं ठे, तेशी अनादि अनंत जाणवो. तथा जीव अने पुजल, ए वे द्रव्य मली खंधजाव पामे ठे, तेषें करी पारिणामिक जाणवा. ते पारिणामिक पणुं अज्ञव्यजीवने निश्चयनयने मतें अनादि अनंत ठे अने ज्ञव्यजीवने व्यवहारनयने मतें अनादि सांत ठे, वली पुजलद्रव्यनुं पारिणामिकपणुं तो निश्चयनयें करी अनादि अनंत ठे अने पुजलपरमाणुआनुं मलबुं, बिखरबुं, ते व्यवहारनयने मतें सादिसांत ठे, एटले जीव, पुजल साथें मख्यां सक्रिय ठे.

हवे श्रीसम्मतिसूत्रमां कळुं ठे जे पांच समवाय मलवाथी सर्व कार्य नीपजे ठे, तेनी व्याख्या करीयें ठैयें ॥ गाथा ॥ कालो सहाव नियई, पुव कयं पुरिस कारणे पंच ॥ समवाए सम्मत्तं, एगंते होइ मिष्ठनं ॥१॥ अर्थ:- काल, स्वजाव, नियति केतां जावि, कर्म अने उद्यम, ए पांच समवायांग माने, ते समकेती जाणवा अने ए मांहेलो एक समवाय उहापे, ते मिथ्यात्वी जाणवो, ए सम्मतिसूत्रनुं वचन ठे. एवुं सांजली ए पांच समवाय आश्रयी शिष्य पूढे ठे.

४८१ शिष्य:- जीव, समकेत केवारें पामशे ?

गुरु:- जेवारें काललब्धि पाकशे, तेवारें जीव समकेत पामशे, पण काल पाक्या बिना कोइ जीव, समकेत पामे नहीं, केम के काल सर्वनुं कारण ठे जे कालें जे कार्य होणार होवे, ते कालें ते वेलायें ते कार्य थाय.

४८२ शिष्य:- अज्ञव्यजीवने तो कालघणोगयो, पण ते समकेत केमनथी पामता ?

गुरु:- अज्ञव्यसांज्ञव्यस्वजावनथी, जेने ज्ञव्यस्वजाव होय, ते जीव समकेत पामे.

४८३ शिष्य:- ज्ञव्यजीव सर्वें समकेत पामशे ?

गुरुः—सर्व जीव समकेत नहीं पामशे जेने जावि कारणरूप देव, गुरु, धर्मनी जोगवाइ मलशे, ते जीव, समकेत पामशे बीजा नहीं पामे.

४८४ शिष्यः—जावि देव, गुरु, धर्मरूप कारणनी जोगवाइ तो घणा जीवने मली ठे ते केम समकेत नहीं पामता ?

गुरुः—देव, गुरु, धर्मरूप कारणनी जोगवाइ तो मली, पण ते जीव उद्यम नहीं करता परंतु जो उद्यम करे, तो समकेत पामे.

४८५ शिष्यः—बखाण सांचले ठे, पञ्चस्काण करे ठे, यात्रा, दर्शन, पूजा, चक्रि आदि उद्यम तो घणा जीव करे ठे, तो पण केम समकेत पामता नहीं ?

गुरुः—ते जीवने पूर्वकृत कर्म घणां ठे, एटले सात कर्मनी बशे ने त्रीश कोडाकोडी सागरोपमरूप स्थिति ठे, ते विवर आपे, तो जीव समकेत पामे.

४८६ शिष्यः—यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणामें करी, जीवें बशेने त्रेवीश कोडाकोडी सागरोपमरूप कर्मनी स्थिति खपावी, एटले कर्म तो विवर दीधुं तो पण हजी केम समकेत नहीं पामता ?

गुरुः—हजी तेउनो उद्यम काचो ठे, परंतु अपूर्वकरणना परिणामरूप उद्यम करशे, तेवारें जीव, समकेत पामशे एटले ए पूर्वोक्त पांच समवाय चले, तेवारें समकेतरूप कार्य नीपजे.

४८७ शिष्यः—मोक्षरूपकार्य जीवने केम सिद्ध जाय ?

गुरुः—जेवारें काललब्धि पाकशे, तेवारें जीवने मोक्षरूप कार्य नीपजशे, पण काल पाक्या विना कोइ जीव, मोक्षें जाय नहीं. एटले काल सर्वनुं कारण ठे, जे कालें जे कार्य होणार होवे, ते कालें ते कार्य ते वेलायें नीपजे.

४८८ शिष्यः—अज्ञव्यजीवनेतोकालघणोगयोतोकेममोक्षरूपकार्यसिद्धथयुंन

गुरुः—अज्ञव्यमांस्वजाव नहीं ज्ञव्यस्वजाव होय तो सिद्धरूप कार्य निपजे.

४८९ शिष्यः—तो ज्ञव्यजीव सर्वें मोक्षें केम जाय नहीं ?

गुरुः—निश्चय समकेत गुणरूप कारण मल्या विना कोइ जीव, मोक्षपामे नहीं.

४९० शिष्यः—नियतिनिश्चय एटले जावि समकेतरूप कारण तो श्रेणि कादिक पाम्या हता तो पण तेने मोक्षरूप कार्य केम न थयुं ?

गुरुः—तेनेपूर्वकृतकर्म घणां हतां अथवा पुरुषाकार उद्यम न कस्यो.

४९१ शिष्यः—उद्यम तो शालिजड प्रमुखें घणो कस्यो, पण मोक्षरूप कार्य तो न नीपनुं ?

गुरुः—एने पूर्वकृतकर्म घणां हतां तेणें रोक्री राख्या.

४९९ शिष्यः—कर्म तो प्रसन्नचंद्रराजर्षियें सातमी नरकनां दळीयां मेलव्यां हतां, तो तेने मोक्षरूप कार्य केम नीपन्थुं ?

गुरुः—एणें शुक्लध्यानरूप श्रेणिनो उद्यम घणो कीधो, माटे पांचे कारण मळे, सर्व कार्य नीपजे ठे, एमां जे कोइ एक कारण उढापे, ते मिथ्यादृष्टि जा णवा अने पांचे समवाय मलवाची कार्य माने, ते समकेतदृष्टि जीव जाणवा.

४९७ समकेतनुं स्वरूप, षट् कारकें करी देखाडे ठे. तिहां प्रथम षट् कारकनां नाम कहे ठेः—१ कर्ता, २ करण, ३ कार्य, ४ संप्रदान, ५ अपादान, ६ आधार, ७ षट् कारकनां नाम जाणवां. तिहां प्रथम कर्ता ते जीव, बीजुं करण ते देवगुरु धर्म, त्रीजुं कार्य ते जीवने समकेतरूप कार्य करवुं ठे, चोथुं जे आत्मप्रदेशें जीवने निर्मलता संपजती जाय, ते संप्रदान, पांचमुं कर्मरूप आवरण टलतुं जाय, ते अपादान, षठ् एठ् समकेतरूप कार्यमां चढ्यां आधारचूत जाणवां, माटे षठ् आधारनामा कारक जाणवुं

५०४ मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप, ७ षट्कारक मळे निपजे, ते कहे ठे. तिहां प्रथम कर्ता ते जीव जाणवो अने बीजुं कारण ते जीवने समकेतरूप मळे, तेवारें त्रीजुं मोक्षरूप कार्य नीपजे, तथा चोथुं संप्रदान ते गुणश्रेणिरूप निर्मलता जीवने संपजती जाय अने पांचमुं अपादान ते कर्मरूप आवरण टलतां जाय अने षठ् आधार, ते ७ ठ् मोक्षरूपकार्यमां मढ्यां आधाररूप जाणवां. एणी रीतें षट्कारकरूप चक्र करी मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप जे प्राणी जाणें, ते प्राणी गण्या दिवसमां परमानंदपद पामे.

५१३ श्रीजिनमार्गमध्यें नव प्रकारनां नियाणां करवां निषेध्यां ठे, तेनो विचार खखीयें ठेयें. प्रथम कोइ जीव, एवुं चिंतवे जे बीजे चवें मनें राज्यनी प्राप्ति होजो एवी जे श्छा ते पद्देवुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एवुं चिंतवे केराज्यमांतो महेनत घणी माटे तेथी सखुं पण मुजने कृद्धिमंत गृहस्थपणानी प्राप्ति होजो ? एवी जे श्छा ते बीजुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एम चिंतवे ते पुरुषने तो कमाववा धमाववारूप घणुं कष्ट पडे ठे, माटे महारे स्त्रीपणानी प्राप्ति होजो ? एवी वांढा, ते त्रीजुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एम चिंतवे जे स्त्रीने तो परवशपणा प्रमुख महा कष्ट ठे, माटे हुं पुरुष होजो ? एवी श्छा, ते चोथुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एम चिंतवे जे मनुष्य संबंधि

विषयज्ञो तो घणा अशुचि ठे माटे महारे बहुरत्ता देवतापणुं प्राप्त होजो ? एवी इहा, ते पांचमुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ देवता अने (अन्य के०) वीजो कोइ देवता ते मांहोमांहे देव देवीनां रूप विकूर्वीने जोग जोगव्यानी तथा कोइ देवता पोतेंज देव देवीरूप विकूर्वीने जोगव्यानी वांठा ते बहुरत्ता देव कह्ये, एवी वांठारूप परिणाम एटले एवुं सामर्थ्य हुं पामुं ? एवी इहा ते ठहुं नियाणुं जाणवुं. ए ठ नियाणांना करवावाला जीव परजवें दुर्लजबोधी थाय. एटले तेने बोधवीजरूप समकेतनी प्राप्ति न थाय, वली कोइ जीव एवुं चितवे के जे देवताठने संजोग नथी, ते देवोने अरत्ता देव कह्ये. ते अरत्तादेव थवानी वांठा ते सातमुं नियाणुं जाणवुं, वली कोइ एक जीव, एम चितवे ठे मुजने साधुने पडिलाजण वाळुं रूडुं श्रावकपणुं प्राप्त थाजो, एटले हुं घणा साधु, साधवीने आहार पाणी प्रमुख वहोरावुं ? एवी इहा करवी, ते आठमुं नियाणुं जाणवुं. वली कोइ एवुं चितवे जे मुजने दारिद्री श्रावकपणानी प्राप्ति होजो, के जेथकी मुजने चारित्रनी प्राप्ति तरत उदय आवे, एवी प्रार्थना करवी, ते नवमुं नियाणुं जाणवुं. ए पाठलां त्रण नियणांनुं फल, अनुक्रमें पूर्वले जवें समकेत, देशविरति अने सर्वविरतिनुं दायक ठे, पण मोक्षनुं दायक नथी. ए सर्व अर्थ, पांखीसूत्रनी टीकामध्यें ठे. तथा बृहत्कल्पवृत्तिमां एम कछुं ठे जे तीर्थकरपणुं तथा चरमशरीरीपणुं प्रमुख पण साधुने प्रार्थवुं युक्त नथी, अपवादें पण ए नियाणुं साधुने नहीं करवुं. तथा आवश्यकवृत्तिमां ध्यानशतकने अधिकारें कछुं ठे, जे सर्व कर्मना क्षयथकी मुजने मोक्ष होजो ? ए पण नियाणुंज ठे, एने पण निश्चयनयथी निषेधुं ठे, परंतु जावनामां जे जीव काचा ठे, तेने आश्रयी व्यवहारनयें निर्दोष ठे. एम योगशास्त्रवृत्तिमां पण कछुं ठे. अने 'जयवीथराय' इत्यादिक प्रणिधान ठे, ते ठहा गुणगणाथी उपर न करवुं. इत्यादि, वली एवो विस्तारें अधिकार, पूजापंचाशकवृत्तिमां ठे. सर्व थईने प्रश्न ५१३ थया.

हवे श्री नवपदजीनी पूजा खरतरगढमां थयेला देवचंदजीकृत ठे, तेमां कछुं ठे ॥ गाथा ॥ इम नव पद गुण मंरुली, चडनिकेप प्रमाणो जी ॥ सात नयें जे आदरे, सम्यग् ज्ञानी जाणो जी ॥ १ ॥ अर्थः—श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूपते नैगमादिक सात नयें करी जाणवुं. तथा

नामादिक चार निक्षेपे करी जाणवुं. तथा प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए वे प्रमाणें करी जाणवुं. तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी चोचंगीयें करी जाणवुं, तथा चौद गुणवाणे करी जाणवुं, तथा गुणें करी जाणवुं. तथा नव तत्त्वे करी जाणवुं तथा गुणिगुणें करी जाणवुं तथा पंचवर्णें करी जाणवुं तथा देव, गुरु, धर्मनी उलखाणें करी जाणवुं. ए दश जांगे करी श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूप जे जाणे, सईहे, तेने सम्यग्ज्ञानी जाणवा.

५११ तेमां प्रथम जांगे साते नयें करी यंत्रनुं स्वरूप देखाडे ठे. तिहां प्रथम नैगमनयने मत्तें अतीतकालें सिद्धचक्रजीनो यंत्र एवुं नाम वर्त्तुं हतुं अने अनागत कालें पण ते नाम वर्त्तेशे, तथा हमणां वर्त्तमान कालें पण ते नाम वर्त्ते ठे, ए रीतें त्रणे काल एकरूपपणे वर्त्ते, ते नैगमनय जाण वो. हवे संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने वोळ्यो, जे आ श्री सिद्धचक्रजीनो यंत्र ठे, पठी व्यवहार नयना मतवाले वेंचण करीने जुदा जुदा जेद देखाड्या, ते आवी रीतें के प्रथम पदें अरिहंत, बीजे पदें सिद्ध, त्रीजे पदें आचार्य, चौथे पदें उपाध्याय, पांचमे पदें साधु, षष्ठे पदें दर्शन, सातमे पदें ज्ञान, आठमे पदें चारित्र, अने नवमे पदें तप, ए रीतें जेवा दीग, तेवा जेद वेंच्या, ते व्यवहार नय जाणवो. पठी व्यवहार नयना मतवालो ऋजुसूत्र नयनो उपयोग लक्ष्णे वोळ्यो जे ए सिद्धचक्रजीना यंत्रनी स्थापनामां मध्यजागें अरिहंत देव, ते षष्ठे समजिरूढ नयें वर्त्ते ठे. अने उपर सिद्ध परमात्मा ते सातमे एवंचूतनयें वर्त्ते ठे, पडखामां आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ते पांचमे शब्दनयें वर्त्ते ठे, तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ते पांचमे शब्दनयें अंश अंश मात्र प्रगट्या, अने षष्ठे समजिरूढनयें संपूर्ण प्रगट्या, तथा सातमे एवंचूतनयें सकल कार्य नीपजावी परमात्मा जीव, जोगवे ठे. ए सात नयें यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५१३ बीजे जांगे चार निक्षेपे करी श्री सिद्धचक्रजीना यंत्रनुं स्वरूप देखाडे ठे. तिहां प्रथम श्रीअरिहंतजी उपर चार निक्षेपा उतारे ठे. प्रथम जे अरिहंत एवुं नाम लही स्मरण करवुं, ते नाम अरिहंत. तथा श्री अरिहंतजीनी मूर्ति प्रमुख प्रतिमा स्थापीयें, ते सद्जाव स्थापना. तथा श्री अरिहंत एवा अक्षर लखवा, ते असद्जावस्थापना. ए बीजो स्थापना निक्षेपो जाणवो. तथा त्रीजो श्री अरिहंतनो जीव श्रेणिकादि प्रमुख ते ज

व्य शरीरनुं द्रव्य जाणवुं अने जिहां लगे तीर्थकर जगवानने केवल ज्ञान न उपज्युं होय, त्यां लगे ब्रह्मस्थ श्रवस्थायें द्रव्यतिरिक्त शरीरनुं द्रव्य जाणवुं. तथा श्री अरिहंतजी मुक्तें गया पढी तेना शरीरनी चक्ति इंद्रादिक देवता तथा मनुष्य करे ठे, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं. एवी रीतें ज्ञव्यशरीर, तद्द्रव्यतिरिक्त शरीर अने ज्ञशरीर, ए त्रण प्रकारें त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. हवे चोथो जावनिक्षेपो ते श्री अरिहंतने केवल ज्ञान उपन्या पढी त्रिगडाने विषे बेसीने वार पर्वदाने देशना आपे, तेने जाव अरिहंत कहीयें.

५१४ ए चार निक्षेपे श्रीसिद्धनुं स्वरूप कहे ठे. प्रथम श्रीसिद्ध एवुं नाम त्रणे काल एकरूपें शाश्वतुं वर्त्तें ठे, ते नामथकी सिद्ध जाणवा, तथा श्रीसिद्धजीनी प्रतिमा प्रमुख स्थापवी, ते सदजावस्थापना अने सिद्ध एवा अक्षर लखवा, ते असदजावस्थापना. ए रीतें स्थापनानिक्षेपो वे जेदें जाणवो. तथा त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो ते तेरमे अने चौदमे गुणगणे वर्त्तता केवली जगवानने ज्ञव्यशरीर आश्रयी द्रव्य कहीयें अने जे सिद्धि वखा तेना शरीरनी चक्ति करीयें, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं. ए त्रीजो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा जावसिद्ध जे सकलकर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान अव्यावाध सुखना जोगो, तेने जावसिद्ध कहीयें.

हवे सिद्धजगवानमां तद्द्रव्यतिरिक्तशरीर आश्रयी चार निक्षेपा कहे ठे. प्रथम सिद्ध एवुं नाम. ते त्रणे कालें एकरूपें शाश्वतुं वर्त्तें ठे, ते नामसिद्ध जाणवा तथा जे देहमान मध्येथी त्रीजो जाग घटाडी वे जागना शरीरप्रमाणे आत्मप्रदेशनो घन करी स्थापनारूप क्षेत्र श्रवगाही रह्यो ठे, ते बीजो स्थापनासिद्ध जाणवो. तथा द्रव्यसिद्ध ते शुद्ध, निर्मल, असंख्यातप्रदेशने विषे ज्ञानादिक अनंतगुणरूप ठती पर्यायप्रत्यें वस्तुरूप प्रगव्या ठे, ते सिद्धनो तद्द्रव्यतिरिक्तशरीर आश्रयी द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा जावथकी सिद्धनुं स्वरूप तो सामर्थ्यपर्यायप्रवर्त्तनारूप अनंतो धर्म प्रगव्यो ठे, तेने विषे सदा काल नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय अनंतो अनंतो थइ रह्यो ठे. तेणे करी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख जोगवे ठे, ते चोथो जावनिक्षेपो जाणवो.

५१५ आचार्यनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी कहे ठे:—प्रथम आचार्य एवुं नाम, ते नाम आचार्य, बीजुं आचार्यजीनी मूर्त्तिप्रमुख स्थापवी, अथवा आचार्य एवा

अक्षर लखी स्थापवा, ते स्थापना आचार्य, त्रीजो जे आचार्यपदवीने योग्य ठे पण हजी आचार्य पदवी पाम्या नथी, परंतु आगल पामशे, ते तद्ग्रथतिरिक्त शरीरनुं ड्रव्य जाणवुं. तथा जे कोइ गतिमां जीव ठे, परंतु त्यांथकी आची आचार्य पदवी पामशे, तेने ज्ञव्यशरीरनुं ड्रव्य कहियें. तथा जे कोइ आचार्य कालंगत थया पढी तेना शरीरनी जक्ति महोत्सव करीयें, ते ज्ञशरीरनुं ड्रव्य जाणवुं, ए त्रीजो ड्रव्यनिक्षेपो कह्यो. हवेचोथो ज्ञावनिक्षेपो ते जे ज्ञावाचार्य ढत्रीश गुणें करी बिराजमान पांच प्रस्थानें करी सेवित ज्ञव्य प्राणीने हितोपदेश कर्त्ता गहना नायक थका विचरे, तेने ज्ञावथकी आचार्य कहियें. एज रीतें चार निक्षेपा उपाध्यायने विषे पण जाणी लेवा.

५१६ साधुजीनुं स्वरूप चार निक्षेपे करी कहे ठे:—प्रथम साधु एवुं नाम, ते नामसाधु, तथा बीजो साधुजीनी मूर्त्ति प्रमुख स्थापीयें, अथवा अक्षर लखीयें, ते स्थापना साधु तथा जे श्रावकमांहेथी आगल साधुपणुं नीपजशे, तेने ड्रव्यसाधु कहियें. ए ज्ञव्य शरीरनुं ड्रव्य जाणवुं तथा जे साधु पांच महा व्रत सूधां पाळे साधुनी क्रिया करे, सूजतो आहार लीये, पण तेवो ज्ञान ध्याननो उपयोग वर्त्ततो नथी ते तद्ग्रथतिरिक्त शरीर आश्रयी ड्रव्य जाणवुं. तथा जे कोइ साधुने देवगति थया पढी तेना शरीरनी महोत्सव जक्ति करवी, ते ज्ञशरीरनुं ड्रव्य जाणवुं ए त्रण प्रकारें साधुनो ड्रव्यनिक्षेपो कह्यो. हवे ज्ञाव निक्षेपो कहे ठे. जे साधुने गुणें करी सहित अने आगल जे साधुनो आचार, व्यवहार कह्यो ते प्रमाणें सर्व करे अने ज्ञान ध्यानमां वर्त्ततो साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें सत्तागतना धर्म रूप मोक्षने साधे, ते ज्ञावनिक्षेपे साधु जाणवो.

५१७ दर्शन उपर चार निक्षेपा लगावे ठे. तिहां प्रथम दर्शन एवुं नाम, ते नामदर्शन कहियें. बीजुं मूर्त्ति प्रमुख स्थापवी, ते सज्ञावस्थापना अने दर्शन एवा अक्षर लखी स्थापवा, ते असज्ञावस्थापना, ए स्थापनानिक्षेपो जाणवो. त्रीजो जे अंतरंग उपयोग विना कुलाचारें अति आरुंबरें विधि सहित दर्शननी करणी करे ठे, परंतु ते आत्मदर्शन विना करे ठे, माटे ते सर्व ड्रव्यदर्शन जाणवुं ॥ गाथा ॥ दर्शन दर्शन जटकियो, शिर पटव्युं सो वार ॥ पण जे दर्शन दर्शन विना, ते फरियो अनंत संसार ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. हवे चोथे ज्ञावनिक्षेपे दर्शन कहे ठे. तिहां जे

कार्यकारणनी उलखाण सहित दर्शन करवुं एटले उपरथी श्री वीतरागना दर्शननी आचरणारूप (करणी के०) सेवा, स्तुति, चक्ति, पूजा विधि सहित मन, वचन अने कायायें करी एकचित्तें करे ठे, ते सर्व द्रव्यदर्शन कारणरूप जाणवुं अने ज्ञावदर्शन केतां तो जे अंतरंग आत्मदर्शनरूप लेजो धारीने आत्मा निरावरण करवारूप साध्य चोखुं राखीने द्रव्यदर्शनरूप विधिसहित करणी करवी, ते सर्व निर्झरारूप जाणवी ॥ गाथा ॥ जे दर्शन दर्शन विना, ते दर्शन प्रतिपद् ॥ जे दर्शन दर्शन हुवे, ते दर्शन सापेद् ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. ए ज्ञावनिक्षेपे दर्शन कखुं.

५१० ज्ञान उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम ज्ञान एवुं नाम, ते नामज्ञान जाणवुं. वीजुं पुस्तकमां लख्युं ते स्थापनाज्ञान जाणवुं. त्रीजुं अन्यमतनां सर्वशास्त्र, तेनां तथा जिनमतनां सूत्र, सिद्धांत, टीका, चूर्णि प्रमुखना अंतरंग आत्म उपयोग विना तथा निश्चयव्यवहाररूप कार्य कारणा जाणपणा विना जे अर्थ करवा, ते सर्वे द्रव्यज्ञान जाणवुं तथा ज्ञावज्ञान ते षड्द्रव्य नव तत्त्वनुं जाणपणुं द्रव्य, क्षेत्र, काल, ज्ञाव, नय, निक्षेपा, अने प्रमाणें करी जाणपणुं अने अंतरंग निश्चयनय आत्मसत्तानुं सर्वहनुं ते ज्ञावज्ञान जाणवुं ॥ गाथा ॥ द्वाण अरुं जे अघ टले, ते न टले जवनी कोडें ॥ तपस्या करतां अति घणी, पण नावे ज्ञान तणी कोडें जोडें ॥ १ ॥

५११ चारित्र उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे. प्रथम चारित्र एवुं नाम, ते नामचारित्र जाणवुं. तथा जे पुस्तकमां चारित्रना विधि प्रथम लखीने स्थापवुं ते स्थापनाचारित्र जाणवुं. तथा जे पांच महाव्रत सूधी रीतें मन, वचन, कायायें करी निवृत्ति प्रवृत्तिरूप आचार व्यवहार प्रमुख सहित सूधी रीतें करणी करवी, ते सर्व द्रव्यचारित्र जाणवुं ॥ गाथा ॥ विरथा सा वक्ष्णुं, कसाय हीणा महावयधरावि ॥ सम्महिष्ठि विहूणा, कयावि मुक्कं न पावति ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. हवे ज्ञावचारित्र कहे ठे. जे कर्मने चूरे, तेने चारित्र कहीयें. एटले जीव, अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी स्वरूपनुं चिंतववुं. एकाग्रता तन्मयरूप परिणाम होय एटली वार नवा कर्मरूप आश्रवणुं रोकवुं जाणवुं, तेने ज्ञावचारित्र कहीयें ॥ गाथा ॥ चय ते अत्र कर्मनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्तें जांख्युं, ते वंदो गुण गेह ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. ए ज्ञावचारित्र जाणवुं.

५३० तप उपर चार निक्षेपा लगाडे ठे:-प्रथम तप एवुं नाम, ते नाम निक्षेपो जाणवो. वीजुं पुस्तकमां तपना विधि प्रमुखनुं लखवुं, ते स्थापनातप जाणवुं. त्रीजुं बछ अछमादि प्रमुख पास खमण मासखमण आदिक अनेक प्रकारनुं तप जे आ चव परचवें पुण्यरूप इंद्रियसुखनी वांठारूप परिणामें करवुं, ते सर्वे ड्रव्यतप जाणवुं. चोथुं चावतप. ते इह चव परचवें इंद्रिय सुखनी वांठा रहित सर्व प्रकारें इष्टानो रोध करी एक पोतानो आत्माक मरूप आवरणथकी रहित करवाने अर्थ जे आगल ड्रव्यतप कछुं, ते सर्वे करतां थकां निर्झरारूप जाणवुं ॥ गाथा ॥ इष्टा रोधे संवरी, परिणतिसम ता जोगें ॥ तप तेहीज आतमा, वत्तें निजगुण जोगें ॥ ए चावतपनो परमार्थ जाणवो. ए रीतें चार निक्षेपे करी सिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५३१ त्रीजे जागे ए यंत्रनुं स्वरूप, प्रत्यक्षदि प्रमाणें करी उलखावे ठे. तिहां प्रथम प्रमाणना जेद ठे. एक प्रत्यक्षप्रमाण अने वीजुं परोक्षप्रमाण, तेमां प्रत्यक्ष प्रमाणना बली वे जेद ठे. तिहां अरिहंत तथा सिद्धजगवान् केवल ज्ञानें करी लोकालोकनुं स्वरूप जाणे ठे, ते सर्वे प्रत्यक्ष प्रमाणें करी जाणे ठे. माटे एने सर्वप्रत्यक्ष कहीयें. तथा जे मनःपर्यवज्ञान अने अवधिज्ञान ते वीजुं देशप्रत्यक्ष कहीयें. तिहां कोश्क आचार्य, उपाध्याय अने साधु, मनःपर्यव ज्ञानवाला ठे, ते मनोवर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे ठे अने कोश्क आचार्य, उपाध्याय अने साधु, अवधिज्ञानवाला ठे, ते पुञ्जलवर्गणाने प्रत्यक्ष पणे जाणे ठे. ते देशप्रत्यक्ष जाणवो. एटले अरिहंत अने सिद्ध, ए वे सर्वप्रत्यक्ष प्रमाणवाला तथा आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए त्रण देशप्रत्यक्षवाला ठे, ए रीतें नव पदमांहेलां पांच पदमां प्रत्यक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कछुं. हवे शेष दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए चार पदमां प्रत्यक्षप्रमाणनुं स्वरूप कहे ठे. तिहां प्रथम (दर्शन के०) समकेत जाणवुं. अने ए समकेत विनानुं जे ज्ञान ते नव पूर्व सुधी जण्णा ठे, तो पण ते अज्ञानरूप ठे, माटे समके त सहित ते वीजुं ज्ञान जाणवुं अने ते ज्ञाननी तीक्ष्णता एटले उपयोगनुं एकाग्रपणुं, ते त्रीजुं चारित्र जाणवुं अने चारित्र एटले पोताना स्वरूपमां रमण करवुं, ते पोताना स्वरूपमां रमण करतां सर्व प्रकारें इष्टानुं रोधपणुं तेहीज तप जाणवुं. एटले पांचमे शब्दनयने मतें जे जीवने दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप प्रगट्यां ठे, तेमां कोइ जीवने अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान

होय, माटे तेमां देशप्रत्यक्षपणुं जाणवुं. अने ठे समजिरूढनयें तथा सातमे एवंभूतनयें जे जीवने दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप प्रगट्यां ठे, तेमां सर्वप्रत्यक्षपणुं जाणवुं.

हवे परोक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कहे ठे:—ते परोक्ष प्रमाणांना त्रण जेद ठे. एक आगमप्रमाण, वीजुं अनुमानप्रमाण, त्रीजुं उपमाप्रमाण. तिहां कोश्क आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ते आगमं करी सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. तथा कोश्क आचार्य, उपाध्याय अने साधु उपमायें करी वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. तथा कोश्क आचार्य, उपाध्याय अने साधु, अनुमानें करी वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. हवे दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप, ए पांचमे शब्दनयें जे जीवने प्रगट्यां ठे, तेमां पण आगम, अनुमान अने उपमा प्रमाणे जाणपणुं जाणवुं. ए परोक्ष प्रमाणनुं स्वरूप कळुं. ए रीतें प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए वे प्रमाणें करी सिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५४० चोथे चांगे ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जाव तेणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप देखाडे ठे. तिहां प्रथमपदें श्री अरिहंतनुं स्वरूप देखाडे ठे. तेमां ड्रव्य थकी अरिहंत ते चोत्रीश अतिशयें करी विराजमान पांत्रीश वचन वाणी ने गुणें करी संपूर्ण आठ महाप्रातिहार्यरूप बार गुणें करी सहित होय, तथा क्षेत्रथकी श्री अरिहंत देव, ते अढी द्वीप प्रमाण क्षेत्रमां जाणवा. तथा कालथकी अरिहंत देव, संततिजावें अनादि अनंत चांगे वत्तें ठे अने एक अरिहंतआश्रयी सादिसांतचांगो जाणवो. तथा जावथकी अरिहंतदेव, ते जे ज्ञानावरणादि घाति कर्मना क्यें अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या वत्तें ठे.

५४१ सिद्ध परमात्मा उपर ड्रव्यादि चार चांगो कहे ठे. ड्रव्यथकी सवें सिद्ध परमात्मा असंख्यातप्रदेशी जाणवा तथा क्षेत्रथकी सिद्ध परमात्मा, लोकने अंतें पीस्तालीश लाख योजन सिद्धशिला प्रमाणें विराजमान जाणवा अने कालथकी सिद्ध परमात्मा, सर्व सिद्ध आश्रयी अनादि अनंत चांगे वत्तें ठे अने एक सिद्ध आश्रयी सादिसांत चांगो जाणवो. तथा जावथकी सिद्ध परमात्मा ते सकल कर्मने क्यें अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान वत्तें ठे, ते जाणवा.

५४२ आचार्य जगवाननुं स्वरूप कहे ठे. ड्रव्यथकी आचार्य जगवान

ठत्रीश गुणें करी विराजमान जाणवा, तथा क्षेत्रथकी आचार्य ऋगवान् अढी द्वीप प्रमाणें जाणवा तथा कालथकी आचार्य ऋगवान् संततिजावें अनादि अतंत जांगे वत्तें ठे अने एक आचार्य आश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी आचार्य ऋगवान् सदाकाल सत्तागतना चासन रूप ज्ञानस्वरूपना उपयोगमां जेनुं चित्त वत्तें ठे, ते जाणवा.

५४३ उपाध्यायजीनुं स्वरूप कहे ठे. द्रव्यथकी उपाध्यायजी पच्चीश गुणें करी विराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी उपाध्यायजी अढी द्वीप व्यापी जाणवा. तथा कालथकी उपाध्यायजी संततिजावें अनादि अनंत जांगे वत्तें ठे, अने एक उपाध्यायजी आश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा भावथकी उपाध्यायजी जीव अजीवरूप नव तत्व षट् द्रव्यनुं जाणपणुं करी सत्तागतना चिंतनरूप स्वभावमां जेनुं चित्त वत्तें ठे ते जाणवा.

५४४ साधुनुं स्वरूप कहे ठे. द्रव्यथकी साधु सत्तावीश गुणें करी विराजमान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी साधु अढी द्वीपव्यापी जाणवा, तथा कालथकी साधु संततिजावें अनादि अनंतजांगे वत्तें ठे, अने एक साधुआश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी साधु जे साध्य एक, साधन अनेक, एरीतें सत्तागतना धर्मने साधे, ते जावसाधु जाणवा.

५४५ दर्शननुं स्वरूप कहे ठे. द्रव्यथकी दर्शन, ते इंद्रियना बलथी वस्तुनुं देखवुं तथा चासनपणुं ते सर्व द्रव्यदर्शन कहीयें. तथा क्षेत्रथकी दर्शन, चौदराज लोक त्रसनाढी प्रमाणें जाणवुं तथा काल थकी दर्शन, द्वायिक जाव आश्रयी जे जीवने प्रगटयुं ठे, ते सादि अनंत जांगे जाणवुं, अने द्वायोपशमजाव आश्रयी सादिसांत जांगे वत्तें ठे, तथा जावथकी दर्शन ते लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां देखवुं, तेने कहीयें.

५४६ ज्ञाननुं स्वरूप कहे ठे. द्रव्यथकी ज्ञान जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान इत्यादि, इंद्रियने अनुयायी जे जाणपणुं ते सर्व द्रव्यज्ञान कहीयें. तथा क्षेत्रथकी ज्ञान, ते चौदराज लोक त्रसनाढी प्रमाणें जाणवुं. तथा कालथकी ज्ञान ते द्वायिक जावआश्रयी जे जीवने ज्ञान प्रगटयुं ठे, ते सादि अनंत जांगे जाणवुं अने द्वायोपशमिक जाव आश्रयी सादि सांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी ज्ञान ते जे लोकालो कनुं स्वरूप एक समयमां जाणवुं.

५४७ चारित्र्यनुं स्वरूप कहे ठे. ड्रव्यथकी चारित्र्य ते चरणसित्तरी कर एसित्तरीने गुणें करी विराजमान तथा क्षेत्रथकी चारित्र्य ते चौदराज लोक त्रसनाडि प्रमाणें जाणवुं तथा कालथकी चारित्र्य ते द्वायिक जाव आश्रयी सादि अनंत जांगे वर्ते ठे अने द्वायोपशम जाव आश्रयी सादिसांत जांगो जाणवो. तथा जावथकी चारित्र्य ते यथाख्यात चारित्र्यरूपगुणें करी पोताना स्वभावमां रमण करवुं, ते जाणवुं,

५४८ तपनुं स्वरूप कहे ठे, ड्रव्यथकी तपना बार जेद कहीयें तथा क्षेत्रथकी तप ते चौदराजलोक त्रसनाडी प्रमाण जाणवुं. तथा कालथकी तप ते द्वायिकजाव आश्रयी सादिअनंतजांगे वर्ते ठे अने द्वायोपशमजाव आश्रयी सादिसांतजांगे जाणवुं. तथा जावथकी तप ते सर्व प्रकारें इहानो रोध करी समता जावमां वर्तवुं. ए रीतें ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावनी चोजंगीयें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५५७ पांचमे जांगे चौद गुणठाणें करी यंत्रनुं स्वरूप उलखावे ठे. तीहां प्रथमपदें श्रीअरिहंतदेव, तेरमे गुणठाणें जाणवा. बीजे पदें सिद्धपरमात्मा ते गुणठाणा वर्जित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्यप्रभु तथा चोथे पदें उपाध्याय अने पांचमे पदें साधुमुनिराज, ते बछे सातमे गुणठाणे अने श्रेणीप्रतिपन्न ब्रह्मस्थमुनि ते अगीथारमे बारमे गुणठाणे जाणवा. हवे ठहुं दर्शन पद, सातमुं ज्ञानपद, आठमुं चारित्र्यपद अने नवमुं तपःपद, ए चारे पद, चोथा गुणठाणाथी मांकी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा लगें जाणवां, ए रीतें चौद गुणठाणे करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५६६ बछे जांगे गुणें करी सिद्धयंत्रनुं स्वरूप देखाडे ठे. तिहां प्रथम पदें श्रीअरिहंतदेव ते बार गुणें करी सहित जाणवा. बीजे पदें सिद्ध परमात्मा ते आठगुणें तथा एकत्रीश गुणें करी सहित जाणवा. त्रीजे पदें आचार्य जगवान्, ते पांच गुणें तथा बत्रीश गुणें करी जाणवा. चोथे पदें उपाध्यायजी ते पच्चीश गुणें करी जाणवा. पांचमे पदें साधुजी ते सत्तावीश गुणें करी जाणवा. बछे पदें दर्शन, ते सडशठ गुणें करी जाणवुं. सातमे पदें ज्ञान, ते पांच गुणें तथा एकावन गुणें करी जाणवुं. आठमे पदें चारित्र्य, ते सत्तर तथा सित्तर गुणें करी जाणवुं. नवमे पदें तप, ते बार गुणें तथा पच्चास गुणें करी जाणवुं. ए रीतें सिद्धयंत्रनुं स्वरूप गुणें करी जाणवुं.

૫૭૫ સાતમે જાંગે યંત્રનું સ્વરૂપ નવ તત્ત્વે કરી ડલ્લાવાવે છે. પ્રથમપદે શ્રીઅરિહંત દેવ, તેરમે ગુણઠાણે વર્તતા તેમાં નવે તત્ત્વ પામીયે. તથા બીજે પદે શ્રી સિદ્ધપરમાત્મા, તેમાં આગલ કહ્યાં તે રીતે ત્રણ તત્ત્વ પામીયે. તથા ત્રીજે પદે શ્રીઆચાર્યજી, ચોથે પદે શ્રીઉપાધ્યાયજી અને પાંચમે પદે શ્રી સાધુ, એ ત્રણ પદમાં પૂર્વે સમકેતમાં કહ્યાં, તે રીતે આઠ આઠ તત્ત્વ પામીયે, તથા દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર અને તપ, એ ચાર ગુણમાં શબ્દનયને મતે ચોથા ગુણઠાણાથી માંકીને ઠઠા સાતમા ગુણઠાણાં જે જીવને પ્રગટ્યાં છે, તેમાં આગલ કહ્યાં, તે રીતે આઠ તત્ત્વ પામીયે અને સમજિરૂઢનયને મતે આઠમા ગુણઠાણાથી માંકી યાવત્ અગીયારમા બારમા ગુણઠાણા પર્યંત શ્રેણી જાવે જે જીવ વર્તે છે, તેને એ દર્શનાદિક ચાર ગુણ પ્રગટ્યા છે, તેમાં આઠ તત્ત્વ પામીયે અને તેરમે ગુણઠાણે કેવલી જગવાનને ચાર ગુણ પ્રગટ્યા છે, તેમાં નવે તત્ત્વ પામીયે. અને ગુણઠાણાં વર્જિત લોકને અંતે સિદ્ધપરમાત્મા વર્તે છે, તેને એ ચાર ગુણ પ્રગટ્યા છે, તેમાં ત્રણ તત્ત્વ પામીયે. એ રીતે સિદ્ધયંત્રનું સ્વરૂપ, નવ તત્ત્વે કરી જાણવું.

૫૭૬ આઠમે જાંગે ગુણિગુણે કરી સિદ્ધયંત્રનું સ્વરૂપ ડલ્લાવાવે છે. તિ હાં પ્રથમ અરિહંત, સિદ્ધ, આચાર્ય, ઉપાધ્યાય અને સાધુ, એ પાંચે ગુણી જાણવા અને દર્શન, જ્ઞાન ચારિત્ર અને તપ, એ ચારગુણ જાણવા, એટલે એ પૂર્વોક્ત પાંચ ગુણીમાં એ દર્શનાદિક ચાર ગુણ રહ્યા છે, માટે એ ગુણ જાણવા. અને એ અરિહંતાદિક પાંચે જે છે, તે દર્શનાદિક ચાર ગુણે કરી સહિત છે, માટે ગુણી જાણવા. એ રીતે સિદ્ધયંત્રનું સ્વરૂપ ગુણી ગુણે કરી ડલ્લાવાવું.

૫૭૭ નવમે જાંગે સિદ્ધયંત્રનું સ્વરૂપ પાંચ વર્ણે કરી દેલાવે છે. પ્રથમ ચંદ્રપ્રજ્ઞ અને સુવિધિનાથ, એ બે તીર્થકર ધોલે વર્ણે છે, માટે પ્રથમપદે અરિહંતનું ધ્યાન ધોલે વર્ણે કરવું તથા શ્રી પદ્મપ્રજ્ઞ અને વાસુપૂજ્ય, એ બે રાતે વર્ણે છે, માટે બીજે પદે શ્રી સિદ્ધનું ધ્યાન રક્તવર્ણે કરવું તથા શોભ તીર્થકર પીતલવર્ણે છે, માટે ત્રીજે પદે શ્રી આચાર્યજીનું ધ્યાન પીલે વર્ણે કરવું તથા શ્રી મહિનાથ અને શ્રી પાર્શ્વનાથ, એ બે પ્રજુ લીલે વર્ણે છે, માટે ચોથે પદે શ્રી ઉપાધ્યાયજીનું ધ્યાન લીલે વર્ણે કરવું, તથા શ્રી મુનિસુવ્રત અને નેમનાથ, એ બે તીર્થકર શ્યામ વર્ણે છે, માટે પાંચમે પદે સાધુજીનું ધ્યાન શ્યામવર્ણે કરવું, તથા એ શ્રી અરિહંતાદિક પાંચને દર્શન, જ્ઞાન, ચા

रित्र अने तप, ए चार गुण, कर्मरूप मेलने अजावें करी निर्मल प्रगट्वा ठे, माटे श्वेतवर्ण ए चारेनुं ध्यान करवुं. ए पांच वर्णें यंत्रनुं स्वरूप जाणवुं.

५७५ दशमे जांगे देव, गुरु, अने धर्म करी यंत्रनुं स्वरूप उलखावे ठे:-तिहां ए नव पदमां श्रीअरिहंत अने सिद्ध, ए वे देव जाणवा. तथा आचार्य, उपाध्याय अने साधु, ए त्रणे गुरु जाणवा. तथा दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप ए चारे धर्म जाणवा. ए रीतें देव, गुरु, धर्म करी यंत्रनुं स्वरूप उलखावुं. ए दश जांगे करी जे जीव, श्रीसिद्धचक्रना यंत्रनुं स्वरूप अंतरंग प्रतीति सहित उलखाणे ध्यावे, ते परमानंद पद पामे.

५७६ श्रीअनुयोगद्वार सूत्रमध्ये नयनुं स्वरूप कळुं ठे, ते इहां शिष्यने उलखाण करवा सारु विस्तारपणे विशेष व्याख्यायें लखीयें ठेयें ॥ गाथा ॥ नय जंग प्रमाणेहिं, जो अप्पा सायवाय जावेणं ॥ जाणेइमो सरुवं, सम्म दिष्ठिं सो नेउं ॥ १ ॥ अर्थ:- (नयजंग के०) मूलनय वे अने उत्तरनय सात, तथा उपनय अष्टावीश अने तेना जांगा सातशें थाय. तथा (प्रमाणेहिं के०) मूल प्रमाण वे अने उत्तर प्रमाण पांच, तेना पण वली अनेक जेद थाय. अने (अप्पा के०) आत्मा तेने (सायवाय के०) स्याद्दा दादि आठ पदें उलखीने जली रीतिथी पोताना स्वरूपने (जावेण के०) जावुं. (जाणेइमोसरुवं के०) ए रीतें जेणें आत्मस्वरूपने उलखीने प्रतीति करी ठे, (सम्मदिष्ठिंएसोनेउं के०) ते जीव निश्चे समकेतनो धणी जाणवो.

५७७ विशेषार्थ महे ठे. तिहां एक निश्चय अने वीजो व्यवहार, ए मूल वे नय जाणवा. अने एक नैगम, वीजो संग्रह, त्रीजो व्यवहार, चोथो ज्ञानसूत्र, पांचमो शब्द, षष्ठो समचिरूढ, सातमो एवंचूत, ए सात उत्तर जेद जाणवा. सातमांथी पहेला ठ नय व्यवहारमां जाणवा अने सातमो एक एवंचूत नय ते निश्चयमां जाणवो. तेनो परमार्थ आवी रीतें ठे, ठ नयें जे कार्य ते अपवादें कारणरूप जाणवुं अने सातमे एवंचूतनयें जे कार्य, ते उक्त्यें उत्सर्गें निश्चयकार्यरूप ठे, माटे ठ नय ते व्यवहारमां गण्या अने सातमो एक एवंचूतनय ते कार्यरूप ठे, तेमाटे निश्चयमां गण्यो ठे.

५७८ शिष्य:-सिद्धमां नय ठे, किंवा नथी ?

गुरु:-जे कारणरूप सात नय ठे, तेतो व्ययहाररूप ठे, ते माटे ते सिद्धमां

નથી, કેમ કે સિદ્ધને તો કાર્ય સંપૂર્ણ નીપન્યું છે, માટે તિહાં કારણનો સ્વપ નથી, તે વાસ્તે કારણરૂપ સાત નય તે સિદ્ધમાં ન પામીયેં અને જે જે નયેં કાર્ય નીપન્યું તે કાર્ય સર્વે સિદ્ધમાં વર્તે છે, માટે કાર્યરૂપેં જોતાં તો સિદ્ધમાં સાતે નય પામીયેં. એનો વિસ્તારેં સુલાસો આગલ્લ બતાવશું.

૫૬૯ શિષ્ય:— એ સાત નયમાં દ્રવ્યનય કેટલા અને જાવનય કેટલા ?

ગુરુ:—શ્રીજિનજ્ઞગણિક્ષમાશ્રમણજી તો એક નૈગમ, બીજો સંગ્રહ, ત્રીજો વ્યવહાર અને ચોથો ઋજુસૂત્ર, એ ચાર નયમાં નામ, સ્થાપના અને દ્રવ્ય, એ ત્રણ નિદેષા તે દ્રવ્યાસ્તિકપણે માને છે, તથા શબ્દાદિક ત્રણ નય તે જાવનિદેષે પર્યાયાસ્તિકપણે માને છે, અને શ્રીસિદ્ધસેનદિવાકરજી તો પ્રથમના ત્રણ નયમાં ત્રણ નિદેષા તે દ્રવ્યાસ્તિકપણે માને છે અને ઋજુસૂત્રાદિક ચાર નય તે એકજ જાવનિદેષે પર્યાયાસ્તિકપણે માને છે, હ્યાં ન્યાયરીતેં આશયરૂપેં જોતાં બન્ને આચાર્યનું વચન પ્રમાણ છે, તે દેખાડે છે.

૫૭૦ વસ્તુની ત્રણ અવસ્થા છે. એક પ્રવૃત્તિ, બીજી સંકલ્પ અને ત્રીજી પરિણતિ, એ ત્રણ જ્ઞેદ છે, તેમાં પ્રવૃત્તિ તે યોગ વ્યાપારરૂપ ક્રિયા અને સંકલ્પ તે ચેતનાના યોગ સહિત મનનો વિકલ્પ માટે શ્રીજિનજ્ઞગણિક્ષમાશ્રમણજીયેં પ્રવૃત્તિધર્મ તથા સંકલ્પધર્મ, એ બેને ઐદયિક મિશ્રિતપણા માટે દ્રવ્યનિદેષો કહેલો છે અને એક પરિણતિધર્મ તેને જાવનિદેષો કહે છે, અને શ્રીસિદ્ધસેનદિવાકરજી તો વિકલ્પ તે જીવની ચેતના, માટે તેને જાવનયમાં ગવેષે છે, અને પ્રવૃત્તિસીમ તે વ્યવહારનય છે તથા સંકલ્પ તે ઋજુસૂત્ર છે અને પરિણતિ એક વચનપર્યાયરૂપ તે શબ્દનય અને સંકલ્પ વચનપર્યાયરૂપ તે સમજિરૂઢનય તથા વચનપર્યાય અર્થપર્યાયરૂપ સંપૂર્ણ, તે એવંચૂતનય. એ ત્રણ નય શુદ્ધ છે અને જાવધર્મમધ્યે મુખ્યજાવને ઉત્તરોપર સૂક્ષ્મતાના ગ્રાહક છે. એ રીતેં સંક્ષેપ અધિકારેં નયનું સ્વરૂપ કહ્યું.

૫૭૧ હવે અષ્ટાવીશ ઉપનયનું સ્વરૂપ બતાવે છે. તિહાં પ્રથમ નૈગમનયના ત્રણ જ્ઞેદ કહે છે. એક વર્તમાનેં અતીતારોપણ નૈગમ, બીજો વર્તમાનેં અનાગતારોપણ નૈગમ, ત્રીજો વર્તમાનનૈગમ. હવે સંગ્રહનયના બે જ્ઞેદ કહે છે. એક સામાન્યસંગ્રહ અને બીજો વિશેષસંગ્રહ, તથા વ્યવહારનયના બે જ્ઞેદ, એક શુદ્ધવ્યવહાર, બીજો અશુદ્ધવ્યવહાર, તથા ઋજુસૂત્રનયના બે જ્ઞેદ, એક સૂક્ષ્મઋજુસૂત્ર, બીજો બાદર ઋજુસૂત્ર, તથા શબ્દ સમજિરૂઢ

अने एवंज्ञूत, ए त्रणे नयनो एकेक जेद ठे. ए रीतें ए सात नयना बार जेद थया. हवे ड्रव्यास्तिक अने पर्यायास्तिक ए वे नयना जेद कहे ठे. तिहां ए क नित्यड्रव्यास्तिक, वीजो एकड्रव्यास्तिक, त्रीजो सत्तुड्रव्यास्तिक, चोथो व क्तव्यड्रव्यास्तिक, पांचमो अशुद्धड्रव्यास्तिक, ठठो अन्वयड्रव्यास्तिक, सा तमो परमड्रव्यास्तिक, आठमो शुद्धड्रव्यास्तिक, नवमो सत्ताड्रव्यास्तिक अ ने दशमो परमजावग्राहकड्रव्यास्तिक. ए रीतें ड्रव्यास्तिकनयना दश जेद ठे ते पूर्वोक्त बार जेद साथें मेलवतां बावीश जेद थया. हवे जे पर्यायने ग्रहे, ते पर्यायास्तिक नय, तेना ठ जेद कहे ठे. एकं ड्रव्यपर्याय, वीजो ड्रव्य व्यंजनपर्याय, त्रीजो गुणपर्याय, चोथो गुणव्यंजनपर्याय, पांचमो स्वजाव पर्याय, ठठो विजावपर्याय, ए ठ जेदने पूर्वोक्त बावीश साथें मेलवतां अठा वीश उपनय जाणवा. अने ए सात नय मांहेला एकेक नयना शो शो जांगा ठे, तेथी सातसो जांगा पण जाणवा. ए सामान्य कथन कथूं.

५९९ हवे शिष्यने समजाववा विशेष अर्थ जूदा जूदा जेदें करी देखाडे ठे. तिहां प्रथम मूलनयथी मंराण करे ठे. ते मूल तो एकनिश्चय अने बी जो व्यवहार, ए वे नय ठे. तेणें करी सर्व वस्तु पदार्थनुं जाणपणुं करवुं. केम के श्रीउत्तराध्ययनमां द्वायिक समकेती जीवने दशजातिनी रुचिनुं ज्ञान प्रगटे, तिहां प्रथम निसर्ग रुचिमां कह्यो ठे, जे निश्चय अने व्यवहारनयें करी तथा नैगमादि सात नयें करी तथा चार निक्षेपे करी जीव अजीवरूप नव तत्त्व, षड्द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, तेने निश्चय समकेती जाणवा माटे प्रथम निश्चय अने व्यवहार, ए वे मूल नयनुं स्वरूप कहे ठे.

तिहां प्रथम व्यवहारनयना वे जेद ठे. एक अशुद्ध व्यवहार अने बी जो शुद्ध व्यवहार, तेमां अशुद्ध व्यवहारना वली पांच जेद ठे. एक अ शुद्धव्यवहार वीजो उपचरितव्यवहार, त्रीजो अशुद्धव्यवहार, चोथो शुद्धव्यवहार, पांचमो अनुपचरित व्यवहार अने ठठो शुद्धव्यवहार, ए ठ जेद ठे, ते विस्तारें करी प्रत्येकें उलखावे ठे.

५९९ प्रथम अशुद्ध व्यवहार, ते जे जीवने सत्तायें राग, द्वेष, अज्ञानरूप अशुद्धता खाणि संपन्न अनादिकालनी लागी ठे, ते अशुद्धव्यवहारनयें जाणवो. अने ए अशुद्धतानी चिकाशें कर्मरूप दलीयां जीवनें प्रकृतिरूप सत्तापणे रह्यां ठे, ते संग्रहनयने मत्तें ठे, तथापि व्यवहाररूप जाणवां.

अने नैगमनयने मत्तें जीवें अतीत कालें दलीयां ग्रहां हतां अने अनागतकालें जोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रक्षां वत्तें ठे, तथा ते दलीयां स्थितिपाकें व्यवहारनयें उदयरूपजावें अज्ञानपणे अनुपयोगें एकेंद्रिय विकलेंद्रियादि प्रमुख संमूर्द्धिम जीव जोगवे ठे, ते उदयजावरूप व्यवहारनय जाणवो. एटले ए अशुक्रव्यवहारनयमां एक नैगम, बीजो संग्रह अने त्रीजो व्यवहार, ए त्रण नय जाणवा.

५११ बीजो उपचरित व्यवहारनय कहे ठे:-कोइ जीव घर, हाट, वखार, जाई, पिता, स्त्री, कुटुंब, परिवार, ग्राम, गरास, नगर, दास, दासी, वाणोतर, शीपाइ, सुजट आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोताथकी प्रत्यक्षपणे जूदी ठे, तेनो जीव स्वामीरूप कर्ता थइ, ऋजुसूत्रनयना उपयोग सहित वत्तें, ते उपचरितव्यवहारनय कर्ता जाणवो ॥ १ ॥ अने तेनी चिकारें करी अशुक्रकर्मरूप दलीयां जीव ग्रहण करे ठे, ते दलीयां ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥२॥ अने कोइ जीव, देहरा, उपासरा, ज्ञानोपकरण, पाटी, पोथी, नोकरवाही प्रमुख तथा देव, गुरु, साधमीं प्रमुख चारित्रनां उपकरण ते सर्व पोताथी प्रत्यक्षपणे जूदां ठे, तेहनो जीव कर्तारूप थइ ऋजुसूत्रना उपयोग सहित वत्तें ठे, ते पण उपचरित व्यवहार नय जाणवो ॥३॥ अने तेनी चिकारें शुक्रकर्मरूप दलीयां ग्रहण करे ठे, ते ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ४ ॥ एटले उपचरित व्यवहार नयें करी शुक्राशुक्ररूप वे प्रकारें दलीयांनुं ग्रहण करी ते दलीयां जीवें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, ते संग्रहनयने मत्तें ठे, पण व्यवहाररूप जाणवां ॥ ५ ॥ तथा नैगमनयने मत्तें अतीतकालें दलीयां ग्रहां हतां अने आवते कालें जोगवशे तथा वर्त्तमानकालें प्रकृतिरूप सत्तापणे रक्षां ठे, ते नैगमनयें जाणवां ॥६॥ अने ते दलीयां व्यवहारनयने मत्तें उदयरूपजावें समकेती जीव, उदासपणे न्यारा रही जोगवे ठे, ते जोगववारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥ ७ ॥ अने मिथ्यात्वी जीव, ऋजुसूत्रना उपयोग सहित, मांहे मलीने जोगवे ठे, ते बाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ८ ॥ एटले उपचरित व्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६०३ त्रीजो अशुक्रव्यवहार नय कहे ठे. कोइ जीव, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाही, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, इ

त्यादिक अनेक प्रकारें विवाह, वाजिम, व्यापार वाणिज्यरूप करणी, ऋजु सूत्रना उपयोग सहित करे, ते अशुभव्यवहारनय जाणवो ॥ १ ॥ अने तेनी चिकाशें अशुभकर्मरूप दळीयानुं ग्रहण करवुं, ते ग्रहवारूप व्यवहार नय जाणवो ॥ २ ॥ एटले ए अशुभव्यवहारनयें करी जीव, कर्मरूप दळी यांने ग्रहण करीने प्रकृतिरूप सत्तापणे वांधे, ते संग्रहनयने मत्तें व्यवहार रूप जाणवां ॥३॥ अने नैगमनयने मत्तें जे अतीतकालें दळीयां ग्रह्यां हतां अने अनागतकालें जोगवशे, तथा वर्तमानकालें सत्तायें रखां ठे, ते नैगम नयें जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दळीयां स्थितिपाकें व्यवहारनयने मत्तें उद यरूपजावें समकेती जीव उदासपणे न्यारा रहीं जोगवे ठे, ते जोगववा रूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥५॥ तथा मिथ्यात्वी जीव, तो ते दळी यांने ऋजुना उपयोग सहित, मांहे मळीने जोगवे ठे, ते बाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥६॥ एटले अशुभव्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६०७ चोथो शुभव्यवहारनय कहे ठे:-कोइ जीव, दान, शीयल, तप, ज्ञाव, करुणा, दया, यत्न, सेवा, जक्ति, पूजा, प्रभावना, इत्यादि अनेक प्रकारें ऋजुना उपयोग सहित करणी करे ठे, ते शुभव्यवहारनय जाणवो ॥ १ ॥ तथा तेनी चिकाशें शुभकर्मरूप दळीयानुं ग्रहण करवुं, ते ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥२॥ एटले ए शुभव्यवहारनयें करी जीवें कर्म रूप दळीयाने ग्रहण करी प्रकृतिरूप सत्तापणे वांध्यां, ते संग्रहनयने मत्तें ठे, पण व्यवहाररूप जाणवां ॥३॥ तथा नैगमनयने मत्तें अतीतकालें द लीयानुं ग्रहणकखुं हतुं अने आवते कालें जोगवशे तथा वर्तमानकालें सत्तायें रखां ठे, ते नैगमनयने मत्तें व्यवहाररूप जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दळीयां स्थितिपाकें उदयरूपजावे समकेती जीव, उदासपणे न्यारा रहीं जोगवे ठे, ते जोगववारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥५॥ अने मिथ्या त्वीजीव, ऋजुसूत्रना उपयोग सहित मांहे मळीने जोगवे ठे, ते बाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ६ ॥ एटले शुभव्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय जाणवा.

६११ पांचमा अनुपचरित व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे ठे. कोइ जीव, ऋजु सूत्रना उपयोगें अजाणपणे शरीरादि ड्रव्यकर्मरूप परवस्तु ते पो

ताथी प्रत्यक्षपणे जूदी ठे, तेने जीव, अज्ञानने वशें करी पोतानी करी जाणे ठे तेने पोताना शरीरने विषे जीवबुद्धि ठे, ते अनुपचरित व्यवहारनयें कर्त्ता जाणवो ॥ १ ॥ तथा ते अशुभयोगें करी व्यवहारनयने मत्तें कर्मरूप दक्षीयानुं ग्रहण करी बांधवुं, ते ग्रहवारूप व्यवहारनय जाणवो ॥ २ ॥ अने ते दक्षियां प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, ते संग्रहनयने मत्तें कर्मसत्ता रूप ठे, पण व्यवहारनयें जाणवां ॥३॥ तथा नैगमनयने मत्तें अतीतकालें दक्षियां ग्रहां हतां अने अनागतकालें जोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें बंधरूप रक्षां ठे, ते नैगमनयने मत्तें व्यवहाररूप जाणवां ॥ ४ ॥ तथा ते दक्षियां स्थितिपाकें व्यवहारनयने मत्तें समकेती जीव, उदयरूपजावें उदासपणे न्यारा रही जोगवे ठे, ते जोगवारूप कोरो व्यवहारनय जाणवो ॥५॥ अने मिथ्यात्वी जीव, ऋजुसूत्रना उपयोग सहित मांहे मळीने जोगवे ठे, ते बाधकरूप व्यवहारनय जाणवो ॥ ६ ॥ एटले अनुपचरित व्यवहारनयमां नैगम, संग्रह, व्यवहार अने ऋजुसूत्र, ए चार नय जाणवा. ए रीतें अशुभव्यवहारनयनो मूलजैद एक, तेना उत्तरजैद पांच क्हा. ए अशुभ व्यवहारनयनो विचार, सर्व प्रथमना नैगमादिक चार नयमां जाणवो.

६१६ हवे शुद्धव्यवहारनयनुं स्वरूप कहे ठे. शब्दनयने मत्तें समकेत जावथी मांमीने यावत् बछा, सातमा गुणगणा पर्यंत साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ए सर्व शुद्धव्यवहारनयें वर्त्ते ठे. तेमां पांच नय पामीयें, ते आवी रीतें:-प्रथम संग्रहनयने मत्तें सिद्ध समान पोताना आत्मानी सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप ठे. बीजे नैगमनयने मत्तें आठ रुचक प्रदेश सदा कालसिद्ध समान निर्मला ठे. त्रीजे व्यवहारनयने मत्तें उपरथकी गुणगणां माफक पोतानी करणी करे ठे, चोथे ऋजुसूत्रनयने मत्तें संसार उदासी वैराग्यरूप परिणाम वर्त्ते ठे, पांचमे शब्दनयने मत्तें जीव अजीवरूप स्वपरनी वेंचण करी जेवी हती, तेवीज शुद्धनिर्मल पोताना आत्मानी प्रतीति करी ठे. ए रीतें अनेमकेत जावथी मांमीने यावत् बछा सातमा गुणगणा पर्यंत उपरथकी व्यवहारदृष्टियें जोतां एक शब्दनय कहीयें अने अंतरंग निश्चय दृष्टियें पांच नय जाणवा. ए शब्दनयने मत्तें शुद्धव्यवहारनुं स्वरूप कळुं.

६१७ समजिरूढ नयने मत्तें शुद्ध व्यवहार नयनुं स्वरूप उलखावे ठे. ए समजिरूढ नयने मत्तें आठमा नवमा गुणगणार्थी मांमीने यावत् तेर

मा चौदमा गुणगणा पर्यंत केवली जगवान् ते शुरु व्यवहारनये वत्ते ठे, तेमां ठ नय पामीये. ते आवी रीतेः- संग्रहनयने मते सिद्ध समा न पोताना आत्मानि सत्ता आगल उलखी हती, तेवी शुरु निर्मल पणे प्रगट करी ठे ॥ १ ॥ अने नैगम नयने मते आठ रुचकप्रदेश आगल निरावरण हता, ते तेवाने तेवांज वत्ते ठे ॥ २ ॥ तथा व्यवहार नयने मते अंतरकरणीरूप स्वरूपमां रमवारूप क्रिया करे ठे अने बाह्यकरणीरूप क्रिया पण साचवे ठे ॥ ३ ॥ तथा ऋजुसूत्र नयने मते शुरु उ पयोगमां वत्ते ठे ॥ ४ ॥ शब्दनयने मते द्वायिक सम्यक्त्वरूप गुण प्र गढ्यो ठे, ते पण पोतानी पासें ठे ॥ ५ ॥ तथा समजिरूढ नयने मते शुक्लध्यानरूप श्रेणी जावना बीजा त्रीजा पाया अंतरालें रखा वत्ते ठे, ॥ ६ ॥ ए रीते श्रेणीजाव पर्यंत केवली जगवानना स्वरूपमां उपरथकी व्यवहारदृष्टियें जोतां तो एक समजिरूढनय कहीये अने अंतरंग निश्चय दृष्टियें जोतां तो ठ नय जाणवा. ए रीते शब्दसमजिरूढनयने मते शुरु व्यवहारनयनुं स्वरूप जाणवुं.

६३ए शुरु निश्चय व्यवहारनुं स्वरूप कहे ठे. एटले शुरु निश्चय नय कार्य तो जे एवंचूत नयने मते अष्ट कर्मने द्यये अष्ट गुण संपन्न लोकने अंते बिराजमान सादि अनंतमे जांगे वर्चता एवा सिद्ध परमात्मा ते शुरु निश्चय नय जाणवा. तेमां साते नय पामीये. तिहां नैगमनयने मते सिद्ध परमात्माने आठ रुचक प्रदेश, अतीतकालें निरावरण हता, तथा आवते कालें निरावरण वर्चशे अने वर्त्तमान कालें पण निरावरण वत्ते ठे. बीजे संग्रह नयने मते पोताना आत्मानि सत्ता अंतरंग शुरु निर्मलपणे जे वी हती, तेबीज निरावरणपणे प्रगट करी ठे. त्रीजे व्यवहार नयने म ते पलटण स्वजावें समय समय नवनवा झेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उ त्पाद व्यय अइ रह्यो ठे. चोथे ऋजुसूत्र नयने मते सिद्ध परमात्मा पोता ना पारिणामिकजावें रखा सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वत्ते ठे, पांचमे शब्दनयने मते आगल जीव अजीवनी वेंचण करी द्वायिक समकेतरूप गुण प्रगढ्यो ठे, ते पण पोता पासें ठे, षष्ठे समजिरूढ नय ने मते अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी ठे, ते पण पोतानी पासें ठे. सातमे एवंचूत नयने मते सिद्ध परमात्मा अष्ट कर्मने द्यये अष्ट गुण प्र

गट करी,लोकने अंतें विराजमान वत्तें ठे. ए रीतें सिद्धना स्वरूपमां अंतरंग दृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय पामीयें अने उपरथकी व्यवहार दृष्टियें जोतां तो एक एवंचूतनय जाणवो. ए रीतें निश्चय व्यवहारनुं स्वरूप सामान्य प्रकारें करी जाणवुं.

हवे द्रव्यजावनुं स्वरूप साते नयें उल्लखवा रूप लखीयें ठैयें.

६४० तिहां प्रथम द्रव्यनुं स्वरूप उल्लखवा रूप ठे. नैगम अने संग्रहनयें करी सर्व जीवद्रव्य, सत्तायें एकरूप ठे, तेने प्रथम सत्तारूप द्रव्य कहीयें. हवे वीजुं कर्मरूप द्रव्य उल्लखावे ठे. जे जीवने प्रकृतिरूप सत्तायें शुजा शुज कर्मनां दळीयां वांध्यां ठे, तेने पण नैगम अने संग्रह नयने मत्तें करी कर्मसत्तारूप द्रव्य कहीयें. वीजुं व्यवहारनपने मत्तें ते दळीयांनो उदय थ यो, ते उदयजावरूप द्रव्य कहीयें ते जोगववा रूप द्रव्य जाणवुं. चोथुं व्यवहारनयने मत्तें अनुपयोगें समूर्धिम प्रायः शुजाशुज रूप करणी कर वी, ते चोथुं करणीरूप द्रव्य जाणवुं. पांचमुं ऋजुसूत्रनयने मत्तें उपयो ग सहित शुजाशुज परिणामें करी कर्मनां दळीयांनुं ग्रहण करवुं, ते पांचमुं कर्म ग्रहवारूप द्रव्य जाणवुं. ठठुं वली पण ऋजुसूत्रनयने मत्तें शुजा शुज परिणामें करी उपरथकी जे करणी करवी, ते करणीरूप द्रव्य जाणवुं. ते पण बाधकरूप द्रव्य जाणवुं. सातमुं शब्दनयने मत्तें ऋजुसूत्रना उप योग सहित चोथा गुणठाणाथी मांकी यावत् ठठा सातमा गुणठाणा पर्यंत उपरथकी करणी करवी, ते साधकरूप द्रव्य जाणवुं. आठमुं ते जीवने अंतर करणीरूप उपयोग वत्तें ठे, ते उपरला नयनी अपेक्षायें तेने साधक रूप द्रव्य कहीयें. नवमुं वली समजिरूढ नयने मत्तें ऋजुसूत्रना उप योग सहित जे जीव, श्रेणीजावें केवली प्रमुख वत्तें ठे, ते उपर थकी करणी करे ठे, ते पण साधकरूप द्रव्य जाणवुं अने दशमुं अंतरंग श्रेणी रूप करणी करे ठे, ते पण उपरला नयनी अपेक्षायें जोतां साधकरूप द्रव्य कहीयें. अगीथारमुं जे जीव, एवंचूतनयने मत्तें लोकने अंतें वत्तें ठे, एवा सिद्ध परमात्माने पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय थइ रह्यो ठे, ते अंतरकरणीरूप द्रव्य जाणवुं. ए सात नयें करी द्रव्यनुं स्वरूप कळुं.

६४५ हवे सात नयें करी जावनुं स्वरूप कहे ठेः—प्रथम नैगम अने संग्रह नयने मत्तें जे जीवने सत्तायें कर्मनां दळीयां वांध्यां ठे, तेने उदय थयो, ते

कर्मउदयरूप जाव जाणवो. वीजो ऋजुसूत्रनयने मत्तें शुचाशुच परिणामें करी जे कर्मरूप दलीयांनुं ग्रहण करवुं, ते कर्मग्रहवारूप जाव जाणवो. त्रीजो शब्दनयने मत्तें ऋजुसूत्रना उपयोग सहित खपरनी वेंचण करी जीव अजीवने जूदा जूदा वेंचवा, ते साधकरूप जाव जाणवो. चोथो स मज्जिरूढ नयने मत्तें श्रेणीजावें जे जीव वर्ते ठे, ते पण हेठला नयनीअ पेहायें साधकरूप जाव जाणवो. पांचमो एवंचूतनयने मत्तें जे जीवने अव्यावाधसुख प्रगटशुं, ते स्वरूपजोगीरूप जाव जाणवो.

हवे निश्चय अने व्यवहार ए वे मूलनय ठे, तेणें करी जाणवारूप नवतत्व पट्ट डव्यनुं स्वरूप लखीयें ठैयें.

६५१ प्रथम जीवादि ठ तत्त्वनुं स्वरूप कहे ठेः—निश्चयनयें करी सर्व जीव सत्तायें एकरूप सरखा सिद्ध समान शाश्वता ठे अने व्यवहारयें करी जीवनी अनेक ज्ञांती देवता, नारकी, तिर्यच, मनुष्यरूप जाणवी. तथा कोइ जीव, शुचपरिणामें करी पुण्यरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें. ते निश्चयनयें करी ठांरुवा योग्य ठेअनेव्यवहार नयें करीआदर वा योग्य ठे. वली कोइ जीव अशुच परिणामें करी पापरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें, ते निश्चयनयें करी ठांरुवा योग्य ठे, अने व्यवहारनयें करी पण ठांरुवा योग्य कहीयें. एटले जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव अने वंध, ए ठ तत्त्वमां निश्चय व्यवहार नय कहेवाणा.

६५२ हवे सातमा संवर तत्त्वनुं स्वरूप कहे ठेः—व्यवहारनयें करी संवरनुं स्वरूप ते निवृत्ति प्रवृत्तिरूप चारित्र जाणवुं अने निश्चयनयें करी तो पोताना स्वरूपमां रमण करवुं, ते संवर जाणवुं.

६५३ हवे आठमा निर्झारातत्त्वनुं स्वरूप कहे ठेः—व्यवहारनयें करी निर्झाराना वार जेद जाणवा अने निश्चयनयें करी निर्झारानुं स्वरूप तो, सर्व प्रकारें झ्णानो रोध करी समताजावें प्रवर्तवुं ते जाणवुं.

६५४ हवे मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप कहे ठे. व्यवहारनयें करी मोक्ष, तो तेरमे, चौदमे गुणठाणें केवलीने कहीयें अने निश्चयनयें मोक्षपद ते सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान एवा सिद्ध परमात्माने जाणवो. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप निश्चय अने व्यवहार नयें करी धारवुं.

६६० षट्ट डव्यनुं स्वरूप निश्चय व्यवहाररूप नयें करी उलखावे ठे. ते

मां प्रथम जीवद्रव्यनुं स्वरूप तो आगल कखुं, ते रीतें जाणवुं तथा धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्यनुं स्वरूप साथे कहे ठे. तिहां निश्चयनयथकी ए बे द्रव्य लोकव्यापी खंध असंख्यात प्रदेशरूप शाश्वतो ठे अने व्यवहार नयें करी ए बे द्रव्यना देश, प्रदेश अने अगुरुलघु जाणवा. हवे आकाशास्तिकाय द्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे. तिहां निश्चयथकी तो आकाशास्तिकायनो खंध लोकालोकव्यापी अनंतप्रदेशी शाश्वतो ठे, तथा व्यवहारनयें करी देश, प्रदेश अने अगुरुलघु जाणवा. हवे काल द्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे. निश्चयथकी कालद्रव्यनो एक समय ते सदाकालें लोकमां शाश्वतो वर्त्ते ठे अने व्यवहार नयें करी काल ते उत्पादव्ययरूप पलटण स्वभावें जाणवो. हवे पुजल द्रव्यनुं स्वरूप कहे ठे. निश्चयनयें करी पुजल द्रव्यना अनंता परमाणुआ लोकमां सदाकाल शाश्वता वर्त्ते ठे अने व्यवहारनयें करी पुजलना खंध सर्वे अशाश्वता जाणवा. ए रीतें निश्चय अने व्यवहारथकी षट् द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे नैगमादि सात नयें करी सर्व वस्तुनुं जाणपणुं कराववानो जिन दास नामा शेठ, श्रावकपुत्र प्रत्यें प्रश्न पूठे अने श्रावकपुत्र, जिनदास शेठने उत्तर आपे ठे. एवी रीतना व्याख्यानरूपें कहे ठे:-

६६१ जिनदास शेठ:-सात नयमां नैगमनयें करी षट् द्रव्यनुं स्वरूप जाणवामां प्रथम नैगमनयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्र:-नैगमनयने मतें धर्मास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगम नयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने षकरूपपणे माने ठे, एटले अतीतकाले धर्मास्तिकाय एवुं नाम हुतुं अने अनागतकाले धर्मास्तिकाय एवुं नाम रहेशे, तथा वर्त्तमानकालें पण धर्मास्तिकाय एवुं नाम वर्त्ते ठे.

६६२ जिनदास:-संग्रह नयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्र:-ए नयना मतवालो, सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे संग्रह नयने मतें असंख्यात प्रदेशरूप सत्ता सहित ते धर्मास्तिकाय कहीयें.

६६३ जिनदास:-व्यवहार नयें करी धर्मास्तिकायनुं स्वरूपकेमजाणीयें ?

श्रावकपुत्र:-ए नयना मतवालो जेवो उपरथकी देखे, तेवो जेद वेहेंचे, माटे व्यवहार नयने मतें खंध, देश, प्रदेशरूप धर्मास्तिकाय जाणवो.

६६४ जिनदास:-ऋजुसूत्रनयने मतें धर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकजाव ग्रहे ठे, माटे जावथकी धर्मास्तिकाय अनेक जीव पुजलने चलनसहायरूप जावपणे परिणामे ठे, ए रीतें धर्मास्तिकायमां चार नय जाणवा.

६६५ जिनदासः—नैगमनयने मत्तें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मत्तें अधर्मास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगम नयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने ठे. एटले अती तकालें अधर्मास्तिकाय एवुं नाम हतुं अने अनागत कालें पण अधर्मास्तिकाय एवुं नाम वर्त्तेशे, तथा वर्त्तमान कालें पण ए नाम वर्त्ते ठे

६६६ जिनदासः—संग्रहनयने मत्तें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सात्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे संग्रहनयने मत्तें अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशरूप सत्ता सहित लोकमां सदा काल शाश्वतो वर्त्ते ठे.

६६७ जिनदासः—व्यवहारनयने मत्तें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जेवो उपरथकी देखे, तेवो जेद वेहेंचे, माटे व्यवहारनयने मत्तें खंधे, देश, प्रदेशरूप अधर्मास्तिकाय जाणवो.

६६८ जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मत्तें अधर्मास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकजाव ग्रहे ठे, माटे जावथकी अधर्मास्तिकाय अनेक जीव पुजलने स्थिरसहायरूप जावपणे परिणामे ठे, ए रीतें अधर्मास्तिकायमां चार नय जाणवा,

६६९ जिनदासः—आकाशास्तिकायमां नैगमनयनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मत्तें आकाशास्तिकाय एवुं नाम कहीयें. केम के नैगमनयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने ठे. एटले अतीतकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम हतुं अने अनागतकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम रद्देशे, तथा वर्त्तमानकालें आकाशास्तिकाय एवुं नाम वर्त्ते ठे.

६७० जिनदासः—संग्रहनयने मत्तें आकाशास्तिकायनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे. माटे संग्रहनयने मत्तें अनंत प्रदेशरूप सत्ता सहित ते आकाशास्तिकाय ड्रव्य कहीयें.

६७१ जिनदासः—व्यवहारनयने मत्तें आकाशास्तिकायनुं स्वरूप केमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जेवो उपरथी देखे, तेवो जेद वेहेंचे,

माटे व्यवहार नयने मते खंध, देश, प्रदेशरूप आकाशास्तिकाय जाणवो.
६९२ जिनदासः—ऋजुसूत्रनयनेमते आकाशास्तिकायतुं स्वरूप केमजाणीये?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिक जाव ग्रहे ठे, माटे जाव थकी आकाशास्तिकाय अनेक जीव पुजलने अवगाहनारूप जावपणे परिणमे ठे. ए रीते आकाशास्तिकायमां चार नय जाणवा.

६९३ जिनदासः—नैगमनयने मते कालद्रव्यतुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मते काल एतुं नाम कहीये. केम के नैगमनयना मतवालो त्रणे काले वस्तुने एकरूपपणे माने ठे, एटले अतीतकाले काल एतुं नाम हतुं, तथा अनागतकाले पण काल एतुं नाम रदेशे अने वर्तमानकाले काल एतुं नाम वर्ते ठे.

६९४ जिनदासः—संग्रहनयने मते कालद्रव्यतुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्ताने ग्रहे ठे, तेमाटे संग्रह नयने मते कालनो एक समय, सत्तारूप सदाकाल लोकमां शाश्वतो वर्ते ठे,

६९५ जिनदासः—व्यवहार नयने मते कालद्रव्यतुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—व्यवहार नयने मते कालना त्रण जेद कहीये, तिहां अतीत काल ते अनंता समय गया अने अनागत काल ते अनंता समय आ वशे, तथा वर्तमान काल ते एक समय वर्ते ठे, एम अनेक जेद जाणवा.

६९६ जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मते कालतुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकजाव ग्रहे ठे, माटे ए नयने मते कालद्रव्य जीव, अजीवरूप सवे वस्तुमां नवी पुराणी वर्तनारूप जावपणे सदाकाल परिणामी रह्यो ठे, ए रीते कालद्रव्यमां चार नय जाणवा.

६९७ जिनदासः—नैगमनयनेमतेपुजलास्तिकाय द्रव्यतुं स्वरूपकेमजाणीये ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मते पुजलास्तिकाय एतुं नाम कहीये, कारण के नैगमनयना मतवालो त्रणे काल वस्तुने एकरूपपणे माने ठे, एटले अतीतकाले पुजलद्रव्य एतुं नाम हतुं तथा अनागतकाले पण पुजल द्रव्य एतुं नाम रदेशे अने वर्तमान काले ते नाम वर्ते ठे.

६९८ जिनदासः—संग्रहनयने मते पुजलद्रव्यतुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे संग्रहनयने

मते पुञ्जलद्रव्यनो सत्त्वरूप एकपरमाणु, एवा अनंतपरमाणुश्चा लोकमां सदाकाल शाश्वता वर्त्ते ठे,

६५९ जिनदासः—व्यवहारनयने मते पुञ्जलद्रव्यनुं स्वरूपकेमजाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेवुं स्वरूप देखे, तेवा जेद वेहेंचे. माटे व्यवहारनयने मते पुञ्जलना बे जेद कहीये. एक खंध बीजा पर माणुश्चा, ते वली खंधना बे जेद, एक तो जीवने लाग्या ते जीव सहित खंध जाणवा, बीजा जीव रहित अजीवरखंध ते घडा प्रमुखना जाणवा. तथा वली जीव सहित खंधना बे जेद, एक सूक्ष्म अने बीजा बादर, तेमां सूक्ष्म ना चार जेद ते ज्ञाषा, उद्धास, मन अने कर्मण ए चार, वर्गणारूप जाण वा. तथा बादरना चार जेद ते श्रौदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तैजस ए चार वर्गणारूप जाणवा. तिहां प्रथम जे चार वर्गणा सूक्ष्म कही, तेमां चार फरस, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, ए शोल गुण जाणवा. तथा बा दर चार वर्गणामां पांच वर्ण, पांच रस, आठ फरस अने बे गंध, ए वीश गुण जाणवा. अने एक परमाणुश्चामां बे फरस, एक वर्ण, एक रस, एक गंध, ए पांच गुण जाणवा. ए रीते व्यवहारनय उपरथकी देखे, तेवा जेद वेहेंचे

६६० जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मते पुञ्जलद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिक ज्ञाव ग्रहे ठे, माटे एने मते पुञ्जल परमाणुश्चाने मांहोमांहे अनादिकालनुं मलवाविखररूप पूर्ण गल नज्ञावरूप परिणामिकपणुं वर्त्ती रहुं ठे, ए पुञ्जल द्रव्यमां चार नय जाणवा.

६६१ जिनदासः—नैगमनयने मते जीवद्रव्यनुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयना मतवालो एक अंश ग्रहीने सर्व वस्तुसंपूर्णपणे माने, एटले सर्व जीवनी चेतना अक्षरने अनंतमे ज्ञागे उघाडी ठे, तिहां कर्म आवरण लागतां नथी, माटे नैगमनयने मते सर्व जीव एकरूप कहिये.

६६२ जिनदासः—संग्रहनयने मते जीवनुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, एटले सर्व जीवनी सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप एक समान (सरखी) ठे, माटे संग्रहनयने मते करी सर्वजीव सत्ताये एकरूप जाणवा.

६६३ जिनदासः—व्यवहार नयने मते करी जीवनुं स्वरूप केम जाणीये ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेवुं स्वरूप देखे, तेवा जेद

वेहेंचे, माटे व्यवहारनयने मते करी जीवना बे जेद. तेमां एक तो सकल कर्म ह्य करी लोकने अंतें बिराजमान थयेला सिद्ध जीव जाणवा, अने बीजा संसारी जीव जाणवा. ते संसारी जीवना वली बे जेद, एक तो चौ दसा गुणठाणाना जीव अयोगी अने बाकी बीजा सर्व सयोगी जाणवा. ते सयोगीना बे जेद, एक तेरमा गुणठाणाना जीव ते केवली जगवान् अने बाकी बीजा सर्व उन्नस्थ, ते उन्नस्थना वली बे जेद, एक बारमा गुणठाणावाला हीणमोही अने बाकी बीजा उपशांतमोही, ते उपशांतमोहीना बे जेद, एक अमीथारमा गुणठाणाना जीव ते अकषायी अने बाकी बीजा सर्वे सकषायी, ते सकषायीना बे जेद, एक दशमा गुणठाणाना जीव ते सूक्ष्म कषायी अने बीजा सर्वे बादरकषायी, ते बादरकषायीना बे जेद, एक आठमा नवमा गुणठाणाना जीव ते श्रेणीप्रतिपन्न अने बाकी बीजा श्रेणीरहित ते श्रेणीरहितना वलि बे जेद एक सातमा गुणठाणाना जीव ते अप्रमादी अने बाकी बीजा सर्वे प्रमादी, ते प्रमादीना बे जेद, एक सर्वे विरति, बीजा देशविरति, ते देशविरतिना बे जेद, एक विरतिपरिणामवाला, बीजा अविरतिपरिणामवाला जीव, ते अविरतिना बे जेद, एक अविरतिसमकेती, बीजा मिथ्यात्वी, ते मिथ्यात्वीना बे जेद, एक जव्य, बीजा अजव्य, जव्यना बे जेद, एक गंठीजेदी, बीजा गंठी अजेदी, ए रीतें व्यवहार नयना मतवालो जेवा देखे, तेवा जेद वेहेंचे.

वली प्रकारांतरे जीवना बे जेद, एक त्रस अने बीजा स्थावर, तेमां पृथ्वी, अप्, तेज, वायु अने वनस्पति, ए पांच प्रकारना स्थावर, जीव ते पांच सूक्ष्म अने पांच बादर मली दश जेद थाय. ते वली पर्यासा अने अपर्यासा मली बीश जेद थाय. तथा तेनी साथें प्रत्येक वनस्पतिनो एक जेद पर्यासो अने बीजो जेद अपर्यासो मेलवतां बावीश जेद स्थावरना थाय. हवे त्रस जीवना जेद कहे ठे. देवता, नारकी, तिर्यच अने मनुष्य, ए सर्व जीवना मूल चार जेद ठे, तेमां देवताना नवाणुं जेद पर्यासा अने नवाणुं अपर्यासा मली १५७ जेद ठे, तथा साते नारकीना सात पर्यासा अने सात अपर्यासा मली चौद जेद थाय. तथा मनुष्यना एकशो एक, क्षेत्रना १०१ पर्यासा, १०१ अपर्यासा, अने १०१ संमूर्द्धिम, ए रीतें सर्वे मली ३०३ जेद थाय. तथा बेंद्रिय, तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय, ए त्रण विकलेंद्रिय

तिर्यचना पर्यासा तथा अपर्यासा करतां ष जेद थाय. तथा पंचेंद्रिय तिर्यच
ना एक जलचर, बीजा चतुष्पद, त्रीजा उरःपरिसर्प, चोथा जुजपरिसर्प अ
ने पांचमा खेचर, ए पांच संमूर्धिम अने पांच गर्जज मली दश जेद थाय.
ते वली दश पर्यासा अने दश अपर्यासा मली बीश जेद थाय. ए रीतें ३३
जेद स्थावरना, १९७ देवताना, १४ नारकीना, ३०३ मनुष्यना, ६ विकलेंद्रि
यना, ३० पंचेंद्रिय तिर्यचना, मली ५६३ जेद व्यवहारनयने मत्तें जाणवा.

६७४ जिनदासः—ऋजुसूत्र मयने मत्तें जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिक जाव ग्रहे ठे, माटे जे सम
य जे उपयोगरूप परिणाम वत्तें, ते समय ते जीवने तेवो कही बोलावे,
एटले एणे इंद्रियादिक जेद सर्वे टाळ्या, पण ज्ञान अज्ञाननो जेद न टाळ्यो.

६७५ जिनदासः—शब्दनयने मत्तें जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो जीवना समकेतजाव ग्रहण करे ठे,
माटे जीव अजीवरूप स्वरूपनुं जाणपणुं करी शुद्ध निर्मलपणे पोताना आ
त्मानी जेणें प्रतीति करी ठे, तेने शब्दनयना मतवालो जीव कही बोलावे.

६७६ जिनदासः—समजिरूढ नयने मत्तें जीव कोने कहीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो श्रेणीजाव ग्रहण करे ठे, माटे जेणें
शुद्ध शुक्लध्यान रूपातीत परिणाम रूपक श्रेणीयें घाती कर्मने चूरी अनंत
चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, तेने समजिरूढ नयने मत्तें जीव कहीयें. ए
टले ए नयवालो तेरमे, चौदमे गुणठाणे केवलीजगवानने जीव कही बोलावे.

६७७ जिनदासः—एवंचूतनयने मत्तें जिननुं स्वरूप केम जाणियें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो संपूर्ण जावरूप वस्तु माने ठे, माटे
जे सकल कर्मने क्षयें अनंत गुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें
विराजमान अव्याबाध सुखना जोगी थया, तेने जीव कही बोलावे, एट
ले ए नयने मतवाले सिद्धि अवस्थामां जे गुण हता, ते इहां ग्रहण क
ख्या. ए रीतें षट् ड्रव्यनुं स्वरूप साते नयें करी बताव्युं.

६७८ हवे जिनदास शेष पूठे ठे के साते नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप
केम जाणीयें ? तेवारें श्रावकपुत्र कहे ठे के आगल षट् ड्रव्य रूप जीव तत्व
अने अजीवतत्त्वनुं स्वरूप तो बताव्युं, शेष सात तत्त्वनुं स्वरूप सात नयें
करी देखाडतां प्रथम त्रीजा पुण्यतत्त्वनुं स्वरूप नैगमनयें करी कहुं हुं.

६ए६ जिनदासः—पुण्यादिक सात तत्त्वतुं स्वरूप सातनयेंकरी केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—कोइ जीवें ऋजुसूत्र नयने मत्तें शुद्ध परिणामें करी व्यवहारनयने मत्तें पुण्यरूप आ वनां दलीयां ग्रहण करी संग्रह नयने मत्तें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, तेने अजीव कहीयें अने ते दलीयां नैगम नयने मत्तें करी त्रणें काल एकरूपपणे जाणवां, ए रीतें ऋजुसूत्र, व्यवहार, संग्रह अने नैगम, ए चार नयें करी जे जीवें ड्रव्यपुण्य उपाज्युं, तेमां पुण्य, अजीव, आश्रव अने बंध, ए चार तत्व जाणवां. अने जावपुण्य तो ते पुण्यनां दलीयां शब्दनयने मत्तें स्थितिपाकें उदयरूप जावें प्रगट्यां, तथा समञ्जिरूढनयने मत्तें सर्वपर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तु प्रत्यें पाम्यो अने एवंभूतनयने मत्तें ते पुण्यपर्यायरूप सर्व वस्तु जीवें जोगववा मांणी, एम साते नयें करी पुण्यतुं स्वरूप जाणवुं.

हवे पापतुं स्वरूप,साते नयें करी कहे ठे. कोइ जीवें, ऋजुसूत्र नयने मत्तें अशुद्ध परिणामें करी व्यवहार नयने मत्तें पापरूप आश्रवनां दलीयांने ग्रहण करी संग्रहनयने मत्तें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां, तेने अजीव कहीयें. अने ते दलीयां नैगमनयने मत्तें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. एम चार नयें करी जे जीवें ड्रव्यपाप उपाज्युं, तेमां पाप, आश्रव, अजीव अने बंध, ए चार तत्व जाणवां अने जावयकी पाप तो ते दलीयां शब्दनयने मत्तें स्थितिपाकें उदयरूपजावें प्रगट्यां अने समञ्जिरूढ नयने मत्तें सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें पाम्यो, तथा एवंभूतनयने मत्तें करी पाप पर्यायरूप सर्व वस्तु, जीवें जोगववा-मांणी, एम साते नयें करी पापतुं स्वरूप जाणवुं.

हवे साते नयें करी संवर अने निर्झरानुं स्वरूप देखे ठे. कोइजीवने संवररूप व्रत लेवानो मनमां अंश उपन्यो, तेने नैगम नयना मतवालो संवर करी माने अने संग्रह नयना मतवालो. संवररूप श्रावकनां बार व्रत अथवा साधुनां पांच महाव्रतरूप संवर अंगीकार करे, तेवारें तेने संवर करी माने, तथा व्यवहारनयना मतवालो संवररूप आचार, व्यवहार, क्रियामां प्रवर्त्ततो देखे, तेने संवर करी माने. तथा ऋजुसूत्र नयना मतवालो मन,वचन, कायायें करी एकचित्तें त्याग वैराग्यरूप परिणामें वनें, तेने संवर करी माने, एटले ए चार नयें करी ड्रव्यसंवर जाणवुं.

अने जावसंवर तो शब्दनयने मत्तें स्वसत्ता परसत्ता रूप जीव, अजीव, नव तत्त्व, षट् द्रव्यनुं स्वरूप जाणे, ते जीव, समञ्जिरूढ नयने मत्तें श्रेणीजावें चढतां जीवसत्ताने ध्यावे, अजीवसत्तानो त्याग करे, शुद्ध, शुद्ध ध्यान, रूपातीत परिणामें करी स्वरूपमां रमे, तेवारेंतेने संवर कहीयें. अने एवी रीतें संवरमां रहे, तिहां सुधी समय समय अनंती निर्झारा करे. ए रीतें निर्झारा थड, तेवारें एवंभूतनयने मत्तें सकल कर्मने द्ययें मोक्षपद पाम्यो, एम साते नयें करी संवर निर्झारानुं स्वरूप जाणवुं.

हवे मोक्षनिःकर्मा अवस्था ते सिद्धिरूप कार्य तेमां सात नय, कार्य रूपें देखाडे ठेः— प्रथम नैगमनयने मत्तें सिद्ध परमात्माना आठ रुचक प्रदेश अतीतकालें निरावरण हता, अने अनागत कालें पण निरावरण वर्तेशे, तथा वर्तमानकालें पण निरावरण वर्तें ठे. ए रीतें त्रणे काल एक रूपपणे जाणवा. तथा संग्रहनयने मत्तें पोताना आत्माना सत्ता अंतरंग शुद्ध निर्मलपणे जेवी हती, तेवीज निरावरण पणे प्रगट करी ठे, तथा व्यवहार नयने मत्तें सिद्धने पलटणस्वजावें समय समय नवनवा झेयनी वर्तनारूप पर्यायनो उत्पाद व्यय थड रह्यो ठे, तथा ऋजुसूत्र नयने मत्तें सिद्ध परमात्मा पोतानां पारिणामिक जावमां रह्या, सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वर्तें ठे, तथा शब्दनयने मत्तें आगल जीव अजीव रूप स्वसत्ता परसत्तानी वेहेंचण करी द्वायिक समकेतरूप गुण प्रगट्यो, ते पण पोतानी पासें ठे, तथा समञ्जिरूढनयने मत्तें शुद्धध्यानरूप श्रेणीयें चढी अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते पण पोतानी पासें ठे, तथा एवंभूतनयने मत्तें सिद्ध परमात्मा अष्ट कर्मने द्ययें अष्टगुण प्रगट करी, लोकने अत्तें बिराजमान वर्तें ठे. ए रीतें सिद्धना स्वरूपमां अंतरदृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय पामीयें. ए प्रमाणें षट् द्रव्य नव तत्त्वनुं स्वरूप साते नयें करी बालजीवने समजणरूप जाणवुं.

हवे ए नव तत्त्व उपर सात नय उतारे ठे.

७७३ जिनदास शेटः—सात नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगम अने संग्रह नयना मतवालो अंश तथा सत्ताने ग्रहण करे ठे, माटे ए नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने बोळ्यो जे एक तत्त्व ठे, तेवारें व्यवहार नयवालो वेहेंचण करीने बोळ्यो जे एक जीव

तत्त्व, बीजुं अजीवतत्त्व, ए रीतें बे प्रकारनां तत्त्व जाणवां, तेवारें ऋजुसूत्र नयना मतवालो उपयोग दइने बोळ्यो जे कोइ जीव शुजाशुज परिणामें करी पुण्य पापरूप आश्रवनां दळीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें, एटले जीव, पुण्य, पाप, आश्रव, बंध, अने अजीव, एठ तत्त्व थयां. हवे शब्द स मजिरूढ नयना मतवालो बोळ्यो जे चोथा गुणठाणाची मांकी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत जीव, संवरजावमां वर्ततो महानिर्जारा प्रत्यें करे ठे. एम संवर तथा निर्जारा, ए बे तत्त्व कहां, एटले आठ तत्त्व थयां. वली एवंभूतनयने मते जे जीव, सकल कर्म दाय करी लोकने अंतें विरा जमान यथाख्यात चारित्ररूप गुणें करी पोताना स्वरूपमां रमण करे ठे, तेने जावमोक्षपद कहीयें. ए रीतें नव तत्त्वनुं स्वरूप सात नयें करी जाणवुं.

७०४ शिष्यः—देवतामां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, ऋजुसूत्रनयने मते शुजपरिणामें करी व्यवहार नयने मते पुण्यरूप दळीयानुं ग्रहण करे, ते संग्रह नयने मते प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां तथा नैगमनयने मते अतीत कालें ते दळीयां ग्रहां हतां अने अनागत कालें जोगवशे तथा वर्तमान कालें सत्तायें रहां वर्तें ठे, ए रीतें नैगम नयने मते त्रण काल एक रूपपणे जाणवां. एटले जे जीवें देवतानुं आयु बांध्युं ते प्राणी ए चार नयें करी ड्रव्य देव जाणवा. अने ते जीव, शब्दनयने मते देवतापणे उपन्या, तेने जावदेव कहीयें. इहां शिष्य पूठे ठे के शब्दनयना मतवालो तो चारे निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. माटे देवतामां चार निक्षेपा केम जाणीयें ? गुरुः—देव एतुं नाम, ते नामदेव जाणवो. तथा देव एवा अक्षर लखवा, ते असंज्ञाव स्थापना अने देवरूपें मूर्ति स्थापवी, ते संज्ञावस्थापना तथा आगल अनागत कालें चार नयें करी देवतानुं आयु बांध्युं, तेने ड्रव्यदेव कहीयें. तथा जे शब्दनयने मते देवतापणे उपन्यो ते उदयजावरूप जावदेव जाणवो. ए देवमां चार निक्षेपा कहा. हवे समजिरूढ नयना मतवालो कहे के जे देवताना जावना सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तु प्रत्यें पामे, तेने देव कहीयें. तेवारें एवंभूतनयना मतवालो कहे के ते सर्व पर्यायरूप वस्तु प्रत्यें तखतें बेठा जोगवे, ते देव जाणवा. ए रीतें सात नयें करी देव तापणुं जाणवुं.

५०५ शिष्यः—नारकी जीवमां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, ऋजुसूत्र नयने मतें अशुचपरिणामें करी व्यवहार नयने मतें पापरूप दलीयानुं ग्रहण करे, ते दलीयां संग्रहनयने मतें प्रकृतिरूप सत्तापणें बांध्यां अने नैगमनयने मतें ते दलीयां त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. ए रीतें जे जीवें नारकीनुं आउखुं बांध्युं, ते प्राणी ए चार नयें करी ड्रव्यनारकी जाणवा. पठी ते जीव, शब्दनयने मतें नारकी पणें उपन्यो, तेने ज्ञावनारकी कहीयें. इहां शिष्य पूढे ठे के शब्द नयना मतवालो तो चारे निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे ठे, माटे नारकीमां चार निक्षेपा केम जाणीयें ? तेवारें गुरु कहे ठे जे प्रथम नारकी एवुं नाम ते नामनारकी बीजो नारकी एवा अक्षर लखवा, ते असंज्ञावस्थापना, अने नारकीरूपें मूर्ति स्थापवी, ते सज्ञावस्थापना, ए बे प्रकारें स्थापना नारकी जाणवा. तथा त्रीजो जेणे आगल कह्या प्रमाणें चार नयें करी नारकीनुं आउखुं बांध्युं ठे, तेने ड्रव्य नारकी कहीयें. तथा चोथा शब्द नयने मतें ते जीव नारकीपणे जइ उपन्यो, ते उदयज्ञावरूप ज्ञावनारकी जाणवो. ए चार निक्षेपा नारकीने विषे कह्या. हवे समञ्जिरूढ नयना मतवालो कहे ठे, के नरक जवना सर्व पर्याय प्रवर्त्तनारूप वस्तुप्रत्यें मामे, ते नारकी जाणवो. तेवारें एवंचूत नयना मतवालो कहे के ते पाप पर्याय रूप सर्वे वस्तु दुःख रूप विपाकें करी जीवें जोगववा मांकी, तेवारें ते नारकी जाणवो. ए रीतें साते नयें करी नारकीपणुं जाणवुं.

५०६ शिष्यः—राजामां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—नैगमनयना मतवालो हाथ पगमां शुचलक्षण रेखा प्रमुख जो इने बोळ्यो जे आगल जतां आ पुरुष, राजा थारो, तेवारें संग्रह नयना मतवालो सर्वनो संग्रह करी बोळ्यो जे ए राजा न कहेवाय, परंतु जे राजाना कुलमां उपन्या, ते राजा कहेवाय, तेवारें व्यवहार नयना मतवालो बोळ्यो जे राजाना कुलमां तो घणा उपन्या पण जे शुवराजपदवी जोगवे ठे, ते राजा जाणवो. तेवारें ऋजुसूत्र नयना मतवालो उपयोग दइने बोळ्यो के एम राजा नही कहेवाय, परंतु राज्यकार्यना चिंतनरूप उपयोगमां जेना परिणाम वत्तें, ते राजा कहेवाय, तेवारें शब्दनयना मतवालो बोळ्यो जे राजकाजना चिंतनरूप उपयोगमां परिणाम वत्तें, तेथी कांइ गरज सरे नही परंतु

राजरूप तखतें बेठा चिंतन करे, ते राजा जाणवो. तेवारें समजिरूढ नयना मतवालो बोळ्यो के राजरूप तखतें बेठो, पण राज्य अवस्थाना सर्व पर्याय प्रवर्तनारूप कारण मळे, तेवारें राजा जाणवो. त्यारें एवंचूत नयना मतवालो बोळ्यो जे राज्य अवस्थाना सर्वपर्याय प्रवर्तनारूप करणनी सामग्री सर्व एकठी करी राज्यरूप तखतें बेठो राज जोगवे हाल हुकम चलावे, जे मुखशी वचन नीकळे, ते प्रमाणें काम थाय. सर्व लोक आज्ञा माने, ते राजा जाणवो. एम साते नयें करी राज्यावस्थानुं स्वरूप जाणवुं

७०७ शिष्यः—मनुष्यमां सात नय केम जाणीयें ?

गुरुः—कोइ जीव, कजुसूत्र नयने मत्तें प्रद्वकपरिणामरूप सरल स्व जावें करी व्यवहारनयने मत्तें पुखरूप दलीयानुं ग्रहण करे, ते संग्रह नयने मत्तें प्रकृतिरूप सत्तापणे बांध्यां अने नैगमनयने मत्तें ते दलीयां त्रणे काल एकरूपपणे जाणवां. ए रीतें जे जीवें मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं, ते प्राणी, ए चार नयें करी द्रव्यमनुष्य जाणवा. अने जेवारें ते जीव, शब्दनयने मत्तें मनुष्य पणे उपन्या, तेवारें तेने जावमनुष्य कहीयें. एवुं सांजली शिष्य पूढे ठे के शब्दनयना मतवालो तो चार निक्षेपे वस्तुनुं प्रमाण करे ठे. माटे मनुष्यमां चार निक्षेपा केम जाणीयें ? तेवारें गुरु कहे ठे, प्रथम जे मनुष्य एवुं नाम ते नामनिक्षेपे मनुष्य जाणवो. बी जो मनुष्य एवा अक्षर लखवा, अथवा मनुष्यरूपें मूर्ति स्थापवी, ते स्थापनामनुष्य, त्रीजो जेणें आगल कक्षा प्रमाणें चार नयें करी मनुष्यनुं आउखुं बांध्युं ठे, तेने द्रव्यमनुष्य कहीयें अने चोथो जे शब्द नयने मत्तें मनुष्यपणे उपन्यो ते जावमनुष्य जाणवो, एटले उदय जावरूप मनुष्यपणुं ते जावमनुष्य जाणवो, ए चार निक्षेपा कक्षा. हवे समजिरूढ नयना मतवालो बोळ्यो जे मनुष्यजवना सर्वपर्यायप्रवर्तनारूप वस्तुप्रत्यें पामे, ते मनुष्य जाणवा. तेवारें एवंचूतनयना मतवालो बोळ्यो जे मनुष्यजवना सर्व पर्यायरूपवस्तुप्रत्यें जोगववा मांसी, ते मनुष्य जाणवा.

७०८ जिनदासः—सातनयमांथीनैगमनयें करी सामायिकनुं स्वरूपकेम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मत्तें करी सर्व जीव अंशयकी संवर जावरूप सामायिकमां रक्षा वत्तें ठे, कारण के सर्वे जीवना आठ रुचकप्रदेश त्रणे काल निरावरण पणे वत्तें ठे, तिहां कर्म आवरण लागतुं नथी, माटे नैगम

नयें करी सर्वें जीव,सदाकाल अंशथकी संवरजावरूप सामायिकमां जाणवा.

जिनदास शैठः—संग्रहनयें करी सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे सर्व जीव सत्तायें पोताना पारिणामिकजावें करी संवरजावरूप सामायिकमां रह्या वत्तें ठे, जे कारणें अंतरंग सर्वें जीवने सत्तायें निश्चय नयें करी कर्मरूप ले प लागतो नथी, कर्मनो जे लेप लागवो ते मात्र व्यवहारनयथी ठे माटे संग्रह नयने मत्तें करी सत्तायें सर्व जीव संवरजावरूप सामायिकमां जाणवा.

जिनदास शैठः—व्यवहारनयने मत्तें करी सामायिकनुंस्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे, तेने तेवुं कहे. माटे जे जीव, एकांत निरवद्य जगायें जाइ “करेमि चंतें” एम पाठ उच्चरी वे घडीथी मांकी जावजीव लगें निःसंगपणें वत्तें ठे, तेने व्यवहार नयना मतवालो सामायिकवंत कहे, एटले ए नयने मत्तें बाह्यथकी करणी आचरणारूप देखती क्रिया ते सामायिक जाणवुं.

जिनदासः—ऋजुसूत्रनयने मत्तें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो पारिणामिकजाव ग्रहे ठे, माटे कोइ जीव नरकनिगोदना दुःखथकी वीहीतो मुखनी लालचें उदासजावें त्याग वैराग्यरूप परिणामें करी पोताना चित्तने वत्तावे, ते समय ते जीव, ऋजु सूत्रनयने मत्तें करी सामायिकमां जाणवो. एटले तेतो यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणाम प्रमुख पहेले गुणठाणे मिथ्यात्वी जीवने पण होय.

जिनदासः—शब्दनयने मत्तें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयने मत्तें करी सामायिकना चार प्रकार जाणवा. एक श्रु तसामायिक, वीजुं समकेतसामायिक, त्रीजुं देशविरतिसामायिक अने चोथुं सर्वविरतिसामायिक, ए रीतें शब्दनयने मत्तें करी सामायिकना चार जेद ठे

जिनदासः—समञ्जिरूढनयने मत्तें सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो श्रेणीजाव ग्रहे ठे, माटे शुरुशुरुध्यान रूपातीतपरिणामरूप रूपकश्रेणीयें चढी घातीकर्मने चूरी अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, एवा केवली जगवानने संवरजावरूप सामायिक जाणवुं.

जिनदासः—एवंचूतनयने मत्तें करी सामायिकनुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ए नयना मतवालो संपूर्ण जाव ग्रहे ठे. माटे अष्ट कर्म द्वा

यें अष्टगुण संपन्न लोकने अंतें बिराजमान सादि अनंतमे जांगे वर्त्तता ए वा सिद्ध जगवानने यथाख्यात चारित्ररूप संवरभाव जाणवो. ए रीतें सात नयें करी सामायिकनुं स्वरूप धारवुं.

७०९ हवे एक आकाशप्रदेशमां षट् द्रव्यनुं तथा सात नयनुं स्वरूप कहे ठे:- एटले जिनदास शेठ एक आकाशप्रदेश मात्र क्षेत्र अंगीकार करिने श्रावक पुत्र प्रत्यें प्रश्न पूठे ठे के आ विवक्षित एक आकाशप्रदेश केहेनो कहीयें?

श्रावकपुत्र:- नैगमनयने मते ए प्रदेश ठे द्रव्यनो ठे, कारण के एक आकाश प्रदेशमां ठे द्रव्य जेलां ठे, तथा संग्रहनयने मते एक कालद्रव्य अग्रदेशी ठे, केम के सर्व लोकमां एनो एक समय व्यापी रह्यो ठे, माटे ते आकाश प्रदेशमां काल जूदो नथी संग्रहनयने मते एक कालद्रव्य विना शेष पांच द्रव्यनो ए प्रदेश कहियें. तथा व्यवहारनयने मते जे द्रव्य एमां मुख्य देखाय ठे, ते द्रव्यनो ए प्रदेश कहियें. तथा ऋजुसूत्रनयने मते जे समयें जे द्रव्यनो उपयोग दइ पूठीयें, ते समयें ते प्रदेश, तेहीज द्रव्यनो कहियें. एटले जो धर्मास्तिकायनो उपयोग दइ पूठीयें, तो धर्मास्तिकायनो प्रदेश कहियें अने जो अधर्मद्रव्यनो उपयोग दइ पूठीयें, तो अधर्मास्तिकायनो प्रदेश कहियें. इत्यादि जे समय जे द्रव्यनो उपयोग दइ पूठीयें, ते समय ते प्रदेश ते द्रव्यनो कहियें. तथा शब्दनयने मते जे द्रव्यनुं नाम लइ पूठीयें, ते प्रदेश ते द्रव्यनो कहियें. तथा समञ्जिरूढ नयने मते एक आकाश प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो ठे, तथा अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो ठे तथा जीव अनंताना अनंता प्रदेश रह्या ठे. एम पुजल परमाणुआ पण अनंता जाणवा. तथा एवंचूतनयने मते जे समय जे प्रदेश जे द्रव्यना क्रियागुणने अंगीकार करतो देखियें, ते समय ते प्रदेश, ते द्रव्यनो गणीजें. ए रीतें एक आकाशप्रदेशमां षट् द्रव्यनुं स्वरूप सातनयें करी जाणवुं. ७१० वली जिनदासशेठ श्रावकपुत्र प्रत्यें प्रश्न पूठे ठे के तमें क्यां वसो ठे? त्थारें अशुद्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोळ्यो जे हुं लोकमां वसुं ठुं. तेवारें जिनदास शेठें पूठयुं जे लोकना तो अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने तिं ठों लोक, एवा त्रण जेद ठे, तेमां तमें क्यां लोकमां वसो ठे? तेवारें शुद्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोळ्यो के हुं तिंठां लोकमां वसुं ठुं, ते वारें शेठ बोळ्या के तिंठां लोकमां तो असंख्याता द्वीप अने असंख्या

ता समुद्र ठे. तेमां तमें कया द्वीप समुद्रमां वसो ठो ? त्यारें शुद्धरतनै गमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोढ्यो के हुं जंबू द्वीपमां वसुं हुं. शोठ बोढ्या जंबूद्वीपमां तो घणां क्षेत्र ठे तेमां तमे कया क्षेत्रमां वसो ठो ? तेवारें अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें श्रावकपुत्र बोढ्यो जे हुं चरतक्षेत्रमां वसुं हुं. शोठ बोढ्या चरतक्षेत्रमां बत्रीश हजार देश ठे, तेमां तमें कया देशमां वसो ठो ? तेसमयश्रावकपुत्र बोढ्यो जे हुं अमुक देशमां वसुं हुं, शोठ बोढ्या ते देशमां तो घणां नगर ठे, तो तमें कया नगरमां वसो ठो ? श्रावक पुत्र बोढ्यो के अमुक नगरमां वसुं हुं, शोठ बोढ्या ते नगरमां घणा पाडा ठे, तो तमें कया पाडामां वसो ठो ? श्रावकपुत्र बोढ्यो अमुक पाडामां वसुं हुं. एमज पाडामां घरादिक सह्यु वताव्यां. ए नैगमनयनो मत जाणवो.

वली जिनदास शोठ संग्रहनयने मतें पूढे ठे के तमें क्यां वसो ठो ? तेवारें श्रावकपुत्रें कछुं हुं शरीरमां वसुं हुं. वली शोठें व्यवहार नयने मतें पूढ्युं तमें क्यां वसो ठो ? त्यारें श्रावकपुत्रें कछुं हुं आ संधारे वेठो हुं, एटले वीठानामां रह्यो हुं. वली कजुसूत्रनयने मतें पूढ्युं तमें क्यां वसो ठो ? तेणें कछुं हुं उपयोगमां रहुं हुं, एटले ए नयने मतवाले ज्ञान अज्ञाननो जेद न पळ्यो, वली शब्दनयने मतें पूढ्युं, पामें क्यां रह्यो ठो ? तेणें कछुं हुं स्वभावमां रहुं हुं, वली समजिरूढनयने मतें पूढ्युं तमें क्यां रह्यो ठो ? तेणें कछुं के हुं गुणमां रहुं हुं. वली एवंचूत नयने मतें पूढ्युं तमें किहां रह्यो ठो ? तेणें कछुं जे हुं ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप गुणमां रहुं हुं. एम साते नयनुं स्वरूप सर्व ठेकाणें उतारहुं.

७११ जिनदास शोठः—साते नयें करी जीवनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयने मतें गुण पर्यायवंत शरीर सहित ते जीव जाणवो. एटले ए नयने मतवाले शरीरमांहे जीवपणुं मान्युं, तेथी बीजा पुजल तथा धर्मास्तिकायादिक द्रव्य, ते सर्वे जीवमां गणाणां, तथा संग्रहनयने मतें असंख्यात प्रदेशी ते जीव एटले ए नयने मतवाले एक आकाश प्रदेश टाळ्यो, पण बीजा सर्वे द्रव्य जीवमां गणां, व्यवहार नयने मतें जेख लइ काम चितारी जे ते जीव एटले एणे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, तथा बीजा पुजल सर्वे टाळ्या, मण पंचेंद्रिय, मन, क्षेत्राना पुजल ठे, तेणें जीवमां गणां, एटले विषया

दिक तो इंद्रियो लीये ठे, ते जीवथी न्यारा ठे, पण ए नयने मतवाले इ हां जीवनी साथे लीया, तथा ऋजुसूत्र नयने मते तो जे उपयोगवंत ते जीव, एटले ए नयने मतवाले इंद्रियादिक तो सर्व टाळ्यां पण ज्ञान अज्ञानो जेद टाळ्यो नहीं, तथा शब्दनयने मते तो नामजीव, स्थापना जीव, इव्यजीव अने चावजीव, एटले ए नयने मतवाले चार निक्षेपे जीवपणुं कछुं, पण गुणी निर्गुणीनो जेद नहीं पाळ्यो, तथा समञ्जिरूढ नयने मते ज्ञानादिक गुणवंत ते जीव एटले ए नयने मतवाले मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, इत्यादिक साधक सिद्धरूप परिणाम ते जीवस्वरूपमां गय्या, तथा एवंचूतनयने मते अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, शुद्ध सत्तामात्र ते जीव जाणवो. एटले ए नयने मतवाले सिद्धि अवस्थाना जे गुण हता, ते इहां ग्रहण कख्या, ए रीते जीवमां सात नय कख्या.

७११ जिनदास शैठः—नयनी अपेक्षायें करी ज्ञाननुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयना मतवालो एक अंश ग्रहीने सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे ठे, माटे नैगमनयने मते सर्वे जीव, ज्ञानी कहीयें. कारण के सर्व जीवनी चेतना अक्षरने अनंतमे चागें उघाडी ठे, तिहां ज्ञानावरणादि कर्मनुं आवरण लागतुं नहीं, माटे नैगमनयनेमते सर्व जीव अंशथकी ज्ञानी जाणवा. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, माटे सर्व जीवनी सत्ता ज्ञानरूप ठे, तेथी संग्रहनयने मते सर्व जीव, सत्तायें ज्ञानी जाणवा. तथा व्यवहारनयना मतवालो तो बाह्यथकी जेनुं जेवुं स्वरूप देखे, तेने तेवुं कही बोलावे, पण अंतरंग उपयोग न माने, माटे जे अन्यमतनां सर्व शास्त्र प्रत्ये वांचे तथा, जैनमतनां सर्व सूत्र, सिद्धांत, चाप्य, निर्युक्ति, टीका, चूर्णप्रत्ये वांचे, गुरुमुखें सद्दे, अर्थ करे, तेने व्यवहार नयना मतवालो ज्ञानी कहीने बोलावे, तथा ऋजुसूत्रनयने मते तो अंतरंग प्रतीति सहित वस्तु गतनां चासनरूप ज्ञान स्वरूपना उपयोगमां जेनुं चित्त, जे समयें वर्ते ठे, ते समयें ते जीव, ज्ञानी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले समकेती जीवने ज्ञानी कही बोलाव्या, तथा शब्दनयने मते तो जे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, इत्यादिक शुद्ध शुक्लव्यानरूप साधक सिद्ध परिणाम ते ज्ञानी जाणवा. तथा समञ्जिरूढ नय अने एवंचूत नयने मते करी तो जे ज्ञानावरणादि घाति

अघाती कर्मने दायें करी अनंत चतुष्टय रूप लक्ष्मी प्रगट करी, लोकालोक नुं स्वरूप एक समयमां जाणे, तेने ज्ञानी जाणवा.

७१३ जिनदास श्रेष्ठः—साते नयें करी साधर्मिपणानुं स्वरूप केम जाणीयें?

श्रावकपुत्रः—नैगम अने संग्रह नयने मतें करी सर्वजीव सत्तायें एक रूप ठे, एटले सर्व जीवनो धर्म, सरखो कहीयें माटे ए बे नयने मतें सर्व जीव, सत्तायें साधर्मी जाणवा. तथा व्यवहारनयना मतवालो तो बाह्य थकी जेनी जेवी आचरणा देखे, तेने तेवो कहे, पण अंतरंग सत्ता उपयो ग न माने, एटले जे जीवनी क्रिया प्रवृत्तिरूप एक सामाचारी सरखी हो य, तेने व्यवहार नयना मतवालो साधर्मी कही बोलावे, तथा ऋजुसूत्र नयना मतें तो जे समय उपयोग सहित त्यग वैराग्यरूप उदासत्तायें जेनुं चित्त वत्तें ठे, ते समय ते जीव साधर्मी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले यथाप्रवृत्त्यादिकरणना परिणाम हुता, ते इहां ग्रहण कख्या, ए परिणाम तो पहेले गुणगणे मिथ्यात्वीने पण थाय. तथा शब्दनयने मतें तो अंतरंग उप योगरूप समकेत जावें साध्य एक साधन अनेक, ए रीतें जे जीव सत्ताग तना धर्मने साधे, ते साधर्मी जाणवा. एटले ए नयने मतवाले समकेती जीवने साधर्मी कही बोलाव्या, तथा समजिरूढ नयना मतवालो श्रेणी जावनुं ग्रहण करे ठे, एटले नवमा दशमा गुणगणाथी मांकी यावत् तेर मा चौदमा गुणगणा पर्यंत जे जीव, घाती कर्मने दायें अनंत चतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी शुक्लध्यानना बीजा त्रीजा पाया वचालें रह्या संवरजावें वत्तें, एवा केवली जगवान् ते साधर्मी जाणवा. तथा एवंचूत नयने मतें तो जे अष्ट कर्म दाय करी अष्टगुण संपन्न लोकने अंतें बिराजमान अव्याबाध सुखना जोगी सादि अनंतमे जांगे वत्तें ठे, एवा सिद्ध परमात्माने साधर्मी जाणवा. ए रीतें साधर्मी उपर सात नय कख्या.

७१४ जिनदास श्रेष्ठः—सात नयें करी धर्मनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगम नयने मतें तो सर्वे धर्म ठे, केम के सर्वे धर्मने चा हे ठे. एटले ए नयने मतवाले सर्वधर्मने धर्मनाम कही बोलाव्या, तथा संग्रहनयने मतें जे वडेरायें आदख्यो, ते धर्म. एटले ए नयने मतवाले अनाचार तो ढोड्यो अने कुलाचारने धर्म करी मान्यो, एटले जे जेना कु लकर्मागत आव्यो, ते धर्म जाणवो ॥ गाथा ॥ जेखधारीकूं गुरु कहे, पु

एवंतकं कहे देव ॥ कुलाचारकं धर्म कहे, ए कुकर्मकी देव ॥ १ ॥ तथा व्यवहारनयना मते जे सुखनुं कारण ते धर्म कहियें एटले ए नयने मत वाले पुण्यरूप करणीने धर्म करी मान्यो, तथा रजुसूत्र नयने मते उपयोग सहित उदास ज्ञावे वैराग्यरूप परिणाम ते धर्म जाणवो. एटले ए नयने मतवाले यथाप्रवृत्तिकरणरूप परिणाम प्रमुखने धर्म करी मान्यो, ते तो पहेले गुणगणे मिथ्यात्वीने पण थाय. तथा शब्द नयने मते जे अंतरंग सत्तागतना ज्ञासनरूप समकेत ते धर्म जाणवो, केम के समकेत जेठे, ते धर्मनुं मूल ठे. तथा समजिरूढ नयने मते जीव अजीवरूप नव तत्व, षट् ड्रव्य, नय, निक्षेपा, प्रमाण, उत्सर्ग, अपवाद, निश्चय, व्यवहार, ड्रव्य, ज्ञावनुं स्वरूप जाणी जीवसत्ताने ध्यावे. अजीवसत्तानो त्याग करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप शुद्ध निश्चयनय परिणाम, ते धर्म कहियें. एटले ए नयने मतवाले साधक सिद्धरूप परिणाम, ते धर्मपणे करी मान्या. तथा एवंभूतनयने मते जे शुद्ध शुद्धध्यान रूपातीतपरिणाम ह्यकश्रेणी कर्म ह्यनां कारण, ते साधनधर्म जाणवो अने जीवनो मूलस्वभाव मोक्षरूप कार्य निष्पन्न सिद्धिमां रहे, ते धर्म जाणवो.

७१५जिनदास शेषः—सिद्ध जगवाननुं स्वरूप,साते नयें करी केम जाणीयें ?

श्रावकपुत्रः—नैगमनयवालो एक अंश ग्रहीने वस्तुनुं प्रमाण करे ठे, माटे नैगमनयने मते सर्व जीव सिद्ध ठे, कारण के सर्वजीवना आठ रुचकप्रदेश सदाकाल सिद्धसमान निर्मल ठे, तिहां कर्मावरण लागतां न थी, माटे नैगमनयने मते सर्वजीव सिद्धसमान जाणवां. तथा संग्रहनयना मतवालो सत्तानुं ग्रहण करे ठे, एटले सर्वजीवनी सत्ता एक समान सर खी ठे, माटे संग्रहनयने मते करी सर्वजीव सत्तायें सिद्धसमान जाणवा. एटले एणे पर्यायास्तिकनयें करी कर्म सहित अवस्था टाळी, पण ड्रव्या स्तिकनयनी अवस्था अंगीकार करावी, तथा व्यवहारनयने मते जे विद्यालब्धि प्रमुख गुणें करीने सिद्ध थया, तेने सिद्धपणुं जाणवुं. एटले ए नयवाले जे वाह्यतप प्रमुख गुण हता, ते अंगीकार कखा, तथा रजुसूत्रनयने मते तो जे समयें जे जीवें सिद्धसमान आपणा आत्मानीसत्ता उलखी ठे, अने ध्याननो उपयोग पण तेहीज वचें ठे, ते समयें ते जीव, सिद्ध स मान ठे. एटले ए नयने मतवाले समकेतिजीवने सिद्धसमान कही

बोलाव्या, तथा शब्दनयने मत्तें तो जे शुरुशुक्लध्यानपरिणाम नामादिक चार निक्षेपे, ते सिद्ध कहीयें. तथा समजिरूढनयने मत्तें जे केवल ज्ञान, केवलदर्शन, यथाख्यातचारित्ररूप गुणवंत होय ते सिद्ध, एटले ए नयने मतवाले तेरमे, चौदमे गुणगणें वर्त्तता केवली जगवान्ने सिद्ध समान कही बोलाव्या. तथा एवंचूतनयने मत्तें जे ज्ञानवरणादि सकल कर्मनो क्षय करी अनंतगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे जांगे वर्त्ते एवा जे, सिद्ध जगवान् ते सिद्ध कहीयें.

७३४ जिनदास शैठः—वलीनयनीअपेक्षायेंकरीनवतत्त्वनुंस्वरूपकेमजाणीयें?

श्रावकपुत्रः—ऋजुसूत्रनयने मत्तें पहेले गुणगणें एकेंद्रियथी पंचेंद्रिय पर्यंतना जीव अनुपयोगें मिथ्यात्वजावें वर्त्ते, तेने द्रव्यजीव कहीयें अने शब्दनयने मत्तें चोथे गुणगणें आत्मस्वरूपमां समकेतजावें वर्त्ते, तेने जाव जीव कहीयें. हवे अजीवनुं स्वरूप कहीयें ठैयें. एटले कोश्क जीव ऋजु सूत्रनयने मत्तें शुजाशुज परिणामें करी पुण्यपापरूप आश्रवनां दलीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें. अने व्यवहारनयने मत्तें अत्रतिपणें अणक स्यां आश्रव आवे, एवुं पण श्रीजगवतीसूत्रमां कळुं ठे. हवे संवरनुं स्वरूप कहे ठे. शब्दनयने मत्तें चोथे गुणगणें समकेती जीव अने पांचमे गुणगणें देशविरति जीव, तथा षष्ठे सातमे गुणगणें सर्वविरतिजीव, ए संवरजावमां रह्या वर्त्ते ठे, तथा समजिरूढनयने मत्तें श्रेणीजावें नवमा दशमा गुणगणणी मांकी यावत् तेरमा चौदमा गुणगणा पर्यंत केवली जगवान् पण संवरजावें रह्या वर्त्ते ठे अने एवंचूतनयने मत्तें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराजमान सादि अनंतमे जांगे सिद्ध परमात्मा पण संवरजावमां रह्या वर्त्ते ठे. हवे निर्झरानुं स्वरूप कहे ठे. शब्द, सम जिरूढनयने मत्तें श्रेणीजावें नवमा दशमा गुणगणणी मांकी तेरमा चौदमा गुणगणा पर्यंतना जीव आत्मस्वरूपमां वर्त्तता महानिर्झरा प्रत्यें करे ठे. हवे मोक्षनिःकर्मावस्थानुं स्वरूप कहे ठे. समजिरूढनयने मत्तें श्रेणीजावें तेरमे चौदमे गुणगणें केवली जगवान् वर्त्ते ठे, तेने द्रव्यमोक्षपद कहीयें. अने एवंचूतनयने मत्तें सकल कर्म क्षय करी लोकने अंतें विराज मान सादिअनंतमे जांगे वर्त्ते ठे, एवा सिद्धपरमात्माने जावमोक्षपद क हीयें. ए नव तत्त्वमां स्वरूप जाणवुं.

१३३ जिनदासशेठः—साते नयें करी नव तत्त्वनुं स्वरूप केम जाणीयें ?
 श्रावकपुत्रः—नैगमनयने मते सवें तत्त्व ठे, जे कारणे सर्वकोइ तत्त्वने चाहे ठे, तथा संग्रहनयना मतवालो सर्वनो संग्रह करीने बोळ्यो जे एकज तत्त्व ठे, एटले जे जेहने मन मान्युं, ते तत्त्व, बीजां सवें अतत्त्व जाणवां. तथा व्यवहार नयना मतवालो बाह्यस्वरूप देखीने जेद वेहेंचे, एटले जे दीसता गुण देखे, ते माने, माटे एक जीवतत्त्व अने बीजुं अजीवतत्त्व, ए बे तत्त्व माने, तेमां वली प्रथमजीव तत्त्वना बे जेद, इत्यादि आगल कह्या,ते रीतें यावत् गंठीजेदी तथा अगंठीजेदी सुधी कहीने वली प्रकारां तरें ५६३ जेद कहे. तथा अजीव तत्त्वना जेदनी वेहेंचण आवी रीतें करवी प्रथम अजीवना बे जेद ठे, एक रूपी अजीव अने बीजो अरूपी अजीव, तेमां धर्मास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, तथा अधर्मास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, तथा आकाशास्तिकायनो खंध, देश अने प्रदेश, तथा एक जेद कालद्रव्यनो मली अरूपी अजीवना दश जेद थया. वली धर्मास्तिकाय ड्रव्यथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, जावथकी अने गुणथकी, ए पांचजेदें ठे. ए रीतें अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, तथा काल, सर्वना पांच पांच जेद करतां वीश जेद थाय. ते पूर्वोक्त दश साथें मेलवतां त्रीश जेद अरूपी अजीवना थया. हवे रूपी अजीवना पांचशो ने त्रीश जेदनुं स्वरूप कहे ठे. फरसना आठ, गंधना बे, रसना पांच, वर्णना पांच अने संस्थानना पांच, ए रीतें पच्चीश जेद मूल ठे, तेना उत्तर जेद पांचशे ने त्रीश, ते आवी रीतें थायः—प्रथम आठ फरस माहेला प्रत्येक फरस ने पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, पांच संस्थान अने ठ स्पर्श, ए रीतें त्रेवीश साथें गुणतां १७४ जेद थाय. आठ स्पर्श ठे, तेमांशी ठ स्पर्श साथें गणवानुं कारण ए ठे के जो चारी स्पर्शना जेद साथें गणवो होय, तो ते चारी स्पर्श, तथा तेनो प्रतिपक्षी बीजो हलवो स्पर्श, ए बे स्पर्श मूकी देवा. बाकी ठ स्पर्श देवा. तेमज जो लुखा साथें गणवो होय, तो तेनो प्रतिपक्षी चोपळ्या स्पर्श पण मूकी आपवो. ए रीतें सर्वत्र समजी लेवुं. ए आठ स्पर्शना १७४ जेद थया. तेमज पच्चीश जेदमांशी बे गंध कहाडीने त्रेवीश जेदने बे गंध साथें गुणीये, तेवारें बे गंधना ठेतालीश जेद थाय तथा पच्चीश जेदमांशी पांच रस, वाद करतां बाकी वीश जेदने पांच रस साथें गुणतां पांच रसना

१०० जेद थाय. तथा तेवीज रीतें पांच वर्णना पण शो जेद थाय. अने तेमज पांच संस्थानना पण शो जेद थाय. ए सरवाळे ५३० जेद पुजल ड्रव्यरूपी अजीव ठे तेना थया. तेनी साथें पूर्वोक्त अरूपी अजीवना त्रीश जेद मेलवतां ५६० जेद थाय. ए सर्व व्यवहारनयने मत्तें जेदनी बेहेंचण ठे.

तथा ऋजुसूत्रनयने मत्तें जे जीव, शुजाशुज परिणामें करी पुण्य, पाप रूप आश्रवनां दक्षीयां बांधे, तेने अजीव कहीयें. ए ठ तत्व थयां, तथा शब्दनयने मत्तें तो चोथे गुणठाणे समकेती जीव, पांचमे गुणठाणे देशविरतिजीव, षष्ठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति जीव, ए त्रणे सत्तागतना जा सनरूप संवरजावमां वर्तता समय समय अनंतां कर्म निर्झारावे ठे, तथा समजिरूढनयना मतवालो श्रेणीजावने ग्रहे ठे, माटे नवमा दशमा गुण ठाणाथी मांकीने थावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत केवली जगवान् पण संवरजावमां वर्तता महा निर्झाराप्रत्ये करे ठे, तेने ड्रव्यमोक्षपद कहीयें. ए नवे तत्व आख्यां. तथा एवंचूतनयने मत्तें सकल कर्मक्षयें करी लोकने अंतें बिराजमान सादि अनंतमे जांगे वर्तता एवा सिद्धपरमात्मा, तेने जावमोक्षपद कहीयें. ए रीतें साते नयें करी नव नत्वतुं स्वरूप ठे,

७३४ हवे पाथो उपरे उत्सर्ग अपवाद मार्गें नय उतारे ठे. एटले कोइ जीव पाथाने अर्थे वनमां काष्ठ वेवाने चाळ्यो, तिहां बीजो कोइ सन्मुख मळ्यो तेणें पूब्युं तुं क्यां जाय ठे ? तेवारें ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो जे हुं पाथो लेवा जाळं तुं. हवे वनमां जश्ने काष्ठ ठेदवा मांरुथुं, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं के शुं ठेदे ठे ? तेवारें शुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं पाथो ठेडुं तुं. हवे काष्ठ लश्ने पाठो वळ्यो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं के तुं शुं लाव्यो ? तेवारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं पाथो लाव्यो. हवे पाथो सराणें चडावी उतारवा मांरुथो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं जे तुं शुं उतारे ठे ? त्वारें ते अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं पाथो उतारुं तुं. ए रीतें नैगमनय जाणवो. हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के एवी रीतें पाथो हुं मानुं नही परंतु हुंतो संपूर्ण देखाती वस्तुमां वस्तुपणुं मानुं, एटले पाथो उतारी तैय्यार करी मेळ्यो, ते वारें व्यवहारनयना मतवालो कहे, जे हवे एने पाथो कहीयें. हवे संग्रह नयना मतवालो बोळ्यो के एम पाथो नही पाथानी सत्तारूपमांहे धान्य

जखुं, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के हवे पाथो कहीयें. हवे ऋजुसूत्र नयना मतवालो बोळ्यो के एवी रीतें पाथो नहीं. हुंतो वस्तुना जावने ग्रहण करूं, एटखे पांच, सात, पाथा धान्य चरीने एक वाजु ढगलो कस्यो, अने पाथारूप खोखुं दूर काढी नाखुं, तेवारें ऋजुसूत्रनयना मतवालो कहे के हवे एने पाथो कहीयें. वली कोश्यें पूब्युं जे ए पांच सात पाथानुं ज्ञान किहां रखुं ठे ? तेवारें शब्दनयना मतवालो वेहेंचण करीने बोळ्यो जे आ शरीररूप पाथो ठे, तेमां ज्ञानादि अनंतगुणरूप धान्य जखुं ठे, तेवारें समजिरूढनयना मतवालो बोळ्यो के एम पाथो नहीं, ए शरीररूप पाथा मांहेथी उपयोग काढी अने ज्ञानादिक अनंतगुणरूप मांहे धान्य जखुं ठे, तेमां उपयोग लगावीने श्रेणीजावें चळ्यो, एटखे एने पाथो कहीयें. तेवारें एवंचूतनय वालो बोळ्यो, के एम पाथो नहीं परंतु ज्ञानादि अनंतगुणरूप धान्य मांहे जखुं ठे, ते संपूर्ण प्रगट करी पाथारूप शरीरनुं खोखुं मूकी जे लोकने अंतें शिवपुरीमां विराजमान थाया, तिहां पाथो कहीयें. एमां आग ला चार नय अपवादमागें अने पाठला त्रण नय उत्सर्गमागें जाणवा.

३३५ हवे जिनमंदिररूप देरासर उपर सात नय उत्सर्ग अने अपवाद मागें उतारे ठे. कोइ पुरुष, देरासर कराववा सारु सामान लेवा चाळ्यो, तेवारें बीजो कोइ सामो मळ्यो, तेणें पूब्युं तुं क्यां जाय ठे ? ते समय ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं देहरं लेवा जाउं बुं. पठी देहरा नो सामान लेवा मांरुथो, ते वखत वली कोश्यें पूब्युं तुं शुं लीये ठे ? त्यारें शुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं देहरं लउं बुं. हवे देहरानो सामान लइने पाठो आवतां वली कोश्यें पूब्युं के तुं शुं लाव्यो ? त्यारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं देहरं लाव्यो. हवे घेर आवीने देहरं चणाववा मांरुथुं, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं के तुं शुं चणावे ठे ? त्यारें अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं देहरं चणावुं बुं ॥ इति नैगम नयः ॥ हवे व्यवहार नयना मतवालो बोळ्यो के ए रीतें देहरं नहीं, परंतु हुं तो संपूर्ण दीसती वस्तुमां वस्तुपणुं मानुं, एटखे जेवारें संपूर्ण देहरं तै थ्यार थयुं, तेवारें व्यवहार नयना मतवालो कहे के हवे एने देहरं कहीयें. हवे संग्रहनयना मतवालो बोळ्यो के एम देहरं नहीं, पण देहरानी सत्तारूप मांहे देव बिराजमान थाय, तेवारें देहरं कहीयें. एटखे प्रतिष्ठा म

होत्सव विधिप्रयुक्त करी मांहे देव वेसाडे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के एने देहरं कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो के एम देहरं नही, हुंतो जावने ग्रहण करुं तुं; आपणे देहरानुं शुं काम ठे, पण एमां देव कोण ठे? ऋषभ देव ठे? किंवा अजितनाथ ठे? किंवा संजवनाथ ठे? इत्यादि जे देव मांहे बेठा होय,तेनुं प्रयोजन ठे. एटले ए ऋजुसूत्रनयने मतवाले देहरा उपरधी उपयोग उत्तारीने देव विराज्या ठे, तेना ध्या नमांहे उपयोग लगाव्यो.तेवारें कोइ बोळ्यो जे देरासरमां देव विराज्या ठे, तेनी उल्लेखारूप ज्ञान किहां रळुं ठे? तेवारें शब्दनयना मतवालो अंत रंग उपयोग दइने बोळ्यो के आ शरीररूप देहरं तेमां निश्चय देव आत्मा पोतेंजठे,तेने विषे ए ज्ञान रळुं ठे. हवे समञ्जिरूढनयना मतवालो बोळ्यो के एम देहरं नही. ए शरीररूप देहरामांधी उपयोग काढी तेमांहे निश्चय देव आत्मा विराजे ठे,तेना स्वरूपना चिंतनरूप ध्यानमां उपयोग लगा डी श्रेणीजावें चढे, तेवारें देहरं कहीयें. त्यारें एवंभूत नयना मतवालो कहेवा लाग्यो के एम देहरं नही,परंतु मांहे निश्चयदेव आत्मा विराजे ठे,ते नुं स्वरूप संपूर्ण प्रगट करी अने देहरारूप शरीरनुं खोखुं इहां मूकी लो कने अंतें सिरूपुरीमां विराजमान थया, त्यां देहरं कहीयें.

७३६ हवे उत्सर्ग अपवाद मागें घट उपर सात नय उतारे ठे. कोइक घट लेवा चाळ्यो, तेवारें मार्गमां तेनें वीजो कोइ सन्मुख मळ्यो, तेणें पूब्युं तुं शुं लेवा जाय ठे? ते वखत ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं घट लेवा जाउं तुं. पढी तिहां जइने माटी खणवा मांकी ते वारें कोश्यें पूब्युं तुं शुं करे ठे? त्यारें शुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं घट लउं तुं. हवे माटी लइने पाठो वळ्यो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं तुं शुं लाव्यो! तेवखत शुद्धतरनैगमनयने वचनें बोळ्यो हुं घट लाव्यो; हवे माटी चाकडे चडावी घट उतारवा मांरयो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं तुं शुं उ तारे ठे? त्यारें अतिशुद्धनैगमनयने मतें बोळ्यो हुं घट उतारुं तुं ॥ इतिनैग मनयः ॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के एम घट न थाय हुंतो संपूर्ण वस्तु नजरें देखुं, तेमां वस्तुपणुं मानुं एटले घडो तैयार संपूर्ण नी पजे, तेवारें एने घट कहीयें. हवे संग्रहनयना मतवालो बोळ्यो के एम घट नही,परंतु घटनी सत्तारूप जल मांहे नळुं होय,तेवारें घट कहेवाय,

एटले घटनी सत्तारूप जखें करी संपूर्ण जरे,तेवारें एने घडो कहीयें. हवे रजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो के एम घट हुं मानुं नही हुंतो जावने ग्रहण करुं बुं. एटले पांच, सात, घट जरीने एक ठामडामां रेड्या अने घडा रूप खोखुं एक बाजु काढी नाख्युं, त्यारें तेने घट कहीयें. तेवारें कोशक बोळ्यो जे ए पांच,सात,घटरूप जखनुं ज्ञान किहां रखुं ठे ! ते वखत शब्द नयना मतवालो वेहेंचण करीने बोळ्यो के आ शरीररूप घट अनेज्ञानादि अनंतगुणरूप मांहे जलजखुं ठे, तेवारें समजिरूढनयना मतवालो बोळ्यो के एम घट नही आ शरीररूप घटमांथी उपयोग काढी अने मांहे ज्ञाना दि अनंतगुणरूप जे जल जखुं ठे, तेमां उपयोग लगावी श्रेणीजावें चढे, तेवारें घट कहीयें. एटले एणें शरीररूप घटमांथी उपयोग काढी अने ज्ञानादि अनंतगुणरूप मांहे जल जखुं ठे, तेमां उपयोग लगावीने श्रेणीजावें चढ्यो,तेवारें समजिरूढनयना मतवालो घट कहे. हवे एवंचूत नयना मतवालो बोळ्यो जे एम घट नही,परंतु एमां जे ज्ञानादि अनंतगुणरूप जल जखुं ठे,ते प्रगट करी घटरूप शरीरनुं खोखुं इहां मूकी लोकने अंतें सिरू पुरीमां बिराजमान थया. तिहां घट कहीयें.

७३७ हवे घर उपर उत्सर्ग अपवाद मागें करी सात नय उतारे ठे. कोश पुरुष घरनो सामान खेवा चाळ्यो, तेने कोश बीजो पुरुष मार्गमां सामो मळ्यो, तेणें पूब्युं तुं किहां जाय ठे ? तेवारें ते अशुक्रनैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं घर खेवा जाळं बुं. पठी ज्यारें घरनो सामान खेवा मांफ्यो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं के तुं शुं लीये ठे ? तेसमय शुक्रनैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं घर लळं बुं. हवे घरनो सामान लइने पाठो वळ्यो,तेवारें वली कोश येणें पूब्युं तुं शुं लाव्यो ? त्यारें शुक्रतरनैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं घर लाव्यो. हवे घर कराववा मांफ्युं,तेवारें कोश्यें पूब्युं तुं शुं करावे ठे ? त्यारें अति शुक्रनैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं घर चणावुं बुं ॥ इतिनैगमनयः ॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के एम घर न थाय,हुं तो संपूर्ण तैय्यार घर नजरें देखुं, तेवारें घर मानुं. एटले संपूर्ण तैय्यार घर नीपन्युं, तेवारें व्यवहारनयना मतवालो कहे जे ए घर थयुं. हवे संग्रहनयना मतवालो बोळ्यो जे एम घर नही, परंतु घरनी सत्ताने ग्रहण करे, तेवारें घर कहे वाय. एटले जेम तेम खटपट करी परणीने घरनी सत्तारूप छी लावी गर

मां बेसाडी, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे हवे एने घर कहीयें. तेवारें ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो के एम घर न थाय, हुंतो जावनें ग्रहण करुं बुं. घरनुं शुं प्रयोजन ठे? माहारे तो मांहे घरनी धणीयाणी छी वेठी ठे, तेनी साथें काम ठे, घरनुं शुं काम ठे? एटले ए ऋजुसूत्रनयने म तवाले घररूप खोखा उपरथी उपयोग काढी अने मांहे घरनी धणीयाणी छी वेठी ठे,तेमां उपयोग लगाव्यो,वली तेवारें कोइ बोळ्यो के ए घरमां छी वेठी ठे,तेनुं ज्ञान किहां रळुं ठे? तेवारें शब्दनयना मतवालो वेहेंचण करीने बोळ्यो के आ शरीररूप घर अने मांहे चेतन महाराजरूप पुरुष अने सम तारूप छी वेठी ठे,तेमध्ये ए ज्ञान रळुं ठे, तेवारें समजिरूढनयना मतवलो बोळ्यो के एम घर नहीं,परंतु शरीररूप घरमांथी उपयोग काढी अने समता रूप छीमां उपयोग लगावी,श्रेणीजावें चढे,तेवारें घर कहीयें. हवे एवंचूत नयवालो बोळ्यो एम घर नहीं,पण ए शरीररूप घरनुं खोखुं इहां मूकी स मतारूप छीने लइ लोकने अंतें मोक्षपुरीमां जइ वस्या, तिहां घर कहीयें.

३३७ हवे राज्य उपर उत्सर्ग अपवादमागें सात नय उतारे ठे. कोइ पु रुष, राज्य खेवा चाळ्यो,तेने मार्गमां कोइ सामो मळ्यो,तेणें पूब्युं तुं किहां जाय ठे? त्यारें ते अशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो हुं राज्य खेवा जाउं बुं. हवे राज्य खेवानी सामग्री मांकी, तेवारें वली कोइयें पूब्युं तुं शुं बीये ठे? एटले शुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं राज्य लउं बुं? हवे राज्य ल इने पावो वळ्यो, तेवारें वली कोइयें पूब्युं के तुं शुं लाव्यो? तेवारें शुद्धतर नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं राज्य लाव्यो. हवे राज्य पालवा मांरुं, ते वारें कोइयें पूब्युं तुं शुं पाले ठे? एटले अतिशुद्ध नैगमनयने वचनें बोळ्यो के हुं राज्य पालुं बुं॥इति नैगमनयः॥हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के एम राज्य कहेवाय नहीं, हुंतो संपूर्ण राज्य जोगवतां नजरें देखुं, तेवारें राज्य मानुं,ते वखत संग्रहनयना मतवालो बोळ्यो,एम राज्य कहेवाय नहीं जे राज्यनी सत्ताने ग्रहे, ते राज्य कहेवाय. एटले राज्यनी सत्तारूप प्रधान कामदार, शिरदार, सुजट, शीपाई, जमादार, फोजदार, कोटवाल, हाली. मुहाली, हाथी, घोडा, रथ, पायक आदिक राजानी सत्तारूप सामग्री मले त्यारें राजा कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो एम राज्य कहेवाय नहीं, हुं तो जावनें ग्रहण करुं बुं. एटले राज्यरूप सामग्री तो सर्व मली,

पण राज्य कार्यनी चिंतारूप हाल हुकम, न्याय, इनसाफ, वात, विचार रूप राज्य कार्यना चिंतनमां उपयोगना परिणाम वत्ते, ते समय राज्य कहे वाय, नहीं तो रातना राजानी परें अंधुं राज्य जाणवुं. वली कोइ बोळ्यो ए राज्यकाजना उपयोगरूप चिंतननुं ज्ञान क्यां रळुं ठे? तेवारें शब्दनयनो मतवालो बोळ्यो के आ शरीररूप नगर नवछारें करी शोजतुं अने मांहे चेतन माहाराजारूप राजा राज्य करे ठे. तेमांहे ए ज्ञान रळुं ठे, तेवारें समञ्चिरूढनयना मतवालो बोळ्यो के एम राज्य कहेवाय नहीं, पण ए शरीर रूप नगरमांथी उपयोग काढी अने जे एमांहे चेतन महाराजारूप राजा राज्य करे ठे, तेना स्वरूपमां उपयोग लगावी, श्रेणीजावें चढे, तेवारें राजा कहीयें. हवे एवंचूतनयना मतवालो बोळ्यो के एम राजा कहेवाय नहीं, पण मांहे चेतनमाहाराजारूप राजा राज्य करे ठे, तेनुं स्वरूप संपूर्ण प्र गट करी, ए शरीररूप नगरनुं खोखुं इहां मूकी लोकने अंतें सिद्धपुरीमां मोहनगरनुं राज्य करे, तेने राजा कहीयें.

३३ए हवे धर्मीजीवने समकेतनी स्थिरता करवा वास्ते जाणपणारूप सात नयनुं स्वरूप लखियें ठैयें. कोइ जीवने मार्गें जातां वाण लाग्यो, एट ले नैगमनयने मत्तें बाण हाथमां लश्ने लोकने कहेवा लाग्यो, जे आ बाण मुजने लाग्यो, आ बाणथकी हुं दुःख जोगवुं हुं.

एटले वली संग्रहनयना मतवालो बोळ्यो के ए वाणनो कांइ वाक नथी बाण तो कोइकनो नाख्यो आव्यो पण वाणनो मारनारो कोण ठे? तेने शो धी काहाढो. एटले आपणुं वैर लश्यें? एम संग्रहनयने मत्तें तेनो संग्रह करी चित्तमां धारी राख्यो, हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के जाई! ए वाण मारनारनो कांइ वांक नथी, पण कोइ प्रकारें ताहारा ग्रहनो वांक ठे. एटले ताहारा ग्रह वांका आव्या देखाय ठे, तेवारें ए धणीने तुने मारवाना परिणाम थया, तो ए विचारो शुं करे? माटे कोइ रीतें ग्रहनी पूजा करी, ग्रहनी शांति करो. एटले सुख थाय. माटे ज्योतिष, वैद्यक, जोइने चालवुं काम करवुं, ए प्रमाणें व्यवहारनयें लौकिक वचन ठे.

हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो उपयोग दश्ने बोळ्यो के हे जाइ! ग्रहनो कांइ वांक नथी. ग्रहतो सर्वे सम्यग्दृष्टि ठे, माटे तेतो कोइने दुःख देता नथी, पण ताहारा कर्मनो वांक ठे, जेवां कर्मरूप दलीयां ताहरी सत्तायें

हतां,तेवा ग्रह पण आव्या,माटे शुजाशुजरूप कर्म, सर्वने सुखदुःख दीये ठे. ए विपाक सर्वे कर्मना कस्या उदय आवे ठे. एमां ग्रहनो कांइ वांक नथी. ॥गाथा॥ कर्म करे तेन करेकोय,कर्म कीडी कुंजर होय ॥ कर्म सुख दुःख पामे सह, कर्म जीव जमे ते बहु ॥ १ ॥ माटे सर्व जीव, कर्मने वश ठे. ए ऋजुसूत्रनु वचन ठे. ए रीतें चारनयें जाणपणुं करीसंतारमां जीव परित्रमणपणुं करे ठे.

हवे शब्दनयना मतवालो बोळ्यो के ए कर्म बिचारां शुं करे? एतो जड ठे,कोशने सुख दुःख देतां नथी, पण सुख दुःखनो पेदा करवावालो तथा जोगववा वालो आपणो जीव ठे, जेवा परिणामें करीने जीवें कर्म वांध्यां होय, तेवा विपाक उदय आवे,माटे एमां कर्मनो कांइ वांक नथी. जीवें पोतें उद्यमें करी कर्म वांध्यां,तेवा विपाक जोगवे ठे माटे वांक ता हारा जीवनो ठे, पण कर्मनो वांक नथी. कर्म तो जीवनां कस्यां थाय ठे, अने वली जीवज उद्यम करीने टांलतो जाय. ए रीतें शब्दनयने मतवाले जीव अने अजीवरूप जे कर्म, तेनी जूदी जूदी वेहेंचण करीने देखाडी.

हवे समजिरूढनयना मतवालो बोळ्यो के एमां जीवनो कांइ वांक नथी, जे वेलायें, जे काळें,जेवा केवली जगवाननें जाव दीठा होय ते वे लायें,ते काळें,तेवाज जीवना परिणाम थाय, पण ते जाव कोशना टाळ्या टले नही, एटले केवली जगवानें जेवी रीतें आगल आपणा जव दीठा होय, के जे देवता,नारकी,तिर्यच, मनुष्यना एटला जव करीने सिद्धि व रशे ते दिवस,ते घडी, ते वेला आवे,तेवारें जीव,तेवे परिणामें करी तेवा कर्मनुं ग्रहण करे,एमां जीवनो कांइवांक नथी, केवली जगवानें दीठेला जा व कोशना टाळ्या टले नजी, जे प्रमाणें केवलीयें दीठुं होय, ते प्रमाणें ज बने.

हवे एवंभूतनयना मतवालो बोळ्यो के एतो सर्वे बाह्य व्यवहाररूप वात ठे,परंतु निश्चयनयें करी अंतरदृष्टियें जोतां तो जीवने जन्म नथी,म रण नथी, कर्म नथी, जर्म नथी, रोग नथी, शोक नथी, राग नथी, रोष नथी,शुद्ध, चिदानंद, निर्मल, परमज्योति, ज्ञानदर्शनचारित्रमय, अक्षत, अखंक,अक्षिप्त, शाश्वतो, परमानंदसुखमय, सत्तायें सिद्धसमान, एवो ता हारो जीव ठे,जेवो सिद्धक्षेत्रें वसे, तेवो आ शरीरमांहे अंतरदृष्टियें विचा रतां जेद नथी मनमांहे ए रीतें जांगे,लागे,इंत लागे, थांचो लागे.शस्त्र ला गे,कोश निंदा करे,चाडी करे,तुकशान करे,रोग उपजे, ए आदि सर्वठेकाणें,

एरीतें साते नयेंकरी अर्थविचारतां जीव संवरजावमां आवे अने जेवारें सं
वर जावमां आवे, तेवारें जीव, निर्झरा करे, पण नवां कर्म न बांधे.

७४०कोइ जीव एम कहे ठे,के “जहागति,तहामति” ए वचन अन्यथा एकांत
वादीनुं ठे. अने “जहामति, तहागति” ए वचन, ते आगम प्रमाणें श्रीजिनवच
न अनुसारें ठे. माटे “जहागति, तहामति” ए वचनने अनुसारें सात नय
उतारे ठे:—कोइ जीवना रजुसूत्रनयनेमतें शुचाशुचरूप परिणाम थया, ते
शुचाशुच परिणामें करीने जीवें व्यवहारनयनेमतें पुण्य पापरूप कर्मनां दळी
यानुं ग्रहण कछुं, ते कर्मनां दळीयानुं ग्रहण करीने संग्रहनयनेमतें जीवें आउ
खारूप सत्तापणे बांध्यां, अने नैगमनयने मतें ते दळीयां अतीतकालें ग्रहां
हतां, अने अनागतकालें जोगवशे तथा वर्त्तमानकालें सत्तायें रखां वर्त्ते ठे.
ए चार नयें करी ड्रव्यकर्मरूप आउखानो बंध जाणवो. अने शब्दनयने
मतें जावपणे चारे गतिने विषे जीव उपन्यो अने समजिरूढनयने मतें जे
गतिमां जीव उपजे, ते गतिना सर्व पर्यायरूप वस्तु प्रत्यें पामे. तेने तेवो कही
यें, तथा एवंभूतनयने मतें ते पर्यायरूप वस्तु जीवें जोगववा मांकी, तेने
तेवो कहीयें. एरीतें “जहामति, तहागति” तेमां सात नय कहा.

७५० हवे अष्टावीश उपनयनुं स्वरूप देखाडे ठे:—तिहां प्रथम ड्रव्या
स्तिकदश नयनुं स्वरूप कहे ठे. सर्वड्रव्यमां अनेक स्वजावठे, ते एक वचन
थी कहा जाय नही. तेथी मांहो मांहे संक्षेपपणे कहे ठे. तिहां जे उत्पाद,
व्यय, पर्याय गुणपणे ड्रव्यनी गुणसत्ताने ग्रहे, ते ड्रव्यास्तिकनय कहीयें.
ते ड्रव्यास्तिकनयना दश जेद ठे, ते कहे ठे. तिहां प्रथम सर्वे ड्रव्य नित्य
माटे नित्यड्रव्यास्तिक कहीयें. बीजो जे अगुरुलघु अने क्षेत्रनी अपेक्षा न
करे, अने मूल गुणने पिंभीपणे ग्रहे, जेम ज्ञानादिक गुणें करी सर्वे जीव
एक सरिखा ठे माटे सर्वे जीव एक कहीयें, ते एकड्रव्यास्तिक जाणवो त्री
जो जे स्वड्रव्यादिकने ग्रहे, ते सत्यड्रव्यास्तिकनय चार प्रकारें ठे. तेमां प्रथम
सर्वे ड्रव्य पोतपोताना गुणे करी सत्य ठे. ते स्वड्रव्य सत्यड्रव्यास्तिक
कहीयें तथा जे सर्वे ड्रव्य पोतपोताना प्रदेशरूप क्षेत्रने मानें करी सहित
ठे, ते स्वक्षेत्रड्रव्यास्तिक तथा स्वकालड्रव्यास्तिक ते सर्वे ड्रव्यमां पोतपोना
अगुरुलघु जाणवो तथा स्वजावड्रव्यास्तिक ते सर्वे ड्रव्य पोतपोताना गुण
पर्यायरूपचावें करी सहित वर्त्ते ठे. एरीतें सर्वेड्रव्य, आपआपणे स्व

द्रव्य, स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभावे करी सत्य ठे, ए त्रीजो सत्यलक्षण
द्रव्यास्तिक कह्दीयें. चोथो ते सर्वे द्रव्यना कहेवा योग्य गुण अंगीकार
करे, ते वक्तव्यद्रव्यास्तिक जाणवो. पांचमो जे आत्माने विषे अज्ञान रह्युं
ठे, ते अशुद्धद्रव्यास्तिकनयने मत्तें ठे. माटे एने अशुद्ध द्रव्यास्तिक कह्दीयें.
ठणो सर्वे द्रव्य, गुणपर्यायरूपअवयवेंकरीने सहित ठे, ते अवयवद्रव्या
स्तिक कह्दीयें. तथा सातमो सर्वे द्रव्य मूलसत्तायें एक ठे, ते परमद्रव्यास्तिक
क कह्दीयें. आठमो सर्वे जीवना आठरुचक प्रदेश निर्मल ठे ते शुद्ध
द्रव्यास्तिक कह्दीयें, नवमो सर्वे जीव सत्तायें असंख्यात प्रदेशरूप एक सा
मान्यपणे सरखा ठे ते सत्ताद्रव्यास्तिक कह्दीयें. तथा दशमो गुणी, गुण
अने द्रव्य, ते एक ठे ते परमभावग्राहक द्रव्यास्तिक कह्दीयें. ए रीतें द्रव्या
स्तिक दश नयनुं स्वरूप कळ्युं.

१५६ हवे पर्यायास्तिकनयनुं स्वरूप कहे ठे:—जे पर्यायने ग्रहे, ते पर्याया
स्तिकनय कह्दीयें. तेना ठ जेद ठे, ते कहे ठे:—प्रथम द्रव्यपर्याय ते जव्यपणुं
अथवा सिरूपणुं, वीजो द्रव्यव्यंजनपर्याय, ते पोतपोताना प्रदेशनुं मान,
त्रीजो गुणपर्याय, ते एकगुण, अनेकतापणे परिणमे, जेम धर्मादिद्रव्य पोता
ना चलणसहायरूप एक गुणशी पण अनेक जीवपुजलने सहाय करे,
ठे, ते रीतें सर्वत्र जाणी लेवुं. चोथो गुणव्यंजनपर्याय, ते एक गुणना घणा
जेद ठे. पांचमो स्वभावपर्याय ते अगुरुलघुपर्याय सर्वद्रव्यमां जाणवो. ए
पांच पर्याय सर्वद्रव्यमां ठे, अने ठणो विज्ञावपर्याय ते एक पुजलद्रव्यमां ठे,
एटले पुजलना जे खंध ते सर्वे विज्ञावपर्यायरूप जाणवा. ए ठ पर्यायास्तिक
नय कह्या, अने आगल दश द्रव्यास्तिक कह्या, सर्व मली शोल जेद थया.

हवे नैगमादि सात नयनां जेदो सहित स्वरूप कहे ठे.

१५७ तिहां प्रथम नैगमनयनुं स्वरूप कहे ठे. नहिं ठे एक गम जेने विषे
ते नैगम एटले एक अंशें जेमां गुणपणुं नीपन्युं होय, तेमां वस्तुपणुं माने,
तेने नैगमनय कह्दीयें. तेना त्रण जेद ठे. ते आवी रीतें:—श्रीमाहावीरस्वा
मीनो आगल जन्म थयो हतो, तेने घणो काल व्यतीत थइ गयो, पण ह
मणां पर्युषणमां जन्मकळ्याणिकादिनो महोत्सव करियें, अथवा दीवा
लीने दिवसें निर्वाण कळ्याणिकनो महोत्सव करियें, ते सर्वे वत्तेंमानें
अतीतारोपणनामें नैगमनयनो प्रथम जेद जाणवो. तथा अनागतकालें

श्रीपद्मनाभजी तीर्थंकर थाशे, तेनो आज जन्मकल्याणिकादिक ऋक्ति म होत्सव करीयें, ते सर्वे वर्त्तमान अनागतारोपण नामें नैगमनयनो बीजो जेद जाणवो, तथा हमणां वर्त्तमानें जे कामनो आदर करी अंगीकारकरीयें, ते वर्त्तमाननैगमनयनो त्रीजोजेद जाणवो. ए नैगमनयना त्रण जेद कहा.

७६१ हवे संग्रहनयनुं स्वरूप कहे ठे. जे सत्ताने ग्रहे, ते संग्रहनय जाण वो जे कारणें एक नाम लीधाथी सर्वगुण पर्याय परिवार सहित आवे, ते संग्रहनय जाणवो. तेना वे जेद ठे. एक सामान्यसंग्रह अने बीजो अशेष संग्रह, तिहां द्रव्य एतुं नाम लेतां थकां जीव अजीवपणानो कांइ जेद पड्यो न हीं, ते सामान्यसंग्रह अने बीजो जे विशेषता अंगीकार करीयें, जेम के जीव द्रव्य एतलुं कहुं तेवारें अजीव सर्वे टली गया, तेने विशेष संग्रह कहीयें, वही पण एतुं स्वरूप कहे ठे. जेम के मात्र घट एतुं नाम लेतां सामान्य संग्रह कहीयें. अने विशेषता गुण अंगीकार करीने बोलीयें, जेम के मा टीनो घट एतुं नाम लीधाथकी त्रांवा, पीतल, लोढा, रूपा, सोना प्रमुखना घट सर्वे टली गया, ते विशेषसंग्रह कहीयें. ए संग्रहनयना वे जेद कहा.

७६३ हवे व्यवहारनयनुं स्वरूप कहे ठे:—जे बाह्यस्वरूप देखीने जेद वेहेंचे, एटले बाह्य दीसता गुण देखे, तेवा माने, पण अंतरंग परिणाम तथा सत्ताने न माने, जेम के ए नयमां आचारक्रियाप्रमुख ठे, पण अंतरंग परिणामनो उपयोग नथी, एटले जेम नैगम अने संग्रह ए वे नय ज्ञानरूप ध्यानना परिणाम बिना अंश तथा सत्ताग्राहि ठे, तेम ए नयमां करणी मुख्य ठे. ए व्यवहारनयना वे जेद ठे. एक शुद्धव्यवहार. बीजो अशुद्धव्यवहार, ते अशुद्धव्यवहार, पहिले गुणगणे ठे. तेना पांच जेद ठे, ते शिष्यने समजाववा सारु जूदा जूदा देखाडे ठे. एक अशुद्धव्यवहार, बीजो शुद्धव्यवहार, त्री जो अशुद्धव्यवहार, चोथो उपचरितव्यवहार, पांचमो अनुपचरितव्यवहार, ए पांच जेद अशुद्धव्यवहारना जाणवा, अने बीजो शुद्धव्यवहारनय जे ठे ते चोथा गुणगणाथी मांकीने यावत् तेरमा चौदमा गुणगणा पर्यंत जाणवो.

७६५ हवे ऋजुसूत्रनयनुं स्वरूप कहे ठे. (ऋजु के०) सरल एटले अतीत काल अने अनागत कालनी अपेक्षा न करे, पण वर्त्तमान कालें जे वस्तु जेवे गुण परिणामें वर्त्ते, ते वस्तुने तेवे गुण परिणामें माने, तेथी ए नय परिणामग्राही ठे एटले कोइ जीव गृहस्थ ठे, पण तेना अंतरंग परिणाम

साधु समान वर्त्ते ठे, ते जीवने साधु कहे अने कोइ जीव साधुने वेशें ठे तथापि तेना मनना परिणाम विषयाजिलाष सहित ठे, तो ते जीव अ व्रतीज ठे, एम माने, ए ऋजुसूत्रनयना वे जेद ठे. एक सूक्ष्मऋजुसूत्र अने वीजो स्थूल एटले बादरऋजुसूत्र, तिहां जे सदाकाल सर्वे वस्तुमां एक वर्त्तमान समय वर्त्ते ठे, एटले के जे जीव अतीतकालें अज्ञानी हतो अने अनागतकालें ज्ञानीजावें ज्ञानी थाशे, ते वेहुकानी अपेक्षा न करे, परंतु एक वर्त्तमान समयें जे जेहवो होय तेने तेहवो कहे, ए सूक्ष्मऋजुसूत्र क हीयें. अने बाह्य महोटा परिणामने ग्रहण करे, ते स्थूलऋजुसूत्र कहीयें.

७६६ हवे शब्दनयनुं स्वरूप कहे ठे:-एटले जे वस्तु गुण अथवा निर्गुण होय ते वस्तुने नाम कही बोलावीयें एटले जापावर्गणाथी शब्दपणे वचन गोचर थाय, ते शब्दनय, जे कारणें अरूपीड्रव्यने वचनथी कहेवां, ते शब्द नय कहीयें. इहां जे शब्दनो अर्थ कहे ठे, ते वस्तुमां वस्तुपणुं पामे, तेवारें ते वस्तु शब्दनयें कहीयें. एटले चेष्टा करतो ते घट जाणवो. ए शब्दनयमां व्या करण नीपन्यां अने वीजा पण सर्वशब्द लीधा, ते शब्दनयना नाम, स्थाप ना, ड्रव्य अने जाव, ए चार निक्षेपाने नामें चार जेद ठे. श्रीअनुयोग द्वार मां "जठ य जं जाणिज्जा" ए पूर्वोक्त गाथायें चार निक्षेपा जाणवा. इ हां पहेलो जावनिक्षेपो ते धुरला चार नयमध्ये ते ड्रव्य ठे अने जाव निक्षेपानां ते शब्दादिक रूप ठे, पण ते निक्षेपानी परिणतिरूप वस्तु ते त्रण निक्षेपे वस्तु आदि चार नयमां ठे अने जावनिक्षेपे वस्तु ते शब्दादि नय ठे, एम सर्वहजो. ए रीतें ए शब्दनयनो एक जेद कहीयें. ए शब्दनय कह्यो.

७६७ हवे ब्रह्मा समजिरूढनयनुं स्वरूप कहे ठे:-जे वस्तुना केटलाएक गुण प्रगट्या ठे अने केटलाएक गुण नथी प्रगट्या परंतु जे नथी प्रगट्या ते पण अवश्य प्रगटशे एटले एक अंशें उठी वस्तुने पण पूर्ण कहे, जेम तेरमे गुणठाणे केवलीजगवानने सिद्ध कहे, ते समजिरूढनय एक जेदें जाणवो.

७६८ हवे सातमा एवंचूत नयनुं स्वरूप कहे ठे:-जे वस्तु पोताने गुण संपूर्ण ठे अने पोतानी क्रिया करे ठे, तेने वस्तु कहीयें, ते वस्तुना नय गुणपर्याय तथा वस्तुधर्म सर्वे प्रगट प्रवर्त्तता होय, तेने वस्तु कहीयें, जेम मोक्षस्था नकें जे पहोतो होय ते जीवने सिद्ध कहे, तथा जेम पाणीयें जखो छीना माथा उपर आवतो जलधारणक्रिया करतो होय तेने घडो कहे, ते एवंचूत

नय जाणवो. तेनो एकजेद ठे. ए सर्व मली नैगमना त्रण, संग्रहना वे, व्यवहारना बे, ऋजुसूत्रना बे, तथा शब्दादिक त्रणेना त्रण, मली बार जेद थया, ते पूर्वोक्त शोल जेद साथें मेलवीयें, तेवारें अठावीश उपनय थाय.

११७ हवे ए सात नयना श्रीविशेषावश्यकने अनुसारें जेद कहे ठे. नैगमना दश, संग्रहना बार, व्यवहारना चौद, ऋजुसूत्रना ठ, शब्दना सात, सम त्रिरूढना बे अने एवंचूतनो एक, एम सर्व मली बावन जेद जाणवा. वली नयचक्रसारमध्यें ए सात नयना सात सो जेद कहा ठे, ते पण जाणवा. हवे स्याद्वादरत्नाकरथी नयनुं स्वरूप लखीयें ठैयें. (नय के०) पमाडीयें एटले जेणें श्रुतज्ञानें विषयप्रमाण क्रीधो जे पदार्थनो अंश, तेहथी इतर जे बीजो अंश, ते अंशथी उदासीपणुं तेने जे पडिवजवावालानो अत्रि प्रायविशेषनय ते नय कहीयें. एटले वस्तुना अंशने उदासीपणे ग्रहे, ते नय कहीयें अने एक अंशने मुख्य करी बीजा अंशने उभापे, ते नयाचास कहीयें. ते नयना बे जेद ठे. एक इव्यार्थिक, बीजो पर्यायार्थिक, ए रीतें नयनुं स्वरूप कहुं, अने (पमाणेहिं के०) प्रत्यक्ष अने परोक्ष, ए बे प्रमाणनुं स्वरूप, आगल श्रीसिद्धचक्रजीना यंत्रमध्ये कहुं ठे, तेप्रमाणें जाणवुं.

अने जो “अप्पा सायवायचावेणं” एटले (अप्पा के०) आत्मा तेने (सायवाय के०) स्याद्वादरूप नित्यानित्यादि आठ पदें करी (जावेणं के०) उलखीने जेणें पोताना आत्माना प्रतीति करी ठे. इहां शिष्य पूठे ठे के स्याद्वादरूप नित्यानित्यादि आठ पदें करी पोताना आत्माना प्रतीति केवी रीतें थाय ? तेवारें गुरु कहे ठे जे स्याद्वादमंजरीमां कहुं ठे के “ नित्यानित्याद्यनेकधर्मशबलैकवस्त्वच्युपगमत्वं स्याद्वादत्वं ॥ १ ॥

शिष्यः—ए नित्य अनित्यादि आठ पदें करी जीवनुं स्वरूपकेमजाणीयें?

गुरुः—व्यवहारनयने मतें उदयजावने योगें करी जे गतिमां जीव वत्तें ठे, ते गतिमां नित्य ठे अने समय समय आउखुं घटे ठे, माटे अनित्य कहीयें. पण ते अनित्यपणामां पोतें नित्यपणे वत्तें ठे, ए रीतें नित्यमां अनित्य अने अनित्यमां नित्यपद्दानो विचार व्यवहारनयने मतें जाणवो.

हवे निश्चयनयने मतें नित्य अनित्य पदें करी जीवनुं स्वरूप देखाडे ठे. निश्चयनयने मतें जीवना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण तथा अव्याबाध अमूर्ति अने अनवगाह, ए त्रण पर्याय नित्य ठे अने एक अगुरु

लघु पर्याय, जीवने सर्वेगुणमां हानिवृद्धिरूप उपजवुं, विणसवुं करे ठे. ते अनित्य ठे तैमां ए ज्ञानादि चार गुण ते नित्यपणे वर्त्ते ठे, एटले ए नित्य मां अनित्य अनित्यमां नित्यपद्दनो विचार निश्चयनयने मत्तें जाणवो.

हवे व्यवहारनयने मत्तें एक अनेक पद्दे करी जीवनुं स्वरूप देखाडे ठे. व्यवहारनयने मत्तें उदयजावने योगे करी जे गतिमां जीव वर्त्ते ठे, ते गतिमां एक ठे, पण कोशनो बेटो, कोशनो बाप, कोशनो काको, कोशनो मा मो, कोशनो चाई, कोशनो जत्रीजो, एम अनेक प्रकारे जीवमां बेटा बापा दिकपणुं रळुं ठे, तेथी अनेक पण कहीये. परंतु ए बेटा, बाप, चाई, जत्रीजापणामां पोतापणुं ते एक वर्त्ते ठे, एटले ए एकमां अनेक अने अने कमां एक पद्दनो आचार व्यवहारनयने मत्तें जाणवो.

हवे निश्चयनयने मत्तें जीवमां एक अनेक पद्द देखाडे ठे. एटले निश्चये करी सर्व जीवनो धर्म सत्ताये एकरूपसरखो ठे माटे सर्वजीव एक कहीये अने गुण, पर्याय, तथा प्रदेश अनेक ठे, एटले गुण अनंता ठे, पर्याय अनंता ठे अने प्रदेश असंख्याता ठे, माटे अनेक पण कहीये. तेमाटे ए एक मां अनेक ठे अने ए गुणपर्याय तथा प्रदेश अनेक ठे, पण तैमां जीवपणुं एकसरखुं ठे, माटे अनेकमां एक पण कहीये. ए रीते निश्चयनयने मत्तें करी एकमां अनेक अने अनेकमां एक पद्दनो विचार जाणवो.

हवे व्यवहारनयने मत्तें जीवमां सत् असत् पद्द देखाडे ठे. व्यवहारनयने मत्तें जीव पोते पोतानां ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जावपणे करीने सत् ठे, अने परड्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणे करीने असत् ठे, एटले व्यवहारनयने मत्तें ड्रव्यथकी जीवड्रव्य, जे गतिमां पोते बिराजमान थको वर्त्ते ठे अने क्षेत्रथकी जेटळुं क्षेत्र पोते अवगाही एटले मर्यादा रूप पोतानुं करीने रोक्युं ठे, ते जाणवुं. तथा काल थकी समयरूप पोताना आउखा प्रमाणे काल वर्त्यो जाय ठे, तथा जावथकी सर्वे जीव, पोतपोताना शुजाशुजरूप जावमां रह्या वर्त्ते ठे, एवी रीते व्यवहारनयने मत्तें सर्वे जीव पोतपोताना स्वड्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजावे करीने सत् ठे, अने परड्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणे करी असत् ठे, पण ए असत्पणामां पोतानुं सत्पणुं वर्त्ते ठे, एटले ए सत्मां असत् अने असत्मां सत् पद्दनो विचार व्यवहारनयने मत्तें करी जाणवो.

हवे निश्चयनयें करी जीवमां सत्त्वसत् पक्ष देखाडे ठे. निश्चयनयने मत्तें जीव पोतानां स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजावपणे करीने सत् ठे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणे करीने असत् ठे. एट ले ए निश्चयनयने मत्तें जीवमां स्वद्रव्य ते ज्ञानादिक गुण जाणवा अने स्वक्षेत्र ते जीव, पोतें पोतानां असंख्यात प्रदेशरूप क्षेत्र श्रवगाही रह्यो ठे अने स्वकाल ते पोतानो अगुरुलघु पर्याय सदाकाल हानिवृद्धिरूप उ पजवुं विणसवुं करे ठे. तथा स्वजाव ते पोताना गुणपर्याय तेषें करीने जीव सत् ठे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणे करी जीव, असत् ठे, पण ए असत्पणामां पोतानुं सत्पणुं वत्तें ठे. एटले सत्मां असत् अने असत्मां सत् पक्षनो विचार निश्चयनयने मत्तें करी जाणवो.

हवे निश्चय अने व्यवहारनयने मत्तें करी वक्तव्य श्रवक्तव्यरूप पक्षें करी जी वनुं स्वरूप देखाडे ठे. एटले उदयजावने योगें करी व्यवहारनयने मत्तें जे जीव पहेला गुणठाणाशी मांकी यावत् तेरमा चौदमा गुणठाणा पर्यंत वत्तें ठे, ते जीवना जेटला गुण केवली जगवानना प्ररूप्यामां आवे, ते वक्तव्य जा णवा अने जे केवली जगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते श्रवक्तव्य जाण वा. तथा निश्चयनयने मत्तें सिद्धपरमात्मा गुणठाणा वर्जित लोकने अंतें विराजमान वत्तें ठे, तेना जेटला गुण, केवली जगवानना प्ररूप्यामां आवे, ते वक्तव्य अने जे केवली जगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते श्रवक्तव्य जाणवा. ए रीतें निश्चयनयने मत्तें वक्तव्य श्रवक्तव्यरूप पक्षे करी जीवनुं स्वरूप जा णवुं. तथा (जाणेश्मोसरूवं के०) एवी रीतें स्वरूप जाणपणारूप जेणे उल खाण करी ठे. (सम्महिच्छिउंसोनय के०) ते जीव सम्यग्दृष्टि जाणवा.

शिष्यः—समकेतना केटला प्रकार ठे ?

गुरुः—समकेतना नवप्रकार जाणवा. तिहां प्रथम द्रव्यसमकेत, बीजुं जावसमकेत, त्रीजुं व्यवहारसमकेत, चोथुं निश्चयसमकेत, पांचमुं निस र्गसमकेत, षष्ठुं उपदेशसमकेत, सातमुं रोचकसमकेत, आठमुं कारकसमकेत अने नवमुं दीपकसमकेत, ए नव प्रकारें करी समकेतनुं स्वरूप जाणवुं.

७७? शिष्यः—द्रव्यसमकेत अने जावसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—तीर्थकरना वचन उपर आस्ता प्रतीति होय, जे श्रीतीर्थकरें व च्चन कर्ह्यां, ते तहत्ति करी माने. पण परमार्थ न जाणे अने जीवादिक नव

पदार्थना ज्ञेदाज्ञेद न जाणे, तथा कुलाचारें देवयात्रा, संघ, साह्ममीवत्सल, पूजा, प्रभावनादि करणी करे अने केवलीयें कळुं, ते वचन तहत्ति करी माने, तथा देव ते अरिहंत, गुरु ते सुसाधु, धर्म ते केवलीनो प्ररूप्यो, एवी सहहणा जेने होय, ते जीव, द्रव्यसमकेती जाणवा ॥ १ ॥

अने ज्ञावसमकेती ते आगल द्रव्य समकेतमां जे गुण कह्या, ते गुणें करी सहित तथा जीवादिक नव तत्त्वना परमार्थरूप ज्ञेदाज्ञेद जाणे, एटले नव तत्त्वनुं स्वरूप हेय, ज्ञेय अने उपादेय पणे जाणे, तथा वली नव तत्त्वनुं स्वरूप, साधक, बाधक अने सिद्धरूप, ए त्रण दशायें करी जाणे, तथा वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, कर्त्ता, कारण अने कार्यरूप त्रिजंगीयें करी जाणे, अने वली ए नवतत्त्वनुं स्वरूप, स्वाजाविक विजाविकपणे जाणे, तथा वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, गुणीगुणपणे करी जाणे, वली ए नव तत्त्वनुं स्वरूप, रूपी अरूपीपणे जाणे. जीवसत्ता, द्रव्यगुण पर्यायरूप जाणे. अजीवसत्ता, ज्ञावकर्म, द्रव्यकर्म अने नोकर्मरूप परमार्थ जाणे. ए रीतें अनेक प्रकारें. जीव अजीवरूप नव तत्त्वना ज्ञेदाज्ञेदरूप विचार ठे, ते प्रत्यें जाणे, तथा षट्द्रव्यना अनंता गुण अने अनंता पर्याय तेनुं समय समय उत्पाद व्ययरूप पलटणपणुं थइ रहुं ठे, तेनी अंतरंग जाणपणा ज्ञासनरूप प्रतीति करे. अने कार्यधर्म कारण धर्मरूप अंतरंग प्रतीति करी साध्य एक, साधन अनेक, ए रीतें साधन करे, ते जीव, ज्ञावसमकेती जाणवा ॥ २ ॥

७७२ शिष्यः—व्यवहारसमकेत अने निश्चयसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—व्यवहार समकेत ते शुजलक्षणरूप आचरणायें करी सहित अने उपादानपणुं जाणे, उपादान बाह्य कारणपणे जाणे, उपादान अंतर कारणपणे जाणे, उपादान कार्यपणे जाणे तथा कर्मसत्ताने ठता अठतापणे जाणे, जीवसत्ताने ठता अठतापणे जाणे, अने संवेगादिक समकेतना सडशठ बोलमांहेला एकशठ बोलने गुणें करी क्षयोपशमसमकित तथा उपशमसमकितवंत जे जीव होय, तेने व्यवहार समकेत जाणवुं. एटले उपरथी शुज आचरणारूप लक्षण देखीयें, ते जीवने व्यवहारसमकेत कहीयें. ए समकेत आव्युं थकुं जाय, ते माटे ए व्यवहारसमकेत जाणवुं. जो आव्युं थकुं न जाय, तो ते निश्चयनयसंबंधि निश्चयसम्यक्त्व कहेवाय ॥ ३ ॥

अने निश्चयसमकित ते समकितना एकशठ तथा षट् बोलना जाणपणा

ज्ञासनरूप गुणें करी सहित सात प्रकृतिने द्यैयें द्वायिक समकेतवंत जीवने अंतरंग ज्ञासनरूप ज्ञान, दर्शन, चारित्रनेविषे शुद्धपरिणाम वत्तें, ते जीवने निश्चयसमकित जाणवुं. एटले ए समकेत आव्युं थळुं जाय नहीं. माटे एने निश्चयसमकित कहीयें अने द्वायोपशम तथा उपशम ए वे समकेत आवीने पाठां जतां रहे ठे, तेथी ते व्यवहार समकेतमां गण्यां अने द्वायिक समकेत जो जीवने आव्युं ते फरी पाठुं जायज नहीं, तेथी ए समकेत निश्चयमां गणाय ठे ॥ ४ ॥

५३३ शिष्यः—निसर्गसमकेत अने उपदेशसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—निसर्ग समकेत ते जे पोताने द्वायोपशमं गुरुना उपदेश विना निश्चय व्यवहारनयें करी नैगमादि सात नयें करी तथा नामादिचार निक्षेपे करी जीव अजीवरूप नव तत्त्व षड्द्रव्यनुं स्वरूप जाणे अने निश्चय व्यय हारनयें करी स्याद्वादरूप नित्य अनित्यादि आठपदें करी जीव स्वरूपनी प्रतीति करे, एवी रीतें जाणपणारूप निश्चयें करी नव तत्त्वमां आश्रवरूप पांच तत्त्व ठे, ते उपर त्यागंबुद्धि अने संवरनिर्झारारूप शुद्धगुण, तेनुं आद खुं करे, तथा श्रीवीतरागना कह्या जे ज्ञाव नवतत्त्व षड्द्रव्यरूप तेना स्वरूपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, ज्ञावथी जाणे. तथा नामादि चार निक्षेपे करी पोतानी बुद्धिथी सर्वें वस्तुनुं प्रमाण करे, साचुं करी सर्व्हे, ते निसर्ग समकित जाणवुं. एटले जेम असोचा केवळीने गुरुना उपदेश विना समकेतनी प्राप्ति थाय ठे ते निसर्गसमकेत जाणवुं ॥ ५ ॥

हवे उपदेशसमकेत कहे ठे. तिहां आगळ निसर्ग समकेतमां जे ज्ञाव कह्या, ते सर्वज्ञाव गुरुना उपदेशथी जाणीने तेने साचा करी सर्व्हे, अंतरंग प्रतीति सहित माने; ते जीवने उपदेशसमकेती जाणवो ॥ ६ ॥

५३४ शिष्यः—रोचकसमकेत तथा कारक समकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—रोचक समकेत ते श्रीवीतराग देवनी आज्ञाने रुचि सहित तहत्तिकरी साची सर्व्हे, एटले जे जगवंतें षड्द्रव्यनुं स्वरूप नयनिक्षेपा प्रत्यक्षादि प्रमाणें कळुं ठे, तेने तहत्तिकरी माने तथा सात नयमां चार निक्षेपा उत्सर्ग अपवादें करी जाणे तथा त्रण निक्षेपामां सात तय ते पण उत्सर्ग अपवादें करी जाणे, लौकिक धर्म जाणे, लोकोत्तर बाह्य कारणरूप धर्म जाणे, लोकोत्तर अंतर कारणरूप धर्म जाणे, लोकोत्तर अंतरकार्यरूप धर्म जाणे,

तथा सिद्धनुं स्वरूप, निगोदनुं स्वरूप जेम कछुं ठे, तेम सद्दे, एटले वीत रागनी आज्ञा प्रमाणें यथार्थ उपयोगें जासन थाय, तेने हर्षें करी ते उप योगमध्ये निराधार जासन रमण अनुभवनी एकता यथार्थ उपयोगथी जाणी आत्मधर्म प्रगट करवानी रुचि घणी उपजे, पण उदयजावने योगें करी संसार अवस्थांमां खूतो थको नीकली शके नही, माटे अनेक प्रकारें जूरणा करे, विषय कषायना फल विष समान जाणी, धर्म साधवाने रुचि घणी करे, पण ए उपायथकी बुटी शके नही, ते जीवने चोथे गुणठाणे रोचकसमकेत जाणवुं ॥ ७ ॥

अने कारक समकेत तो जे आगल रोचक समकेतमां जाव कहा, तेणें करी सहित तथा संसारथकी निवृत्ति करी ठे, अने प्रवृत्तिरूप जे साधुनी शुद्धक्रिया ठे ते साचवे ठे, आचरे ठे, तेने विषे प्रेम सहित उपयोग वर्त्तें ठे, सिद्धांतने मत्तें श्री वीतराग देवनी आज्ञा प्रमाणें चाले ठे, ते जीव, ठेठे सातमे गुणठाणें वर्त्तता कारकसमकेतना धणी जाणवा. एटले जेवुं जाणे, तेवुंज अंगीकार करे, तेने कारकसमकेत कहीयें ॥ ७ ॥

७७५ शिष्यः—दीपकसमकेत कोने कहीयें ?

गुरुः—(दीपक के०) दीवो एटले जेम दीवो आगल उद्योत करे अने पा ठल जोतां दीवाने पोताने अंधारुं रहे, ए दृष्टांतें अर्हियां पण अजव्य जीव, लोकने उपदेशरूप प्रतिबोध आपीने समकेतरूप उद्योत करे, बीजाने धर्म पमाडी संसारथकी तारे, पण पोताने मिथ्यात्वरूप अंधारुं टले नही. जेम त्रांबुं, लोडुं होय ते रसकूपिकादिक औषधिने योगें करी सोनापणुं पामे, पण पीतलने अनेक औषधियोना योग मले, तोपण पीतलपणुं पाखटीने सोनापणुं नीपजे नही. एटले पीतलने जेम जेम अग्निमां नाखे, तेम तेम काळुं थाय, तेम अजव्यजीव ते पीतल सरखा जाणवा. अने जव्यजीव त्रांबा अने लोढा सरखा जाणवा. केम के जव्यजीव तो कारण सामग्री म ले कोशक दिवसें सिद्धपणुं पामे, पण अजव्य न पामे. माटे ए दीपक समकेत जाणवुं, एरीतें नव प्रकारें समकेतनुं स्वरूप विचारवुं ॥ इति समकेताधिकारः ॥

७७६ ह्वे नैगमादि सात नयमध्ये जीव, कर्मनो कर्त्ता कया नयें करी क हीयें? तथा जीव, कर्मनो जोक्ता कया नयें करी कहीयें? तथा जीव, स्वरूप नो कर्त्ता कया नयें करी कहीयें? तथा जीव, स्वरूपनो जोक्ता कया नयें

करी कहीयें? ए चार प्रश्नार्थ साते नयें करी कहेवा. वली जीव, कर्मनो अकर्ता कया नयें करी? तथा जीव, कर्मनो अज्ञोक्ता कया नये करी? तथा जीव, स्वरूपनो अकर्ता कया नयें करी? तथा जीव, स्वरूपनो अज्ञोक्ता कया नयें करी जाणवो? ए चार प्रश्नार्थ पण साते नयें करी जाणवा. एटले ए वे चउजंगीमां आठ प्रश्न कहा, तेनो परमार्थ नैगमादि सात नयें करी जाणवो, तथा नवमा उत्सर्ग अपवादरूप मागें करी नय संयुक्त निक्षेपा लगाडवा, तेनो प्रश्न. एटले नैगमादि सात नयमध्यें नामादि चार निक्षेपा ते उत्सर्ग अने अपवादें करी केम जाणीयें? तथा दशमा नैगमादि सात नय मध्ये चोथा जावनिक्षेपा विना शेष नामादि त्रण निक्षेपा ते पण उत्सर्ग अने अपवादें करी केम जाणीयें? ए दश प्रश्ननो अर्थ सातनयें विचारीने पाठो उत्तर वाले, ते जैनमती पंक्तिशिरोमणि, सर्वशास्त्रनो वेत्ता, स्याद्वाद रूप अनेकतानयें करी सर्वपदार्थनो जाण, सर्वज्ञपुत्र जाणवो. अने ए प्रश्ननो अर्थ विचारतांजे कोइ जीव मुंजाशे, ते ज्ञानहीन अल्पबुद्धिनो धणी ज्ञानरूप लक्ष्मीयें करी रहित पामर जन तेने सर्वज्ञपुत्र न कहेवो.

शिष्यः—जीवने कर्मना कर्तापणामां अने ज्ञोक्तापणामां नैगमादि सात नय मांहेला केटला नय पामीयें ?

गुरुः—जिणजडगणिक्कामाश्रमणजी कहे ठे जे चार डव्यनय ठे, अने त्रण जावनय ठे, माटे जीवने डव्यकर्मरूप कार्यना कर्तापणामां चार नय जाणवा अने ते डव्यकर्म जेवारें स्थितिपाकें उदयरूपजावें जीव जो गवे, तेमां उपरला त्रण नयनी गवेषणा जाणवी. ए रीतें जीवने कर्मना कर्ता ज्ञोक्ता पणामां साते नय पामीयें. तेनुं स्वरूप कहे ठे. को इ जीव, ऋजुसूत्रनयने मतें शुचपरिणामें करी व्यवहारनयने मतें पुण्यरूप दळीयांने ग्रहण करे, ए रीतें पुण्यरूप दळीयांने ग्रहण करी ते जीवें संग्रहनयने मतें देवजवना आउखारूप प्रकृतिपणे दळीयां सत्ता यें बांध्यां अने ते नैगमनयने मतें अतीतकालें पण हतां तथा अनागतकालें स्थितिपाकें उदयरूपजावें जोगवशे अने वर्तमानकालें सत्तायें रहां वर्तें ठे, ते नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे कहीयें. ए रीतें जीवें ए चार नयें करी डव्यकर्म रूप देवतानुं आउखुं बांध्युं, ते प्राणी डव्यदेव जाणवा, अने जावदेव तो जेवारें ते जीव, शब्दनयने म

तैं देवतापणे उपन्यो, तेवारें जावदेव कहीयें. एवुं सांजली शिष्य बोळ्यो के शब्दनयना मतवालो तो चार निक्षेपे करी वस्तुने प्रमाण करे ठे. माटे देवतामां चार निक्षेपा केम जाणीयें? तेवारें गुरु कहे ठे:—प्रथम देव एवुं नाम ते नामथकी देव, बीजो देव एवा अक्षर लखवा, ते असझावस्था पना अने देवरूपें मूर्ति स्थापवी, ते सझावस्थापना अने चार नयें करी देवतानुं आळखुं वांधे, तेने ज्ञव्यशरीरआश्रयी द्रव्यदेव कहीयें. तथा जे शब्दनयने मतें देवतापणे उपन्या, तेने उदयजावरूप जावदेव जाणवा. ए देवतामां चार निक्षेपा कहा. हवे समजिरूढनयने मतें देवजवना सर्व पर्यायप्रवर्तनारूप वस्तुप्रत्यें पामे, तेने देव कहीयें. तथा एवंजूतनयने मतें ते देवजवना पर्यायरूप वस्तु सर्वे तखतें वेग जोगवे, ते देव कहीयें. ए रीतें सात नयें करी जीवने कर्मनुं कर्ता जोक्तापणुं जाणवुं.

शिष्य:—जीवने स्वरूपना कर्तापणामां केटला नय पामीयें ?

गुरु:—जे कार्य करवुं, ते साते नयें मली नीपजे ठे, तेवारें ते वस्तु बरोबर पाकी प्रमाण जाणवी. ए जिनमत अनुसारें वचन ठे, पण एमां एके नये-अधूरी वस्तुमां वस्तुपणुं माने, ते जिनमत विरोध वादीनुं वचन जाणवुं. माटे इहां जीवने स्वरूपनो कर्ता ते सिद्धिरूप कार्यनो कर्ता जाणवो, ते सिद्धिरूप कार्य तो साते नयें मलीने नीपजे ठे, माटे साते नयें करी सिद्धिरूप कार्य देखाडे ठे. तिहां कोइ सम्यग्दृष्टि जीव जाग्यो थको विवेकरूप नेत्रें करीने अंतरदृष्टियें जोतो पोतानुं स्वरूप नीपजावे, एटले संग्रहनयने मतें सिद्धसमान पोताना आत्माना सत्ता असंख्यात प्रदेशरूप ठे, ते उलखीने जेणें प्रतीति करी ठे अने नैगमनयने मतें आठ रुचकप्रदेश जीवने सदाकाल सिद्धसमान निर्मला वत्तें ठे, तेणें करी अंशथकी पोताना आत्माने सिद्धसमान करी जाणे ठे, तेनी आचारांगनी टीकामां साख ठे, अने व्यवहारनयने मतें उपरथकी गुणवाणां माफक साध्य चोखुं राखीने पोतानी करणी करतो जाय ठे, तथा ऋजुसूत्रनयने मतें संसार उदासी त्या ग वैराग्यरूप उदासजावें परिणाम वत्तें ठे. तथा शब्दनयने मतें जीव अ जीव रूप स्वसत्ता परसत्तानी वेहेंचण करी जेवी हती, तेवीज शुरू निर्मलपणे जेणें पोताना आत्माना अंतरंग ज्ञासनरूप प्रतीति करी ठे, ते जीव, समजिरूढनयने मतें शुरू शुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप रूपक श्रे

णीयें चढे, तेवारें घातीकर्मने द्यै ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करे अने एवंभूतनयने मत्तें ते जीव, ज्ञानावरणादि अष्ट कर्मने द्यै अष्टगुण संपन्न उत्कृष्ट आनंदमय एवं पोताना आत्मानुं सिद्धिरूप कार्य करवुं, तेनो कर्त्ता जाणवो. ए रीतें सात नयें करी जीवने स्वरूपनुं कर्त्तापणुं कछुं, पण एमां, एके नयें अधूरे जे जीवमां स्वरूपनुं कर्त्तापणुं माने, तेनुं वचन अन्यथा अप्रमाण ठे.

शिष्यः—जीवने स्वरूपना जोक्तापणामां केटला नय पामीयें ?

गुरुः—कर्त्ता तेहीज जोक्ता ए न्यायमार्ग ठे, एटले जे करे, तेहीज जोग वे, माटे पोताना स्वरूपनो कर्त्ता ठे, तो जोक्तापणुं पण एनेज जोश्यें. तेमाटे आगल जीवने स्वरूपना कर्त्तापणामां साते नय देखाड्या तो स्वरूपना जोक्तापणामां पण साते नय जोश्यें. एटले इहां चोज ठे जे कर्त्तापणामां सात नय लगाव्या, तेतो कारण रूप जाणवा अने कछुं ठे के “कार्ये सिद्धे कारणताव्ययः” ए जावार्थ जोतां तो कार्यनी सिद्धि नीपजे, तेवारें कारणपणानो (व्यय के०) नाश जाणवो, अने सिद्ध परमात्मार्ये तो कारणरूप साते नयें करी पोतानुं संपूर्ण कार्य कछुं ठे, माटे कारणरूप सात नयनो पण सिद्धजीवमां नाश जाणवो. ए परमार्थ ठे. हवे कार्यरूप साते नयें करी सिद्धना जीव अव्याबाधरूप पोताना स्वरूपने जोगवे ठे, ते जोक्तापणामां सात नय देखाडे ठे. तिहां प्रथम नैगमनयने मत्तें सिद्धपरमात्माने आठ रुचक प्रदेश अतीतकालें निरावरण हुता, अने अनागतकालें पण निरावरण वर्त्तेशे तथा वर्त्तमानकालें पण निरावरण वर्त्ते ठे, ए रीतें त्रणे काल एकरूप जाणवा. तथा संग्रहनयने मत्तें पोताना आत्माना सत्ता अंतरंग शुरु निर्मलपणे जेवी हुती, तेवीज निरावरणपणे प्रगट करी ठे, तथा व्यवहारनयने मत्तें पलटणस्वप्नावें नवनवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, अनंत अनंतो थइ रह्यो ठे, तथा रज्जुसूत्रनयने मत्तें सिद्धपरमात्मा पोताना पारिणामिकत्वावें सामान्य विशेषरूप उपयोगमां सदाकाल वर्त्ते ठे, तथा शब्दनयने मत्तें आगल जीव, अजीवरूप नव तत्व षड्रूपव्यना जाणपणाज्ञासनरूप अंतरंग प्रतीति करी, द्वायिक समकेतरूप गुण प्रगट्यो ठे, ते पण सिद्धना जीवने पोतानी पासें ठे, तथा समञ्जिरुदनयने मत्तें शुरुशुक्लध्यान रूपातीत परिणामरूप हृपकश्रेणीयें घातीकर्मने

क्षयें अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते पण पोतानी पासें ठे, तथा एवंभूतनयने मत्तें सिद्धपरमात्मायें अष्ट कर्मने क्षयें अष्टगुणरूप लक्ष्मी प्रगट करी, ते लक्ष्मीने लोकने अंतें जइ विराजमान थका वत्तें ठे. ए रीतें जीवने स्वरूपना जोक्तापणामां अंतरदृष्टियें जोतां कार्यरूप साते नय जाणवा.

शिष्यः—नैगमादि सात नयमां जीव, कर्मनो अकर्त्ता कया नयें करी जाणवो. तथा कर्मनो अजोक्ता कया नयें करी जाणवो? तथा स्वरूपनो अकर्त्ता कया नयें करी जाणवो? तथा स्वरूपनो अजोक्ता कया नयें करी जाणवो?

गुरुः—श्रीअध्यात्मगीतामध्ये मुनिदेवचंद्रजीयें आवी रीतें कळुं ठे॥गाथा॥ आतम सर्व समान, निधान महासुखकंद ॥ सिद्ध तणा साधर्मी, सत्तायें गुण वृंद ॥ अर्थः—नैगम तथा संग्रहनयने मत्तें सर्व जीव एकरूप सरखा सत्तायें सिद्धसमान, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप निधानें करी सहित ठे, अने (महासुखकंद केठ) मूलस्वभावें करी जोतां तो सर्व जीव, पोतपोताना पारिणामिकभावें करी स्वभावरूप सुखमां रह्या स्फाटिक रत्ननी पेरें सदाकाल एकरूपपणे वत्तें ठे, माटे तेमां कर्मतुं कर्त्तापणुं नथी, अने कर्मतुं जोक्ता पणुं पण नथी, तथा स्वरूपतुं कर्त्तापणुं पण नथी, अने स्वरूपतुं जोक्तापणुं पण नथी एटले नैगम अने संग्रह, ए वे नयने मत्तें सर्व जीव, सरखा पोतें पोताना पारिणामिक जावमां रह्या त्रणे काल एक रूपपणे वत्तें ठे.

शिष्यः—आगल नवमा प्रश्नमध्ये कळुं ठे, ते प्रमाणें नैगमादि सात नय मध्ये नामादि चार निक्षेपा उत्सर्ग अने अपवादमागें करी केम जाणीयें ?

गुरुः—मंजूषा उपर सात नयमां चार निक्षेपा उत्सर्ग अने अपवादें करी देखाडुं हुंः—कोइ जीव, मंजूषाने अर्थें वनमां काष्ठ लेवा चाळ्यो, तेने रस्ता मां कोइ वीजो पुरुष सन्मुख मळ्यो, तेणें पूब्युं तुं शुं लेवा जाय ठे? ते वारें ते अशुद्धनैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं मंजूषा लेवा जाउं हुं. हवे वनमां जइने लाकडुं कापवा मांभुं, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं के तुं शुं लीये ठे? तेवारें ते शुद्ध नैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं मंजूषा लाउं हुं. हवे मंजूषाने सारु लाकडुं लइने पाठो वळ्यो, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं तुं शुं लाव्यो? तेवारें शुद्धतरनैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं मंजूषा लाव्यो, हवे सूतारने तेडी मंजूषा कराववा मांकी, तेवारें वली कोश्यें पूब्युं तुं शुं करावे ठे? एटले अतिशुद्धनैगमनयने मत्तें बोळ्यो के हुं मंजूषा करावुं हुं ॥ इति नै

गमनयः ॥ हवे व्यवहारनयना मतवालो बोळ्यो के एम मंजूषा नही मानुं हुं तो तैय्यार नजरें देखुं, तो मंजूषापणुं मानुं माटे जेवारें मंजूषा तैयार सं पूर्ण नीपनी, तेवारें व्यवहारनयना मतवालो कहे के एने मंजूषा कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो एम मंजूषा न होय, जे मंजूषानी सत्ता पूर्ण ग्रहण करे, ते मंजूषा कहेवाय, पण ठाली मंजूषा कांइ कामनी नही, परंतु मंजूषानी सत्तारूप माणक, मोती, हीरा, जवाहीर, रत्न, परवालां प्रमुख वस्तु मांहे जरे, तेवारें संग्रहनयना मतवालो कहे के हवे एने मंजूषा कहीयें. हवे ऋजुसूत्रनयना मतवालो बोळ्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही, हुं तो जावने ग्रहण करुं एटले मांहे जे वस्तु जरी ठे, तेनी साथें काम, परंतु मंजूषारूप खोखानुं कांइ प्रयोजन नथी. एटले ए नयने मतवाले मंजूषारूप खोखा मांहेथी पोतानो उपयोग काढीने माणक, मोती, हीरा, जवाहीर प्रमुख जे एमां वस्तु जरी ठे, तेमांहे उपयोग लगाव्यो, ए रीतें चार नयें करी मंजूषापणुं कछुं, ते अपवादमागें करी जाणवुं. पण तेमां निक्षेपा त्रण होय, ते लगावी देखाडे ठे. प्रथम मंजूषा एवुं नाम, ते नाममंजूषा, बीजुं स्थापना मंजूषाना बे जेद ठे, एक मंजूषा एवा अक्षर लखवा, ते असंज्ञाव स्थापना अने मंजूषारूपें चित्रामण करी स्थापवुं, ते बीजी संज्ञावस्थापना, तथा ड्र व्यथकी मंजूषाना त्रण जेद ठे. ते आवी रीतें:—कोश्यें मंजूषा करावी घरमां राखी ते ऋव्यशरीरनुं ड्रव्य जाणवुं तथा कोशना घरमां मंजूषा ठे, पण मां हेथीमाल लूटाणो, अने चांगो लुट्यो पळ्यो ठे, ते झशरीरनुं ड्रव्य जाणवुं अने कोशना घरमां मंजूषा ठे, ते माणक, मोती, जवाहीर अने रत्नप्रमुखें करी जरेली ठे, तेने तद्रव्यतिरिक्त शरीरनुं ड्रव्य कहीयें. ए त्रण प्रकारें ड्रव्य निक्षेपो कह्यो. ए रीतें ए चार नयमां त्रण निक्षेपा ते अपवादमागें करी जाणवा.

हवे चोथा जावनिक्षेपामां शब्दादिक त्रण नय ते उत्सर्गमागें करी देखाडे ठे:—पूर्वें ऋजुसूत्रनयने मतवाले मंजूषारूप खोखामध्येथी उपयोग काढी अने मांहे माणक, मोती प्रमुख जे वस्तु जरी हती, तेमां उपयोग लगाव्यो हतो, एटले वली कोइ बोळ्यो के मांहे माणक, मोती, हीरा, जवाहीर प्रमुख जे वस्तु जरी ठे, तेना जाणपणारूप जे ज्ञान ते किहां रचुं ठे? तेवारें शब्दनयना मतवालो अंतरंग उपयोगरूप वर्हेचण करी बोळ्यो के आशरीररूप मंजूषा अने तेमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अव्याबाध, अमूर्ति आ

दिक अनंतगुणरूप जावलक्ष्मी जरी ठे, तेमां ए ज्ञान रहुं ठे, तेवारें समजि रूढनयना मतवालो बोळ्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही पण ए शरीररूप मंजूषा उपरथी उपयोग उतारी अने मांहे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अब्या वाध, अमूर्ति प्रमुख अनंतगुणरूप लक्ष्मी जरी ठे, तेमां उपयोग लगावी श्रेणीजावें चढे, तेवारें एने मंजूषा कहीयें. हवे एवंचूतनयना मतवालो बोळ्यो के एम मंजूषा कहेवाय नही परंतु ए शरीररूप मंजूषातुं खोखुं इहां मूकी अने मांहे ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे लक्ष्मी जरी ठे, तेने लइलोकने अंते सिरूपुरीमां विराजमान थया, तिहां एने मंजूषा कहीयें. एटले पूर्वत्रण निक्षेपामां चार नय अपवादमागें देखाड्या, अने इहां एक जावनिक्षेपामां शब्दादिक त्रण नय उत्सर्गमागें देखाड्या. ए रीतें सात नयमां चार निक्षे पा उत्सर्ग अपवादमागें करी जाणवा. ए मंजूषानी रीतें सर्वे वस्तुमां पोतानी बुद्धिथी उत्सर्ग अपवादमागें नय सहित निक्षेपा जाणी लेवा.

शिष्यः—दशमा प्रश्नने विषे सात नयमां त्रण निक्षेपा उत्सर्ग अने अप वाद मागें कह्या, ते केवी रीतें जाणीयें ?

गुरुः—कोइ मिथ्यादृष्टि जीव, कजुसूत्रनयने मतें शुजपरिणामें करी, व्य वहारनयने मतें पुण्यरूप दक्षीयाने ग्रहण करे, ते पुण्यरूप दाक्षीयाने ग्रहण करी, तेने संग्रहनयने मतें मनुष्यजवना आउखारूप प्रकृतिपणे सत्तायें वांध्यां, ते दक्षीयां नैगमनयने मतें अतीतकालें ग्रहण कख्यां हतां, अने अनागतकालें स्थितिपाकें उदयरूप जावें जोगवशे, तथा वर्तमानकालें सत्ता यें रह्यां ठे. एवी रीतें नैगमनयने मतें त्रणे काल एकरूपपणे जाणवा. ए प्रकारें जे जीवें चार नयें करी अपवादमागें मनुष्यपणुं उपाड्युं ते प्राणी द्रव्यमनुष्य जाणवा अने जेवारें ते जीव, शब्दनयने मतें मनुष्यपणे उपन्या, तेवारें तेने जावमनुष्य कहीयें. तथा समजिरूढनयना मतें तो मनुष्यजवना सर्वपर्याय प्रवर्तनारूप वस्तु प्रत्यें पायें पामे, तेने मनुष्य कहीयें. तथा एवंचूतनयने मतें ते मनुष्यजवना सर्वपर्यायरूप वस्तुने जोग ववा मांकी, ते मनुष्य जाणवा. इहां प्रथम चार नयें अपवाद मागें करी मनुष्यपणुं देखाड्युं ते द्रव्य मनुष्य जाणवा अने पाठला त्रण नयें उत्स र्ग मागें करी मनुष्यपणुं जोगवबुं ते जावमनुष्य जाणवा. ए रीतें उत्स र्ग तथा अपवादें करी सात नयनुं खरूप कहुं, पण ए जीव मिथ्यादृष्टि

हे, केम के "अणुवर्णो दवं" ए श्रीअनुयोग द्वारनुं वचन ठे, माटे जे अनुप योगें मिथ्यात्वजावें वचें, तेने ड्रव्यजीव कहीयें. एटले मिथ्यात्वी मनुष्यमां सात नय लगाडवा, ते मिथ्यात्वीने तो सूत्रमां ड्रव्यजीव कही बोलाव्या ठे, माटे तेमां एकजावविना शेष आद्यना त्रणनिक्षेपा जाणवा ॥ इति प्रश्नार्थः ॥

ए प्रश्नार्थनी रचना श्रीजिनवचनने अनुसारें नयनी अपेक्षाचें करी में मा हारी बुद्धि माफक करी ठे, वली एथी विशेषार्थ श्रीजिनवचनने अनुसारें पं कितजन मलीने जे करे, ते प्रमाण ठे. एरीतें जवरूप अटवीमां फरता जे जीवने ए प्रकारें समकेतरूप रत्ननो लाज थयो, ते जीव सर्व पाम्यो ॥ गा था ॥ सम्मत्तमिय लळे, विमाण वधं न वद्धए आउ ॥ जइवि नमतजडे अह, वा न बद्धाउठ पुआवि ॥ १ ॥ अर्थः—कोइ जव्यजीव संसारमां फरतां समकेतरूप रत्ननो लाज पाम्यो, ते जीव, वैमानिकदेव विना बीजी गतिनुं आयु न बांधे, एटले समकेतथी पढे, तो बीजी गतियें जाय, पण समकेत सहित होय तेतो वैमानिकनुंज आयु बांधे, ए परमार्थ ॥ गाथा ॥ लप्रइ सुरसमिद्धं, लप्रइ पदुत्तणं न संदेहो ॥ एगं नवरं न लप्रइ, दुल्लहरय णं च सम्मत्तं ॥ २ ॥ अर्थः—आपणो जीव अनादिकालनो शाश्वतो ठे माटे संसारमां फरतां (सुर के०) देवतानी पदवी घणी वार पाम्यो, अथवा (पदुत्तणं के०) प्रभुतारूप राजकृद्धि लक्ष्मी घणी वार पाम्यो, एमां संदेह न जाणवो, पण (एगंनवरंनलप्रइ के०) एक समकेतरूप रत्ननो लाज नथी पाम्यो, तेणें करी दुःखरूप दारिद्र्ये जीव पीडाय ठे.

शिष्यः—समकेतरूपरत्न जे मोक्षसुखनुं दातार ठे, तेनो लाज केम पामीयें ?

गुरुः—समकेतनां लक्षण श्री पन्नवणासूत्रथी कहीयें ठैयें ॥ गाथा ॥ परमह संशुवो वा, सुद्धिठि परमह सेवणा वावि ॥ वावन कुदंसण वच्च णा य तं सम्मत्त सहइणा ॥ १ ॥ अर्थः—परमार्थ जे ठ ड्रव्य नवतत्त्व, गुण पर्याय सहित मोक्षनिःकर्मा अवस्थानुं स्वरूप जाणे, एटले परमार्थ जे सूक्ष्म अर्थ ठे, तेने जाणवानो घणो परिचय करे, अथवा जाणवानी घणी चा ह राखे, तथा (सुद्धिठि के०) जल्दी रीतें दीठा ठे जाण्या ठे ठ ड्रव्यना परमार्थ तथा मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने जेणें एवा गुरु तेनी सेवा करे, एटले ज्ञानीगुरुने धारण करे अने (वावन के०) जैनमति य तिनाम धरावी क्षेत्रपाल प्रमुखनेमाने, एवा जे समकेत विनाना होय ते

नो संग वजें, तथा कुदर्शनी अन्यमतीनो संग न करे, एवा जे परिणाम ते समकेतनी सहृणा जाणवी. वली ॥ गाथा ॥ विरया सावघाळ, कसाय ही णा महवय धरावि ॥ सम्मदिष्टि विहूणा, कयावि मोस्कं न पावंति ॥ १ ॥
 अर्थः—जे सावघ आरंजथी विरम्या ठे, जेणें क्रोधादिक चार कषाय जीत्या ठे अने जे शुद्ध पंच महाव्रत पाळे ठे, इत्यादिक क्रिया पाळे, पण समकेत विना ते जीव, केवारें मोक्ष पामे नही, माटे समकेतनुं स्वरूप जाणवाने वली गाथा कहे ठे ॥ नय जंग पमाणेहिं, जो अप्पा सायवाय जावेणं ॥ जाणइ मोस्क सरूवं, सम्मदिष्टिउं सो नेउं ॥१॥ अर्थः—(नय के०) द्रव्यास्तिक दश नयें करी अने पर्यायास्तिक ठ नयें करी तथा नैगमादि सात नयें करी तथा (जंग के०) चोजंगी, त्रिजंगी, सप्तजंगीयें करी तथा (पमाणेहिं के०) प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणें करी जे (अप्पा के०) पोताना आत्माने जाणे, उलखे अने वली (सायवाय के०) स्याद्वादरूप आठपक्ष जाणे, ए मज स्याद्वादपणे मोक्षनिःकर्मा अवस्थाने पण जाणे, परवस्तुने हेय जाणे, जीवगुण उपादेय जाणे, ते समकेतदृष्टि जीव जाणवा. अने एवा समकेत सहित जे करणी करवी, ते सर्व मोक्षमार्गनुं हेतु जाणवुं एवुं सांजलीने शिष्यः—ज्वयजीव मोक्षाजिलाषीने स्वरूपनी प्रतीति करवा वास्ते नव तत्त्वनुं स्वरूप कहुं, ते प्रमाण ठे, परंतु आगळ पन्नवणासूत्रना पाठमध्ये कहुं जे परमार्थ ठ द्रव्यना गुणपर्यायरूप सूक्ष्म अर्थ ठे, ते जाणवानो घणो परिचय करवो, अज्यास करवो, एवी रीतें तमें कहुं माटे बाल जीव उपर कृपा करी षड्द्रव्यनुं स्वरूप प्रकाश करो ?

गुरुः—ठ द्रव्य जाणे, ठ द्रव्यना गुण जाणे, ठ द्रव्यना पर्याय जाणे, ते ठ द्रव्यमांहेलां पांच अजीवद्रव्य हेय जाणी अने एक जीव द्रव्य निश्चयनयें करी सिद्ध समान मोक्षमय मोक्षनो जाणनार, मोक्षनो कारण, मोक्षमां जावावालो, मोक्षमां रहेनारो, एवो आपणो जीव अनंतगुणी अरूपी ठे, तेने ध्यावे, ते निश्चयज्ञान कहीयें. हवे ए ठ द्रव्यनां नाम कहे ठेः— एक धर्मास्तिकाय, बीजुं अधर्मास्तिकाय, अने त्रीजुं आकाशास्तिकाय, चोथुं पुज्जलास्तिकाय, पांचमुं जीवास्तिकाय अने षडुं कालद्रव्य. ए ठ द्रव्य शाश्वतां ठे, तेमां पांच द्रव्य अजीव ठे, ते बांरुवा योग्य ठे अने एक जीवद्रव्य

જ્ઞાનાદિ ચેતનાગુણે કરી સહિત છે, તે (જપાદેય કે ૦) આદરવા યોગ્ય છે.

૧ ઠ ડ્રવ્યના ગુણ કહે છે. ધર્માસ્તિકાયના એક અરૂપી, બીજો અચેતન, ત્રીજો અક્રિય અને ચોથો ચલણસહાય, ૫ ચાર ગુણ જાણવા. તથા અધર્માસ્તિકાયના એક અરૂપી, બીજો અચેતન, ત્રીજો અક્રિય અને ચોથો સ્થિરસહાય, ૫ ચાર ગુણ જાણવા. તથા આકાશાસ્તિકાયના એક અરૂપી, બીજો અચેતન, ત્રીજો અક્રિય અને ચોથો અવગાહના, ૫ ચાર ગુણ જાણવા. તથા કાલ ડ્રવ્યના એક અરૂપી; બીજો અચેતન, ત્રીજો અક્રિય, અને ચોથો નવા પુરાણા વર્તનાલક્ષણ. ૫ ચાર ગુણ જાણવા. તથા પુજ્જલ ડ્રવ્યના એકરૂપી, બીજો અચેતન, ત્રીજો સક્રિય અને ચોથો મિલણવિચ્છરણ રૂપ પૂર્ણગલન ગુણ, ૫ ચાર ગુણ જાણવા. તથા જીવ ડ્રવ્યનું એક અનંત જ્ઞાન, બીજું અનંતદર્શન, ત્રીજું અનંતચારિત્ર, ચોથું અનંતવીર્ય, ૫ ચાર ગુણ જાણવા. ૧ ઠ ડ્રવ્યના ગુણ કહ્યા, તે સર્વ ગુણ નિત્ય ધ્રુવપણે છે.

હવે ઠ ડ્રવ્યના પર્યાય કહે છે:—ધર્માસ્તિકાયના ધંધ, દેશ, પ્રદેશ અને અગુરુલઘુ, ૫ ચાર પર્યાય, તથા અધર્માસ્તિકાયના ધંધ, દેશ પ્રદેશ અને અગુરુલઘુ, ૫ ચાર પર્યાય, તથા આકાશાસ્તિકાયના ધંધ, દેશ, પ્રદેશ અને અગુરુલઘુ, ૫ ચાર પર્યાય તથા કાલડ્રવ્યના અતીત, અનાગત, વર્તમાન અને અગુરુલઘુ, ૫ ચાર પર્યાય, તથા પુજ્જલાસ્તિકાયના વર્ણ, ગંધ, રસ, ફરસ, અગુરુલઘુસહિત ૫ ચાર પર્યાય, તથા જીવાસ્તિકાયના અવ્યાબાધ, અનવગાહ, અમૌર્તિક અને અગુરુલઘુ, ૫ ચાર પર્યાય જાણવા. ૧ ઠ ડ્રવ્યના પર્યાય કહ્યા.

હવે ૧ ઠ ડ્રવ્યના ગુણપર્યાયે સાધર્મિકપણું કહે છે તિહાં પ્રથમ અગુરુલઘુ પર્યાય સર્વડ્રવ્યમાં સરખો છે. અને અરૂપીગુણ પાંચ ડ્રવ્યમાં છે, એક પુજ્જલડ્રવ્યમાં નથી, તથા અચેતનપણું પાંચ ડ્રવ્યમાં છે, એક જીવ ડ્રવ્યમાં નથી, તથા સક્રિયગુણ જીવ અને પુજ્જલ, ૧ બે ડ્રવ્યમાં છે, શેષ ચાર ડ્રવ્યમાં નથી, તથા ચલણસહાયગુણ એક ધર્માસ્તિકાયમાં છે, શેષ પાંચ ડ્રવ્યમાં નથી, તથા સ્થિરસહાય ગુણ એક અધર્માસ્તિકાયમાં છે, શેષ પાંચ ડ્રવ્યમાં નથી, તથા અવગાહનાગુણ એક આકાશડ્રવ્યમાં છે, શેષ પાંચ ડ્રવ્યમાં નથી, તથા વર્તનગુણ એક કાલડ્રવ્યમાં છે, બીજા ડ્રવ્યમાં નથી, તથા મિલણ વિચ્છરણ ગુણ એક પુજ્જલમાં જ છે, બીજા ડ્રવ્યમાં નથી, તથા જ્ઞાનાદિક ચેતનાગુણ એક જીવડ્રવ્યમાં જ છે, શેષ ડ્રવ્યમાં નથી, ૧ મૂલગુણ, કોઈ ડ્રવ્યના

कोशद्रव्यमां जले नही, तथा धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्यना त्रण गुण अने चार पर्याय सरखा ठे. तथा त्रणगुणेंकरी कालद्रव्यपणएसमानठे.

हवे ए ठ द्रव्यना गुणपर्यायरूप स्वरूप जाणवाने सूत्रपाठ गाथा क हे ठे" परिणामि जीवमुत्ता, सपएसा एगखित्त किरिआ य ॥ निच्चं कारण कत्ता, सबगय इयर अपवेसा ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ शिष्य अने गुरुना प्रश्नोत्तररूपें लखीयें ठैयें.

११७ शिष्यः—ए ठ द्रव्यमां परिणामि केटलां अने अपरिणामी केटलां?

गुरुः—निश्चयनयें करी तो ठए द्रव्यपरिणामी ठे, केम के धर्मास्तिकाय द्रव्य निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमां परिणामी रछुं ठे, पण बीजा पां च द्रव्यमां परिणमतुं नथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्य पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे ठे, पण बीजां पांच द्रव्यमां नथी परिणमतुं. तथा आकाशास्तिकाय पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे ठे. पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी, तथा कालद्रव्य पण निश्चयनयें करी पोताना स्वरूपमांज परिणमे ठे, पण बीजा पांच द्रव्यमां परिणमतुं नथी, तथा जीवद्रव्य पण संग्रहनयने मत्तें निश्चयनयें करी परिणामिकजावें पोताना स्वरूपमां परिणामी रछुं ठे, पण बीजा पांचद्रव्यमां नथी परिणमतुं केम के जो निश्चयनयें करी जीव परपुजल द्रव्यमां परिणमे तो कोशकालें पण कर्मथकी रहित न्यारो थइ सिद्धिप्रत्यें न पा मे, माटे निश्चयनयें करी जीव पोताना स्वरूपमांज परिणमे ठे अने व्यवहारनयें करी जीव, नाटकीया बजाणीया जवाश्यानी पेरें अनेक प्रकारें एकेंडी, बेंडी, तेंडी, चौरिडी, पंचेंडी पर्यंत देवता, नारकी, मनुष्य अने तिर्यं चरूप नवानवा वेश पेहेरी नवानवा रूप करी नवानवां नाम धरावी चार गतिरूप संसारमां चोराशी लाख चउटामां जमतो फरे ठे. एकवेश उतारे ठे एकवेश पेहेरे ठे, एरीतें जीव अनेक प्रकारें संसारमां नाटक करे ठे. ते सर्वव्यवहारनयें करी जाणवुं. परंतु निश्चयनयें करी तो जीव शाश्वतो सत्तायें सिद्धसमान ठे तथा पुजलास्तिकाय द्रव्यपण निश्चयनयें करी परमाणुआ सर्व पोतें पोताने स्वजावें रह्या ठे अने व्यवहारनयें करी पुजलपरमाणुआ मली खंध थाय ठे परंतु जो निश्चयनयें करी खंध थातो होत तो कोश कालें ए खंध विखराइ जात नही, सदाकाल खंधना खंध जावेंज रेहेत, तेम तो

रहेता नथी माटे व्यवहारनयें पुजलना परमाणुआ मली खंध थाय ठे अने पाठा खंध विखरे पण ठे अने निश्चयनयें करी तो परमाणुआ पोतपोताने स्वप्नावें सदा काल शाश्वता ठे, पण कोइ कालें घटशे वधशे नही, ए रीतें ए ठए ड्रव्य निश्चयनयें करी पोतपोताने स्वप्नावें पारिणामिक जाणवा.

तथा व्यवहारनयें करी तो धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार ड्रव्य अपरिणामी ठे, अने जीव तथा पुजल ए बे ड्रव्य परिणामी ठे केम के? व्यवहारनयने मत्तें जीव, समय समय अनंतां कर्मरूप वर्गणानां दली यां लीये ठे, अने समय समय अनंतां कर्मरूप वर्गणानां दलीयां खेरवे ठे, पण जो निश्चयनयें करी कर्मनुं ग्रहण करतो होय, तो कोइकालें कर्मथकी बूटेज नही, माटे जीवने अज्ञान अने राग द्वेष रूप चिकाशें करी अशुद्धुं ठे, तेणें करी परद्रव्यमां परिणमे ठे अने पुजलड्रव्यने परिणमन पणानो स्वप्नाव ठे, माटे जीव, राग, द्वेष अने अज्ञानरूप अशुद्धतायें करी पुजल परमाणुआने ग्रहण करे ठे अने मनुष्य, देवता, नारकी तथा तिर्यचना शरीररूप खंध प्रत्यें निपजावे ठे, ते खंधस्थिति प्रमाणें रहे ठे, वली पाठा खेरवे ठे, वली बीजा परमाणुआ लइ नवा शरीररूप खंध नीपजावे ठे, एम केटलाएक पुजल परमाणुआ आहारपणे ग्रहे ठे. अने केटलाएक पुजल परमाणुआने वर्ण, गंध, रस अने फरसपणे ग्रहण करे ठे. तथा केटला एक पुजलपरमाणुआने कर्मपणे ग्रहण करे ठे, वली पाठा खेरवे ठे, एम अनादिकालनी जीव पुजलने परिणमनपणानी घटमाल चाली जाय ठे, अने अज्ञानदशायें करी जो शुच पुजल जीवने मले, तो राजी थाय ठे, तथा अशुच पुजल मले, तो नाराजी थाय ठे. ए रीतें व्यवहारनयने मत्तें जीव अने पुजल, ए बे ड्रव्य परिणामी ठे. तेनुं स्वरूप कछुं.

१८७ शिष्यः—ठ ड्रव्यमां (जीव के) जीव केटला अने अजीव केटला?

गुरुः—षड्द्रव्यमां एक जीवड्रव्य ते जीव ठे, अने शेष पांच ड्रव्य अजीव ठे, जे कारणें संग्रहनयने मत्तें पारिणामिक ज्ञावें निश्चयनयें करी एक जीव ड्रव्य, ज्ञानादिचेतनारूपणें करी सहित सत्तायें सिरूसमान अनंतकृद्दिनो धणी ठे अने व्यवहारनयें करी शुचाशुच कर्मरूप पुण्यपापनो जोक्ता जाण वो. तथा शेष धर्मादिक पांच ड्रव्य ते अजीवरूप जडस्वप्नाववाला ज्ञानादि चेतनाणुणें करी रहित सुखदुःखने न जाणनारा माटे अजीव ठे.

१८१ शिष्यः—ठ द्रव्यमां (मूत्ता के०) मूर्त्ति केटला अने अमूर्त्ति केटलां ?

गुरुः—एक पुञ्जलद्रव्य मूर्त्ति ठे, अने शेष पांच द्रव्य अमूर्त्ति ठे, ते आ वी रीतें जे धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य तो अमूर्त्ति ठे, अने एक जीवद्रव्य ते मूर्त्ति अमूर्त्ति जाणवो. तेमां निश्चयनयें करीतो जीव अरूपी माटे अमूर्त्ति कहीयें, अने व्यवहारनयें करी देव, नारकी, ति र्यंच अने मनुष्यरूप जीवना (५६३) जेद ठे, ते सर्व मूर्त्तिरूपें जाणवा. तथा ठहुं पुञ्जलद्रव्य ठे तेनो व्यवहारनयने मत्तें अनंता परमाणुआ मली खंधवने ठे, तेवारें नजरें दीठामां आवे ठे, माटे एने मूर्त्ति कहीयें. एरीतें ठ द्रव्यना स्वरूपमां मूर्त्ति अमूर्त्तिनो विचार कह्यो.

१८४ शिष्यः—ठ द्रव्यमां (सपएसके०) सप्रदेशीकेटलांअनेअप्रदेशीकेटलां?

गुरुः—ठ द्रव्यमां पांच द्रव्य सप्रदेशी अने एक कालद्रव्यअप्रदेशी जाणवुं केम के धर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी अने अधर्मास्तिकायपण असं ख्यातप्रदेशी, तथा एक आकाशास्तिकाय द्रव्य अनंतप्रदेशी तथा एक जीव द्रव्य ते सत्तागतें असंख्यातप्रदेशी ठे, एवा अनंता जीव जाणवा. तथा पुञ्जल परमाणुआ अनंत प्रदेशी अने एक एक परमाणुआमांअनंता गुणपर्याय रह्या ठे, ते आगल वतावशुं. ए रीतें ए पांच द्रव्य सप्रदेशी क हीयें,अने एक कालद्रव्य,अप्रदेशी ठे,एतुं लोकालोकमां एकसमयसदा काल वत्तें ठे, अने गणितकाल तो उत्पादव्ययरूप पलटण स्वभावें अढी छीप प्रमाणें जाणवो. ए रीतें पङ्कद्रव्यमां सप्रदेशी अप्रदेशीनो विचार जाणवो

१८६ शिष्यः—एठ द्रव्यमां (एग के०) एक केटलां अने अनेककेटलां?

गुरुः—त्रण द्रव्य एक अने त्रण द्रव्य अनेक जाणवां केम के धर्मास्तिकाय द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापी एक जाणवुं. तथा अधर्मास्तिकायपण असंख्यात प्रदेशी लोकव्यापि एक जाणवुं तथा आकाशास्तिकायपणअनं त प्रदेशी लोकालोकव्यापी एक जाणवुं एटवे ए त्रण द्रव्य ते एक कहियें. अने जीव द्रव्य जेठे ते लोकव्यापी अनंतां जाणवां. ते एकेक जीवना असं ख्याता असंख्याता प्रदेश ठे, ते एकेक प्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाना थो कडा लागे ठे, तथा जीवथकी रहित घट प्रमुख बीजा पुञ्जल परमाणुआ बूटा पण अनंता ठे, माटे जीवथकी पुञ्जलद्रव्य अनंतगुणा जाणवां. अने एकेकी कर्मवर्गणामां अनंत पुञ्जल परमाणुआ रह्या ठे, ते परमाणुआ

द्रव्यथकी सदाकाल शाश्वता ठे, माटे एकेक परमाणुआमां अनंता उत्पाद व्ययरूप कालना समय अनागतकालें व्यतीत थइ गया, तथा हर्जी पण अनंता समय आवते कालें व्यतीत थारो, अने परमाणुआ तो तेना तेज सदाकाल शाश्वता ठे, माटे पुज्जलद्रव्यथकी पण कालद्रव्यना समय अनंता जाणवा. ए रीतें जीव, पुज्जल अने काल, ए त्रण द्रव्य अनेक कहियें. ए रीतें षट्द्रव्यना स्वरूपमां एक अनेकनो विचार जाणवो.

१८८शिष्यः—ठ द्रव्यमां (खिन्न केण) क्षेत्र केटलां अने क्षेत्री केटलां ?

गुरुः—ठ द्रव्यमां एक आकाश ते क्षेत्र कहियें अने बीजा पांच द्रव्यक्षेत्री कहियें. केम के एक आकाशना घरमां पांचे द्रव्य मळीने रह्यां ठे ते आवी रीतें:—जे आंखनी पांपणनो एक वाल लहीने तेनो अग्रजाग एवो सूक्ष्म करीयें के जेना एक खंरुना बे खंरु न थाय, एवा सूक्ष्म खंरु प्रमाणें आकाश क्षेत्र लहीयें. तेटलामां आकाशरूप क्षेत्रना पोताना असंख्याता प्रदेश रह्या ठे, अने तेटलामां धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश ठे तथा अधर्मास्तिकायना पण असंख्याता प्रदेश ठे, अने निगोदीया गोला पण असंख्याता रह्या ठे, ते सर्वे पड्या मूकीने तेमांहेलो मात्र एकज गोलो लहीयें. ते एक गोलामां पण असंख्याती निगोद रही ठे, ते असंख्याती निगोद पडती मूकीने मांहेथी एक निगोद लहीयें. ते एक निगोदमां पण अनंता जीव रह्या ठे, ते जीवनी गणती कहे ठे. एक अतीतकाल केतां आगल जे ठेडा रहित अनंतो काल गयो तथा अनागतकाल ते पण ठेडा रहित ठे, ते सर्वेना जेटला समय थाय, तेनी साथें त्रीजो वर्तमान कालनो एक समय पण लेवो, एटले अतीतादिक त्रणेकालना अंत रहित जेटला समय थाय, ते सर्वेने अनंतगुणा करीयें, एटला जीव एक निगोदमां ठें, ते सर्वे जीव पड्या मूकी ने तेमांहेथी मात्र एक जीव लहीयें, ते जीवना असंख्याता प्रदेश ठे, ते एकेका प्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाल लागी ठे, ते सर्वे वर्गणाल पडती मूकीने तेमांथी एक वर्गणा लहीयें, ते एकवर्गणामां अनंता पुज्जल परमाणुआ रह्या ठे. ते आवी रीतें:—प्रथम परमाणुआना बे जेद ठे, एक बूटा परमाणुआ अने बीजा खंध, खंधना वली बे जेद, एक जीवसहित खंध ते जीवने लागेला जाणवा अने बीजा जीव रहित खंध ते घट प्रमुख अजीवखंध जाणवा.

तिहां प्रथम जीव सहित खंधनो विचार कहे ठे:- बे परमाणुआ जे ला थाय, तेवारें छत्रणुक खंध कहेवाय, त्रण परमाणुआ जेला थाय, ते वारें त्र्यणुक खंध कहेवाय, एम संख्याता परमाणुआ जेला थाय तेवारें संख्याताणुक खंध कहेवाय, असंख्याता परमाणुआ जेला थाय, तेवारें असंख्याताणुक खंध कहेवाय, अने अनंता परमाणुआ जेला थाय, तेवारें अनंताणुक खंध कहेवाय, एटला परमाणुज्जनों खंध थाय, तिहां सुधीना खंध ते सर्वे खंधजीवने अग्रहण योग्य ठे. एटला परमाणुआना खंधने कोइ जीव ग्रहण करी शके नहीं, परंतु अन्नव्यराशिना जीव चम्मोतेरमे बोले ठे ते थकी अनंतगुणाधिक परमाणुआ जेवारें जेला थाय, तेवारें एक औदारिकशरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय, अने ते औदारिकनी वर्गणाथी वली अनंतगुणाधिकमय दलीयां जेलां थाय, तेवारें एक वैक्रियशरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय, अने वैक्रियनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां जेलां थाय, तेवारें एक आहारकशरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय अने आहारकनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां जेलां थाय, तेवारें एक तैजसने लेवा योग्य वर्गणा थाय, अने तैजसनी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक दलीयां जेलां थाय, तेवारें एक ज्ञापाने लेवायोग्य वर्गणा थाय तथा ज्ञापानी वर्गणाथी अनंतगुणाधिक मय दलीयां जेलां थाय, तेवारें एक उह्वासने लेवा योग्य वर्गणा थाय, ते उह्वासनी वर्गणाथी अनंतगुणा अधिकमय दलीयां जेलां थाय तेवारें एक मनने लेवा योग्य वर्गणा थाय. ए सातमी मनोवर्गणा थकी वली आठमी कर्मवर्गणांमां अनंतगुणाधिक परमाणुआ जाणवा. ए वी जीवने एकेकप्रदेशें अनंती कर्मनी वर्गणाळ रागद्वेषनी चिकाशें करी लागी ठे, तेणें करी जीवना ज्ञानादिक गुण दबाइ गया ठे, माटे जीवथ की पुज्जल ड्रव्य अनंतगुणा जाणवा. ते पुज्जलरूपी ठे, अचेतन ठे, सक्रिय ठे, पूर्ण गलन ठे, ए चार गुण, एमां स्वाभाविक जाणवा. ए परमार्थ ठे.

हवे वर्गणानो विचार कहे ठे:-पूर्वोक्त आठवर्गणा जीवनेअनादिकाल नी लागी ठे, तेमां एक औदारिक बीजी वैक्रिय, त्रीजी आहारक अने चोथी तैजस, ए चार वर्गणा बादर ठे, तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने आठ स्पर्श. ए वीश गुण जाणवा. अने बाकीनी चार वर्गणा सूक्ष्म ठे, तेमां पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, अने चार स्पर्श मली शोल गुण ठे,

तथा एक परमाणुआमां एक वर्ण, एक गंध, एक रस, अने वे स्पर्श, मली पांच गुण ठे, ते परमाणुआ शाश्वता ठे, वाळ्या बेले नही, गाळ्या गळे नही, ठेद्या ठेदाय नही, जेद्या जेदाय नही, सदाकाल शाश्वता ठे, तेट छाने तेटला ठे, पण कोइ कालें एक परमाणु पण वधशे घटशे नही, ते एकेक परमाणु उ आगल अनागतकालें अनंती अनंती वार एकेक वस्तुमां परिणमी चूको, तिहां जे वस्तुने परिणमीने फरी जें वखतें ते वस्तुची बूटो पळ्यो ते वखतें ते वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो, अने वीजी वस्तुमां जइ परिणम्यो तेथी ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, वली व्री जी वस्तुमां परिणम्यो, तेवारें वली ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, अने आगली वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो; वली चोथी वस्तुमां परिणम्यो तेवारें ते वस्तुना पर्यायनो उत्पाद थयो, अने आगली वस्तुना पर्यायनो व्यय थयो, तथा वली ते आगली वस्तुमां पाठो परिणम्यो, एम एकेक परमाणुआमां अनंती वस्तु उत्पादव्ययरूप पर्यायपणे पलटाणी तेमां अनंतो काल वही गयो अने हजी अनंतो काल जाशे, पण परमाणुआ ते ना तेज ठे. ए रीतें एकेक पुजल परमाणु उ एकेकी वस्तुमां अनंतीवार जूदा जूदा जावें परिणम्यो ठे, तेथी अनंतीवार ते ते वस्तुनो पर्याय थयो ते पुजल परमाणुआथकी वली कालना समय अनंतगुणा जाणवा. ए परमार्थ ठे. एम षट्द्रव्यमां एक आकाश ते क्षेत्र अने पांच द्रव्य, आकाशना घरमां रक्षां ठे, माटे ते क्षेत्री जाणवां. ए एक वालाप्रमात्र क्षेत्रनो लेशमात्र विचार जाणवो. ए प्रकारें जीव अजीवरूप वहेचण करतां अंतरमां धारतां विचारतां थकां जीवने समकेतनी प्राप्ति थाय.

७९० शिष्यः-ए द्रव्यमां (किरिआय के०) सक्रियकेटलां अने अक्रियकेटलां?

गुरुः-निश्चयनयें करी तो द्रव्यने सक्रिय कहीयें अने व्यवहारनयें करी तो चार द्रव्य अक्रिय कहीयें. तथा बे द्रव्य सक्रिय कहीयें. ते आवी रीतें:-निश्चयनयें करी धर्मास्तिकायद्रव्य, ते जीव अने पुजल ए बे द्रव्यने पोतानी चलणसहायरूप क्रिया करतो जाय ठे, तथा निश्चयनयें करी अधर्मास्तिकाय पण जीव पुजलने पोतानी स्थिरसहायरूप क्रिया करतो जाय ठे, तथा निश्चयनयें करी आकाशास्तिकायद्रव्य पण जीव पुजलने पोतानी अवगाहनारूप क्रिया करतो जाय ठे, तथा निश्चयनयें करी कालद्रव्य ते पण

जीव अजीवरूप सर्ववस्तुमां पोतानी वर्तनारूप क्रिया करतो जाय ठे, तथा निश्चयनयें करी तो जीवद्रव्य, पण पोताना स्वरूपमां रमवारूप क्रिया करतो जाय ठे. केम के जो निश्चयनयें करी जीव शुजाशुजरूप विजाव दशामां रमण करवारूप क्रिया करतो होय, तो कोइ कालें जीव सिद्धि वरेज नही, माटे निश्चयनयें करी तो जीव पोताना स्वरूपमां रमवारूपज क्रिया करे ठे. तथा निश्चयनयें करी पुजलपरमाणुआ जे ठे ते पण अनादि कालना पोतानी मलवा विखरवारूप क्रिया करता जाय ठे. ए रीतें ठए द्रव्य निश्चयनयें करी पोतपोतानी क्रिया करे ठे, माटे सक्रिय ठे.

अने व्यवहारनयें करी धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य अक्रिय जाणवां. तथा जीव अने पुजल ए बे द्रव्य सक्रिय जाणवां. कारण के व्यवहार नयने मत्तें जीव अज्ञान अने रागद्वेषनी चिकाशरूप अशु रूतायें करी समय समय अनंता पुजल परमाणुआनुं ग्रहण करवारूप क्रिया करे ठे, अने पुजल परमाणुआने वलगवानो खजाव ठे, माटे पुजल परमाणुआ वलगवारूप क्रिया करे ठे. ए रीतें व्यवहारनयने मत्तें जीव अने पुजल, ए बे द्रव्य मलवा विखरवारूप क्रिया करे ठे, माटे सक्रिय जाणवां. जे कारणमाटे जीव, समय समय अनंता कर्मरूप पुजल परमाणु आनुं ग्रहण करे ठे अने आगल सत्तायें अनंतां कर्मरूप दलीयां बांध्यां ठे, ते स्थितिप्रमाणें जीवने उदय आवे ठे, तेने जोगवीने खेरवे ठे, तथा केटला एक परमाणुआ तो उदीरीने उदय आणी जोगवीने खेरवे ठे, तथा केटला एक ज्ञानरूप दृष्टियें करी बालीने खेरवे ठे, एम अनेक प्रकारें समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ ग्रहण करे ठे अने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ खेरवे ठे, माटे अनादिकालना जीव अने पुजल, ए बे द्रव्य मलवा विखरवा रूप क्रिया करे ठे, तेथी सक्रिय जाणवां.

१९१ शिष्यः—ए द्रव्यमां (निच्चं के०) नित्य केटलां अने अनित्य केटलां?

गुरुः—निश्चय नयें करी ठए द्रव्य नित्य ठे, अने निश्चयनयें करी ठए द्रव्य अनित्य पण ठे, तथा व्यवहार नयें करी तो चार द्रव्य नित्य जाणवां अने बे द्रव्य अनित्य जाणवां. ते आवी रीतेंः—धर्मास्तिकायना अरूपीअ चेतन अक्रिय अने चलणसहाय ए चार गुण अने पर्यायमां धर्मास्तिमायनो एक खंध ए पांच नित्य जाणवा, तथा देश, प्रदेश अने अगुरुलघु, ए त्रण

पर्याय धर्मास्तिकायना अनित्य जाणवा. तथा अधर्मास्तिकायना पण अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने स्थिरसहाय, ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो एक खंध, ए पांच नित्य जाणवा. अने देश, प्रदेश, तथा अगुरु लघु, ए त्रण पर्याय अधर्मास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे आकाशास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहक, ए चार गुण अने पर्यायमां आकाशास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा. तथा देश, प्रदेश, अने अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय आकाशास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे कालद्रव्यना अरूपी अचेतन अक्रिय अने नवा पूराणा वर्तना लक्षण ए चार गुण नित्य जाणवा. तथा अतीत, अनागत, वर्तमान अने अगुरुलघु, ए चार पर्याय काल द्रव्यना अनित्य जाणवा. हवे पुञ्जल द्रव्यना रूपी अचेतन सक्रिय अने पूर्णगलण मिलण विखरण, ए चार गुण नित्य जाणवा. तथा वर्ण, गंध, रस, फरस, अगुरुलघु सहित ए चार पर्याय पुञ्जलास्तिकायना अनित्य जाणवा. हवे जीव द्रव्यना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण अने अव्याबाध, अमौक्तिक तथा अनवगाह, ए त्रण पर्याय जीवना नित्य जाणवा. अने एक अगुरुलघुपर्याय, जीवना अनित्य जाणवो. ए रीतें निश्चयनयें करी उद्रव्य नित्यपण कहियें, अने अनित्यपण कहियें.

हवे व्यवहारनयें करी धर्म, अधर्म, आकाश अने काल, ए चार द्रव्य नित्य कहियें. तथा जीव अने पुञ्जल, ए वे द्रव्य अनित्य जाणवां. कारण के व्यवहार नयने मत्तें जीव, चारगतिरूप संसारमां जन्म मरण रूप नवा नवा जव करे ठे, माटे अनित्य कहियें तथा व्यवहारनयें करी पुञ्जल द्रव्यना खंध पण सर्वे अनित्य जाणवा कारण के पुञ्जलना खंध बने ठे, ते स्थितिप्रमाणें रहे ठे, वली पाठा विखरे ठे, माटे अनित्य जाणवा. तथा जे कारणें वली द्रव्यास्तिकनयने मत्तें जीव असंख्यात प्रदेशी नित्य, सदाकाल शाश्वतो ठे, अने अशुद्ध अनित्य पर्याय करी जीव अनित्य अशाश्वतो जाणवो, केम के अशुद्ध अनित्य पर्यायें करी जीव चार गतिरूप संसारमां उत्पाद, व्ययरूप पलटण स्वभावे वर्ते ठे. ते आवी रीतें:—मनुष्य जवना पर्यायनो व्यय थयो, अने देवताना जवना पर्यायनो उत्पाद थयो, वली देव जवना पर्यायनो व्यय थयो, अने तिर्यक जवना पर्यायनो उत्पाद थयो, वली तिर्यक जवना पर्यायनो व्यय थ

यो अने मनुष्यजवना पर्यायनो उत्पाद थयो. एम अशुद्ध अनित्य पर्यायें करी जीव,अनेक प्रकारें उत्पाद व्ययरूप पलटण खजावें चार गतिरूप संसारमां सदा काल वर्तें ठे, अने जीव, एनो ए ध्रुवपणे शाश्वतो ठे, तथा जन्म, मरण, थाय ठे, ते सर्व पर्यायनो उत्पाद व्यय थाय ठे, माटे द्रव्यास्तिक नयें करी जीवने नित्य कहीयें,अने पर्यायास्तिक नयें करी जीवने अनित्य कहीयें,ए परमार्थ ठे. तथा पुजल परमाणुआ पण द्रव्यथकी नित्य शाश्वता ठे,अने पर्यायथकी घणा परमाणुआ मली खंध बने ठे, ते स्थिति प्रमाणे रहे ठे,वली पाठा विखरे ठे,ते खंधनेअनित्य पण कहीयें. ए रीतें षट् द्रव्यमां निश्चयव्यवहार नयें करी नित्यअनित्यनुं स्वरूप जाणवुं.

७९५ शिष्यः—ए ठ द्रव्यमां कारण केटलां अने अकारण केटलां ?

गुरुः—ठ द्रव्यमां पांच द्रव्यने एक जीव द्रव्य ते अकारण ठे, अने जीव द्रव्यने पांचे द्रव्य, कारणरूप जाणवां. जेम के जीव कर्ता, अने तेने धर्मास्तिकाय कारण मध्युं, तेवारें जीवने चालवा हालवारूप कार्य थयुं, तेमज जीव कर्ता तेने अधर्मास्तिकाय कारण मध्युं, तेवारें जीवने स्थिर रहेवारूप कार्य नीपन्युं, तेमज जीव कर्ता, अनेतेने आकाशास्तिकाय कारण मध्युं, तेवारें जीवने अवगाहनारूप कार्य नीपन्युं. तेमज जीव कर्ता, तेने पुजलास्तिकाय कारण मध्युं, तेवारें जीवने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ लेवा, अने समय समय अनंता कर्मरूप परमाणुआ खेरवारूप कार्य नीपन्युं. तेमज जीव कर्ता अने तेने काल द्रव्य कारण मध्युं, तेवारें जीवने नवा पुराणा वर्त्तनारूप कार्य नीपन्युं, ए रीतें षट् द्रव्यमां जीवने पांचे द्रव्य, कारणरूपें जाणवां अने जीव पोतें अकारण ठे.

७९६ शिष्यः—ए ठ द्रव्यमां (कर्ता केण) कर्ता केटला अने अकर्ताकेटला ?

गुरुः—निश्चय नयें करी ठए द्रव्य पोतें पोताना स्वरूपना कर्ता ठे, अने व्यवहारनयें करी अनेक नयनी अपेकार्यें जोतां तो एक जीव द्रव्य कर्ता अने पांच द्रव्य अकर्ता जाणवां, ते आवी रीतेंः— जे व्यवहार नयना ठ जेद ठे,तिहां प्रथम शुद्धव्यवहारनयें करी जीव, शुद्ध निर्मल, कर्मथकी रहित एवुं पोतानुं स्वरूप नीपजाववुं तेनो कर्ता जाणवो, एटले जे जे आगलां गुणगणानुं ठोडवुं अने उपरलां गुणगणानुं लेवुं तेने शुद्धव्यवहारनयें कर्ता कहीयें. एटले पहेले गुणगणे अनंतानुबंधियानी

चोकडी हती, ते खपावी अने चोथे गुणठाणे आव्यो, तेवारे जीवने एक स मकेत गुण निरावरण थयो अने अप्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी, तेवारे पांचमे गुणठाणे देशविरति गुण पाम्यो, तथा प्रत्याख्यानीनी चोकडी खपावी, तेवारे षष्ठे सातमे गुणठाणे सर्वविरति गुण पाम्यो, तथा सर्व क षाय क्षय थया, तेवारे अगीयारमे, बारमे, गुणठाणे पहोंची राग द्वेष रूप मोहनीय कर्म खपावी, बारमे गुणठाणे घाती कर्मनो क्षय करी तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो. ए रीतें जेम जेम पूर्वलां गुणठाणांनुं ढोडवुं अने उपरला गुणठाणांनुं लेवुं तेने शुद्ध व्यवहार नय कहीयें. एट ले जीव जेम जेम कर्मरूप अशुद्धताने टाले, अने गुणरूप शुद्धताने नीपजा वे, ते शुद्धव्यवहार नय जाणवो. हवे वीजा अशुद्धव्यवहारनयें करी जीव मां अज्ञान, राग, द्वेष, अनादिकालना शत्रु थइ लागे ठे, तेणें करी जीव मां अशुद्धपणुं जाणवुं. ए अशुद्धतानी चिकाशें करी जीवने समय समय अनंतां कर्मरूप दक्षीयां सत्तायें लागे ठे, ए अशुद्धता अनादिनी जाणवी. ए अशुद्ध व्यवहारनयें जीव कर्ता, तेनुं स्वरूप कथुं. हवे त्रीजा शुद्ध व्यवहारनयें करी जीव, दान, शील, तप, ज्ञावना, पूजा, प्रज्ञावना, सेवा, जक्ति, साहम्मीवात्सल, विनय, वैयावच्च, उपकार, करुणा, दया, यत्ना, मी तुं मनोहर वचन बोलवुं, सर्व जीवनुं रूढुं चिंतवुं, ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने शुद्ध करणी जाणवी. ए शुद्ध व्यवहारनयें जीव कर्ता कही यें. हवे चोथा अशुद्धव्यवहार नयें करी जीव, क्रोध, मान, माया, लोच, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हास्य, विनोद, निंदा, ईर्ष्या, चाडी, मूर्छा, ममता, हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन, परिग्रह, ए आदि अनेक प्रकारनी जीवने अशुद्धकरणी कहीयें, ए अशुद्ध व्यवहारनयें जीव, कर्ता जाणवो. हवे पांचमा उपचरितव्यवहार नयें करी जीव, धन, कुटुंब, परिवार, हाट, घर, वखार, गाम, गरास, देश, चाकररूप, दास, दासी, वाणोतर, राज, कृद्धि, क्षेत्र, खलां, वाडी, वन, आराम, कूवा, वाव्य, सरोवर, नवाण, ए आदि अनेक प्रकारनी वस्तु ते पोताथकी प्रत्यक्षपणे जूदी ठे, तेने जीव अज्ञानपणे पोतानी करी जाणे ठे, तेने माहारुं माहारुं करतो फ रे ठे, एटले तेना पापनो अधिकारी थाय ठे, ए रीतें उपचरित व्यवहार नयें जीवने कर्ता जाणवो. हवे षष्ठा अनुपचरित व्यवहारनयें करी जीव,

शरीरादिक परवस्तु जे पोताना स्वरूपथकी प्रत्यक्षपणे जुदी ठे, पण पारिणामिक जावें लोलीञ्चूतपणे एकठी मली रहीं ठे, तेने जीव, पोतानी करी जाणे ठे. पण एवां शरीर तो अनंती वार कस्यां अने अनंती वार मूक्यां, तथापि अज्ञानपणे तेने पोतानां करी जाणे ठे, तेने वास्ते अनेक प्रकारें हिंसादि पाप करी पुष्ट करे ठे, ए रीतें अनुपचरित व्यवहारनयेंकरी जीव कर्त्ता जाणवो. ए ठ प्रकारें व्यवहार नयने मत्तें जीवतुं कर्त्तापणुं देखाड्युं, एम ठ ड्रव्यमां कर्त्ता अकर्त्ता पणानुं स्वरूप जाणवुं.

७९८ शिष्यः—ए ठ ड्रव्यमां (सव्वगयश्यर के०) सर्वगत एटले सर्वव्यापी ड्रव्य केटलां अने ते थकी इतर एटले देश व्यापी ड्रव्य केटलां पामीयें ?

गुरुः—ठ ड्रव्यमां एकआकाशड्रव्य सर्वलोकालोकव्यापी ठे अने पांच ड्रव्य, देश व्यापी जाणवां. कारण के धर्मास्तिकाय असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं अने अधर्मास्तिकायड्रव्य पण असंख्यातप्रदेशी लोकव्यापी जाणवुं. तथा कालड्रव्य गणितकाल ते अढीद्वीप व्यापी जाणवुं. तथा जीवड्रव्य पण लोकव्यापी जाणवुं. एटले जेटला लोकाकाशना प्रदेश ठे, ते टला निगोदना गोला ठे,अने एकेक गोलांमां असंख्याती निगोद रहीं ठे, ते एकेकी निगोदमां अनंता जीव रहा ठे, माटे जीवड्रव्य लोकव्यापी जाणवुं. तथा पुञ्जलड्रव्य पण एकेक जीवने सत्तायें अनंता कर्मरूप पुञ्जल परमाणुआ लागे ठे, तथा ते थकी बीजा बूटा लोकव्यापी पुञ्जलपरणुआ पण अनंता ठे,ते सर्वलोक व्यापी ठे.ए रीतें ए पांच ड्रव्य देशव्यापी जाणवां, अने एकआकाशास्तिकायड्रव्य लोकालोकव्यापिअनंतप्रदेशी ते सर्वव्यापी जाणवुं. ए ठ ड्रव्यमां सर्व व्यापी तथा देश व्यापीनुं स्वरूप कळुं.

७९९ शिष्यः—ए ठ ड्रव्य (अपवेसा के०) अप्रवेशी एटले एक क्षेत्रें ठ ड्रव्य जेलां मली रह्यां ठे,पण कोइ एक बीजांमां प्रवेश करी जली जातांनथी अने एक बीजांनुं कोइ कोइनुं काम पण करतां नथी तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेम कोइएक डुकानमां पांच वाणोतर रहेता होय, ते सर्वें पोत पोताना ह्वाला प्रमाणें काम करता जाय,अने सहु सहुनी मर्यादांमां चाले, तेम इहां एकक्षेत्रें ठ ड्रव्य जेलां रह्यां ठे, पण सहु पोतपोतानुं काम करे ठे. अने पोत पोतानी मर्यादांमां वत्तें ठे, पण निश्चयनयें करी कोइ एक

बीजामां मांहोमांहे जलतां नथी, माटे अप्रवेशी जाणवा. ए परमार्थ ठे. एरीतें षट्द्रव्यनुं स्वरूप बार जांगे करी सामान्यप्रकारें जव्यजीवने जाणवुं.

००० शिष्यः—आगल पन्नावणासूत्रना पाठमध्ये तमें कहुं जे जीव अजीवरूप षट्द्रव्यनुं स्वरूप स्याद्वादादि आठ पदें करी जाणवुं. माटे ते आठ पद कया, तेनां नाम कहो ?

गुरुः—आठ पद ते एक, अनेक, नित्य, अनित्य, सत्य, असत्य, वक्तव्य, अवक्तव्य, ए प्रत्येक द्रव्यमां आठ पद करतां षट्द्रव्यमां अडतालीश पद थया

०१२ शिष्यः—ए षट्द्रव्यमां एक अनेक पद केम जाणीयें ?

गुरुः—ए षट्द्रव्यने एक पण कहीयें अने अनेक पण कहीयें केम के धर्म, अधर्म, ए बे द्रव्य खंधरूप लोकाकाश प्रमाणें एक ठे अने एना गुण पर्याय प्रदेश अनेक ठे, एटले गुण अनंता पर्याय अनंता अने प्रदेश असंख्याता जाणवा. हवे आकाशास्तिकायद्रव्य पण खंधरूप लोकालोकप्रमाणें एक ठे अने गुणपर्याय प्रदेश अनेक ठे, एटले गुण अनंता, पर्याय अनंता अने प्रदेश पण अनंता जाणवा. एरीतें त्रण द्रव्यमां एक अनेक पद कहो. हवे शेष त्रण द्रव्यमां एक अनेकपणुं देखाडे ठे. तिहां प्रथम कालद्रव्यनो वर्तमानरूप गुण एक जाणवो अने गुणपर्याय तथा समय अनेक ठे, एटले गुण अनंता ठे, पर्याय अनंता ठे, अने समय पण अनंता जाणवा, केम के अतीतकालें अनंता समय वही गया अने अनागतकालें अनंता समय आगल आवशे, तथा वर्तमान काल एक समय मात्र जाणवो. हवे पुजलास्तिकाय द्रव्यमां एक अनेक पद कहे ठे. पुजलद्रव्यना परमाणुआ अनंता ठे ते एकेक परमाणुआमां अनंता गुणपर्याय रखा ठे, ए बोल अनेक ठे, पण सर्व परमाणुआमां पुजलपणुं एक सरखुं ठे, तेथी एक ठे. हवे जीवद्रव्यमां एक, अनेकपणुं कहे ठे. लोकमां जीव अनंता ठे, एकेकजीवना असंख्याता, असंख्याता प्रदेश ठे, अने एकेक प्रदेशे अनंता गुण रखा ठे, तथा एकेक गुणमां अनंता अनंता पर्याय ठे अने पर्याय पर्यायमां धर्म अनंतो ठे, ए सर्व बोल अनेकपदना दर्शानारा ठे, अने संग्रहनयें करी जीवपणुं सर्वमां एक सरखुं ठे, माटे एकपद ठे.

इहां शिष्य पूठे ठे केजो एम सर्वजीव एक सरखा ठे तो एकजीव सिरुस्वरूपी परमानंद सुखमय देखाय ठे, अने बीजा संसारी जीव कर्म

वशें पढ्याथका दुःखी देखाय ठे, तेणें करी सर्वजीव, जूदा जूदा लागे ठे, तेनो श्यो परमार्थ ? तेवारें गुरु कहे ठे; के निश्चय नयें करी सर्वे जीव, सत्तायें सिद्धसमान ठे, तेथीज सर्व जीव कर्म खपावी सिद्धि वरे ठे, तेणें करी सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी जाणवी माटे सरखा ठे.

शिष्यः—सर्वे जीव, सिद्ध समान कहो ठो तेवारें अज्ञव्य जीव पण सिद्धसमान थया, तो अज्ञव्य जीव केम मोदें जता नथी ?

गुरुः—अज्ञव्यनो खजाव एवोज ठे, जे संसारमां फरतां कदाचित् कारण सामग्री मळे, तो पण अज्ञव्यने परावर्तन धर्म नथी, तेणे करी सिद्ध थता नथी, पण ज्ञव्य जीवने परावर्तन धर्म ठे माटे तेने कारण सामग्री मलवा थी पूर्वजावने पलटावी गुणश्रेणी चढी सर्व कर्मने चूर्ण करी सिद्धि पद वरे ठे. अने सर्व जीवना आठ रुचक प्रदेश मुख्य ठे, ते निश्चयनयें करी ज्ञव्य अज्ञव्य बेहुना सिद्ध समान ठे, तेणे करी सर्व जीवनी सत्ता एक सरखी ठे, केम के ए आठ रुचक प्रदेशने कर्म लागतां नथी, तेनी आचारांगसूत्र नी टीकामां साख ठे. ए रीतें षट् द्रव्यमां एक अनेक पद्दानुं स्वरूप कळुं.

७४४ शिष्यः—षट् द्रव्यमां नित्य अनित्य पद्द केम जाणीयें ?

गुरुः—ठ द्रव्य नित्य पण कहेवाय अने अनित्य पण कहेवाय, ते आवी रीतें के धर्मास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने चक्षणसहाय ए चार गुण तथा पर्यायमां धर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु ए त्रण पर्याय धर्मास्तिकायना अनित्य जाण वा तथा अधर्मास्तिकायना अरूपी अचेतन, अक्रिय अने धिर सहाय ए चार गुण तथा पर्यायमां अधर्मास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश तथा अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा. तथा आकाशास्तिकायना अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने अवगाहक, ए चार गुण तथा पर्यायमां आकाशास्तिकायनो खंध, ए पांच नित्य जाणवा, अने देश, प्रदेश, तथा अगुरुलघु, ए त्रण पर्याय अनित्य जाणवा, तेमज काल द्रव्यना अरूपी, अचेतन, अक्रिय, अने नवापुराणा वर्तना लक्ष ण ए चार गुण नित्य जाणवा, तथा अतीत अनागत, वर्तमान अने अ गुरु लघु ए चार पर्याय अनित्य जाणवा. तथा पुजल द्रव्यना रूपी, अचेतन सक्रिय अने गलण पूरण मिलण विखरण ए चार गुण नित्य जाणवा.

तथा वर्ण, गंध, रस, फरस, अगुरु लघुसहित ए चार पर्याय पुञ्जद्रव्यना अनित्य जाणवा, तथा जीवद्रव्यना ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य ए चार गुण अने अव्याबाध, अमूर्तिक तथा अनवगाह ए त्रण पर्याय नित्य जाणवा तथा एक अगुरुलघु पर्याय, जीवना अनित्य जाणवो. ए रीतें षट् द्रव्यमां नित्य अनित्य पद्दानुं स्वरूप कळुं.

७३६ शिष्यः—षट् द्रव्यमां सत् असत् पद्दानुं स्वरूप केम जाणीयें ?

गुरुः—ठए द्रव्य, स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजावपणे (सत् के०) ठता ठे, अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल तथा परजाव पणे (असत् के०) अठता ठे. हवे एठ द्रव्यमां स्वद्रव्यादिक चारपणुं देखाडे ठे, प्रथम धर्मास्ति कायनुं स्वद्रव्य ते चलणसहाय गुण तथा अधर्मास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते स्थिरसहाय गुण, तथा आकाशास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते अवगाहक गुण, तथा कालनुं स्वद्रव्य ते नवा पुराणा वर्तना लक्षणगुण, तथा पुञ्जलास्तिकायनुं स्वद्रव्य ते पूर्णगलन गुण, अने जीवनुं स्वद्रव्य ते ज्ञानादि चेतना लक्षण गुण, ए ठ द्रव्यमां स्वद्रव्यपणुं कळुं. हवे स्वक्षेत्रपणुं देखाडे ठे. एटले स्वक्षेत्रे प्रदेश घणा ठे, माटे ठए द्रव्यमां स्वक्षेत्रपणुं कहे ठे. तिहां प्रथम धर्म अने अधर्म, ए वे द्रव्यना स्वक्षेत्रे असंख्याता प्रदेश जाणवा. तथा आकाश द्रव्यना स्वक्षेत्रे अनंता प्रदेश जाणवा, तथा काल द्रव्यना स्वक्षेत्रे एक समय जाणवो, तथा पुञ्जलद्रव्यना स्वक्षेत्रे एक परमाणुठ, एवा अनंता परमाणुआ जाणवा. तथा जीवद्रव्यना स्वक्षेत्रे एक जीवना असंख्याता प्रदेश जाणवा. ए रीतें ठ द्रव्यमां स्वक्षेत्रपणानो विचार जाणवो, हवे ठ द्रव्यमां स्वकालपणुं देखाडे ठे. ठए द्रव्यमां पोत पोतानो स्वकाल ते अगुरुलघु पर्यायनोज वर्ते ठे. हवे ठए द्रव्यमां स्वजावपणुं देखाडे ठे (स्वजाव के०) गुण पर्याय, ते ठए द्रव्यमां पोत पोताने स्वजावें गुण पर्याय रहा ठे. ते स्वजावपणुं जाणवुं. एम धर्मास्तिकाय द्रव्यमां पोतानुं स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वजावपणानो संबंध ठे, पण बीजा पांच द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चारनो तेमां संबंध नथी. तेमज अधर्मास्तिकाय द्रव्यमां पोतानो स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वजावपणानो संबंध ठे, पण बीजा पांच द्रव्यना स्वद्रव्यादिक चारनो संबंध तेमां नथी, तेमज आकाशास्तिकायमां, कालमां, पुञ्जलमां अने जीवमां ए सर्वमां पोत पोतानुं स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने

स्वप्नाव पणानो संबंध ठे, एण बीजा पांच द्रव्यनां स्वद्रव्यादिक चारनो तेमां संबंध नथी. एम ठ द्रव्य स्वगुणें करी सत् ठे, अने परगुणें करी असत् जाणवां. जे द्रव्य ते गुण पर्यायवंत होय, एटले अनेक पर्याय ते द्रव्य कहीयें, अने स्वद्रव्यनुं आवर्त्तपणुं ते क्षेत्र कहीयें. तथा उत्पाद व्ययनी वर्त्तना ते काल कहीयें, तथा विशेष गुण परिणति ते स्वप्नाव परिणति जाणवी, एटले पर्याय प्रमुख ते स्वप्नाव कहीयें. ए रीतें ठए द्रव्यना स्वरूपमां सत् असत् पणानो विचार जाणवो.

७५७ शिष्यः—ठ द्रव्यमां वक्तव्य अवक्तव्य पणानुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः—ठ द्रव्यमां (वक्तव्य के०) वचनथी कहेवाय एवा प्रत्येक द्रव्यमां अनंता गुण पर्याय वक्तव्य ठे, अने ठए द्रव्यमां (अवक्तव्य के०) वचनथी कहा न जाय, एवा अनंता गुण पर्याय अवक्तव्य ठे, तेनुं स्वरूप कहे ठे. श्री तीर्थकर जगवानें सर्व ज्ञाव प्रत्यक्ष पणे दीठा, तेने अनंतमे जागे वक्तव्या एटले प्ररूप्या अने जे श्री तीर्थकर जगवानें प्ररूप्या, तेनो अनंतमो जाग श्री गणधर देवें जाळ्यो ते सूत्रमां गुंथ्यो ठे, अने जे सूत्रमां गुंथ्यो, तेने असंख्यातमे जागें हमणां आगम वर्त्ते ठे, ए ठ ए द्रव्यमां वक्तव्य अवक्तव्य पदनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें ठए द्रव्यनुं स्वरूप आठ पदें जाणे, तेने समकेती कहीयें.

अत्र सूत्रपाठः ॥ गाथा ॥ जीवाईसहृणं, सम्मत्तं एस अश्रगमो नाणं ॥ तहेव सया रमथ, चरथी एसो डुमुस्कपहो ॥१॥ अर्थः—जीवादिक ठए द्रव्य जे जेहवा ठे, ते तेवा गुण पर्याय सहित जाणे अने नित्य अनित्य पणे समय समय पलटाय ठे, ते सदेहे, तेने समकेती जाणवा. ए रीतें ठए द्रव्यनुं स्वरूप जाणी तेमांथी पांच अजीव द्रव्यने ठांमी ने एकज जीवना स्वगुणमां स्थिर थइ रमण करवुं, तेने चारित्र कहीयें.

हवे प्रथम समकेत शुरु करवुं जोश्यें, माटे समकेतनुं स्वरूप देखाडे ठे. नव तत्वमां मोक्षनुं कर्त्ता जीवतत्व ठे, अने संवर तथा निर्झारा ए बे गुण ठे, ते मोक्षना उपादान कारण ठे, तथा देव अने गुरु ए बे उपकारी ठे, ते मोक्षना निमित्तकारण जाणवां. ए रीतें जीव, संवर, निर्झारा अने मोक्ष, ए चार उपादेय ठे, एटले आदरवा योग्य ठे, अने शेष पांच तत्व हेय ठे, एटले ठांमवा योग्य ठे, एवा जे परिणाम ते समकेत ज्ञान कहीयें, ए

वा समकेत ज्ञानें करी जहुं थाय, श्री अनुयोग द्वारमां कहुं ठे ॥ गाथा ॥
नाण्डमि गिण्हियवे, अगिण्हियवे य इह अहम्मि ॥ जइय वमे वईय जो, सो
उवएसो नठ नाम ॥१॥ अर्थः—ज्ञान ते शुं? जे ठ ड्रव्यनुं स्वरूप नित्यानित्या
दि आठ पदें करी जेवुं ठे, तेवुं जाणीने तेमां जे बेवा योग्य होय ते बीये
अने ठांवा योग्य होय, ते ठांके, एवो जे उपदेश, ते नय उपदेश कहीयें,

वली श्री उत्तराध्ययनसूत्रमां समकेतनी दश रुचि कही ठे. तेनां ना
म कहे ठे. एक निःसर्गरुचि, बीजी उपदेशरुचि, त्रीजी आज्ञारुचि, चो
थी सूत्ररुचि, पांचमी श्रद्धारुचि, ठठी संक्षेपरुचि, सातमी अजिगम
रुचि, आठमी विस्ताररुचि, नवमी क्रियारुचि, अने दशमी धर्मरुचि. ए
दश रुचिनुं जे जीवने ज्ञान थयुं होय, तेहने द्वायिक समकेती जाणवो.
माटे हवे ए दश रुचिनुं स्वरूप शिष्यने जाणवा सारु संक्षेपथी कहे ठे.

७४ए प्रथम निःसर्गरुचि ते जे निश्चय व्यवहार नयें करी नैगमादि सात
नयें करी, नामादि चार निक्षेपे करी, जीव अजीवरूप नवतत्त्व षट् ड्रव्य
नुं स्वरूप जाणे, तेमां आश्रवरूप पांच तत्व ते उपर त्यागबुद्धि तथा सं
वर निर्झरारूप शुद्ध गुण तेनुं आदरवुं करे, तथा श्री वीतराग चाषित जे
नवतत्त्व षट् ड्रव्यरूप तेनुं स्वरूप, ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने चावथी जाणे,
तथानामादिचारनिक्षेपे करी सर्व वस्तुनुं प्रमाण करे, ते निःसर्गरुचि कहीयें

७५० बीजी उपदेशरुचि ते एहीज नव तत्व, षट् ड्रव्यने गुरुना उप
देशथी जाणीने सर्वहै, प्रतीति करे, तेनुं स्वरूप जाणवाने घणी रुचि राखे,
ते उपदेशरुचि.

७५१ त्रीजी आज्ञारुचि, ते जेना राग, द्वेष अने मोह, कय थइ गया ठे
अने जेनुं अज्ञान मटी गयुं ठे, एवा श्रीअरिहंतदेव तेणे जे आज्ञा करी, ते
प्रमाण करे, तेमां कांइ पण शंका संदेह न आणे, ते आज्ञारुचि जाणवी.

७५२ चोथी सूत्ररुचि, ते आगमसूत्र, निर्युक्ति, ज्ञाप्य, चूर्णि अने टीका, ए पं
चांगीनां वचन माने, आगमसूत्र जणवानी चाहना राखे, ते सूत्ररुचि जाणवी.

७५३ पांचमी श्रद्धारुचि, ते श्रीजगवती तथा नंदीसूत्रमां आ प्रमाणें
गाथा ठे ॥ सुत्तडो खलु पढमो, वीठं निज्जुत्ति मिस्सठं जणितं ॥ तइठं य
निरविसेसो, एस विहि होई अणुत्तंगो ॥१॥ तथा अनुयोग द्वारमां निर्युक्ति
अनुगम कह्यो ठे, तथा समवायांगमां “सन्नियुत्ताए” इत्यादिक घणी

साखो ठे ते माटे जे पुरुष पंचांगी माने ते आराधक ठे तेथी पंचांगीनी श्रद्धा राखवी ते श्रद्धारुचि जाणवी.

७५४ ढही अजिगमरुचिते सूत्र सिद्धांत अर्थ सहित जाणे, तथा अर्थविचार सुणवानी जणवानी जेने घणी चाहना होये, तेने अजिगमरुचि जाणवी.

७५५ सातमी विस्ताररुचि, ते ठ ड्रव्यने जाणे, ठ ड्रव्यना प्रदेश जाणे, गुण जाणे, पर्याय जाणे, नाम, क्षेत्र, काल, जाव, ड्रव्य, गुण, पर्याय, उत्पाद, व्यय, ध्रुव, सात नय, चार निक्षेपा, ठ कारक, प्रमाण, पांच समवाय, ड्रव्यास्तिक दश नय, पर्यायास्तिक ठ नय, कर्ता, कारण, कार्य, निश्चय, व्यवहार, उत्सर्ग, अपवाद, हेय, झेय, उपादेय, चञ्जंगी, त्रिजंगी, सप्तजंगी, अनेकजंगी, ए रीतें नयप्रमाण सहित नवतत्त्व तथा ढड्रव्यने सद्देहे, ते विस्ताररुचि जाणवी.

७५६ आठमीक्रियारुचि कहे ठे. रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन, अने चारित्ररूप आत्मसत्ता ठे, ते निवारण करवा सारु तप, जप, विनय, वैय्यावच्च, जक्ति, व्रत, पञ्चक्राण, समिति गुप्तिरूप चरणसित्तरी, करणसित्तरीने गुणें करी सहित ॥ गाथा ॥ वय समण धम्म संजम, वेयावच्चं च वंज गुत्तीजं ॥

नाणाइ तियं तव को, ह निग्गहाइं इचरण मेयं ॥ १ ॥ अर्थः—पांच व्रत तथा दश प्रकारें श्रमणधर्म, पाळे, सत्तर जेदें संयम आराधे, दश प्रकारनुं वैय्यावच्च करे, नव वाडे ब्रह्मचर्य पाळे, त्रण गुप्तिने आदरे, रत्नत्रयीने आराधे, वार प्रकारना तपने आदरे, क्रोधादिक चार कषायनो निग्रह करे, ए चरणसित्तरीना सीत्तेर जेद जाणवा. हवे करणसीत्तरी कहे ठे ॥ गाथा ॥

पिंरुविसोही समिइं, जवणा पडिमाय इंदिय निरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीजं, अजिग्गहो चेव करणं तु ॥ १ ॥ अर्थः—चार प्रकारनो पिंरु सूजतो लीये, श्र्यासमिति प्रमुख पांच समिति पाळे, अनित्यादि वार जावना जावे, साधुनी वार प्रतिमा बहे, पांच इंद्रियनो निरोध करे, पञ्चीश पडिलेहण उपयोग सहित करे, त्रण गुप्ति पाळे, तथा ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जाव, ए चार प्रकारें अजिग्रह करे, निश्चयथकी ए करणसित्तरीना सीत्तेर बोल पाळे, ए रीतें चरणसीत्तरी अने करणसीत्तरीना गुणें करी जे सहित होय अने आत्मधर्मथी रुचि घणी होय, ते जीव क्रियारुचिवंत जाणवो.

७५७ नवमी संक्षेपरुचि ते अर्थमां तथा ज्ञानमां थोडुं कह्याथी पण घणुं जाणे, कुमतिमां न पडे, जैनमतमां अंतरंग प्रतीति माने, तेने संक्षेपरुचि होय.

८५८ दशमी धर्मरुचि ते पंचास्तिकायनुं स्वरूप जाणवे करी श्रुतज्ञानने सद्भावें अंतरंग निश्चयनयने सत्ताने सद्देहे, एटले वस्तुगतें अनंतो धर्म रह्यो ठे, तेने निरावरण प्रगट करवानी रुचिजेने होय तेने धर्मरुचि जीव कहीयें. ए रीतें दश रुचिनुं स्वरूप जाणे, तेने द्वायिकसमकेती कहीयें.

हवे वही ठ ड्रव्यनुं स्वरूप जाणवाने अर्थे एकेक ड्रव्यमां ठ ठ सामान्यगुण ठे, तेनां नाम कहे ठे, एकअस्तित्व ते अस्तित्पणुं, बीजुं वस्तुत्व ते वस्तुपणुं, त्रीजुं ड्रव्यत्व ते ड्रव्यपणुं, चोथुं प्रमेयत्व ते प्रमेयपणुं, पांचमुं सत्व ते सत्वपणुं, ठहुं अगुरुलघुत्व, ते अगुरुलघु पणुं. ए ठ गुण जाणवा.

८६४ तिहां प्रथम अस्तित्पणुं कहे ठे. ए ठ ड्रव्य पोताना गुण पर्याय अने प्रदेशे करीने अस्ति ठे, तेमां पांच ड्रव्य अस्तिकाय जाणवा. अने एक कालड्रव्यमां अस्तिकायपणुं नथी, जे कारणे धर्म, अधर्म, आकाश अने जीव, ए चार ड्रव्यना असंख्याता प्रदेश मली खंध थाय ठे अने पुजलमां पण खंध थवानी शक्ति ठे, तेथी पांचे ड्रव्य अस्तिकाय जाणवा. अने कालनो समय जे ठे ते कोइ बीजा समयथी मलतो नथी, एटले एक समय विणसे ठे, अने ते पठी बीजो समय आवे ठे, तेणें करी कालड्रव्य अस्तिकाय न कहेवाय, अने पांच ड्रव्य अस्तिकाय कहेवाय.

८७० हवे ठ ड्रव्यमां वस्तु पणुं देखाडे ठे. वस्तुत्व ते ठए ड्रव्य एकठां एक क्षेत्रमां जेलां रहां ठे, जे कारणें आकाशरूप क्षेत्रना एक प्रदेशमां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो ठे, तथा अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश रह्यो ठे, अने जीव अनंताना अनंता प्रदेश रहां ठे, तथा पुजल परमाणुआ पण तेमज अनंता रहां ठे, एम एक आकाश प्रदेशमां पांच ड्रव्य रहां ठे, ते सर्वे ड्रव्य पोत पोतानी सत्ता लीधां रहां ठे, पण कोइ ड्रव्य कोइ ड्रव्यमां नथी, ए ड्रव्यनेविषे वस्तुपणुं जाणवुं.

८७६ हवे ए ठ ड्रव्यमां ड्रव्यपणुं देखाडे ठे. ठए ड्रव्य पोत पोतानी क्रिया करे ठे, एटले धर्मास्तिकायमां पोतानो चरण सहाय गुण ठे, ते धर्मास्तिकायना सर्वे प्रदेशमां जाणवो. ते सदा काल जीव पुजलने चाल वारूप क्रिया करे ठे. इहां शिष्य आशंका करे ठे के लोकने अंतें सिद्ध क्षेत्रमां धर्मास्तिकाय ठे, ते सिद्धना जीवने चरणरूप क्रिया केम करतो नथी? तेनो उत्तर गुरु कहे ठे. सिद्धना जीव अक्रिय ठे, तेथी

ते चालता नथी, पण तेहीज क्षेत्रमां सूक्ष्मनिगोदीआ जीव तथा पुञ्ज परमाणुआ अनंता रह्या ठे, तेने चालवारूप क्रिया करे ठे, तथा अधर्मास्तिकाय द्रव्य जीव पुञ्जने स्थिरराखवा रूप क्रिया करे ठे, तथा आकाशास्तिकाय द्रव्य सर्व द्रव्यने अवगाहकरूप क्रिया करे ठे. अहीं शिष्य आशंका करे ठे, के अलोकमां पण आकाश द्रव्यने अवगाह शक्ति तेवीज ठे, पण तिहां अवगाहना केम करतो नथी? तेनो उत्तर गुरु कहे ठे, अलोकमां अवगाहक कोइ द्रव्य नथी एटले केने अवगाह क्रिया करे? तथा पुञ्ज द्रव्य मलवाबिखरवारूप पोतानी क्रिया करे ठे, तथा काल द्रव्य पण पोतानी वर्त्तनारूप क्रिया करे ठे, तथा जीव द्रव्य पण ज्ञानलक्षण उपयोग रूप क्रिया करे ठे, ए रीतें ए द्रव्य, पोताने पारिणामिक पण पोत पोतानी सत्तानी क्रिया करे ठे, ते द्रव्यत्व जाणवुं.

७७५ हवे ए ठ द्रव्यमां प्रमेयपणुं कहे ठे. जे वस्तुनुं प्रमाण करवुं तेने प्रमेयत्व कहीयें. एटले केवली जगवान् पोताना ज्ञानथी जाणे ठे जे ठ द्रव्य मळ्यां ठे, ते ठ द्रव्यमां प्रमेयपणुं ठे, ते ठ द्रव्यनुं प्रमाणपणुं देखाडे ठे. धर्मास्तिकाय द्रव्य एक, अधर्मास्तिकाय द्रव्य एक, आकाशास्तिकाय द्रव्य एक, अने जीव द्रव्य अनंतां ठे, तेनी गणती कहे ठे तेमां संझी मनुष्य संख्या ता ठे, असंझी मनुष्य असंख्याता ठे, नारकी असंख्याता ठे, देवता असंख्याता, तिर्यचपंचेंद्रिय असंख्याता, बेंद्रि असंख्याता, तेंद्रि असंख्याता चौ रिंद्रिय असंख्याता, पृथ्वीकाय असंख्याता, अपकाय असंख्याता, तेउकाय असंख्याता, वाउकाय असंख्याता, प्रत्येक वनस्पति जीव असंख्याता, ए सर्व तेर बोलना जीव जेला करीयें, तेथकी सिद्धना जीव अनंता ठे, अने सिद्धना जीव करतां बादर निगोदना जीव अनंतगुणा जाणवा. बादरनिगोद ते मूला, आडु, नीली हलदर, रतालु, पिंमालु, शकरकंद, गाजर, लसण, सूरण, गरमर प्रमुख कंदमूल ठे, ते सूझना अग्रजाग जेटलुं कंदमूल होय, तेमां पण सर्वसिद्धना जीव करता अनंतगुणा जीव रह्या ठे. ए रीतें बादर निगोदनो विचार जाणवो. अने सूक्ष्मनिगोदमां तो वली ए सर्वथी अनंतगुणा जीव जाणवा, तेनो विचार कहे ठे. जेटला लोकाकाशना प्रदेश ठे, तेटला निगोदीया गोला ठे, ए रीतें देवचंदजीकृत आगमसारने मतें जाणवुं अने बीजा आचार्य वली एम कहे ठे के जेटला लोकाकाशना प्रदेश ठे, तेने

मनुष्यना एक श्वासोद्वासमां सत्तर जव जाजेरा करे ठे, तेवा उद्वास एक मुहूर्त्तमां ३७३३ थाय ठे ॥ गाथा ॥ पणसठि सहस्स पणसय, ठत्तीसा इग्ग मुहूर्त्त खुज्जवा ॥ आवल्लियाणां दोसय, ढप्पन्ना एगखुज्जवो ॥ ३ ॥

अर्थ:-निगोदीया जीव एकमुहूर्त्तमां ६५५३६ जव करे ठे,ते निगोदनो एकजव १५६ आवल्लिकानो ठे ए खुल्लकजवनुं प्रमाण ठे ॥ गाथा ॥ अड्ढि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥ उवववन्ति चयंवि य, पुणो वि तड्ढेव तड्ढेव ॥ १ ॥ अर्थ:- निगोदमां अनंता जीव एवा ठे, के जे जीव त्रसपणुं केवारें पण पाम्यो नथी अनंतो काल पूर्वे वही गयो ठे, वली अनंतो काल आगल जाशे तो पण ते जीव वारंवार तिहांज उपजे ठे अने तिहांज चवे ठे, ते एकेकी निगोदमां अनंता जीव ठे.

हवे ते निगोदना वे जेद ठे. एक व्यवहारराशि निगोद अने बीजा अ व्यवहारराशि निगोद, तिहां जे जीव, वादर एकेंद्रियपणुं अथवा त्रसपणुं पामीने पाठा निगोदमां जइ पडे ठे, ते निगोदीया जीव व्यवहार राशिया कहीयें. तथा जे जीव, कोइ कालें पण निगोदथी निकलीने बादर एकेंद्रि यादिकपणुं पाम्या नथी, ते जीव, अव्यवहारराशिया कहीयें. ए अव्यवहार राशि निगोदमां जव्य अने अजव्य, एवा बे जातिना जीव ठे, ए स्वरूप सर्व श्रीचुवनचानुकेवलीना चरित्रनी साखें लख्युं ठे. तथा इहां मनुष्य पणा मांथी जेटला जीव कर्म खपावी एक समयमां मोद्धें जाय ठे, तेटला जीव ते समयमां अव्यवहारराशि सूद्धनिगोदमांथी नीकलीने उंचा आवे ठे. ए टले जो दश जीव मोद्ध जाय तो दश जीव अव्यवहारराशिमांथी निकले, तिहां कोइ समयें ते जीवमां जव्यजीव उठा निकले तो एक बे अजव्य जीव नीकले, पण व्यवहारराशि जीवमां वधघट थाय नही, तेटलाना तेटलाज रहे, एवा ए निगोदना गोला लोकमां असंख्याता ठे, ते ढ दिशिना आव्या पुज्जल आहारादि पणे लीए ठे, ए जे ढदिशिनो आहार लीये ठे, ते सकल गोला कहेवाय ठे, अने जे लोकना अंतप्रदेशें निगोदीया गोला रखा ठे, ते त्रणदिशिनो आहार फरसनार्यें लीये ठे, ते विकलगोला कहेवाय ठे, ए सूद्धनिगोदमां एक साधारण वनस्पतिना स्थावर सूद्धजीव ठे, अने पृथिव्यादिक चार प्रमुखना सूद्धजीव जे लोकव्यापी ठे, ते सर्व प्रत्येक

हे, परंतु साधारणपणुं एक वनस्पतिकायमांज हे, पृथिव्यादिक चार स्थावरमां नथी, ए सूक्ष्मनिगोदमां अनंतुं दुःख हे, ते दृष्टांतें करी देखाडे हे, सातमी नरकमां उत्कृष्टायु तेत्रीश सागरोपमनुं हे, ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला समय थाय, तेटली वार कोइ जीव सातमी नरकमां पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सागरोपमने आउखे उपजे, तेवारें तेने असंख्याता जव नरकना थाय, ते असंख्याता जवमां सातमी नरकने विषे ते जीवने जेटलुं वेदन, जेदनतुं दुःख थाय, ते सर्वे दुःख एकतुं करीयें, तेथी पण अनंतगुणुं दुःख निगोदीया जीव एक समयमां जोगवे हे. वली वीजो दृष्टांत कहे हे मनुष्यनी साडा त्रणकोडी रोमराजी हे, तेने कोइ देवता साडात्रण क्रोड लोखंरनी सूइ अग्निमां तपावीने समकालें रोमें रोमें चांपे, तेवारें ते जीवने जे वेदना थाय, तेथी पण अनंतगुणी वेदना निगोदमां हे, माटे हे जव्यजीवो! ए निगोदपणुं पामवानुं कारण ते अज्ञान हे ॥ गाथा ॥ नवि तं करेइ अगणि, न इव विसं न इव किण्ह सप्पाई ॥ जं कुणइ महादोसं, तीवं जीवस्स मिहत्तं ॥ १ ॥ अर्थः—जेटलो अवगुण अग्नि न करे, जेटलो अवगुण विष न करे, जेटलो अवगुण कालो सर्प न करे, तेटलो अवगुण महादोष रूप अज्ञान जे हे ते करे हे. माटे अज्ञानरूप (तीवं केण) आकरो दोष, ते मिथ्यात्व जाणतुं ॥ गाथा ॥ कठं करेसि अपदं, मेसी अठं चयसि धम्मठं ॥ इकं न चयसि मिहत्तं विसलवं जेण बुद्धिसि ॥ १ ॥ अर्थः—कोइ जीव अनेक प्रकारे कष्टक्रिया करे तथा पंचाग्निसाधना तपश्चर्यादिक करे, पांचे इंद्रियोने वश करवा सारु आत्माने दमे, धर्मने अर्थे धनप्रमुखनो त्याग करे, एटलां सर्व कार्य करे, परंतु जो एक मिथ्यात्वने नथी ठोडतो तो तेनी क्रिया सर्वे विषना उलवा सरखी अशंक्य कदाग्रह हठरूप जाणवी. ते जीव संसार समुद्रमां बूडे, कारण के एक मिथ्यात्व बता सर्वे क्रिया संसारहेतु जाणवी माटे उत्तम प्राणीयें मिथ्यात्वनो त्याग करवो. ए निगोदनो विचार जाणवो.

७७७ शिष्यः—ए ठ ड्रव्यमां सत्त्व अने सत्त्वपणुं ते शुं कहीयें ?

गुरुः—ठए ड्रव्य एक समयें उपजे हे, विणसे हे, अने स्थिर हे. ए उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणुं तेहीज सत्त्वपणुं जाणवुं, एटले ठए ड्रव्य उत्पाद, व्यय, अने ध्रुवें करी युक्त हे, ते सत्त्वपणुं हे. ए तत्त्वार्थग्रंथनुं वचन हे. एतुं विस्तारें स्वरूप देखाडे हे. धर्मास्तिकायड्रव्यना असंख्याता प्रदेश

ठे, तिहां एकप्रदेशमां अनंतो अगुरुलघु ठे, अने वीजा प्रदेशमां असंख्यातो अगुरुलघु ठे एम त्रीजा प्रदेशमां संख्यातो अगुरुलघु ठे, ए रीतें असंख्याता प्रदेशमां अगुरुलघुपर्याय घटतो वधतो रह्यो ठे, ए अगुरुलघु पर्याय समय समय चले ठे, तेथी जे प्रदेशमां असंख्यातो ठे ते प्रदेशमां अनंतो थाय ठे अने जे प्रदेशमां अनंतो ठे ते प्रदेशमां असंख्यातो थाय ठे, एम चौदराज लोकमां धर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेश ठे, तेमां सरखो समकालें अगुरु लघु पर्याय फरे ठे, एटले जे प्रदेशमां असंख्यातो ठे, ते स्थानकें असंख्यातो फीटीने अनंतो थाय ठे, तेवारें ते प्रदेशमां असंख्याता पणानो विनाश ठे, अने अनंत पणानो उत्पाद ठे, ए रीतें अगुरुलघुनो उत्पाद व्यय ठे, अने ए धर्मा स्तिकायमां वीजा जे गुण ठे ते ध्रुवपणे ठे अथवा अगुरुलघु पोतें पण अ गुरुलघुपणे ध्रुव ठे माटें उपजवुं विणसवुं अने ध्रुवपणुं ए त्रणे जाव ध र्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशमां सदाकाल समयसमय थइ रह्या ठे, ते मज ए त्रणे जाव अधर्मास्तिकायना असंख्याता प्रदेशमां तथा आकाशा स्तिकायना पण अनंता प्रदेशमां सदाकाल समयें समयें थइ रह्या ठे. तथा एक जीवना प्रदेश असंख्याता ठे, तेमां पण उपजवुं विणसवुं अने ध्रुव पणुं अगुरुलघु पर्यायनो समये समये थया करे ठे, एम सर्व जीवने विषे जाणवो, तेमज पुजलपरमाणुआ मांहे पण उपजवुं विणसवुं अने ध्रुव पणुं समयें समयें थइ रह्युं ठे, तथा काल ड्रव्यनो वर्तमान समय फिटि ने अतीत थाय ठे, एटले ते समये वर्तमानपणानो विनाश ठे, अने अती तपणानुं उपजवुं ठे, पण कालपणुं ते ध्रुव ठे, एम ए ठ ड्रव्यमां स्थूलपणे उत्पादव्ययनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे सिरुजगगवान पण ठ ड्रव्यमांहेला जीवड्रव्य ठे, तेने पण समय समय उत्पादव्यय अने ध्रुवपणुं थाय ठे, ते देखाठे ठे. तिहां वस्तुगतें मूलपणे जे ज्ञेयने पलटावे, ते ज्ञानपणुं एटले ते ज्ञासपणे परिणमवुं था य, तेवारें पूर्वपर्यायना ज्ञासनो व्यय थयो, अने अज्ञिनवपर्यायना ज्ञास नुं उत्पादपणुं थयुं अने ज्ञानपणुं ते ध्रुव जाणवुं. ए रीतें सर्वसिरुपरमात्मा ने सर्वगुणनी प्रवृत्तिरूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय थइ रह्यो ठे, अने गुण तो ध्रुवपणे जाणवा. एमज धर्मास्तिकायना प्रदेशमां ते क्षेत्रमां रहेला पुजल अने जीवने प्रथम समयें असंख्याता चलणसहायी पणे

परिणमतो इतो, ते बीजे समयं अनंत परमाणु तथा अनंत जीवप्रदेश
ने चक्षण सहायी थयो, तेवारें असंख्यात चक्षण सहायीनो व्यय थयो,
अने अनंता चक्षण सहायीनो उत्पाद थयो, तथा चक्षण सहायीगुणपणुं
ते ध्रुव जाणवुं. ए रीतें धर्मास्तिकाय द्रव्यमां पण उत्पाद, व्यय थइ रह्यो ठे,
तेमज अधर्मास्तिकायादिक द्रव्यने विषे पण जाववो. तथा वही कार्य कारण
पणे ते उत्पादव्यय जाणवो, ते अगुरुलघुना चक्षणनो उत्पाद व्यय कहेवो.
ए रीतें पंचास्तिकायने विषे जाणवो. अने कालद्रव्य तो उपचारें ठे, माटे
तेनुं स्वरूप पण सर्वे उपचारें कहेवुं. एम सर्वे द्रव्यमां सत्त्वपणुं ठे, जो
अगुरुलघुनो जेद न थतो होय, तो पढी प्रदेशें प्रदेशें मांहोमांहे जेदनुं कहेवा
पणुं थाय, तेथी अगुरुलघुनो जेद सर्वमां ठे, अने जेटवुं उत्पाद व्ययनुं
सत्त्वपणुं एक ते एक द्रव्यपणुं जाणवुं अने जेनुं उत्पादव्ययनुं सत्त्वपणुं
जूडुं ते द्रव्यपणुं पण जूडुं जाणवुं. ए रीतें सत्त्वपणुं कळुं.

७९४ शिष्यः— ए षट्द्रव्यमां अगुरुलघुत्वने अगुरुलघुपणुं ते शुं कहीयें ?

गुरुः—जे द्रव्यमां अगुरुलघु पर्याय ठे, ते द्रव्यमां अगुरुलघु हानि वृ
द्धि करे ठे, एटखे ठ प्रकारनी वृद्धि अने ठ प्रकारनी हानि करे ठे, तेमां
प्रथम ठ प्रकारनी वृद्धि कहे ठे. एक अनंतजागवृद्धि, बीजी असंख्यात
जाग वृद्धि, त्रीजी संख्यातजागवृद्धि, चोथी संख्यातगुणवृद्धि, पांचमी अ
संख्यातगुणवृद्धि, बछी अनंतगुणवृद्धि, हवे ठ प्रकारनी हानि कहे ठे. एक
अनंतजागहानि, बीजी असंख्यातजागहानि, त्रीजी संख्यातजागहानि,
चोथी संख्यातगुणहानि, पांचमी असंख्यातगुणहानि, बछी अनंतगुणहानि.
ए रीतें ए ठ प्रकारनी वृद्धि अने ठ प्रकारनी हानि, सर्व द्रव्यमां सदाका
ल सर्व समयें थइ रही ठे तेमां वृद्धि ते उपजवाने कहीयें. अने हानि,
ते विणसवाने कहीयें. ए अगुरुलघुपणुं जाणवुं एटखे नही गुरु अने न
ही लघु तेने अगुरुलघु स्वभाव कहीयें ते सर्व द्रव्यमां ठे, उक्तंच जगवती
सूत्रे “सबदबा सब गुणा सबपएसा सबपडवा सबरू अगुरुलघुआए” ए
अगुरुलघु स्वभावने आवरण नथी अने जे आत्मद्रव्यमां अगुरुलघु गु
ण ठे, ते जेवारें आत्माना सर्वप्रदेशें ह्यायिकभाव थाय, तेवारें सर्वगुणमां
समानपणे परिणमे, पण अधिको उठो परिणमे नही, ते अगुरुलघु गुणनुं प्र
वर्तन जाणवुं. एरीतें ए अगुरुलघु स्वभाव ते सर्वद्रव्यमां ठे.

हवे गुणनी जावना कहे ठे. तिहां जेटला ठए ड्रव्यमां सरखा गुण ठे, तेने सामान्य गुण कहीयें. तथा जे गुण एक ड्रव्यमां ठे, अने वीजा ड्रव्य मां नथी,तेने विशेष गुणकहीयें. जे गुण कोइ ड्रव्यमां ठे अने कोइड्रव्यमां नथी, ते साधारण आसाधारण गुण कहीयें. ठए ड्रव्यमां अनंतागुण, अनं तापर्याय अने अनंता स्वजाव ते सदा शाश्वता ठे, श्रीकेवलीजगवाने प्ररूप्या ते सर्वे जेम ठे, तेम सहहृणापूर्वक यथार्थ उपयोग सहित श्रुतज्ञानादि क गुणथी यथार्थ पणे जाणवा ए निश्चयज्ञान ठे, ते मोक्षनुं कारण ठे, जे जीव ज्ञान पाम्यो ते जीव विरति करे ठे,तेने चारित्र कहीयें. एटले श्रुतज्ञान ननुं फल ते विरति ठे, अने विरति जे ठे, ते मोक्षनुं तत्काल कारण ठे. ए रीतें ब ड्रव्यनुं स्वरूप सामान्यप्रकारें करी वालकबुद्धि जीवोने अर्थें प्रकाश्युं, तेनुं जाणपणुं करतां थकां समकेतरूप रत्ननी प्राप्ति थाय.

ए६९हवे जे जीव समकेतरूप रत्न पाम्यो, ते जीवने स्वरूपनुं ध्यान करवा रूप विचार लखीयें ठैयें. १ हुं एक तुं, महारो कोइ नथी, २ महारो आत्मा शाश्वतो ठे, ३ हुं ज्ञान, दर्शनं करी सहित तुं, ४ धन कटुंवादिक महारा स्वरूपथकी बाह्य वस्तु अलगी वस्तु ठे ते सर्व संयोगें मली ठे,अने वियोगें जाशे तेमां महारे शो वगाड थवानो ठे, ५ तन धन कुटुंबादिक नो संयोग एटले मिलाप तेने विषे जीव मुंजायो थको दुःखनी परंपरा प्रत्ये पामे ठे. ६ ए शरीरादि पुत्र, कलत्र, परिवार प्रमुख ते संयोगी वस्तु महारा स्वरूप थकी जूदी ठे, ७ ते सर्वेने हुं मन, वचन, कायायें करी वो सिरावुं तुं. ८ हुं चेतन तुं, अने ए पुजलनो स्वजाव ते अचेतन ठे, ९ हुं अरूपी तुं, १० पुजलरूपी ठे, माहारो ज्ञानादि चेतना लक्षण स्वजाव ठे, ११ पुजलनो जड स्वजाव ठे, १२ हुं अमूर्ति तुं आ पुजल मूर्ति ठे, १३ हुं स्वाजाविक तुं, आ पुजलविजाविक ठे, १४ हुं (सुचि के०) पवित्र तुं ए पुजल अपवित्र ठे, १५ महारो शाश्वतो स्वजाव ठे, अने आ पौजलिक वस्तु जे मने मली ठे, ते सर्व अशाश्वती ठे, १६ महारं ज्ञानादिरूप ठे, आ पुजलनुं पूर्ण गलनरूप ठे, १७ महारं केवारें स्वरूपथकी न चलवुं एवो अचलित स्वजाव ठे, अने पुजलनो चलित स्वजाव ठे, १८ महारं ज्ञान, दर्शन, चारित्र मय स्वरूप ठे, अने पुजल वर्णगंधादि रूप ठे, हुं वर्णगंधादिकथी रहित तुं, १९ हुं शुद्ध निर्मल तुं, २० हुं बुरू तुं, हुं ज्ञानानंदी तुं, २१ हुं

निर्विकल्प एटले सर्व विकल्पथी रहित हुं, महारुं स्वरूप पुञ्जलथी न्यारुं ठे, १० हुं देहातीत एटले आ देहरूप जे शरीर तेथकी रहित हुं, ११ अज्ञान, राग, द्वेषरूप जे आश्रव, ते माहारुं स्वरूप नथी. हुं एथकी न्यारो हुं, १२ अनंतज्ञानमय, अनंतदर्शनमय, अनंतचारित्रमय, अनंतवीर्यमय, एवुं महारुं स्वरूप ठे, १३ हुं शुरू हुं, कर्ममलथी रहित हुं, १४ हुं बुरू एटले ज्ञानस्वरूपी हुं, १५ हुं अविनाशी हुं, एटले माहारो कोइ काळें नाश नथी, १६ हुं जराथकी रहित अजर हुं, १७ हुं अनादि एटले महारी आ दि नथी, १८ हुं अनंत एटले महारो अंत ठेडो कोइ काळें नथी, १९ हुं अक्षय हुं, एटले माहारो कोइकाळें क्षय नथी, २० हुं कोइकाळें खरुं नहिं एवो अक्षर हुं, २१ हुं कोइकाळें स्वरूपथी चलुं नही, एवो अचल हुं, २२ महारुं स्वरूप कोइथी कळुं जाय नही, माटे अकल हुं, २३ हुं कर्मरूपमलथी रहित अमल हुं, कर्ममलथी न्यारो हुं, २४ महारी कोइने गम नथी, माटे अगम्य हुं, २५ हुं नाम रहित अनामी हुं, २६ हुं विज्ञा वदशाना रूपथी रहित स्वज्ञात्री हुं, २७ हुं कर्मरूप उपाधिथी रहित अकर्मा हुं, २८ हुं कर्मरूप बंधनथकी रहित अबंधक हुं, महारो खेळ न्यारो ठे, २९ हुं उदयजावथी रहित अणुदय हुं, ४० हुं मन, वचन, कायाना योगथी रहित अयोगी हुं, ४१ हुं शुजाशुचविजावदशाना जोगथी रहित अजोगी हुं, ४२ हुं कर्मरूप रोगथी रहित अरोगी हुं, ४३ हुं कोइनो जेद्यो जेदाउं नही, माटे अजेदी हुं, ४४ हुं पुरुष, स्त्री, नपुंसक लक्षण त्रण वेदथी रहित अवेदी हुं, ४५ हुं कोइनो ठेद्यो ठेदाउं नही माटे अठेदी हुं, ४६ हुं आत्मस्वरूप रमणमां खेद पासुं नही, माटे अखेदी हुं, ४७ माहारो कोइ सखाइसूत नथी माटे असखाइ हुं, ४८ हुं महारे पोताने पराक्रमें करी सहित हुं, पण महारा विपरीत परिणमन थकी बंधाणो हुं, ते जेवारें सघलो परिणामीश तेवारें ठुटीश परंतु मने वीजो कोइ बांधवा ठोडवा समर्थ नथी. ४९ हुं बलेश्याथी रहित अलेशी हुं, लेश्याथी न्यारो हुं, लेश्यानुं रूप ते पुञ्जल ठे, माहारुं रूप ते ज्ञानानंद ठे, ५० हुं (अशरीरी केण) शरीररूप जडथी रहित शुद्धचिदानंद पूर्णब्रह्म हुं. ५१ हुं जाषारूप पुञ्जल थी रहित अजासी पूर्णदेव हुं, अने ए जाषारूप ते पुञ्जल ठे, ५२ हुं चार आहाररूप पुञ्जलना जोगथी रहित अणाहारी पोताना पर्यायरूप जोग

नो विलासी तुं, ५३ हुं बाधापीडारूप दुःखथी रहित अनंत अव्यावाधिसुख
नो विलासी तुं, ५४ महारं स्वरूप कोऽ द्रव्य अवगाही शके नहिं माटे
अनवगाही महारं स्वरूप ठे, ५५ हुं अगुरुलघु एटले महोटो नही, अने
बोटो पण नही, बली जारी नही, अने हलवो पण नही एवो तुं, ५६ हुं
मनरूपपरिणामथी रहित न्यारो अपरिणामी तुं, ५७ हुं इंद्रियरूप विका
रथी रहित न्यारो श्वायोगी, अर्निंद्रिय तुं, ५८ हुं दशप्राणरूप पुजलथी
रहित महारो खेल न्यारो ठे, तेथी अप्राणी तुं, ५९ हुं (अयोनि के०)
चोराशीलाख जीवायोनिरूप परिभ्रमण पणाथी रहित निश्चयदेव तुं; ६०
हुं असंसारी एटले चारगतिरूप संसारथी रहित पूर्ण आत्मारामी तुं, ६१
हुं जन्म जरा मरण रूप दुःखथी रहित अमर तुं, ६२ हुं (अपर के०)
सर्वपरंपराथी रहित न्यारा खेलवालो तुं, ६३ हुं (अव्यापी के०) वि
जावरूप जडपणाथी रहित महास्वरूपमां सदाकाल व्यापी रह्यो तुं,
६४ हुं अनास्ति एटले महारं कोऽ कालें नास्तिपणुं नथी, हुं महारा ख
द्रव्यादिकें करीने सदाकाल अस्तिपणे वर्तुं तुं, ६५ हुं अकंप एटले को
इनो कंपाव्यो कंपुं नही, एवो अनंतवीर्यरूप शक्तिनो धणी तुं, ६६ हुं
अविरोध एटले कर्मरूप शत्रुनो रुंध्यो रुंधाउं नही, सदाकाल निर्लेप कर्म
रूप मलथी रहित न्यारो थको महारा पारिणामिक जावें रह्यो वर्तुं तुं, ६७
हुं अनाश्रव एटले शुजाशुजविजाव दशरूप आश्रवथी रहित सदाकाल
न्यारो वर्तुं तुं, जेम मंकने संयोगें स्फटिकने कलंक लागे, पण मूलख
जावें जोतां तो स्फटिक शुद्ध निर्मल ठे, तेम हुं पण महारे स्वजावें निर्लेप
रह्यो वर्तुं तुं. ६८ महारं स्वरूप तच्चस्थना लख्यामां न आवे माटे
अलख तुं, ६९ हुं अशोक एटले जन्म, जरा, मरण अने जयरूप शो
क संतापथी रहित सदाकाल नीरोगी अमररूप वर्तुं तुं. ७० हुं अलौ
किक एटले लौकिक मार्गथी रहित महारो खेल न्यारो वत्तं ठे, ७१
हुं ज्ञाने करी लोकालोकनुं स्वरूप एक समयमां जाणवाने सामर्थ्य वा
न् तुं, माटे लोकालोक ज्ञायक तुं, ७२ हुं शुद्ध एटले निर्मल कर्मरू
प मलथी रहित तुं, ७३ हुं (चिद के०) ज्ञान अने (आनंद के०) चारित्र
तेणें करी सहित चिदानंद तुं, एवुं महारं स्वरूप सदाकाल शाश्वतुं वत्तं ठे,
हवे ए ठ द्रव्यमां अगीयार सामान्य स्वजाव ठे, ते उलखावे ठे. १ अ

स्ति स्वज्ञाव, २ नास्तिस्वज्ञाव, ३ नित्यस्वज्ञाव, ४ अनित्यस्वज्ञाव, ५ एक स्वज्ञाव, ६ अनेकस्वज्ञाव, ७ ज्ञेदस्वज्ञाव, ८ अज्ञेदस्वज्ञाव, ९ ज्ञव्यस्वज्ञाव, १० अज्ञव्यस्वज्ञाव, ११ परमस्वज्ञाव. ए अग्नीआर स्वज्ञावनां नाम कर्ह्यां. ए६८तिहां प्रथम अस्तिस्वज्ञाव ते पोतानी अपेक्षाये ठतापणे ठए ड्रव्य पोताना परिणामिक ज्ञावें करी परिणमे ठे, ते अस्तिस्वज्ञाव जाणवो. ए६९वीजो नास्तिस्वज्ञाव ते परनी अपेक्षाये पोतें मूलस्वज्ञावें सर्वे ड्रव्य पर मां परिणमतां नथी, एटले परमां पोताना परिणामिकपणानुं नास्तिपणुं ठे. ए७०त्रोजो नित्यस्वज्ञाव ते सर्वे ड्रव्य पोतपोताना अनेक प्रकारना पर्याय नेविषे स्वद्रव्यपणे सदाकाल शाश्वतां वत्ते ठे, माटे स्वद्रव्यपणे करी सर्व ड्रव्यनो नित्यस्वज्ञाव जाणवो.

ए७१चोथो अनित्य स्वज्ञाव ते सर्वे ड्रव्यमां अनंता पर्याय समयसमय प लटाय ठे, ए सर्वे ड्रव्योमां अनित्यस्वज्ञाव जाणवो.

ए७२पांचमो एक स्वज्ञाव ते सर्वे ड्रव्य पोतपोताना स्वद्रव्यपणे करी एक ठे, जेम धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य चलणसहायरूप गुण तेणें करी एक ठे, अने अधर्मास्तिकायनो स्थिरसहायरूपगुण तेणे करी एक ठे, तथा आकाशा स्तिकायनो अवगाहनारूपगुण तेणें करी एक ठे, पुञ्जलद्रव्यनो मिलणविखर णरूपगुण तेणें करी एक ठे, कालद्रव्यनो नवापुराणा वर्तनारूप गुण, तेणें करी एक ठे, तथा जीवद्रव्य पोताना ज्ञानादिक गुण तेणें करी एक ठे, ए रीतें सर्वे ड्रव्य, पोत पोताना स्वद्रव्यपणे करी एटले ज्ञानादि चलण सहाया दिगुण तेणें करी एक ठे, माटे ए सर्वे ड्रव्यमां एकस्वज्ञाव जाणवो.

ए७३ठणो अनेक स्वज्ञाव ते अनेक प्रकारें ड्रव्यता पणे करीने जूदा जूदा ज्ञेद ठे, एटले ड्रव्यथी गुण अनंता अने गुणथी पर्याय अनंता एम कट्टप नायें करी अलगा करवा एटले जेम जीवमां ज्ञानगुण, दर्शन गुण, चारित्र गुण अने वीर्य गुण ए आदि अनंता गुण ठे, तेम वीजा सर्वे ड्रव्योमां पण अनेक गुण ठे, माटे ए ड्रव्यमां अनेक स्वज्ञाव जाणवो.

ए७४सातमो ज्ञेदस्वज्ञाव, ते जीवमां संसारी जीव आश्रयी जाणवो. तिहां सकलकर्म ह्य करी जे मोक्ष प्होता ते सिद्धना जीव अने वीजा संसारी जीव ते संसारीना वे ज्ञेद एक अयोगी, वीजा सयोगी. सयोगीना वे ज्ञेद, एककेवली, वीजा ठद्वस्थ, ठद्वस्थना वे ज्ञेद, एक क्षीणमोही उपशां

तमोही, इत्यादिक पूर्वे कक्षा ठे ते प्रमाणे जीवमां अनेकप्रकारें जेदस्वप्नाव जाणवो. अने अजीवमां तो धर्मास्तिकायमां चक्षुणसहायपणुं अधर्मास्तिकायमां स्थिरसहाय पणुं आकाशास्तिकायमां अवगाहना पणुं कालमां नवा पुराणा वर्तनापणुं पुञ्जलमां पूर्णगलनपणुं एम अनेक प्रकारें जीव अजीवरूप ठ ड्रव्य जूदे जूदे जेदें परिणमे ठे, ते सर्व जेदस्वप्नाव जाणवो तथा वली धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायादिकमां जेदस्वप्नाव ते जेम बेसताने वेठापणे सहाय करे, उठताने उठतापणे सहाय करे, सूताने सूतापणे सहाय करे, चालताने चालवापणे सहाय करे, हालताने हालवापणे सहाय करे, एम एकद्रव्य अनेकप्रकारें जूदे जूदे जेदें परिणमे माटे ते जेदस्वप्नाव कहीयें.

९९५ तथा आठमो अजेदस्वप्नाव ते जीवद्रव्यना जे ड्रव्यगुणपर्याय्य ते जीवनी साथें एकरूप अजेदपणे ठे, ते मधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायादिकना पण जाणवा माटे तेने अजेदस्वप्नाव कहीयें. जेम शरीरमां जेदस्वप्नाव जोतां तो हाथनो ज्ञाव जूदो, पगनो ज्ञाव जूदो, नाकनो ज्ञाव जूदो, आंखनो ज्ञाव जूदो, ए रीतें सर्व जूदे जूदे जेदे परिणमे ठे. ते जेदस्वप्नाव जाणवो. अने अजेदस्वप्नाव जोतां तो ए हाथपगादिक सर्वे कायामां अजेदरूप एक पणे वर्ते ठे, ते अजेद स्वप्नाव जाणवो.

९९६ हवे नवमो ज्ञव्यस्वप्नाव अने दशमो अज्ञव्यस्वप्नाव ए वे साथें कहे ठे. तिहां जे जीवमां पलटणपणुं ठे, ते जीवने कोइदिवसें कारण सामग्री मलवाथी पलटाइ श्रेणीजावें चढी सिद्धिरूप कार्य प्रत्ये निपजावशे, ते ज्ञव्यस्वप्नाव जाणवो. तथा अनेक प्रकारें कारण रूप सामग्री मलशे, पण मनःपरिणाम पलटावी प्रतिबोध नही पामे, ते अज्ञव्य स्वप्नाव जाणवो.

वली ज्ञव्यजीवमां निश्चय व्यवहारनयें करी ज्ञव्य अज्ञव्यस्वप्नाव, उलखावे ठे. तिहां व्यवहारनयें करी जीव, चार गतिमां नवा नवा ज्ञव करी चवतुं उपजतुं करे ठे, ते व्यवहारनयें करी जीवमां ज्ञव्यस्वप्नाव जाणवो. अने निश्चयनयें करी जीव, पारिणामिकजावें सदाकाल शाश्वतो वर्ते ठे, कोइनो ठेद्यो ठेदाय नही, जेद्यो जेदाय नही, ए रीतें निश्चयनयें करी जीव अखंरूप ठे, ते जीवमां निश्चयनयें करी अज्ञव्यस्वप्नाव जाणवो.

वली निश्चय व्यवहारनयें करी जीवमां ज्ञव्य अज्ञव्यस्वप्नाव उलखावे ठे.

तिहां सकल कर्म क्य करी लोकने अंतें बिराजमान एवा सिद्धपरमात्माने ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप ठता पर्याय प्रगट्या ठे, ते पर्याय कोइ कालें पलटशे नही, माटे ए निश्चय नयें करी सिद्धनो अज्ञव्यस्वजाव जाणवो. तथा जे श्रीसिद्धपरमात्माने सामर्थ्य पर्याय प्रवर्तनारूप समय समय अनंत तो उत्पाद व्यय थइ रह्यो ठे, ते व्यवहारनयें पलटणस्वजावें करी श्रीसिद्धपरमात्मानां ज्ञव्य स्वजाव जाणवो.

हवे पुज्जलद्रव्यमां ज्ञव्य अज्ञव्य स्वजाव उलखावे ठे. तिहां पुज्जलद्रव्य ना अनंता परमाणुआ ठे, ते निश्चयनयने मत्तें नित्य सदाकाल शाश्वता वत्तें ठे एटखे ए मूलस्वजावें करी कोइकालें पलटशे नही, ते अज्ञव्य स्वजाव जाणवो, तथा व्यवहारनयने मत्तें करी पुज्जलना खंध बने ठे, ते स्थिति प्रमाणे रहे ठे. बळी पाठा विखरे ठे, ते सर्वें ज्ञव्यस्वजावें जाणवा.

हवे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायादिक द्रव्यमां ज्ञव्य अज्ञव्य स्वजाव उलखावे ठे. तिहां परद्रव्य आश्रयी षट् जाग हानि वृद्धिरूप समय समय जे पलटण पाणुं थाय ठे, ते ज्ञव्यस्वजाव जाणवो अने मूलस्वजावें जोतां सर्वद्रव्य पारिणामिक जावे करी पोतपोताने स्वजावें रह्या वत्तें ठे, तेमां पलटण पाणुं नथी, स्वजाव पलटता नथी माटे ते अज्ञव्यस्वजाव जाणवो.

एण्ट अगीआरमो परम स्वजाव कहे ठे जे उत्कृष्ट स्वजाव तेने परमस्वजाव कह्यीयें. तिहां जीवद्रव्यमां ज्ञान दर्शनरूप परमस्वजाव जाणवो. एटखे ज्ञानें करी अनंताणुण, विशेषतापणे परिणमे ठे, अने दर्शनें करी अनंता गुण, सामान्यपणे परिणमे ठे. माटे ए परमस्वजाव जाणवो. तथा पुज्जलमां परमस्वजाव तो जे चेतना रहित अजीवरूप जडस्वजाव, जे सुख अने दुःखने नथी जाणतो ए पुज्जलमां पोतानो परमस्वजाव जाणवो, तथा धर्मास्तिकाय द्रव्य समय समय अनंता जीव पुज्जलने चक्षण सहायिपणे परिणमे ठे, तथा अधर्मास्तिकाय, स्थिरसहायि पणे परिणमे ठे, तथा आकाशास्तिकाय, श्रवगाहना पणे परिणमे ठे, तथा काल द्रव्य नवा पुराणा पणे परिणमे ठे, ए सर्व द्रव्यमां पोतपोतानो उत्कृष्टो स्वजाव वत्तें ठे, ते परमस्वजाव जाणवो. ए रीतें ठ द्रव्यमां अगीयार सामान्यस्वजावनो विचार कइयो,

हवे ठ द्रव्यमां दश विशेषस्वजाव ठे ते उलखावे ठे. १ चेतनस्वजाव, २ अचेतनस्वजाव, ३ मूर्त्तिस्वजाव, ४ अमूर्त्तिस्वजाव, ५ एकप्रदेशस्वजाव,

६ अनेकप्रदेश स्वजाव, ७ शुद्धस्वजाव, ८ अशुद्धस्वजाव, ९ विजावस्वजाव, १० उपचरितस्वजाव. ए दश विशेषस्वजावनां नाम जाणवां,

ए११ तिहां प्रथम चेतनस्वजाव ते एक जीवद्रव्यमांहेज ठे, केम के सर्व जीव सत्तायें शुद्धज्ञानादि चेतना रूप गुणे करी सहित निश्चयनयें ज्योतिः स्वरूपी एक सरखा सामान्यपणे करी जाणवा. अने व्यवहारनयें करी संसारी जीव, चारगतिरूपसंसारमां शरीरादि कर्मने योगें करी वत्तें ठे, पण निश्चयनयें करी सत्तायें सिद्धसमान ठे, ते जीवमां चेतनस्वजाव जाणवो.

ए१२ बीजो अचेतन स्वजाव ते एक जीवद्रव्य विना शेष पांच द्रव्य मां चेतना रहित अजीवरूप जडस्वजाव ठे, ते अचेतन स्वजाव जाणवो.

ए१३ त्रीजो मूर्त्तिस्वजाव ते एक पुजलद्रव्यमां ठे, अने व्यवहारनयें करी तो संसारी जीव, चार गतिरूप संसारमां वत्तें ठे, तेमां पण मूर्त्तिस्वजाव जाणवो.

ए१४ चोथो अमूर्त्तिस्वजाव, ते एक पुजलद्रव्यवर्जित शेष चार द्रव्यमां ठे, अने निश्चयनयें करी पांचमा जीवद्रव्यमां पण अमूर्त्ति स्वजाव जाणवो.

ए१५ पांचमो एकप्रदेश स्वजाव, ते जीव द्रव्यआश्रयी तो जीव, लघु शरीर मां उपन्यो होय, तेवारें लघु थइ संकोचाय, एटले जेम एकप्रदेश संकोच स्वजाव ठे, तेम असंख्याते प्रदेशे पण संकोच स्वजाव जाणवो अने पुजलद्रव्यमां जेम बशेर पाणीनी लोटीमां बशेर खांम पडे, ते सर्व पाणीमां समाइ जाय, पण पाणी बाहेर नीकले नही, तेम पुजलद्रव्यनो संकोचस्वजाव पारो, हींगलो, लींबु प्रमुख वस्तुने संयोगें बने ते एकप्रदेश स्वजाव जाणवो.

ए१६ षष्ठो अनेकप्रदेश स्वजाव कहे ठे. जेम जीव महोटा शरीरमां उपन्यो तो महोटा थाय, एटले लोकाकाशना जेटला प्रदेश ठे, तेटला एक जीवना प्रदेश ठे, पण आवरणने अजावें शक्तिनो प्रकाश प्रगटे, ते जीवमां अनेकप्रदेशस्वजाव जाणवो. तथा पुजलमां अनेकप्रदेशस्वजाव ते पुजलना जे अर्कतुल्यप्रमुख पोचा खंध थाय, ते अनेकप्रदेशस्वजाव जाणवो.

ए१७ सातमो विजावस्वजाव कहे ठे. जीव, पोतानो मूलस्वजाव त्यागीने परस्वजावें परिणम्यो, जेम पोतानो परमशांतरसमय स्वजाव त्यागीने क्रोधादिक चार कषायने विषे परिणम्यो, ए जीवद्रव्यनो विजावस्वजाव जाणवो. तथा पुजलद्रव्यमां बूटो परमाणुठ पोतानो मूलस्वजाव त्यागीने खंध मांहेचळ्यो, तेने जीवें ग्रहण कस्यो, ते विजावस्वजावें परिणम्यो कहेवाय.

ए०६ आठमो शुद्धस्वप्नाव. ते सकल कर्मने ह्ये जीवने सिद्धिरूपकार्य नीप जे अने केवलज्ञानानादिक लक्ष्मी प्रगटे, ते जीवमां शुद्धस्वप्नाव जाणवो. तथा पुञ्जलद्रव्यमां खंधयकी रहित बूटो परमाणुं रहे ते शुद्धस्वप्नावें जाणवो.

ए०७ नवमो अशुद्धस्वप्नाव ते जीवने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान, मनः पर्यवज्ञान रूप जे ह्यायोपशमप्नावें इंद्रियने अनुयायीरूप जीवने गुण परिणामे, ते जीवना अशुद्धस्वप्नाव जाणवो अने पुञ्जलद्रव्यमां जे परमाणुआ मां होमां हे मली खंध जाव पामे, ते अशुद्धस्वप्नाव जडपरिणतिरूप जाणवो.

ए०८ दशमो उपचरितस्वप्नाव ते जे पोताना स्वप्नावथकी जिन्न पुञ्जलने संयोगें धाय ते परस्वप्नाव ठे, तेने उपचारें करी बोलावीयें जेम जीवमां रूपीपणुं अने जडपणुं स्थापीयें, जेम शरीररूपी ठे, ते जडरूप ठे तेनो संसर्ग जीवने लाग्यो ठे ते जीवने उपचरितस्वप्नाव जाणवो अने पुञ्जलने चेतनपणुं कहीयें, ते पुञ्जलमां उपचरितस्वप्नाव जाणवो एटले पुञ्जलचेतनने लागो अने रूपी ठे पण अतिसूक्ष्म ठे माटे चर्मचक्षुयें न देखाय, ते अमूर्ति स्वप्नाव ठे तेने स्थापीयें, ते उपचरितस्वप्नाव पुञ्जलमां जाणवो. ए रीतें जीव, अजीवरूप षट्द्रव्यमां ए दश विशेष स्वप्नाव जाणवा.

हवे जीव, अजीवनी उलखाण करवा वास्ते द्रव्य तथा जावनुं जाणपणुं करवा सारु नव तत्व षट्द्रव्यनुं स्वरूप अनेक नयनी अपेक्षायें द्रव्य जावनी चोत्रंगीयें करी देखाडे ठे, तिहां प्रथम जीवद्रव्यथीमां मीने शिष्य गुरुना प्रश्नोत्तररूपें नवतत्व षट्द्रव्यनुं स्वरूप अनेकनयनी अपेक्षायें कहे ठे.

ए०९ शिष्यः—अशुद्ध प्रकारें जीव द्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी जावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकीने जावथकी केम जाणीयें?

गुरुः—ए अशुद्धव्यवहारनयने मत्तें जाणवुं. केम के शुजाशुजरूपपरिणाम तो कत्या धाय ठे, पण अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश तेने अशुद्धता कहीयें ते अशुद्धता तो जीवने अनादिकालनी ठे, माटे निगोदीया जीव, राग, द्वेष अने अज्ञाननी चिकाशरूप अशुद्धताये करी अनंतां जन्म मरण करे ठे, ए अशुद्धप्रकारें जीवनुं स्वरूप तेमां द्रव्यथकी तो जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने जावथकी अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश जाणवी. ते जावथकी अज्ञानरूप राग द्वेषनी चिकाश तेणें करी अनंतां द्रव्यरूप कर्मनां दलीयां जीवने लागे ते अनंतां द्रव्यरूप कर्मनां दली

यां जीवने लागां तेने जावपणे दुःखरूपविपाकें जीव जोगवे. एरीतें अशुक्र प्रकारें चोजंगीयें करी जीवनं स्वरूप जाणवुं.

ए०० शिष्यः—अशुक्रप्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी, जावथकीने द्रव्यथकी, द्रव्यथकीने जावथकी, केम जाणीयें ?

गुरुः—ए अशुक्रव्यवहारनयने मत्तें जाणवुं जेकारणे अशुक्रप्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकी तो जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने जावथकी क्रोध, मान, माया, लोच, विषय, कषाय, निद्रा, विकथा, हास्य, विनोद, ए आदि अशुक्र जावना अनेक प्रकार जाणवी. अने ए अशुक्रजावनी चि काशें करी अनंता द्रव्यरूप कर्मनां दक्षीयां जीवने लागे, ते अनंतां अशुक्र द्रव्यरूप कर्मनां दक्षीयां जीवने लागां, तेने जावपणे जीव नरक तिर्यचनी गति पामीने जोगवे, ए अशुक्रप्रकारें चोजंगीयें करी जीवनं स्वरूप जाणवुं.

ए०१ शिष्यः—शुक्रप्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकी ने जावथकी, जावथकीने द्रव्यथकी, द्रव्यथकीने जावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—ए शुक्रव्यवहारनयने मत्तें जाणवुं जे कारण शुक्र प्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकी तो जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी जाणवो अने शुक्रजावते दान, शीयल, तप, जाव, उपकार, करुणा, दया, यत्ना आदिक शुक्रजावना अनेक प्रकार जाणवा अने ए शुक्रजावनी चिकाशें करी अनंता शुक्रकर्मरूप द्रव्य नां दक्षीयां जीवने लागे ते अनंतां शुक्रकर्मरूप द्रव्यनां दक्षीयां जीवने लागा तेने जावपणे जीव मनुष्य देवताना जव पामीने जोगवे. ए शुक्र प्रकारें जी वनुं स्वरूप चोजंगीयें करी जाणवुं.

ए०२ शिष्यः—शुक्र प्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकी ने जावथकी, जाव थकी ने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—ए शुक्रव्यवहारनयने मत्तें जाणवो. तिहां चोथा गुणगणार्थी मांसीने थावत् तेरमा चौदमा गुणगणार्थी लगे शुक्रजाव जाणवो. ते शुक्र प्रकारें जीवनं स्वरूप द्रव्यथकी तो जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी ठे, अने शु क्रजाव ते शुजाशुक्रविकाररूप परपुजल तेथकी विरुक्तजाव एटले उदासी परिणाम अने पोताना स्वरूपमां रहेवुं, ते शुक्रजाव जाणवो. अने ए शुक्रजावरूप स्वरूपमां रहेतां जीवने द्रव्यरूप कर्मनां दक्षीयां आवतां रो काय, ए शुक्रप्रकारें जीवनं स्वरूप, चोजंगीयें करी जाणवुं.

७७३ शिष्यः—निश्चयथकी जीवतुं स्वरूपद्रव्यथकीने जावथकी केमजाणीयें?

गुरुः—निश्चयनयें जीवतुं स्वरूप द्रव्यथकी तो जीवद्रव्य असंख्यात प्रदेशी ठे, अने जावथकी तो सकलकर्म थकी रहित, शुद्ध, निर्मल, चिदानंद, परमज्योति, सहजानंदी, पूर्णानंदी, अजर, अमर, अखंड, अविभक्त, सिद्धिरूप कार्य निष्पन्न, अनंत सुखजोगी, विज्ञावसुखत्यागी आपस्वरूपमां रमता एवा अनंता सिद्धपरमात्मा सादि अनंतमे जांगे वत्तें ठे, ए जावथकी स्वरूप जाणवुं, ए निश्चयनयें जीवतुं स्वरूप, बे जंगीयें करी कछुं. ए रीतें जीवतुं स्वरूप कछुं. हवे अजीवना स्वरूपमां द्रव्यजावतुं लक्षण कहेठेः—

७७४ शिष्यः—धर्मास्तिकायद्रव्यतुं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी अने जावथकीने द्रव्यथकी ए त्रिजंगीयें करी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो धर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी कहीयें. अने जावथकी तो धर्मास्तिकायतुं चलणसहायीपणुं जाणवुं, तथा ए जावथकी जे चलणसहायीपणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीव पुजलने विषे जाणवुं. ए रीतें धर्मास्तिकायतुं स्वरूप, द्रव्यजावनी त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

७७५ शिष्यः—अधर्मास्तिकायतुं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी तथा जावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो अधर्मास्तिकायद्रव्य असंख्यात प्रदेशी कहीयें, अने जावथकी तो अधर्मास्तिकायतुं स्थिरसहायीपणुं जाणवुं तथा ए जावथकी जे स्थिरसहायी पणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीवपुजलने विषे जाणवुं. ए रीतें अधर्मास्तिकायतुं स्वरूप द्रव्य जावनी त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

७७६ शिष्यः—आकाशास्तिकायतुं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी तथा जावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो आकाशास्तिकायद्रव्य अनंत प्रदेशी कहीयें, अने जावथकी तो आकाशास्तिकाय द्रव्यतुं अवगाहनारूपपणुं जाणवुं. तथा ए जावथकी जे अवगाहनारूपपणुं ते द्रव्यथकी अनंता जीव पुजलद्रव्यनेविषे जाणवुं. ए रीतें आकाशास्तिकायने स्वरूप द्रव्यजावनी त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

७७७ शिष्यः—पुजलास्तिकायतुं स्वरूप द्रव्यथकी ने जावथकी तथा जावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यथकी तो पुजलास्तिकायना अनंता परमाणुआ लोकमांशा

श्वता ठे,ते जाणवा अने जावथकी तो पुजलद्रव्यनुं गलण पूर्णपणुं जाणवुं तथा ए जावथकी जे गलणपूर्णपणुं ते द्रव्यथकी अनंता वंधने विषे जाणवुं. ए रीतें पुजलास्तिकायनुं स्वरूप द्रव्य जावनी त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

७७८ शिष्यः—कालद्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यथकी ने जावथकी तथा जावथकीने द्रव्यथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—द्रव्यकी तो कालद्रव्यनो एक समय लोकालोकमां वर्ते ठे ते जाणवो, अने जावथकी कालद्रव्य नवा पुराणा वर्तना रूप जाणवुं, तथा ए जावथकी जे नवा पुराणा वर्तना रूप ते द्रव्यथकी जीव अजीव द्रव्य रूप वस्तुने विषे जाणवो. ए रीतें कालद्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यजावनी त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

ए रीतें षट्द्रव्यनुं स्वरूप द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी, त्रिजंगीयें करी तथा वे जंगीयें करी विचारतां थकां समकेतनी शुद्धि थाय.

हवे नव तत्त्वनुं स्वरूप द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी देखाडे ठे, तेमां जीव अने अजीव ए वे तत्त्वनुं स्वरूप आगल ठ द्रव्यना स्वरूपमां कळुं, हवे शेष पुण्यादिक सात तत्त्वनुं स्वरूप, द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी कहे ठे.

७७९ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पुण्यतत्त्वनुं स्वरूप जावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्य थकीने जावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—जावथकी तो पुण्यवांधवाना नव प्रकार ठे. तेमां प्रथम साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध श्रीसंघने अंतरंग रागसहित अन्न देवनी रुचि ते अन्नपुण्य जाणवुं. वीजुं पाणपुण्य ते साधु साधवी प्रमुखने प्राशुक जलदेवानी रुचि जाणवी, त्रीजुं लेणपुण्य ते साधु साधवी प्रमुखने रहेवा सारु निरवद्यजगा देवानी रुचि. चोथुं सयणपुण्य ते साधु, साधवी प्रमुखने सूवाने अर्थे पाट तथा वेसवाने वाजोठ प्रमुख देवानी रुचि, पांचमुं वल्लपुण्य ते साधुसाधवी प्रमुखने कपडां, कांबळी आदिक धर्मोपकरण प्रमुख देवानी रुचि. ठठुं मनःपुण्य ते जगतना जीवनुं मने करी रूहुं चिंतववुं अर्थात् सर्वजीवने धर्म पमाडीकर्मरूप दुःखथकी मूकावी सुखिया करी मोक्षनगरें प्होचाहुं? एवी जावना मने करी जावे, ते जीव जिननाम कर्म उपार्जन करे, सातमुं वचनपुण्य ते मीतुं, मनोहर प्रीतिकारी, हितकारी सूत्रमर्यादायें आज्ञा प्रमाणे घणा जीवने उपकाररूप वचन बोलवानी

रुचि. आठमुं कायपुण्य ते पूंजवुं, प्रमार्जवुं, तथा साधु साधवी प्रमुख च तुर्विध श्रीसंघनो विनय वैयावच्च तेने विषे काया प्रवर्त्ताववानी रुचि. नवमुं नमस्कारपुण्य ते श्रीतीर्थकर, केवली, गणधर, आचार्य, साधु, साधवी प्र मुख गुणी जीवने कृतिकर्म एटले बंदना नमस्कार करवानी रुचि, एरीतें नव प्रकारनो जे जीवना चित्तमां जाव उपजे, ते जावपुण्य कहीयें अने ए जावपुण्यनी चिकारें करी जीवने सत्तायें जे शुभ कर्मनां दलीयां लागे, ते द्रव्यपुण्य कहीयें, अने ए द्रव्यपुण्यना दलीयां सत्तायें बंधाणां, ते आगल जावपणे मनुष्य देवताना जवपामी वहेतालीश प्रकारें मीठा विपाकें जीव जोगवे, ए रीतें ए द्रव्य जावनी चोचंगीयें करी पुण्यनुं स्वरूप जाणवुं.

१००० शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पापनुं स्वरूप जावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकीने जावथकी केम जाणीयें ?

गुरुः—जावथकी तो पापवांधवानी अढार प्रकार बे. तेनां नाम कहे बे. पहेलो प्राणातिपात ते परजीवना प्राणनो नाश चित्तववो, वीजो मृषावाद ते जूठुं बोलवुं, त्रीजुं अदत्तादान ते पारकी अणदीधी वस्तु चोरी ले वानी रुचि, चोथुं मैथुन ते विषयसुखनी वांठारूप परिणाम, पांचमो परिग्रह ते नव प्रकारें वाह्य अने चौद प्रकारें अर्च्यंतररूप परिग्रहनी वांठा, षष्ठो क्रोध ते कोइ जीवनी उपर आकरा तीव्रपरिणामें क्रोध करवो, सातमुं मान ते आठ प्रकारें मद करवो आठमी माया ते कपटें करी लोक देखाडवारूप धर्म करणी करवी, नवमो लोभ ते धन, शरीर, कुटुंब परिवाररूप संपदा एकठी करवानी रखवालवानी घणी वांठा, दशमो राग ते पौञ्जलिक परवस्तु वर्णादि उपर राग धरवो, अगीयारमो द्वेष ते पोताने अणगमती वस्तु उपर अरुचिजाव, बारमो क्लेश ते हरएक कोइ कारणें क्लेश करवानी रुचि, तेरमो अन्याख्यान ते अणदीतुं अणसांजळ्युं परजीवने आल देवुं. चौदमो पैशून्य ते पारकी चाडी करवी, पंदरमो रति अरति ते सुखदुःख आवे हर्ष शोक धरवो, शोलमो परपरिवाद ते गुणी निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, सत्तरमो मायामोसो ते अंतरमां जूदी वात होय अने मुखें मीतुं बोलवुं, श्ल्यादि अनेक प्रकारें बल करी लोकने उगवा रूप परिणाम, अढारमो मिथ्यात्वशल्य ते पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववारूप परिणाम, ए रीतें अढार प्रकारें जे जीवना चित्तमां पापरूपजाव उपजे, तेने जावपाप कहीयें. अने

ए जावनी चिकारें करी जीवने सत्तायें पापरूपकर्मनां दळीयां लागे, तेद्रव्य पाप कहीयें. अने ए द्रव्यपापनां दळीयां जे सत्तायें बंधाणां, ते आगल जा वपणे तिर्यंच अने नारकीना जव पामीने व्याशी प्रकारें कडवा विपाक जी व जोगवे, ए रीतें द्रव्यजावनी चोजंगीये करी पापनुं स्वरूप जाणवुं.

१००१ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी आश्रवणुं स्वरूप जावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकी अने जावथकी केस जाणीयें ?

गुरुः—जाव आश्रव ते मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग, ए जाव आश्रवनी चिकारें जीवने शुजाशुजविकाररूप कर्मना दळीयां लागे, तेने द्रव्यआश्रव कहीयें. अने ए द्रव्यआश्रवनां दळीयां जे जीवनी सत्तायें लागीं, तेने चारगतिरूप संसारमां जावपणे जीव जोगवे ते जावथी जाणवुं, ए रीतें द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी आश्रवणुं स्वरूप जाणवुं.

१००२ शिष्यः—नव तत्त्वमांथी संवरणुं स्वरूप, द्रव्यथकीने जावथकी तथा जावथकीने द्रव्यथकी केस जाणीयें ?

गुरुः—सामायिक, प्रतिक्रमण, पोसह, व्रत, पञ्चकाणरूप संवर करी एक जगायें रहेवुं, तेने द्रव्यसंवर कहीयें अने जे जीव अजीवरूप वेचण करी अंतरंग सत्तागतना उपयोगमां वर्तवुं, तेने जावसंवर कहीयें. पढी ते अंतरंग सत्तागतना उपयोगरूप जावसंवरमां जीवने रहेतां थकां द्रव्यरूप आठ वर्गनां दळीयां आवतां रोकाय, ते द्रव्यथी जाणवुं. ए रीतें द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी संवरणुं स्वरूप जाणवुं.

१००३ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी निर्झरानुं स्वरूप द्रव्यथकीने जावथकी जाव थकीने द्रव्यथकी केस जाणीयें ?

गुरुः—चार जेदें तपस्या करवी, तेने द्रव्यनिर्झरा कहीयें. अने जावनिर्झरा तो शब्द समजिरूढनयने मतें ज्ञानरूप दृष्टिये करी अंतरंग स्वसत्ता परसत्तारूप वेचण करवी, तेने जाव निर्झरा कहीयें. अने ए रीतें एक अंतरमुहूर्त्त स्वसत्ता परसत्तारूप जीवने वेचण करतां द्रव्यरूप आठ कर्मनां दळीयां जे जीवने सत्तायें र्हायां ते, ते दळीयाने खपावे, ते द्रव्यदळीयाने खपाव्या कहीयें. ए रीतें द्रव्यजावनी चोजंगीयें करी निर्झरानुं स्वरूप जाणवुं,

१००४ शिष्यः—ए नव तत्त्वमांथी बंधतत्त्वनुं स्वरूप जावथकीने द्रव्यथकी तथा द्रव्यथकीने जावथकी केस जाणीयें ?

गुरुः—पुञ्जलजीवने संसर्गें जे कर्म बंधाय तेने जावथकी बंध कहीयें एटले पुञ्जलनी पिपासारूप विषयसुखनी तृष्णा अंतरंग लालचरूप परिणाम, ते ने जावबंध कहीयें. अने ए जावबंध एटले अंतरंग इंद्रियसुखनी लालचरूप परिणामनी चिकारें करी जे आठ कर्मरूप दलीयां जीवने लागे ते ड्रव्यबंध जाणवो. जेम तेलने संसर्गें वस्तुने धूडलागे तेनी परे जीवने पोताना माठा परिणामना बगाड रूप चिकारें करी ज्ञानावरणादि आठकर्मरूप धूल जीवने लागे, ते ड्रव्यबंध जाणी लेवो अने ए ड्रव्यबंधरूपकर्मना दलीयाने जीव चारगतिरूप संसारमां जावपणे जोगवे, ते जाव जाणवो. ए रीतें ड्रव्य जावनी चोजंगीयें करी बंधनुं स्वरूप जाणवुं.

१००५ शिष्यः—ए नवतत्त्वमांथी मोक्षनुं स्वरूप ड्रव्यथकीने जावथकी केम?

गुरुः—बारमे गुणठाणे राग, द्वेष, अज्ञान, तथा मोहनीयकर्मनो क्षय कस्यो, अने तेरमे गुणठाणे केवलज्ञान पाम्यो, तेने ड्रव्यमोक्षपद कहीयें. तथा अष्ट कर्म क्षय करी, अष्टगुणसंपन्न लोकने अंतैबिराजमान, सादि अनंतमे जांगे वत्तें ठे एवा सिद्धपरमात्मा तेने जावमोक्षपद कहीयें. ए री तें बे चंगीयें करी मोक्षतत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं. ए रीतें षट् ड्रव्य नव तत्त्व नुं स्वरूप, ड्रव्यजावनी चोजंगीयें, त्रिचंगीयें, बे चंगीयें करी देखाड्युं.

हवे ए नव तत्त्व षट् ड्रव्यनुं स्वरूप कर्त्ता, कारण अने कार्यरूप त्रि चंगीयें करी देखाडे ठे.

१००६ शिष्यः—ए नवतत्त्वमां अशुद्धप्रकारें जीवमां कर्त्ता कारण ने कार्य ते शुं?

गुरुः—अज्ञान अने राग, द्वेषरूप अशुद्धता ते जीवने अनादिखाण संपन्न जाणवी. ए अशुद्धतायें करी जीव निगोदमां अनंतां जन्म मरण करे ठे. एटले शुजाशुज तो कस्यां थाय ठे, पण अशुद्धता तो जीवने अनादि नी जाणवी, ए परमार्थ ठे. एटले कर्त्ता जीव, अने अज्ञानरूप राग, द्वेष, ते कारण तथा ए अशुद्ध कारणथी निगोदमां जीवने अनंता जन्म मरण थाय, ते रूप कार्य जाणवुं. ए रीतें अशुद्धप्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिचंगीयें करी कहुं

१००७ शिष्यः—ए नवतत्त्वमां अशुद्धप्रकारें जीवमां कर्त्ताकारणने कार्य ते शुं?

गुरुः—कर्त्ता जीव, अने अशुद्ध कारण ते क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय, तृष्णा, ममता, मूर्खा, निर्दा, विकथा, हास्य, ए आदि अनेक प्रका

रना अशुचकारणथकी जीवने नरक तिर्यचनी गतिरूप कार्य नीपजे, ए रीतें अशुचप्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

१००८ शिष्यः—नवतत्त्वमांशुचप्रकारेंजीवनास्वरूपमांकर्ता, कारणनेकार्यतेशुं

गुरुः—कर्ता, जीव, अने दान, शीयल, तप, ज्ञाव, ए आदि अनेक प्रकारें शुचकारण थकी जीवने देव मनुष्यजवरूप कार्य नीपजे ठे.

१००९ शिष्यःएनवतत्त्वमांशुचप्रकारेंजीवनास्वरूपमांकर्ताकारणनेकार्यतेशुं

गुरुः—कर्ता जीव अने शुद्ध कारण ते आ जव परजव इंद्रियसुखनी वांढा रहित, यशःकीर्त्तिनी वांढा रहित, एक पोतानो आत्मा कर्मवशे दुःखी ठे, तेने कर्मरूप बंधीखानाथकी ढोढाववारूप जे साधन करवुं, ते शुद्धकारण जाणवुं अने एवा शुद्धकारण सेवन कस्याथी जीवने कर्मरूप दुःखनो राशि त्रूटे, अने अनंतसुखनो राशि प्रगटे, ते रूप कार्य जाणवुं. ए रीतें शुद्ध प्रकारें जीवनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी कबुं.

१०१० शिष्यः—ए नव तत्त्वमां निश्चयनयें करी जीवमां कर्ता, कारण ने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—निश्चय नयें करी जीव, मोहरूप कार्यनो कर्ता जाणवो. एट ले कर्ता तो जीव अने कारण तो शुद्धशुद्धध्यान रूपातीत परिणाम क्षपक श्रेणी, ए कर्मक्षयनां कारण जाणवां. तथा ए कारणथकी सकल कर्मरहित शुद्ध चिदानंद परमज्योति एवुं सिद्धिरूपकार्य जीवने नीपजे, ए निश्चयनयें करी जीवनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी जाणवुं. ए नव तत्त्वमां जीवनां स्वरूपमां त्रिजंगीयो कही. हवे अजीवनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी कहे ठे.

१०११ शिष्यः—धर्मास्तिकायमां कर्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्ता जीव अने कारणरूप धर्मास्तिकाय मख्यो, तेवारें जीवने हा लवा चालवा रूप कार्य नीपनुं ए धर्मास्तिकायमां त्रिजंगी जाणवी.

१०१२ शिष्यः—अधर्मास्तिकायमां कर्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्ताजीव अने कारणरूप अधर्मास्तिकाय मख्यो, तेवारें जीवने स्थिर रहेवारूप कार्य नीपनुं ए अधर्मास्तिकायमां त्रिजंगी जाणवी.

१०१३ शिष्यः—आकाशास्तिकायमां कर्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्ता जीव अने कारणरूप आकाशास्तिकाय मख्यो, तेवारें जीवने अब गाहनारूप कार्य नीपनुं. ए आकाशास्तिकायनुं स्वरूप त्रिजंगी यें करी कबुं.

१०१४शिष्यः—कालद्रव्यमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारणरूप कालद्रव्य मध्युं तेवारें जीवने नवा पुराणारूप कार्य नीपन्युं एम कालद्रव्यनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

१०१५ शिष्यः—पुञ्जलास्तिकायमां कर्त्ता,कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः—कर्त्ता जीव, अने कारणरूप पुञ्जलद्रव्य मध्यो, तेवारें जीवने स मय समय अनंतां कर्मरूप दळीयां लेवां, अने अनंता कर्मरूप दळीयां खेरववां, तेरूप कार्य नीपन्युं एम पुञ्जलास्तिकायना स्वरूपमां त्रिजंगी जाणवी. ए रीतें जीव, अजीवरूप षट्द्रव्यनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी कळुं.

हवे नव तत्त्वमां जीव अने अजीव ए वे तत्त्वनुं स्वरूप षट्द्रव्यना स्व रूपमां कहेवाणुं शेष पुण्यादि सात तत्त्वनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी कहेवे.

१०१६शिष्यः—नव तत्त्वमांथी पुण्यमां कर्त्ता कारण अने कार्य ते शुं कहीयें?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण ते ठ कायनी दयारूप परिणाम,परोपकार करतो, मनोहर ललित वचन बोलतो, करुणाजावना जावतो, कुकर्म जीव देखी तेनी उपर दया चिंतवतो, गुणवंत जीव देखी अत्यंत प्रमोद धरतो, सर्व जीवने पोता समान जाणी, तेने दुःखथकी मूकाववानी चिंता करतो, एवा परिणामरूपकारणथकी जीव महापुण्यरूप कार्य उपार्जन करे.

१०१७शिष्यः—ए नव तत्त्वमां पापमां कर्त्ता,कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण तो हिंसा, मृषा, चोरी, मैथुन, निंदा, ईर्ष्या, मिथ्यात्व, अव्रत, हास्य, विनोद, कुतूहल, पारकां बिड जोतो, क डवां वचन बोलतो, अनेक जीवने संताप उपजावतो, एवा परिणामरूप कारणथकी जीव महापापरूप कार्य उपार्जन करे. ए पापमां त्रिजंगी कही.

१०१८शिष्यः—ए नव तत्त्वमां आश्रवमां कर्त्ता,कारण,अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—आश्रवनो कर्त्ता जीव अने कारण तो एके आ जव परजवने अर्थें तथा इंद्रियसुखनी वांठारूप परिणामें जे शुच कारण मेलवी साधन करवुं, ते शुचकारणरूप आश्रव जाणवुं अने मिथ्यात्व, अव्रत, क्लेश, कजी या, निंदा, विकथारूप परिणामें करी जे दळीयां मेलववां, ते अशुचकार णरूप आश्रव जाणवुं. अने एवा शुचाशुच कारण मेलव्याथी जे आ जवें परजवें शुचाशुचविकाररूप फलनी प्राप्ति थाय,ते कार्यरूप आश्रव जाणवुं. ए रीतें आश्रव तत्त्वनुं स्वरूप त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

१०१९ शिष्यः—एनवतत्त्वमां संवरमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने कारण तो नव तत्व षट्द्रव्यरूप जीव अजीवनी वेंचण करी अंतरंग निश्चयनयें ज्ञानस्वरूपी सत्तायें सिद्धसमान एवी जीव सत्ताने ध्यावे, अने अजीवसत्ताने जडरूप जाणी त्याग करे, एतुं संवररूप कारण जीवने मळे, तेवारें शुचाशुच विजाविक सुख उपरथी मूर्खा टळे, अने अनंत स्वाभाविक सुखरूप कार्य नीपजे, ए संवरमां त्रिजंगी कही.

१०२० शिष्यः—ए नव तत्वमांथीनिर्झारातत्त्वमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं ?

गुरुः—कर्त्ता जीव अने अंतरंग इहानो रोध करी पौजलिक सुखनी वांठा रहित थको एक पोतानो आत्मा कर्मरूप जालमां वीटाणो ठे, तेने शुद्ध निरावरण ज्ञान स्वरूपी ज्योतिरूप प्रगट करवानी वांठायें वार जेदें तपस्या रूप कारणने मेलवतो थोडा कालमां आवरण रहित थइ परमानंद सुखरूप कार्य निपजावे. ए रीतें निर्झारातत्त्वतुं स्वरूप, त्रिजंगीयें करी जाणवुं.

१०२१ शिष्यः—ए नव तत्वमां वंधमां कर्त्ता, कारण अने कार्य ते शुं कहीयें ?

गुरुः—कर्त्ता तो जीव अने कारण तो पुजलद्रव्यने संसर्गें करी जीव, कर्मने बांधे ठे. एटले वर्ण गंधादिक, रस, फरस प्रमुख पुजलनी रचना तेने देखीने मोहदृष्टियें करी जीव व्यामोह पामे ठे. पठी तीव्ररागें करी विषयसुखनां कारण मेलवे, ए तीव्ररागनी चिकाशें जीव, कर्मरूप दळीयां नो वंध पाडे, तेवारें वंधरूप कार्य नीपजे, एम वंधतत्त्वमां त्रिजंगी कही.

हवे आगल पन्नवणासूत्रना पाठमध्ये कळुं ठे जे मोक्षनिःकर्मावस्था रूप सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें. अने अंतरंग सहहे तेने निश्चय समकेत ठरे तेनो खुलासो करे ठेः—समकेतविनानी सर्व करणी ते एकडा विनानां मीकां सरखी जाणवी, एटले कांइ पण लेखे लागे नहीं तेमाटें समकेत ठे, ते दीवा समान ठे, जेम दीवा विना घरनेविषे अंधारामां कांइ पण वस्तु सूजे नहीं, तेम चित्तरूपीया घरनेविषे पण समकेतरूप दी पक विना कांइ मालम पडे नहीं, तथा वळी समकेत ठे, ते बीजना चंद्रमा समान ठे, जेम बीजनो चंद्रमा उगे, तेवारें लोकना जीवने पूर्णमासीनी प्रतीति थाय जे हवे पूर्णमासी अवश्य थाशे, तेम चित्तने विषे समकेतरूप बीज उगे. तेवारें मोक्षरूप पूर्णमासीनी प्रतीति थाय, तथा जेम कोइएक स्त्रीयें पांचशेर चोखा चूळे मूक्या होय, तेमांहेलो एक दाणो चांपी जोतां

पाका काचा चोखानुं ज्ञान थाय. तेम समकेतरूप एक गुण आवेथी सिद्धना अनन्ता गुणनुं ज्ञान थाय. तथा जेम कोइ एक व्यापारी गोधमनी वोरगत क रवा आव्यो, तिहां गोधमनो कोठार सो कलशीनो जरेलो हतो, तेमांथी एक मूठी जरीने वानकी जोइ, तेवारें तेने सोए कलशी गोधम अमुक जात ना ठे, तेनुं ज्ञान थयुं, तेम समकेतरूप एक गुण ते वानकी समान ठे. ते जो जीवने आवे, तो तेने सिद्धजगवानना सर्व गुणनुं ज्ञान थाय. तेवारें तेने सिद्धनां सुख प्रगट करवानो जाव उपजे एवुं एसमकेत सर्वोत्तम ठे.

१०३६ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना केटखा जेद ठे ?

गुरुः—गाथा ॥ जिण अजिण तिष्ठतिष्ठा, गिहि अन्न सलिंग्ठी नरनपुं सा ॥ पत्तेय सयंबुद्धा, बुद्ध बोहिक्कणिक्काय ॥२॥ अर्थः—प्रथम जिनसिद्ध ते तीर्थकरने कहीयें. बीजा अजिणसिद्ध ते सामान्यकेवलीने कहीयें, त्रीजा तीर्थसिद्ध ते जे श्रीतीर्थकर थाय ते चतुर्विधसंघनी स्थापना करे, ते संघने तीर्थ कहीयें. ते तीर्थ प्रवर्त्या पठी जे मोद्धें गया, तेने तीर्थसिद्ध कहीयें चोथा तीर्थ प्रवर्त्यानी प्रथमज मरुदेवादिकनी पेरें जे मोद्धें गया, ते अ तीर्थसिद्ध कहीयें. पांचमा घरमां बेठां जे मोद्ध गया, तेइहस्थलिंगसिद्ध, ठछा मुनिना वेशविना बीजा वेशे जे मोद्धें गया, ते वट्कलचिरी प्रमुखने अन्यलिंगसिद्ध कहीयें. सातमा साधुने वेशे जे मोद्धें गया, ते स्वलिंग सिद्ध कहीयें. आठमा चंदनबाळा प्रमुख स्त्रीलिंगें जे मोद्धें गया, ते स्त्रीलिं गसिद्ध कहीयें. नवमा श्रीगौतम प्रमुख नरलिंगें जे सिद्ध थया, तेने पुरुषलिं गसिद्ध कहीयें. दसमा गांगेय प्रमुख जे नपुंसक मोद्धें गया, तेनपुंसकलिंग सिद्ध कहीयें. अगीयारमा करकंठुप्रमुखने प्रत्येकबुद्ध सिद्ध कहीयें. बारमा कपिल प्रमुखने खयंबुद्ध सिद्ध कहीयें. तेरमा गुरुना बोधथकी जे सिद्ध थया, ते बुद्धबोधितसिद्ध जाणवा. चौदमा वीरजगवाननी पेरें जे एक समय एका की सिद्ध थया, ते एकसिद्ध कहीयें. पंदरमा श्रीऋषजप्रचुनी पेरें एकसम यमां घणा सिद्ध थया, ते अनेकसिद्ध कहीयें. ए सिद्धना पंदर जेद जाणवा.

१०४५ शिष्यः—नामथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी जावथकी, डव्यथकी, गुणथकी अने पर्यायथकी तो उत्पाद तथा व्यय ए बे जंग लेवा अने न वमो ध्रुव, ए रीतें नव जांगे करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप केम जाणीयें?

गुरुः—प्रथम श्रीऋषजादि चोवीश तीर्थकर प्रमुख ते नामेकरी सिद्ध जाणवा. वीजा क्षेत्रथकी सिद्ध ते सर्वसिद्धआश्रयी पीस्तालीश लाख यो जन सिद्धशिला प्रमाणें जाणवा, अने एकसिद्ध आश्रयी तो पोताना शरीरना प्रमाणमध्येथी त्रीजो जाग घटाडी बाकी बे जागना शरीरप्रमाणें आत्मप्रदेशनो घन करी ते प्रमाणें क्षेत्र फरसीने सिद्ध रह्या ठे. त्रीजा कालथकी सर्व सिद्ध जगवान् तो अनादि अनंत जांगे रह्या ठे. अने एकसिद्ध आश्रयी तो सादि अनंत जांगो जाणवो, केम के सिद्धि वख्या तेनी आदि ठे, अने फरी पातुं संसारमां कोशकालें आवतुं नथी, त्यां सिद्धत्वमांहेज रद्देवुंठे, माटे अंत नथी तथा चोथा जावथकी सिद्धजगवान् तो शुचाशुचविकार रूप जे जाव तेथकी निवृत्तिने पोताना स्वजावमां वत्तें ठे, तथा पांचमा द्रव्यथकी सिद्धना जीव असंख्यातप्रदेशरूप जाणवा. ठठा गुणथकी सिद्धपरमात्माने एकेक प्रदेशें ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनंतागुण प्रगव्या ठे, तथा पर्यायथकी तो सातमो उत्पाद अने आठमो व्यय तथा नवमो ध्रुव, एटले पर्यायथकी सिद्धना जीवने समय समय अनंता अनंत नवा नवा ज्ञेयनी वर्तना रूप पर्यायनो उत्पाद व्यय थइ रह्यो ठे अने गुण तो ध्रुवाध्रुव पणेज वत्तें ठे, तेणे करी समय समय अनंता सुखनुं आस्वादनरूप सिद्ध परमात्मा सुख विलसे ठे. हवे उत्पाद व्ययनुं स्वरूप कहे ठे. वस्तु गतें मूलपणे जे ज्ञेयने पलटावे, ते ज्ञानपणुं एटले ते ज्ञासनपणे परिणमवुं थाय, तेवारे पूर्वपर्यायना ज्ञासननो व्यय थयो अने अचिनव पर्यायना ज्ञासननो उत्पाद थयो, तथा ज्ञानपणुं ते ध्रुव जाणवुं. ए सामान्यप्रकारें उत्पाद व्ययनुं स्वरूप कछुं जो विशेष रीतें कहीयें, तो बाल जीवनी समजणमां नावे. ए रीतें नवजंगीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

१०४७ हवे नित्य, अनित्य, एक, अनेक सत्, असत्, वक्तव्य अने अवक्तव्य ए आठ पक्षें करी सिद्धनुं स्वरूप उलखावे ठे. तिहां प्रथम नित्य अनित्यपक्ष कहे ठेः—ज्ञानादिक अनंतगुण सिद्धजगवानने प्रगव्या ठे, ते सदा काल नित्यपणे शाश्वता वत्तें ठे. तेमाटे सिद्धने नित्य कहियें, तथा ए ज्ञानादिक अनंतगुण जे सिद्धने प्रगव्या ठे, तेने विषे अगुरुलघु पर्याय समयसमय हा निवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे ठे, तेमाटे सिद्धने अनित्य पण कहीयें. तथा ए अगुरुलघु पर्याय समय समय हानिवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे

हे, ते अनित्यपणुं हे तेने विषे पण सिद्ध जगवानना ज्ञानादिक अनंतगुण नित्यपणे वत्तें हे, ते अनित्यमां नित्यपणुं हे अने पूर्वोक्त ज्ञानादिक गुण नित्यपणे हे तेमां अगुरुलघुनुं अनित्यपणुं हे, ते नित्यमां अनित्यपणुं हे. ए रीतें नित्यमां अनित्य अने अनित्यमां नित्य पद्दानो विचार जाणवो.

१०४९ हवे सिद्धमां एक अनेक पद्द कहे ठेः—प्रथम श्रीकृषजादि एवुं नाम लेतां तो सिद्ध एक ठे तेशी सिद्धने एक कहीयें, अने गुणपर्याय तथा प्रदेश ए सिद्धने अनेक ठे एटले गुण अनंता, पर्याय अनंता, प्रदेश अ संख्याता, माटे सिद्धने अनेक पण कहीयें. तथा ए गुण, पर्याय अने प्रदेश अनेक ठे, तेमां पण पोतापणे ते सिद्ध एक वत्तें हे, एटले एकमां अनेक अने अनेकमां एक पद्दानो विचार कह्यो.

१०५१ हवे सिद्धमां सत् असत् पद्द देखाहे ठेः—तिहां स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल, अने स्वजावपणे करी सिद्ध सत् ठे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, तथा परजावें करी सिद्ध असत् ठे. तिहां स्वद्रव्य ते सिद्धमां ज्ञानादि गुण जाणवा अने स्वक्षेत्र ते पोताना असंख्यातप्रदेशरूप क्षेत्रने अवगाहीने रह्या ठे, तथा स्वकाल ते पोतानो अगुरुलघुपर्याय सर्वगुणमां सिद्धने हानिवृद्धिरूप उपजवो विणसवो करे ठे तथा स्वजाव ते पोताना गुणपर्याय जाणवा, ए सर्व द्रव्यादिक चार तेषे करी सिद्धपरमात्मा सत् ठे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परजावपणामां सिद्धनुं पोतानुं असत्पणुं वत्तें हे. माटे ए सत्मां असत् अने असत्मां सत् पद्दानो विचार जाणवो.

१०५३ हवे सिद्धमां वक्तव्य अवक्तव्य पद्द देखाहे ठेः—सिद्ध परमात्मा ना अनंता गुण ठे. तेमां जेटला गुण केवली जगवानना प्ररूप्यामां अवे, ते सर्ववक्तव्य जाणवा अने केवलीजगवानना प्ररूप्यामां न आवे, ते अवक्तव्य जाणवा. ए रीतें आठ पद्दें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

१०६० हवे सत्तर्ंगाीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप उंखखावे ठे. प्रथमस्यात् अस्ति, स्यात्नास्ति, स्यात्अस्तिनास्ति, स्यात्अवक्तव्य स्यात्अस्तिअवक्तव्य स्यात्नास्तिअवक्तव्य, स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य. ए सातर्ंगा कह्या प्रथम स्यादस्ति चांगो उंखखावे ठे, तिहा (स्यात् के०) अनेकांतपणे सर्व अपेक्षायें करी (अस्ति के०) ठता पणुं तेने स्यादस्ति कहीयें. एटले सिद्धनुं स्वद्रव्य ते पोताना गुणपर्यायनो समुदाय जाणवो तथा स्वक्षेत्र ते

पोताना असंख्यात प्रदेशरूप क्षेत्र तेने अवगाही रह्या ठे, तथा स्वकालते समय समय उत्पाद व्ययनी वर्त्तनारूप जाणवो अने स्वजाव ते अनंता ज्ञानपर्याय, अनंता दर्शनपर्याय, अनंता चारित्रपर्याय, अनंता अगुरुलघु पर्याय तेषें करी सिद्धने अस्तिपणुं ठे, माटे ए स्यात्अस्ति चांगो कहीयें.

बीजो स्यान्नास्तिचांगो कहे ठे. सिद्धमां परद्रव्य, परक्षेत्र, परकालअने परजाव ए चारेनुं नास्तिपणुं ठे. तेषे करी स्यान्नास्ति चांगो कहीयें.

हवे स्यादस्तिनास्ति बीजो चांगो सिद्धमां कहे ठे. तिहां प्रथम चांगमां कळुं जे स्वगुणें अस्ति ठे, अने बीजा चांगमां कळुं जे परगुणें नास्ति ठे, ए वे चांगा सिद्धने एक समयें ठे, किंवा समयांतरे ठे? तेनो उत्तर गुरु कहे ठे, के जे समयें सिद्धने स्वगुणनी अस्ति ठे, तेहीज समयें सिद्धने परगुणनी नास्तिपणुं ठे, तेथी सिद्धने अस्ति नास्ति ए वे चांगा जेला एक समयमांजठे.

हवे स्यात् अवक्तव्य नामें चोथो चांगो कहे ठे. तिहां स्यात्अस्तिनास्ति ए वे चांगा एक समयें ठे, परंतु स्यात् अस्ति एटलुं वचन कहेतां थकां असंख्याता समय लागी, तेवार पठी स्यात् नास्ति नामें बीजो चांगो कळो. एटले जे समयें अस्तिचांगो कळो, ते समयें नास्तिपणुं कहेवामां न आ व्युं अने नास्ति कहेतां ते समयें अस्तिपणुं नाव्युं तेवारें अस्ति केतां नास्तिपणानो मृषावाद लागो किंवा नास्ति केतां अस्तिपणानो मृषावाद लागो, एम एक समयमां वे वचन बोळ्यां जाय नही जेम एक अक्षर बोल तां असंख्याता समय लागी जाय, त्यार पठी बीजो अक्षर बोलवामां आवे, तेमाटे सिद्धने चोथो चांगो अवक्तव्य कळो एटले (अवक्तव्य के०)वच नथी अगोचर, वचनथी कळुं जाय नही माटे अवक्तव्यचांगो जाणवो.

शिष्य पूठे ठे के तमें अवक्तव्यपणुं कळुं ते अवक्तव्यपणुं सिद्धने अस्ति धर्मनुं ठे, किंवा नास्तिधर्मनुं ठे? तेवारें गुरु कहे ठे, जे ते वचनपणे स्याद स्ति स्यान्नास्ति ए वे चांगा अवक्तव्य ठे, एटले पांचमो स्यादस्ति अव क्तव्य अने ठठो स्यात्नास्ति अवक्तव्य ए वे चांगा कळ्या.

हवे सातमो स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य चांगो कहे ठे. ए टले स्यात्अस्तिपणुं नास्तिपणुं युगपत् एक समय ठे, पण वचनथी अ वक्तव्य ठे माटे ए सातमो चांगो पण सिद्धमां जाणवो.

१०६३ हवे सिद्धनुं स्वरूप नित्यानित्यादिनी सप्तजांगीयें करी उलखावे ठे.

स्यान्नित्यं, स्यादनित्यं, स्यान्नित्यानित्यं, स्यादवक्तव्य, स्यान्नित्य अ
वक्तव्य, स्यादनित्य अवक्तव्य, स्यान्नित्यानित्य युगपत् अवक्तव्य, ए सात ठे.

तिहां स्यान्नित्यनामे प्रथम चांगो उलखावे ठे. एटले (स्यात्
के०) अनेकतापणे सर्व अपेक्षायें करी अने (नित्यं के०) शाश्वतपणे
वर्त्ते ठे, तेने स्यात्नित्य चांगो कहीयें. ते सिद्धजगवान्ने ज्ञानगुणना ठता
पर्याय अनंता, दर्शनगुणना ठता पर्याय अनंता, चारित्रगुणना ठता पर्या
य अनंता, अने वीर्यगुणना ठता पर्याय अनंता, एम अनंता ठता पर्याय
तेसिद्धनेविषे सदाकाल शाश्वता नित्यपणे वर्त्ते ठे, माटे स्यात् नित्यं चांगो ठे,

हवे सिद्धमां स्यादनित्यं ए वीजो चांगो कहे ठे. श्रीसिद्धपरमा
त्माने अनंता ठता पर्याय जे प्रगट्या ठे, ते एकेक पर्यायने विषे अनंता
सामर्थ्य पर्याय रूप झेयनी वर्त्तना समय समय थई रही ठे, एटले अजि
नवपर्यायनुं उपजवुं अने पूर्वपर्यायनुं विणसवुं थाय ठे. माटे ए सिद्धमां
अनित्यपणुं जाणवुं तेथी स्यादनित्यरूप वीजो चांगो कह्यो.

हवे सिद्धमां स्यान्नित्यअनित्यरूप त्रीजो चांगो कहे ठे. तिहां सिद्ध
मां पूर्वोक्त ठता पर्याय नित्य ठे, अने सामर्थ्य पर्याय अनित्य ठे. ए वे
चांगा एक समय ठे, किंवा समयांतरे ठे? त्यां गुरु कहे ठे, के जे समय ठता
पर्यायनुं नित्यपणुं ठे, ते समयें ज सामर्थ्य पर्यायनुं अनित्यपणुं पण
ठे, तेथी सिद्धने नित्य अने अनित्य ए वे चांगा जेला एक समयें ठे,
ए स्यान्नित्य अनित्य नामें त्रीजो चांगो कह्यो.

हवे सिद्धमां स्यादवक्तव्य नामें चोथो चांगो कहे ठे. शिष्य कहे ठे.
के ए नित्य, अनित्य वे चांगा एक समयें ठे, तो आपणे स्यान्नित्य
कहेतां थकां पण असंख्याता समय लागे, तेवार पठी स्यादनित्य
चांगो कहेवाय. माटे नित्य कहे ते समयें अनित्यपणुं नाव्युं अने
अनित्य कहे, ते समय नित्यपणुं नाव्युं एटले नित्य कहेतां अनित्यपणा
नो मृषावाद लाग्यो किंवा अनित्य कहेतां नित्यपणानो मृषावाद लाग्यो
तेवारें गुरु कहे ठे, जे एम एकसमयें वे वचन बोळ्यां न जाय, केम के ए
क अद्दर वोलतां असंख्याता समय लागे, तेवार पठी वीजो अद्दर वोल
वामां आवे, माटे ए अवक्तव्यनामें चोथो चांगो सिद्धमां कह्यो ठे, एटले
(अवक्तव्य के०) वचनथी अगोचर अर्थात् वचनथी कह्यो जाय नही.

एवं सांजली शिष्य कहे ठे के हे गुरुजी ! तमे अवक्तव्य पणुं कहुं ते अवक्तव्य पणुं सिद्धपरमात्माने नित्यधर्मनुं ठे, किंवा अनित्यधर्मनुं ठे ? तेवारें गुरु कहे ठे, के वचनपणे नित्य अनित्य ए बे जांगा अवक्तव्य ठे, एटले पां चमो स्यान्नित्य अवक्तव्य अने ठठो स्यादनित्य अवक्तव्य जांगो कह्यो.

हवे सातमो स्यान्नित्य अनित्य युगपत् अवक्तव्य जांगो कहे ठे. एटले ए स्यात् नित्यानित्य पणुं युगपत् एकसमय ठे पण वचनथी अवक्तव्य ठे माटे स्यात् नित्यानित्य युगपत् अवक्तव्य सातमो जांगो सिद्धमां जाणवो.

१०५४ वली सिद्ध परमात्मां एक अनेकनी सप्तजंगीयो करवी. जेम के स्यादेकं, स्यादनेकं, स्यादेकानेकं, स्यादवक्तव्यं, स्यादेकअवक्तव्यं, स्यादअनेकावक्तव्यं, स्यादेकानेकयुगपदवक्तव्यं. ए रीतें एक अनेकनी सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप गुरुमुखें जाणवुं.

१०५१ वली सिद्धपरमात्मां स्यात्सत्यं, स्यादसत्यं, स्यात्सत्यासत्यं, स्यादवक्तव्यं, स्यात्सदवक्तव्यं, स्यादसदवक्तव्यं, स्यात्सत्यासत्यं युगपदवक्तव्यं, ए सत्या सत्यनी सप्तजंगीयें करी सिद्धनुं स्वरूप विचारवुं.

१०५७ वली सिद्धमां जव्य अजव्य स्वजावनी सप्तजंगी करवी ते आवी रीतें स्याज्जव्यस्वजाव, स्यादजव्यस्वजाव, स्याज्जव्याजव्यस्वजाव, स्यादवक्तव्यं, स्याज्जव्यस्वजाव अवक्तव्यं, स्यात् अजव्यस्वजाव अवक्तव्यं, स्यात्जव्यस्वजाव अजव्य स्वजाव युगपदवक्तव्यं, ए सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप विचारवुं.

१०५५ वली सिद्धमां गुणपर्यायनी सप्तजंगी करवी, ते आवी रीतें स्यात् गुणं, स्यात्पर्यायं, स्यात्गुणपर्यायं, स्यात्अवक्तव्यं, स्यात्गुणअवक्तव्यं, स्यात्पर्याय अवक्तव्यं, स्यात्गुणपर्याययुगपदवक्तव्यं. ए रीतें गुणपर्यायनी सप्तजंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप विचारवुं. एम अनंती सप्तजंगीयो सिद्ध परमात्माने विषे वस्तुधर्में रही ठे पण तेनो विस्तारें अर्थ क रतां अर्थ वधे, माटे ए सामान्य प्रकारें बीजरूप सप्तजंगीनो विचार कह्यो.

११०१ हवे मोक्षनिष्पन्न स्वरूपसिद्ध अवस्थांमां षट्कारक लगावे ठे. तिहां प्रथम ज्ञानगुणमां ठ कारक लगावे ठे. प्रथम कर्त्ता ते सिद्धनो जीव, बीजुं कारण रूप ज्ञानगुण ठे, बीजुं ते ज्ञानगुणें करीने अनंता ज्ञेयपदार्थ जाणवा रूप कार्य करवुं ठे, तेणे करी समय समय अजिनव पर्यायनुं जा

एषणुं संपजतुं जाय, ते चोथुं संप्रदान, अने समय समय पूर्वपर्यायिना जाणपणानो व्यय थातो जाय, ते पांचमुं अपादान, अने ज्ञानगुण ध्रुवतुं ध्रुवपणे जाणवुं ते ठहुं आधार, ए सिद्धना ज्ञानगुणमां ठ कारक कहां.

११०५ हवे सिद्धने दर्शनगुणमां ठ कारक कहे ठे. प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव, वीजुं तेने दर्शनगुण कारण मळ्युं तेणे करी त्रीजुं अनंता दृश्यपदार्थने देखवारूप कार्य करवुं ठे, चोथुं अजिनवपर्यायितुं समयसमय देखवा पणुं संपजतुं जाय ते संप्रदान, पांचमुं पूर्वपर्यायिना देखवा पणानो समयसमय व्यय थातो जाय, ते अपादान, आधार ते दर्शनगुण ध्रुवन ध्रुवपणे जाणवो.

१११३ हवे सिद्धने चारित्रगुणमां षट्कारक कहे ठे प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव, वीजुं चारित्रगुण कारण मळ्युं, त्रीजुं अनंता गुणने विषे रमण करवा रूप कार्य करवुं ठे, चोथुं संप्रदान ते अजिनवपर्यायितुं रमण पणुं समय समय संपजतुं जाय, पांचमुं अपादान ते पूर्वपर्यायिना रमणपणानो समय समय व्यय थातो जाय, ठहो आधार ते चारित्रगुण ध्रुवतुं ध्रुवपणे जाणवुं.

१११९ हवे सिद्धना वीर्य गुणमां षट्कारक लगावे ठे, प्रथम कर्त्ता सिद्धनो जीव, वीजुं कारणरूप वीर्यगुण, त्रीजुं अनंतागुणने विषे सहायरूप कार्यकरवुं ठे, चोथुं संप्रदान, ते अजिनव पर्यायितुं सहायपणुं समय समय संप जतुं जाय, पांचमुं अपादान ते पूर्वपर्यायिना सहायपणानो समय समय व्यय थातो जाय, ठहो आधार ते वीर्यगुण ध्रुवतुं ध्रुवपणे जाणवुं. ए रीतें सिद्धना वीर्यगुणमां षट्कारक जाणवा. ए रीतें सिद्धपरमात्माने अनंता गुणने विषे षट्कारक रूप अनंतां चक्र लागी रह्यां ठे, तेनुं जाणपणुं करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप ध्यावे ते प्राणी, गण्ठा दिवसमां परमानंद पद पामे.

११५४ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना स्वरूपमां एकरूप, असंख्यरूप, असंख्य अनंतरूप, अनंतअनंतरूप, अनंतअनंतधर्मरूप ए पंचजंगीयो केम जाणीयें.

गुरुः—प्रथम नामथकी सिद्धने (एक के०) एक कहीयें, वीजो क्षेत्रथकी सिद्धने (असंख के०) असंखप्रदेशी कहीयें त्रीजुं सिद्धने एकेक प्रदेशें अनंतगुण प्रगट्या ठे, तेवा प्रदेश असंख्याता ठे अने गुण अनंता ठे, माटे असंख्य अनंत कहीयें, चोथो सिद्धपरमात्माना एकेक गुणमां अनंता अनंत पर्यायिनी वर्त्तना रूप जाणवी, ते अनंत अनंतजंगी कहीयें. पांचमो सिद्धने एकेकपर्यायें अनंतो धर्म प्रगट्यो ठे, ते अनंत अनंत धर्मरूप जंगी जाणवी.

१११७ हवे चार निक्षेपे करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप उलखावे ठे. प्रथम (नामसिद्ध के०) सिद्ध एवुं नाम ते त्रणे काल एकरूप पणे शाश्वतुं वर्त्ते ठे, बीजो स्थापनासिद्ध ते श्रीजिनप्रतिमा स्थापवी अथवा देहमान मध्येची त्रीजो जाग घटाडी बे जाग शरीर प्रमाणे आत्मप्रदेशनो घन करी स्थापना रूप क्षेत्र अवगाही रह्या ठे. त्रीजो द्रव्यसिद्ध ते तेरमे चौदमे गुणगणे केवलीजगवान् वर्त्ते ठे. ते द्रव्यशरीर आश्रयी द्रव्य सिद्ध जाणवो अने जे सिद्धि वस्था तेना शरीरनी चक्ति करियें, ते ज्ञशरीरनुं द्रव्य जाणवुं तथा शुद्ध निर्मल असंख्यात प्रदेशने विषे ज्ञानादि अनंतगुण रूप ठता पर्याय वस्तुरूप प्रगट्या ठे, ते तद्रव्यतिरिक्त शरीर आश्रयी द्रव्यनिक्षेपो जाणवो ए त्रण प्रकारें सिद्धनो द्रव्यनिक्षेपो जाणवो. तथा सिद्धनो स्व रूप सामर्थ्यपर्याय प्रवर्तना रूप अनंतो धर्म प्रगट्यो ठे, तेणे करी सदा काल नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तना रूप पर्यायनो उत्पाद, व्यय, समय समय अनंत अनंतो थइ रह्यो ठे. तेथी सिद्ध परमात्मा अनंतुं सुख जोगवे ठे. ते चावनिक्षेपो जाणवो. ए रीतें चारनिक्षेपे. सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणवुं, ११३१ शिष्यः—सिद्धपरमात्माना स्वरूपमां अजोगी, उपजोगी अने जोगी, एवी त्रिजंगी उपजे ठे माटे तेणे करीने सिद्धनुं स्वरूप केम जाणीयें ?

गुरुः—सिद्ध परमात्मा शुजाशुचना हेतु इंद्रियसुखना विकाररूप जोगथकी रहित ठे, तेमाटे सिद्धने अजोगी कहीयें. तथा अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, ए आदि अनंता गुण प्रगट्या ठे. ते वारंवार एना ए गुण जोगव्यामां आवे ठे, तेथी सिद्धने उपजोगी कहीयें. जे एकवार जोगव्यामां आवे, तेने जोग कहीयें. अने जे वारंवार जोगव्यामां आवे, तेने उपजोग कहीयें. तथा सिद्धना एकगुणने विषे अनंतानंत पर्यायनी समय समय उत्पादव्ययरूप नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्तना थइ रही ठे, तेणें करी सिद्धपरमात्मा, समय समय अनंतसुखना आस्वादनरूप जोग करे ठे, तेमाटे पर्यायथकी सिद्धने जोगी कहीयें. ए रीतें शुजाशुचरूप विजावना जोगथकी सिद्ध रहित ठे, तेमाटें अजोगी कही बोलाव्या अने ज्ञानादि अनंतपर्यायरूप गुणथकी सिद्धने उपजोगी कही बोलाव्या, एटबे ठता पर्यायरूप गुण वारंवार फरी फरीने एना ए जोगव्यामां आवे माटे, तपजोग ठे तथा सिद्धना सामर्थ्य पर्याय समय समय नवा नवा ज्ञेयनी वर्त्त

नारूप पलटाय ठे. तेमाटे समय समय नवनतुं अनंतुं सुख जोगवे ठे एट
खे पर्यायथकी सिद्धने जोगी कही बोलाव्या, ए परमार्थ ठे. ए रीतें त्रि
जंगीयें करी सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप जाणवुं.

११३३ शिष्यः—सिद्धपरमात्मानो नित्यस्वजाव कहीयें, अने अनित्य
स्वजाव पण कहीयें, तेनो श्यो पामार्थ ?

गुरुः—सिद्धने ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य, ए चार गुण तथा अव्या
बाध, अमूर्त्ति, अने अनवगाहक, ए त्रण पर्याय नित्य ठे तेमाटे ए नित्य
स्वजाव कहीयें अने एक अगुरुखु पर्याय सिद्धने सर्वगुणमां उपजवा वि
णसवा रूप हानि वृद्धि करे ठे, ते माटे सिद्धनो अनित्यस्वजाव कहीयें,
एटखे अव्यास्तिनयें करी सिद्धनो नित्यस्वजाव कहीयें अने पर्यायास्ति
कनयें करी सिद्धनो अनित्य स्वजाव कहीयें ए परमार्थ जाणवो.

११३५ शिष्यः—सिद्धनुं परमात्मानां अस्ति तथा नास्तिपणुं केम जाणीयें ?

गुरुः—सिद्ध परमात्माने ज्ञानादि अनंतचतुष्टयरूप लक्ष्मी प्रगट थइ ठे,
तेनुं सिद्धने अस्तिपणुं जाणवुं, अने परस्वजाव शुजाशुजरूप जे इंद्रिय
सुख तेनुं सिद्धने नास्तिपणुं जाणवुं.

११३६ शिष्यः—सिद्धने योगी कहीयें अने अयोगीपण कहीयें तेनो शो परमार्थ

गुरुः—सिद्धने ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप त्रण गुण प्रगट थया ठे
माटे ए त्रण गुणें करी योगी कहीयें. तथा मन, वचन अने काया, ए
त्रण योगथी सिद्ध रहित ठे, माटें अयोगी कहीयें.

११३७ शिष्यः—सिद्धने कर्त्ता कहीयें अने अकर्त्तापण कहीयें तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—ज्ञानना पर्याय अनंता ठे तेणे करी सिद्ध परमात्मा अनेक ज्ञेय
रूप पदार्थने जाणवारूप कार्य करे ठे, अने अनंता दर्शनना पर्याय
तेणे करी सिद्ध अनेक दृश्यपदार्थने देखवारूप कार्य करे ठे माटे सिद्धने
तेना कर्त्ता कहीयें. अने शुजाशुजविकाररूप इंद्रियसुखना हेतु एवा जे
पौजलादिक विजाविक वस्तु तेना सिद्धने अकर्त्ता कहीयें.

११४१ शिष्यः—सिद्ध परमात्मानो ज्ञव्यस्वजाव पण कहीयें, अने
अज्ञव्य स्वजाव पण कहीयें. तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—जेने पलटण स्वजाव ठे, तेने ज्ञव्यस्वजाव कहीयें. अने जेने प
लटण स्वजाव नथी, तेने अज्ञव्यस्वजाव कहीयें. इहां सिद्धपरमात्माने ज्ञा

न, दर्शन अने चारित्र ए आदि अनंता गुण प्रगट्या ठे, तेनो कोइ काळें विनाश थवानो नथी, एटले ते कोइ काळें पलटाशे नही, तेमाटे ए अजव्य खजाव सिद्धसां कहीयें. अने सिद्धने एक अगुरुलघु पर्याय करी अनंता गुणमां हानिवृद्धिरूप समय समय उत्पाद व्यय थाय ठे, ते पलटण खजाव ठे. तेणे करी सिद्ध परमात्माने जव्यखजाव कहीयें.

११४३ शिष्यः—सिद्ध परमात्माने लाज कहीयें अने अलाज पण कहीयें तेनो शो परमार्थ ?

गुरुः—सत्तागते अनंतुं सुख प्रगट्युं, तेनो सिद्धने लाज कहीयें अने शुजाशुजविकाररूप इंद्रिसुखना जे जोग तेनो सिद्धने अलाज कहीयें.

११४५ शिष्यः—सिद्ध परमात्माने ग्राहकखजाव कहीयें, अने अग्राहक खजाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्ध परमात्मायें शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी सर्व कर्म बाली पोताना खरूपनुंग्रहण करी लोकनेअग्रजागें जइ अनंतसुखरूप आस्वादननुंग्रहण कछुं ठे तेमाटे ग्राहकखजाव कहीयें, अने चारगतिरूप संसारमां मोहनीकर्मने वशे हता, तेवारें समय समय अनंता कर्मरूप दलीथानुंग्रहण रता हता, तेथकी हमणां निवर्त्या, माटे अग्राहकखजाव कहीयें.

११४७ शिष्यः—सिद्ध परमात्मानो स्थिरखजाव कहीयें, अने अस्थिर खजाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्धपरमात्मा सकल कर्म खपावी पोतानुं रूप निपजावी लोकने अंतें सादि अनंतमे जांगे ने आकाशप्रदेशरूप क्षेत्र अवगाही रह्या ठे, तिहां थकी कोइ काळें ए प्रदेश मूकी बीजे प्रदेशे जतुं नथी तेमाटें स्थिरखजाव कहीयें. अने जे अनंतगुण सिद्धने प्रगट्या ठे, तेनुं पण कोइकाळें विनाशपणुं नथी, ते पण सिद्धनो स्थिरखजाव कहीयें तथा पर्यायनुं समय समय पलटणपणुं ठे एटले पर्यायें करी हानिवृद्धि थाय ठे ते सिद्ध परमात्मानो अस्थिरखजाव जाणवो.

११४८ शिष्यः—सिद्धने रक्षक कहीयें अने अरक्षक कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्ध परमात्माने सत्तायें ज्ञानादि अनंतगुणरूप जे लक्ष्मी प्रगट थइ ठे. तेना रक्षक ठे माटे सिद्धने रक्षक कहीयें, अने पुजलादि विजावरूप जे लक्ष्मी ते थकी सिद्धरहित ठे, तेमाटे तेना अरक्षक कहीयें.

११५१ शिष्यः—सिद्ध परमात्मानो अचलितस्वप्नाव कहीयें, अने चलि तस्वप्नाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्ध परमात्माने सत्तागतें ज्ञानादि अनंतगुण प्रगट्या ठे, तेनो कोइ कालें विनाश नथी माटे सिद्धनो अचलित स्वप्नाव कहीयें, अने न वा नवा ज्ञेयनी वर्त्तनारूप समय समय उत्पादव्यय थाय ठे, तेमाटे सिद्धपरमात्मानो चलित स्वप्नाव कहीयें.

११५३ शिष्यः—सिद्धपरमात्मानो रमणिक स्वप्नाव कहीयें, अने अरमणिक स्वप्नाव पण कहीयें, तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—शुद्धध्यानरूप अशियें करी घाती अघाती रूप कर्म आवरण वा ली ज्ञानादि अनंतगुणरूप पोतानुं स्वरूप प्रगट कछुं, तेने विषे सिद्धपरमात्माने रमणिकपणुं ठे अने इंद्रियसुखनी हेतु एवी जे परस्वप्नाव रूप विज्ञावदशा तिहांथकी सिद्धने अरमणिक पणुं जाणवुं.

११५५ शिष्यः—सिद्ध परमात्मानो व्यापक स्वप्नाव कहीयें अने अ व्यापक स्वप्नाव पण कहीयें तेनो श्यो परमार्थ ?

गुरुः—सिद्धपरमात्माने सत्तागतें सामान्य विशेषरूप ज्ञान, दर्शन आदि अनंता गुण प्रगट्या ठे, तेमां व्यापकपणुं जाणवुं. अने परप्नावरूप विज्ञावदशा थकी सिद्ध परमात्मा रहित ठे, तेमाटे तेमां अव्यापकपणुं जाणवुं. ए रीतें बे जंगीयें करी सिद्धपरमात्मानुं स्वरूप कछुं.

११६५ हवे सिद्ध परमात्माना अन्वयी गुण लखीयें ठैयें. १ अनंतज्ञानमय, २ अनंतदर्शनमय, ३ अनंतचारित्रमय, ४ अनंततपोमय, ५ अनंतजोगमय, ६ अनंतदानमय, ७ अनंतलाजमय, ८ अनंतजोगमय, ९ अनंतउपयोगमय, १० अनंतबलमय, ११ सिद्धपरमात्माना अन्वयी गुण कहा.

११६६ हवे सिद्धपरमात्माना व्यतिरेकगुण लखीयें ठैयें. १ क्रोधरहित, २ मानरहित, ३ मायारहित, ४ लोचरहित, ५ हास्यरहित, ६ अरतिरहित, ७ रतिरहित, ८ रागरहित, ९ द्वेषरहित, १० मोहरहित, ११ मिथ्यात्वरहित, १२ निज्जारहित, १३ कामरहित, १४ अज्ञानरहित, १५ मनरहित, १६ वचनरहित, १७ कायारहित, १८ संसाररहित, १९ इंद्रियरहित, २० कंदर्परहित, २१ शब्दरहित, २२ रूपरहित, २३ रसरहित, २४ फरसरहित,

१५ गंधरहित, १६ आहाररहित, १७ निहाररहित, १८ रोगरहित, १९ चयरहित, २० शोकरहित, २१ जुगुप्सा रहित, ए व्यतिरेक गुण जाणवा. १२७५ हवे सिरूपरमात्माना अन्वयी अने व्यतिरेक ए बे गुण जेला लं खीयें ठीयें. निराकार, १ निराखं, ३ निराशी, ४ निरुपाधि, ५ निर्विकारी, ६ अक्षय, ७ अनादि, ८ अनंत, ९ अखं, १० अक्षर, ११ अनक्षर, १२ अचल, १३ अकल, १४ अमल, १५ अगम, १६ अनादमी, १७ अरूपी, १८ अकर्मि, १९ अवंधक, २० अनुदय, २१ अनोद्रिक, २२ अजेदी, २३ अवेदी, २४ अहेदी, २५ अखेदी, २६ असखायी, २७ अलेशी, २८ अचोगी, २९ अव्यावाध, ३० अनंतअनवगाही, ३१ गुरुलघु, ३२ अपरिणामी, ३३ अनिद्रिय, ३४ अविकारी, ३५ अयोनि, ३६ अव्यापी, ३७ अनाश्रयी, ३८ अकंप, ३९ अविरोधी, ४० अखं, ४१ अनाश्रव, ४२ अलख, ४३ अशोक, ४४ अलोक, ४५ लोकालोकज्ञायक, ४६ खड्गव्यवंत, ४७ खड्गेत्रवंत, ४८ खकालवंत, ४९ खचाववंत, ५० द्रव्यास्तिकपणे नित्य, ५१ पर्यायास्तिकपणे अनित्य, ५२ गुणपर्यायपणे नित्यानित्य, ५३ सिरूपस्वरूपी, ५४ स्वसत्तावंत, ५५ परसत्तारहित, ५६ खड्गेत्रअवगाहिक, ५७ परक्षेत्रस्वपणें अनवगाहिक. ५८ धर्मास्तिकायथकी चिन्न, ५९ अधर्मास्तिकायथकी चिन्न, ६० आकाशास्तिकायथकी चिन्न, ६१ पुण्ड्रास्तिकायथकी चिन्न, ६२ कालथकी चिन्न, ६३ खचावना कर्ता, ६४ परचावना अकर्ता, ६५ लोकप्रमाणें अवगाहनावंत, ६६ गुरु, ६७ बुद्ध, ६८ अमर, ६९ अपर, ७० अपरंपर, ७१ खचावरमणी, ७२ सहजानंदी, ७३ पूर्णानंदी, ७४ अजर, ७५ अविनाशी, ७६ एक, ७७ असंख्य, ७८ अनंत, ७९ अनंतगुणें करी बिराजमान.

शिष्यः—सिरूप परमात्माने दान अनंतुं ठे. लाज अनंतो ठे, जोग अनंतो ठे, उपजोग अनंतो ठे, तेनो श्यो परमार्थ ? तथा ते दान कोने आये ठे ? लाज शानो थाय ठे ? जोग ते शेनो ठे. अने उपजोग ते शेनो ठे ?

गुरुः—सिरूप परमात्माने वीर्यगुण ते सहकार दीये ठे तेम ज्ञानगुणना उपयोग विना वीर्य फुरी शके नही तैथी वीर्यने सहाय ज्ञान गुणनुं ठे तथा ज्ञानमां रमण ते चारित्रनुं सहाय ठे, एम एक गुणने अनंतगुणनुं सहाय ठे. हवे जे गुण सहाय दीये ठे ते तो आत्माना गुणमां दान धर्म

हे, ते सिद्धना जीव प्रति समय अनंत स्वगुण सहाय रूप अनंतुं दान पो तें पोताने आपे हे तथा जे गुणने जे गुणनी सहाय रूप शक्तिनी प्राप्ति ते सिद्धना जीवने लाज हे तथा सिद्धना जीव पोताना पर्यायने प्रतिसम यें जोगवे हे ते जोग हे तथा सिद्धना जीव स्वाभाविक जे स्वगुण तेने वारं वार जोगवे हे माटे तेनो उपजोग हे एम सिद्धने दान स्वरूपनुं हे, लाज पण स्वरूपनो हे, जोग स्वपर्यायनो हे अने स्वाभाविक स्वगुणनो उपजोग हे.

ए रीतें एक सिद्ध आश्रयी ए स्वरूप किंचिन्मात्र लख्युं हे. एवा अनंता सिद्ध वत्ते हे, तेमाटे एक सिद्धनुं स्वरूप जाण्युं एटले सर्वसिद्धनुं स्वरूप जाण्युं तेथी एक सिद्धनुं स्वरूप जेना जाण्यामां आवे, तेने ज्ञानी कहीयें, अने जेनी श्रद्धामां बेसे, अंतरंग सर्दहे, तेने समकेती कहीयें. एवा पुरुषने सिद्धनां सुख नजीक हे, एवा पुरुष संसारमां जे रह्या हे, ते मात्र जवस्थि तिना वांकथकी रह्या हे, अने एवी उलखाणना धणी जे सिद्धपरमात्माने नमस्कार करे हे. एटले नमोसिद्धाणं कहे हे. ते धणी निर्झरा करे हे. ते माटे तेने निश्चय समकेतना धणी कहीयें.

तथा जेणें एवी रीतनी उलखाण करी नथी, अने जे “नमोसिद्धाणं” कही सिद्धने नमस्कार करे हे, ते सूडो जेम रामनो उच्चार करे हे, तेनी पेरें आचरण जाणवुं, तिहां सुधी मिथ्यात्व हे, पण निर्झरा थाय नही, केम के निर्झरा तो उलखाणने हाथ हे, माटे सिद्धनुं स्वरूप जाणवानो घणो खप करवो, जेणे उक्तप्रकारें सिद्धनुं स्वरूप न जाण्युं तेनो द्रव्यनिहे पो हे. अणुवर्णगोदवं ए श्रीअनुयोगद्वारनुं वचन हे,

वली कष्टुं हे, जे पद, अक्षर, मात्रा, शुरुसिद्धांत वांचतां, पूढतां, अर्थ करे हे, गुरु मुखें सर्दहे हे, ते पण शुरु निश्चय सत्ता उलख्या विना सर्वे द्रव्यनिहेपे हे, अने जे जाव विना द्रव्यनय हे, ते पुण्यबंधनुं कारण हे, पण मोक्षनुं कारण नथी, एटले जे जीव, करणीरूप कष्टतपस्या करे हे, पण जीव अजीवनी सत्ता उलखी नथी, तेने जगवतीसूत्रमां श्रवती अप च्चस्काणी कह्या हे, तथा जे बाह्यथी एकली तपस्यारूप करणी करे हे, अने पोताने साधु कहेवरावे हे, ते मृषावादी हे. श्रीउत्तराध्ययनमां “न मु णिअन्नाणवासेणं” ए वचनें तथा “नाणेणंमुणीहोइ” ए वचनें जे ज्ञानी ते मुनि हे, अने अज्ञानी ते मिथ्यात्वी हे.

तथा कोऽ गणितानुयोग जे नारकी देवताना बोझ अथवा यतिश्राव कनो आचार जाणीने कहे जे अमें ज्ञानी ठेयें ? परंतु ते ज्ञानी नथी, जे ड्रव्यगुणपर्यायनुं स्वरूप जाणे, तेने ज्ञानी कहीयें. उत्तराध्ययनना मोक्ष मार्गाध्ययनमां कछुं ठे. तथा च तत्सूत्रं ॥ एवं पंचविहं नाणं, द्वाण्यगुणा ए य ॥ पञ्चवाण्य सर्वेसिं, जं नाणिहिं दंसीआ ॥ १ ॥ अर्थः—पांच प्रकारें ज्ञाननुं स्वरूप तथा षट् ड्रव्यनुं स्वरूप, गुणपर्याय सहित जाणे, तेने सम्यग्ज्ञानी जाणवा. तिहां प्रथम पांच प्रकारें ज्ञाननुं तथा षट् ड्रव्यनुं स्वरूप रूपी अरूपी पणे निश्चयव्यवहारथी जाणे, तथा उत्सर्ग अणुवादथी जाणे, तथा देशव्यापी सर्वव्यापी पणे जाणे, तथा प्रत्यक्ष परोक्ष ए वे प्रमाणे करी जाणे, तथा कर्त्ता कारणे कार्यपणे जाणे, तथा हेय ज्ञेय उपादेयपणे जाणे. तथा ड्रव्य, क्षेत्र, काल अने जावथकी जाणे, तथा नामादिक चार निक्षेपे ऋजुसूत्रनयने मतें जाणे, तथा शब्दनयने मतें चार निक्षेपे जाणे, तथा समजिरूढ नयने मतें चार निक्षेपे जाणे, तथा पांच समवायें करी जाणे, तथा पद कारकें करी जाणे, तथा नैगमादिक सप्त नयें करी जाणे, तथा नित्य अनित्यादिक आठ पदें करी जाणे तथा निश्चयव्यवहारथी जाणे, तथा नाम, ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, गुण, पर्यायथकी जाणे, तथा उत्पाद, व्यय, ध्रुवपणे जाणे. ए रीतें पांच ज्ञाननुं तथा षट् ड्रव्यनुं स्वरूप जाणे, तेने निश्चय सम्यग्ज्ञानी जाणवा.

हवे ए उपर प्रश्न कहा तेनो अर्थ करवाथकी आ ग्रंथ षणो वधे, माटे एमांथी केटलाएक प्रश्ननो अर्थ रहस्य जाणवा सारु करुं तुं, ते प्रमाणें विस्तार बुद्धिना धणी हशे ते सर्वनो अर्थ विचारी लेशे.

प्रथम पांच प्रकारें ज्ञाननुं स्वरूप तथा षट् ड्रव्यनुं स्वरूप रूपी अरूपी पणे निश्चय व्यवहारथी जाणवा आश्रयी कहीयें ठेयें. तिहां प्रथमनां चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी ठे अने रूपी पदार्थने देखे ठे, अने ए चार ज्ञाननो उपयोग पाठो टली जाशे, केम के अवधिज्ञान अने मनःपर्यव ज्ञान नो उपयोग षष्ठा सातमा गुणठाणा लगे ठे अने श्रुतज्ञाननो उपयोग बारमा गुणठाणा सुधी ठे, पठी नथी. एटले चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी व्यवहारनयने मतें रूपी पणे प्रगट्वां अने देखे पण रूपी पदार्थने ठे माटे रूपी जाणवा अने एक केवलज्ञान ते शुद्धनिश्चयनयें अरूपी पणे

सादि अनंतमे जांगे प्रगटे तेनो उपयोग आव्यो थको जाय नही, अने इंद्रियना अनुयायीपणा विना रूपी अरूपी सर्व पदार्थने जाणे, माटे ए के वल ज्ञान ते निश्चयनयें अरूपी जाणवुं.

वली ए पांच ज्ञाननुं स्वरूप निश्चयव्यवहारनयें करी रूपी अरूपी पणे देखाडे ठे, ए पांच ज्ञान कर्मरूप आवरणने अज्ञावें अरूपी पणे प्रगट्या तेने पाठां कर्मरूप आवरण लागे नही, माटे निश्चयनयें करी पांचे ज्ञान अरूपी जाणवां, अने ए पांचे ज्ञान कर्मरूप आवरणने अज्ञावें प्रगट्यां तो अरूपी पणे ठे पण तेना पर्याय रूपी पदार्थमां जळ्या, केम के चारज्ञान तो रूपी पदार्थनेज देखे ठे, माटे रूपी पदार्थमां चार ज्ञानना पर्याय प्रगट्या, तेथी व्यवहार नयने मतें ए पांचे ज्ञान रूपी पण जाणवां.

हवे षट्द्रव्यनुं स्वरूप निश्चय व्यवहार नयें करी रूपी अरूपी पणे दे खाडे ठे. तिहां धर्म, अधर्म, आकाश, जीव, अने काल ए पांच द्रव्य निश्चयनयें करी अरूपी जाणवां अने एक पुजलद्रव्यना परमाणुआ तेथ्यपि रूपीज ठे, तथापि घणा सूक्ष्म ठे, केमके बद्धस्थमुनिराज चार ज्ञानना धणी तेनी नजरें पण नावे अने शाश्वता ठे, माटे उपचारें करी अरूपीमां गण्ठा, ए रीतें ठए द्रव्य निश्चयनयें करी अरूपी जाणवां अने व्यवहारनयें करी तो चारद्रव्य अरूपी जाणवां तथा जीव अने पुजल, ए वे द्रव्य रूपी जाणवां. केम के जीव, चारगतिमां नव नवा जवें करी नवनवां नाम धरावी चवतुं उपजतुं करे ठे, ते नजरें जोवामां आवे ठे, माटे रूपी जाणवो. अने पुजलपरमाणुआ पण घणा जेला मली खंध बने ठे, ते नजरें जोवामां आवे ठे, माटे ए वे द्रव्य व्यवहारनयें करी रूपी जाणवां. अने धर्मास्तिकायादिक चार द्रव्य अरूपी जाणवां. इति प्रथम प्रश्न.

हवे बीजा प्रश्नमां पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा ठ द्रव्यनुं स्वरूप उत्सर्ग अपवादे करी कहे ठे. तिहां पांच ज्ञान मध्यें मतिश्रुतादि चार ज्ञान ते इंद्रियने अनुयायी व्यवहारनयने मतें रूपीपणें प्रगट्यां अने देखे पण रूपी पदार्थने ठे, माटे अपवादे कारणरूप जाणवां अने एक केवलज्ञान ते शुद्धनिश्चयनयें करी अरूपी लोकालोक जास्कर इंद्रियनी सहाय विना सर्व ज्ञेय पदार्थने जाणे, माटे उत्सर्गें कार्यरूप जाणवो.

हवे षट् द्रव्यनुं स्वरूप उत्सर्ग अपवादे कहेतो थको धर्म, अधर्म आ

काश, पुञ्जल अने काल ए पांच द्रव्यना अनंता गुण, अनंता पर्याय ते ना जाणपणारूप प्रतीति गुरुमुखें करवी, ते सर्वे अपवादें कारणरूप ठे, अने एक जीवद्रव्यनुं स्वरूप, शुद्ध निर्मल चिदानंदरूप परमज्योति, अविनाशी, अविचल, सर्वविज्ञावयकी रहित शुद्ध निश्चयनयें करी सत्तायें सिद्ध समान ज्ञानादि अनंतगुणरूप ठता पर्याय तथा सामर्थ्यपर्याय रूप अनंतीशक्तिनो धणी, तेनुं स्वरूप ते उत्सर्ग कार्यरूप जाणवुं, ए बीजो प्रश्न.

हवे त्रीजा प्रश्नमध्ये पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा षट् द्रव्यनुं स्वरूप देश व्यापी तथा सर्वव्यापी पणे जाणवुं ते कहे ठे, मतिश्रुतादि चार ज्ञान, ते पोतपोतानी मर्यादा प्रमाणें उपयोग दीधे लोकमां एना पर्याय प्रवर्त्ते, ते प्रमाणें ज्ञेयपदार्थ जाणे, माटे देशव्यापी जाणवां अने एक केवलज्ञाननो उपयोग ते प्रयास विना सर्वपर्याय लोकालोकमां व्यापी रह्या ठे. तेणे करी सर्व ज्ञेयपदार्थ एक समयमां जाणे ठे, माटे सर्वव्यापी जाणवो.

हवे ठ द्रव्यमां देशव्यापी अने सर्वव्यापी पणुं कहे ठे. तिहां धर्मास्ति काय अने अधर्मास्तिकाय, ए बे द्रव्य लोकव्यापी असंख्यात प्रदेशी जाणवा, तेमज एक जीवद्रव्य, असंख्यातप्रदेशी ठे एवा अनंता जीवद्रव्य ठे ते पण लोकव्यापी जाणवां, तथा पुञ्जलद्रव्यना परमाणुआ अनंतप्रदेशी, ते पण लोकव्यापी जाणवा. तथा कालद्रव्यनो समय एक पण प्रवर्त्तन काल ते अढीद्वीप व्यापी जाणवो, अने एक आकाशद्रव्यना अनंता प्रदेश ते लोकालोकव्यापी जाणवा. एरीतें एक आकाश विना पांच द्रव्य लोक व्यापी ठे, माटे देशव्यापी जाणवां अने एक आकाशद्रव्य ते लोकालो कमां व्यापी रह्यो ठे माटे सर्वव्यापी ठे. ए त्रीजो प्रश्न थयो.

हवे चोथा प्रश्नने विषे पांच प्रकारें ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप प्रत्यक्ष अने परोक्ष ए बे प्रमाणें करी देखाडे ठें. तिहां प्रथम प्रत्यक्ष प्रमाणना बे जेद ठे. एक सर्व प्रत्यक्ष अने बीजुं देशप्रत्यक्ष तेमां केवलज्ञानें करी षट् द्रव्यना अनंता गुण अने अनंतापर्यायरूप लोकालोकना सर्वज्ञाव प्रत्यक्ष पणे जाणे, ते सर्वप्रत्यक्ष जाणवुं अने मनःपर्यवज्ञान ते मनोवर्ग णाने प्रत्यक्षपणे जाणे, बीजुं अवधिज्ञान ते पुञ्जल वर्गणाने प्रत्यक्षपणे जाणे, ए सर्व देशप्रत्यक्ष जाणवा. हवे बीजुं परोक्षज्ञान ठे ते परोक्षप्रमाणना त्रण जेद ठे, एक आगमप्रमाण ते आगमें करी नरक, तिर्यच, मनुष्य, दे

वता यावत् सिद्ध अवस्थानुं स्वरूप जाणै, बीजुं अनुमानें करी अनेक वस्तुनुं प्रमाण करे, जेम कोशना घरमां धूआडो वेखी अभिनुं प्रमाण थाय, अथवा कोशुं मुख देखी रोग, शोक, चिंतानुं प्रमाण थाय, अने त्रीजुं उपमाप्रमाण, ते कोश जीव अजीवरूप वस्तुने अनेकप्रकारें उपमा आपी वो लावीयें, जेम तीर्थकरने गंधहस्ती तथा चिंतामणिरत्ननी उपमा देवी, ते सर्वे उपमा प्रमाण कहीयें, ए रीतें पांच ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप ए बे प्रमाणे करी जाणवुं, ए चोथो प्रश्न थयो.

हवे पांचमा प्रश्नमां पांच प्रकारनुं ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप, कर्त्ता, कारण अने कार्यरूप त्रिचंगीयें करी देखाडे ठे. तिहां कर्त्ता जीव तेने देव, गुरु, कारणरूप मळ्यां तेवारें जीवने सम्यक्ज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, तथा कर्त्ता जीव, तेने सम्यक्ज्ञान कारणरूप मळ्युं तेवारें जीवने श्रुतादि चार ज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, वळी कर्त्ता जीव, तेने कारणरूप चार ज्ञान मळ्यां, तेवारें जीवने केवलज्ञानरूप कार्य नीपन्युं, वळी कर्त्ता जीव, तेने केवलज्ञानरूप कारण मळ्युं तेवारें अनेक ज्ञेयपदार्थ जाणवारूप कार्य नीपन्युं.

हवे षट्द्रव्यमां कर्त्ता, कारण अने कार्यपणुं देखाडे ठे. तिहां कर्त्ता जीव अने कारण धर्मास्तिकाय मळ्यो, तेवारें जीवने चालवारूप कार्य नीपन्युं, वळी कर्त्ता जीव अने तेने अधर्मास्तिकाय कारण मळ्युं तेवारें जीवने स्थिर रद्देवा रूप कार्य नीपन्युं वळी कर्त्ता जीव तेने अकाशास्तिकाय कारण मळ्युं, तेवारें जीवने अवगाहना रूप कार्य नीपन्युं, वळी कर्त्ता जीव, तेने कालद्रव्यकारणरूप मळ्युं, तेवारें जीवने नवा पूराणारूप कार्य नीपन्युं, वळी कर्त्ता जीव, तेने पुजलद्रव्य कारणरूप मळ्युं तेवारें जीवने समय समय अनंता पुजल परमाणुआ लेवा तथा खेरवारूप कार्य नीपन्युं. ए रीतें पांच प्रकारें ज्ञान तथा षट्द्रव्यनुं स्वरूप, कर्त्ता कारण अने कार्यपणे जाणवुं ए पांचमो प्रश्न. एरीतें श्रीउत्तराख्यनसूत्रमां एकवीश प्रश्न कह्या ठे. तेमां पांच प्रश्नो अर्थ कह्यो, शेष प्रश्नना अर्थनो जे विस्तारबुद्धिना धणी होय ते परमार्थ जाणी व्हेजो. ए प्रमाणे जे जाणी आदरी ने पाले, तेने जाण कहीयें. तेनुं स्वरूप उलखाववाने चोचंगी लखीयें ठैयें. पहेला जीव जाणै, आदरे अने पाले, बीजा जीव जाणै, आदरे अने न पाले, त्रीजा

जीव जाणे, न आदरे, अने न पाले, चोथा जीव जाणे, न आदरे, अने पाले, हवे एनो अर्थ जूदो जूदो लखीयें ठैयें.

तिहां पहेला जीव जे जाणे, आदरे, अने पाले, ते उलखावे ठे. जीव अजीव, नव तत्व अने षट् द्रव्यनुं स्वरूप साते नयें करी जाणे, अष्टा वीश उपनयें करी जाणे, द्रव्य, क्षेत्र, काल जावरूप चोत्रंगीयें करी जाणे, नित्य अनित्यादि आठ पदें करी जाणे, द्रव्यजावें करी जाणे, निश्चय व्यवहारें करी जाणे, नयसंयुक्त चार चारनिक्षेपे करी जाणे, ए रीतें चिन्न चिन्न प्रकारें जाणी अंतरंग ज्ञासन सहित प्रतीति करी चार गतिरूप संसारथकी उदासी जावें त्यागरूपवैरागें पंच महाव्रत शुद्ध रीतें आदरे, अने जेवी रीतें आदरे, तेवीरीतें मोक्षनिःकर्मारूप साध्य चोखो राखीने पाले जीव साधुमुनिराज ठठेसातमे गुणठाणे वर्तता कंचन पात्र समान जाणवा.

हवे बीजा जीव जे जाणे आदरे अने न पाले, ते जीव उलखावे ठे. एटले आगल जे जीव अजीवरूप षट्द्रव्यनुं नवतत्व स्वरूप कछुं ते प्रमाणे अंतरंग जाणपणा रूप ज्ञासन सहित प्रतीति करे, तथा चार गतिरूप संसारथकी उदासीजावें त्यागरूप वैरागें शुद्ध रीतें पांच महाव्रत गुरुमुखें उच्चरे, अने साध्य एक आत्माने कर्मथकी मूकाववा रूप निःकर्मा अवस्थानो राखीने पंच महाव्रत शुद्ध रीतें पाले, पण पूर्वकर्मरूप उदयजावने योगें करीने व्रतथकी चूक्यो मनःपरिणामविषे अशक्त थयो ॥ गाथा ॥ जे जाको जैसो उदे, तव सोए ते थान ॥ शक्ति मरोडे जीवकी, उदय महाबलवान ॥ १ ॥ एवी रीतें उदयजावने योगें करी व्रतथकी परिणाम स्वश्या पण वेष मूके नही, पडिक्कमणुं पडिलेहणादि क्रिया यथाशक्तियें साचवे, विषयसुख ते विषयान समान दारुण दुःखना दातार करी जाणे मनने विषे जूरणा घणी करे, पण बूटी शके नही, अने जे साधु, मुनिराज शुद्धमार्गी जिनआज्ञाना पालक होय, तेने देखी घणो प्रेम धरे, तेनी सेवा करे, एवा व्रतपालवानी अजिलाषा राखे अने शुद्ध मार्गनो उपदेश आपी, लोकने प्रतिबोधे, धर्म पमाडे, ते जीव, व्रतथकी चूक्या पण समकेतनी सहहणायें करी सहित ठे, माटे संवेगपही जाणवा, ए बीजो जंग.

हवे त्रीजा जे जीव जाणे, न आदरे, अने न पाले, ते उलखावे ठे. ते जीव सम्यग्दृष्टि चोथागुणठाणावाला जाणवा. एटले आगल जी

व अजीवरूप नव तत्त्व, षट्द्रव्यतुं स्वरूप कहुं ते प्रमाणें सर्व जाणें, अंतरंग पणें सर्वदेहे, कार्य कारण, धर्म प्रत्यें उलखे, स्वदया परदया जाणे, स्वभाव विभावनो यथार्थपणें विचार करी सर्वदेहे, आत्माने उपादान कारणपणें जाणे, उपादानकार्य जाणे, तथा आत्मिकसुख इंद्रियजनितसुखनी प्रतीति करी साध्य चोखो राखी वीतरागनी आज्ञायें अनेक प्रकारें साधन करे, तेजीव, संसारथकी उदासी जावें वचें, संसारने वंधीखानारूप करी जाणे, अने व्रत लेवानी रुचि घणी करे, पण अव्रतने उदरें करी संसाररूप जालमांथी बूटो शके नही, एवा जीव जाणे खरा पण आदरे नही अने पाले पण नही. ए बीजो जंग कह्यो.

हवे चोथा जे जीव जाणे न आदरे अने पाले तेने उलखावे ठे. ते जीव अनुत्तरवासी देव जाणवा. एटले आगल जाव कहुवा, ते प्रमाणें सर्व जाणे ठे पण गति आश्रयी अव्रतिपणाने उदरें करी तिहां व्रतनुं आदरनुं नथी तथापि व्रत पालवाने जावेंज वचें ठे, माटे जाणे न आदरे अने पाले ए चोथो जंग. ए चार जांगाना अर्थ विचारी तोलना करे ते ज्ञानीपुरुष जाणवा.

हवे अजाणनुं स्वरूप जाणवाने चोचंगी लखीयें ठैयें. तिहां पहेला जीव न जाणे, न आदरे अने न पाले. बीजा जीव न जाणे, न आदरे अने पाले, बीजा जीव न जाणे, आदरे अने पाले, चोथा जीव न जाणे, आदरे अने न पाले. ए चार प्रकारना जीव उलखाववाने अर्थ लखीयें ठैयें.

तिहां पहेला जीव न जाणे, न आदरे अने न पाले तेजीव मिथ्यादृष्टि पहेले गुणगणें अन्यदर्शनी जाणवा. तेने जीव अजीवरूप स्वरूप जाणुं नथी, अने जिनवचननी आस्था विना अनेक प्रकारें अन्यलिंगें मिथ्यात्वरूप चेष्टा करता फरे, ए पहेला जांगानो विचार कह्यो.

हवे बीजा जीव न जाणे, न आदरे अने पाले, ते जीव उलखावे ठे. ते जीव, बाल तपस्वी जाणवा. तेने जीव अजीवना स्वरूपनी उलखाण नथी, अने पांच महाव्रतनुं स्वरूप पण जाणतां नथी तेम पांच आश्रव पण सेवता नथी, माटें ए बाल तपस्वी जीव जाणवा. ए बीजो जंग.

हवे बीजा जे जीव न जाणे, आदरे अने पाले, ते उलखावे ठे, ते जीव जैनमती स्वलिंगी, बाह्यक्रिया प्रतिपालक जाणवा. तेणें जीव अजीवरूप नव तत्त्व षट्द्रव्यतुं स्वरूप नयें करी, निक्षेपे करी, स्याद्वादरूप नित्य

अनित्यादि आठ पक्षें करी ज्ञासनरूप प्रतीति करी नथी, अने उपादान पणुं न जाणे, उपादान कारणपणुं न जाणे, उपादानकार्यपणुं न जाणे, साधक बाधक अने सिद्धादि स्वरूप चौद गुणगणानो विचार न जाणे, लौकिक धर्म न जाणे, लोकोत्तर बाह्यकारणरूप धर्म न जाणे, लोकोत्तर अंतरकारणरूप धर्म न जाणे, तथा लोकोत्तर अंतरकार्यरूप धर्म पण न जाणे अने जीवसत्तारूप द्रव्यगुणपर्यायतुं स्वरूप न जाणे तथा अजीव सत्तारूप ज्ञावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्मरूप विचार न जाणे, तथा साध्य साध नरूप खेवानी प्रतीति कस्या विना नरकनिगोदनां दुःखचक्री बीहीतो थको सुखनी लालचें पुण्यरूप फलनी वांठायें निवृत्तिरूप चारित्र अंगीकार करी, पांच वहाव्रत शुद्ध रीतें पाळे ठे, बहेंतालीश दोष टाळी आहार लीये ठे, मांरुखाना पांच दोष टाळे ठे, अने पडिक्रमणुं पडिखेहणादि क्रिया शुद्ध रीतें साचवे ठे, ते द्रव्यलिंगी जीव जाणवा. ए त्रीजो जंग कह्यो.

हवे चोथा जे जीव न जाणे, आदरे अने न पाळे, ते उलखावे ठे, ते जीव जिनमतलिंगी वेषधारी जाणवा. एटले पोतानो पाट मेलववारूप प नाम राखवा सारु बालपणे शिष्यने वेचाता छइ अनेक प्रकारें दुःखें करी जिनमतना शास्त्र जे अंगोपांगादिक तथा परमतनां शास्त्र जे ज्योतिष्य वैद्यकादिक ते जणावे, जणावी पाळीने महोटा करे, पण अंतरंग सत्तागतना जाणपणारूप ज्ञासन रहित तेणें करी जीवादिक नव पदार्थना परमार्थने न जाणे, अने अज्ञावें करी रुचि विना पांच महाव्रतरूप उच्चारे करी जैनलिंग धरुं ठे, पण ठकायना आरंजने विषे प्रवर्त्तें ठे, सावयरूप पापकर्मना आदेश उपदेश दीये ठे ॥ अत्र गाथा ॥ निर्दय हृदय ठकायमां, जे मुनिवेषे प्रवर्त्तें रे ॥ गृही यतिधर्मथी बाहिरा, ते निर्धन गति वर्त्तें रे ॥ १ ॥ ए परमार्थ जाणवो. एटले ते जीव न जाणे, अने व्रत आदरे पण पाळे नही, माटे जिनमतलिंगी वेषमात्रें जाणवा. ए चोथो ज़ांगो कह्यो. ए रीतें जाण अजाण पणानुं स्वरूप जाणवा सारु चोत्रंगी कही ठे.

॥ दोहा ॥

॥ आत्मदृष्टिदेखीयें, पुजल चेतनरूप ॥ परपरिणति होय वेगली, न पडे ते जवकूप ॥ १ ॥ आत्मज्ञावें सिद्ध ठे, परज्ञावें ठे बंध ॥ निजस्वरूप अविश्लोकतां, मिटे अनादि धंध ॥ २ ॥ जेने पुजल योग ठे, तेहनी न धरे

आश ॥ शुद्धातम अनुभव जस्यो, शाश्वत सुख विलास ॥ ३ ॥ चेतन
 लक्षण आतमा, सो अनादि गुणलीन ॥ पण ते प्रगटे अनुभवें, समकेत
 दृष्टि पीन ॥ ४ ॥ मग्न जयो जडजावमें, तेणे सावरण स्वजाव ॥ निरावरण
 तो संपजे, आपें आप स्वजाव ॥ ५ ॥ शुद्धद्रव्य शुद्धातमा, व्यापक सकल
 स्वजाव ॥ शुद्ध द्रव्यगुण पञ्जावे, मटे मोहमद ताव ॥ ६ ॥ इम जावत शिव
 तत्व रस, ते अघ्यातम सार ॥ ताके गुणकी वर्णना, सुणतां होय सुखकारा ॥ ७ ॥
 ॥ देशी चोपाइनी ॥

खिमाविजय ठे द्दमा जंकार, जिन उत्तमपदना दातार ॥ एवा गुरु नि
 त्य सेवो सहू, निजरूप प्रगटे सुख लहो बहु ॥ ८ ॥ अमिय कुंअर तसु
 प्रणामी पाय, ग्रंथ कियो जविजन सुखदाय ॥ अद्वयबुद्धि में रचना करी,
 शुद्ध करो पंक्ति जन मली ॥ ९ ॥ मरुधर पाली नगर मजार, चोमासुं ध
 री हर्ष अपार ॥ वर्ष ब्यासी संवत अढार, महाशुदि पांचम ने रविवार ॥
 १० ॥ प्रश्नोत्तर ग्रंथ कीधो सार, आतम अर्थीने हितकार ॥ जणतां गुणतां
 जय जयकार, लखमी लीला पामे अपार ॥ ११ ॥ इति पंक्ति श्रीकुंवर
 विजयजी विरचित प्रश्नोत्तर ग्रंथः संपूर्णः ॥ श्लोक संख्या ॥ ६६६१ ॥

चूलः—आ ग्रंथ ढापतांज एना बीजा पृष्ठनी ठेव्ही लीटीमां (वाजित्रमां
 मलतो शब्द होय.) ते ठेकाणे कंपाजीटरनी चूलथी “वा जित्रमां मेल उ
 चित प्रमुख गुणसहित होय” एम थइ गयुं ठे. तेमज बीजापण जे जे स्थान
 के अशुद्धतारूप दोष महाराथी थयेला होय ते सर्व स्थले वांचनार
 साहेबोयें सुधारी वांचवुं. आ पुस्तक मुद्रित करतां जे कांइ श्रीजिनवचन
 विरुद्ध महाराथी लखायुं होय ते अपराध रूप दुष्कृतने हुं समस्त आ
 ग्रंथ पठन करनारा सज्जनोनी समद मिथ्या करुं हुं.

इति श्री कुंवरविजयजीकृत अघ्यात्मसार

प्रश्नोत्तर ग्रंथः समाप्तः ॥

अथ बूटक बोलो लखीयें ठैयें.

सुगाम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात, सुवात, सुकुल, सुबल, सुखी, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र, सुदान, सुमान, सुरूप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुवेश, सुदेश. एटलां वानां पुण्यविना न पामीयें.

सुमति, शीलवंत, संतोषी, सत्संगी, स्वजन, साचा बोला, सत्पुरुष, समे ला, सुलक्षण, सुलज्जा, सुकुलीन, गंजीर, गुणवंत, गुणज्ञ, एवा पुरुषनो सं ग करवाथी धर्म पामीयें. चुगल, चोर, बलग्राही, अधर्मी, अधम, अविनी त, अधिक बोला, आनाचारी, अन्यायी, अधीरा, अधूरा, निःस्नेही, कुलहाण, कुबोला, कुपात्र, कूडाबोला, कुशीखिया, कुशासनी, कुलखण्ण, चूना, चूड. एवा पुरुषोनो संग न करवो.

केटलाएक दोष मुख्यतायें जेने होय तेनां नाम कहे ठे:—रजपुतने क्रोध घणो होय, क्षत्रीने मान घणुं होय, गणिका अने वणिकने माया घणी होय, ब्राह्मणने लोच घणो होय, मित्रने राग तथा हेत घणुं होय, शोक्यने द्वेष घणो होय, जुगारीने शोक घणो होय, चोरनी माताने चिंता घणी होय, कायरने जय घणो होय. इत्यादिक श्रीविशेषावश्यकमां घणा बोल ठे.

हवे धर्म कर्म केवी रीतें होय ते कहे ठे. धर्म तो आत्मजावें शुद्धोपयोगें होय अने कर्म तो अशुद्धोपयोगें तथा शुजाशुज जावें होय जेवी करणी एट ले जेवी क्रिया तेवां कर्म होय अने धर्म तो अक्रिया रूपें होय जेवो शुद्धोपयो ग वृद्धिवंतो होय तेवो धर्म पण वृद्धिवंतो होय.

महोटी चौदविद्यानां नाम:—एकनजोगामिनी, बीजी परशरीर प्रवेशिनी, त्रीजी रूपपरावर्तनी, चोथी स्तंजनी, पांचमी मोहनी, ठछी सुवर्णसिद्धि, सातमी रजतसिद्धि, आठमी रससिद्धि, नवमी बंधथोजिनी, दशमी शक पराजयनी, अगीयारमी वशीकरणी, बारमी चूतादिदमनी, तेरमी सर्व सं पत्करी, चौदमी शिवपदप्रापणी.

वक्ताना चोद गुण लखीयें ठैयें. पहेलो प्रश्नव्याकरणोक्त शोल बोलनो जाण पंक्ति होय, बीजो शास्त्रार्थ विचारी जाणे, त्रीजो वाणी मांहे मीठाश हो य, चोथो प्रस्ताव अवसर उलखे, पांचमो सत्य बोले, ठछो सांजलनारना सं देहनो भेद करे, सातमो बहुशास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय, आठमो अ र्थने विस्तारी तथा संवरी जाणे, नवमो व्याकरण रहित ठतां कंठनी जा

षामां पण अपशब्द न बोले, दशमो वाणीये करी सजाजनोने रीजपमाडे, अगीयारमो प्रश्नार्थ ग्राहक, बारमो अहंकार रहित, तेरमो धर्मवंत, चौदमो संतोषवंत. ए चौद बोलनो जाण होय ते वक्ता जाणवो.

हवे श्रोताना चौद गुण कहे ठे:-एक जक्तिवंत, बीजो मीठाबोलो, त्रीजो गर्वरहित, चोथो सांजलवा उपर रुचि, पांचमो चंचलता रहित एकाग्र चिन्ते सांजले अने धारे, षष्ठो जेवुं सांजल्युं तेवुं प्रगट अहारे कहे, सातमो प्रश्न नो जाण, आठमो घणा शास्त्र सांजल्यानां रहस्य जाणे, नवमो धर्मकार्ये आलसु न होय, दशमो जेने धर्म सांजलतां निडा नावे, अगीयारमो बुद्धि वंत होय, बारमो दातारूप गुण होय, तेरमो जेनी पासेथी धर्मकथा सांजले तेना पाठलथी घणा गुण बोले, चौदमो कोइनी निंदा न करे तथा कोइनी साथे ताण खेंच वादविवाद न करे, ए चौद गुण सांजलनारमां जोश्यें, योग, कषाय, अने खेझ्या ए चार जेवारें एकठा मले, तेवारे परजवायु बंधाय.

नारकी जीवने महावेदना अने अह्य निर्झरा जाणवी. तथा साधुने महावेदना अने महानिर्झरा गजसुकुमारनी पेरें जाणवी, तथा देवताने अह्य वेदना अने अह्य निर्झरा जाणवी तथा शैलशीकरणे चोदमे गुणठाणे महानिर्झरा अने अह्यवेदना जाणवी. ए निर्जराने वेदनानी चोचंगी कही.

सामायिक, चोवीसठो ने प्रतिक्रमण ए त्रण आवश्यक संवर तत्त्वमां ठे. तथा वंदनक, काउस्सग अने पञ्चकाण ए त्रण आवश्यक निर्झरामां ठे.

संसारमां जीव त्रण प्रकारना ठे. एक जव्य, बीजा अजव्य अने त्रीजा जव्याजव्य. तेमां वही जव्यजीवनां त्रण प्रकार ठे. एक निकटजव्य, बीजा मध्यजव्य अने त्रीजा दुर्जव्य. तेमां सधवा सौजाग्यवती स्त्री जेम परणीने तत्काल ठ महिने गर्भधारण करी. पुत्रनी प्राप्ति रूप फल पामे तेनी पेरे जे जव्यजीव पण तरत सिद्धि वरे ते निकट जव्य जीव जाणवा. तथा जेनेको एक स्त्री परणा पठी वे वर्षे पुत्ररूप फल पामे तेनी पेरे जे जीव थोडा जव माहि मेघकुमारनी पेरे सिद्धि वरे, ते मध्यजव्य जीव जाणवा. तथा जे दुर्जव्यजीव ठे ते जेम कोइ परणेस्त्री स्त्रीने घणा वरस पठी पुत्ररूप फलनी प्राप्ति थाय तेम ते जीव पण गोशालानी पेरे अथवा अनंता पडिवाइजीवो नी पेरे घणा काळे सिद्धि वरशे ते दुर्जव्य जाणवा. ए जव्यना त्रण जेद कह्या.

हवे बीजा अजव्य जीवनां लक्षण कहे ठे, जेम वंध्या स्त्रीने घणाकाल

पर्यंत जरतारनो योग मले तथा अनेक उपाय करे तो पण पुत्ररूप फलनी प्राप्ति न थाय, तेनी पेरे अन्नव्यनो जीव पण व्यवहारथी चारित्रनी क्रिया आदरे नवमा प्रैवेयक पर्यंत जाय परंतु सिद्धिरूप मोक्षफल पामे नही.

हवे त्रीजा जव्याजव्यनां लक्षण कहे ठे. जेम कोइक बालविधवा स्त्री होय तेने पुत्र थवानी शक्ति ठे परंतु जरतारना योगने अजावें पुत्ररूप फल पामे नही तेम केटला एक जातें जव्य जीव तो ठे, परंतु कर्मनी विशेष निविडताने योगें करी अव्यवहार राशिमांथी निकलीने व्यवहार राशिमां उंचाज नही आवी शके, तेथी सामग्रीने अजावें मोक्षरूप फलनी प्राप्ति पण न पामे.

तथा वली त्रण प्रकारना जीव कहे ठे एक जवाजिनंदी ते मिथ्यादृष्टि जीव जाणवा. बीजा पुज्जलाजिनंदी ते चोथा पांचमा गुणठाणा वाला सम्यग्दृष्टि जीव जाणवा. त्रीजा आत्मानंदी ते साधु सुनिराज जाणवा.

तथा वली संसारी जीव चार प्रकारना कहा ठे. एक सघन रात्रि समान ते जवाजिनंदी मिथ्यात्वगुणठाणवर्ती जीव जाणवा. जेमां कोइ अजुवाळुं नही बीजा अघनरात्रि समान ते मार्गाजिमुखी मार्गानुसारी जीव जाणवा. त्रीजा सघन दिन समान ते चोथा गुणठाणाथी मांकीने बारमा गुणठाणा सुधीना जीव जाणवा. चोथा अघन दिन समान ते केवली जगवान जाणवा.

तीर्थकरना जन्मादिकव्याणक थाय तेवारे साते नरकें केटळुं अजवाळुं थाय? ते कहे ठे:—प्रथम नरकें सूर्य सरखो उद्योत थाय, बीजी नरकें सात्रसूर्य समान तेज थाय, त्रीजी नरकें पूर्णिमाना चंद्र समान उद्योत थाय, चोथी नरकें सात्र चंद्र समान तेज थाय, पांचमी नरकें शुक्र तथा बृहस्पति इत्यादि ग्रहना सरखुं तेज थाय, षष्ठी नरकें नक्षत्रना सरखुं तेज थाय अने सातमी नरकें तारा सरखुं तेज थाय.

त्रण प्रकारें करेखा उपकारनुं उंसिंगण थवाय, तेनो विचार.

१ माता पिताने पुत्र प्रजातें उठी शतपाक सहस्रपाक तेलें मईन करे, पठी सुगंधें करी उवटणुं करें, तेवार पठी सौगंधिकपाणी, टाडुंपाणी, जूष्ण पाणी, एवा त्रण पाणीयें करी न्हवरावे पठी उत्तम वस्त्राचूषणादिकें करी विचूषा करे, पठी मन गमतुं सरस मधुर चोजन करावे, जावजीव सुधी पोतानी पठवाडे खांध उपर लश्ने फरे, एरीतें चक्ति साचवे तो पण ते पुत्र, माता पितानो उंसिंगण न थाय. परंतु माता पिताने केवलिप्रणीत धर्म कही

धर्म ब्रूकवीने धर्ममां थापे तो ते पुत्र, माता पितानो उंसिंगण थाय.

१ कोइ एक महोटा पुरुष कोइ एक दरिद्री पुरुषने महाटा धनवंत करे पढी कालांतरे कोइ रीतें अशुच कर्मोदयथी ते महोटा पुरुषने दरिद्र प्राप्त थाय ते प्रस्तावें ते पूर्वे उपकार पामेलो पुरुष पोताना स्वामीने दरिद्र आव्युं जाणी पोतानुं सर्वख पोताना स्वामीने आपतो ठतो पण तेनो उंसिंगण न थाय, परंतु ते पुरुष जो पोताना स्वामीने केवलिप्रणीत धर्म कही धर्म ब्रूकवीने धर्मने विषे स्थापन करे, तो उंसिंगण थाय,

३ कोइ एक पुरुष श्रीसाधुनी पासेंथी रुढां धर्ममय वचन सांजली तेने मनमां धारी पढी शुनध्यान विषे काल करी देवलोके देवतापणे उपजे, ते देवता पोताना धर्माचार्य प्रत्ये दुःकालमां पड्यो जाणी वस्तिना स्थानके मूके अथवा ते धर्माचार्यने कोइ रोग उत्पन्न थयाथी तेने रोग रहित निराबाध करे, तोपण ते देवता तेनो उंसिंगण न थाय, परंतु ते देवता जो पोताना धर्माचार्यने अशुच कर्मोदयथी केवलिप्रणीत धर्मथकी भ्रष्ट थयो जाणी फरी तेने केवलिप्रणीत धर्म ब्रूकवीने धर्मने विषे स्थापन करे, तो उंसिंगण थाय.

॥ चार प्रकारनी वर्तणक करतो जीव, नरकायु बांधे, तेनां नाम.

- १ महारंजमां वर्ततो थको. २ महापरिग्रहमां वर्ततो थको,
३ पंचेंद्रिय जीवनोवध करतो. ४ आमिषनो आहार करतो थको.

॥ चार प्रकारें वर्ततो जीव तीर्यचायु बांधे, तेनां नाम ॥

- १ मायाने करवे करी. २ विशेषमायाने करवे करी.
३ अद्विक बोलतो थको. ४ कूडां तोल कूडां माप करतो थको.

॥ चार प्रकारें वर्ततो जीव मनुष्यायु बांधे, तेनां नाम ॥

- १ प्रकृतियें जडकपणे वर्ततो थको. २ प्रकृतियें विनीत पणे वर्ततो.
३ दयासहितपणे वर्ततो थको. ४ मत्सर रहित पणे वर्ततो थको.

॥ चार प्रकारें वर्ततो जीव देवायु बांधे तेनां नाम ॥

- १ सराग संयमें करी. २ देशसंयमे वर्तवे करी,
३ बाल तटें करी. ४ अकाम निर्झारयें करी.

॥ चार प्रकारनां शूर पुरुष कहा ठे ॥

- १ क्षमा शूर श्रीश्रिरिहंत. २ तपःशूर श्रीअणगार.
३ दानशूर वैश्रमण. ४ युद्धशूर वासुदेव.

१ पञ्चस्काणनो करावनार गुरु जाण अने करनार शिष्य अजाण होय, त्यां जाण गुरु पञ्चस्काणना करनारने पूढे, जाण करे, केहे के हे अमुका ! तने अ मुक पञ्चस्काण कराव्युं ठे, तेवी रीतें पालजे एम शिष्य पण पाळे तो शुद्ध जांगो जाणवो. अने न पूढे न पाळे, तो अशुद्ध जांगो जाणवो.

२ पञ्चस्काणनो करनार शिष्य जाण होय, ते शिष्य जाणतो बतो गीतार्थ गुरुने अज्ञावें पर्यायें करी महोटा एवा महात्माने समीपें अथवा पित्रादि कने गुरु स्थानकें मानीने तेमनी साखें पञ्चस्काण करे, तो ते शुद्ध जाणवुं. परंतु जो बते गीतार्थें पण अजाण गुरु पासेंथी पोताने ठंडे पञ्चस्काण करे, तो अशुद्धजांगो थाय, एम समजवु.

४ पञ्चस्काण करावनार गुरु अने पञ्चस्काण करनार शिष्य, ए बेहु अजा ण होय तो ते जांगो अत्यंत अशुद्ध श्री वीतरागदेवें कह्यो ठे.

॥ साधु ठ कारणें आहार लीये, तेनां नाम कहेठे.

१ ऋधानी वेदनायें आहार लीये.

२ आचार्यादिकनां वैयावच्च करवाने अर्थें आहार लीये.

३ ईर्ष्यापथिकी मार्ग शोधवाने कारणे आहार लीये.

४ संयम पालवाने कारणे आहार लीये.

५ जीवितव्य रक्षाने कारणे आहार लीये.

६ शुचध्यान करवाने कारणे आहार लीये.

॥ साधु ठ कारणे आहार न लीये, तेनां नाम कहे ठे ॥

१ ज्वरादिकरोग आवे थके न जमे.

२ मावापने उपसर्ग रूप कारणे न जमे.

३ पुरुष वेदनो उदय थयाथी ब्रह्मचर्य राखवाने अर्थें न जमे.

४ कर्म खपाववा निमित्तें तप करवाने अर्थें न जमे.

५ जीवदयाने अर्थें वर्षाद् वरसते अथवा धूहरी पडते न जमे.

६ अंतसंक्षेपणार्थें शरीर ठांक्वा जणी न जमे.



